ॐ

स्वामी शरण कृत

अथर्ववेद

सरल पाठ सम्पूर्ण संहिता

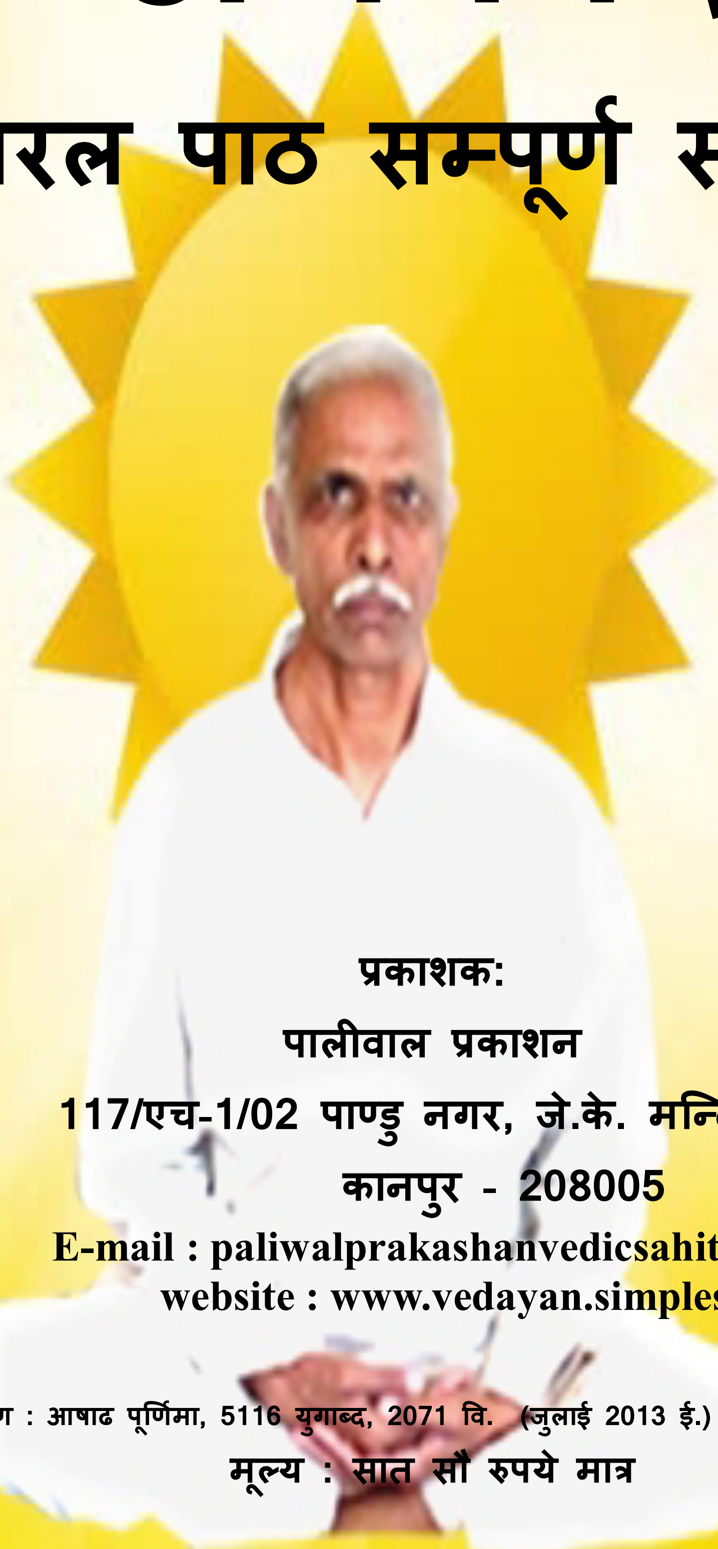

प्रकाशक:

पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02 पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने,

कानपुर - 208005

E-mail : paliwalprakashanvedicsahitya@gmail.com

website : www.vedayan.simplesdite.com

संस्करण : आषाढ पूर्णिमा, 5116 युगाब्द, 2071 वि. (जुलाई 2013 ई.)

मूल्य : सात सौ रुपये मात्र

ॐ

ॐ

अथर्ववेद विषयसूची

काण्ड	पृष्ठ
प्रथमम् काण्डम्	07
द्वितीयम् काण्डम्	21
तृतीयम् काण्डम्	39
चतुर्थम् काण्डम्	61
पञ्चमम् काण्डम्	91
षष्ठम् काण्डम्	125
सप्तमम् काण्डम्	171
अष्टमम् काण्डम्	200
नवमम् काण्डम्	226
दशमम् काण्डम्	253
एकादशम् काण्डम्	284
द्वादशम् काण्डम्	
त्रयोदशम् काण्डम्	
चतुर्दशम् काण्डम्	
पञ्चदशम् काण्डम्	
षोदशम् काण्डम्	
सप्तदशम् काण्डम्	
अष्टदशम् काण्डम्	
नवदशम् काण्डम्	

विंशम् काण्डम्

ॐ

निवेदन

गत मकर संक्रान्ति पर्व की उत्तरायणी ऊर्जा से अनुप्राणित होकर नवीन आशा-अपेक्षाओं के साथ नूतन संकल्प भी लिया गया था कि इस वर्ष वेद संहिताओं का क्रमशः प्रकाशन तथा भाष्य का कार्य प्रमुख रूप से किया जाना है। किसी प्रकार हम अब तक सामवेद तथा यजुर्वेद का सरल पाठ प्रकाशित कर सके हैं तथा अथर्ववेद का सरल पाठ भी आपकी सेवा में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त कर पा रहे हैं। आशा की जानी चाहिए कि ऋग्वेद का सरल पाठ भी हम इसी वर्ष प्रस्तुत कर सकेंगे।वेदभाष्य के रूप में हम यजुर्वेद के प्रथम पांच अध्याय सविता पाठ के रूप में तथा अन्तिम सात अध्याय शिव पर्व के रूप में प्रस्तुत कर चुके हैं। वेदायन के रूप में वेदसूक्तों का काव्यानुवाद प्रस्तुत किया गया है। वेद सूक्तायन के रूप में में भी हम वेदभाष्य की दिशा में एक प्रयास आपके समक्ष पहले ही प्रस्तुत कर चुके हैं।

सीमित संसाधनों में वेद-प्रभु की उपासना जो कुछ भी बन पड़ी है, वह परम पिता परमात्मा की कृपा तथा उदारमना परिजनों के सहयोग से ही सम्भव हो पा रहा है। यह पवित्र कार्य प्रारम्भ ही न हो पाता यदि डॉ. उमेश पालीवाल जी ने वेदकार्य को सरल रूप में जन सामान्य तक पहुँचाने में उदार सहयोग का पवित्र संकल्प न लिया होता। उन्होंने पालीवाल प्रकाशन के रूप में आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न कार्यालय उपलब्ध कराया तथा समय - समय पर आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। यह सम्पूर्ण कार्य इसी से हो पा रहा है। यह कार्य जितना कुछ भी बन सकेगा, मेरे जीवन काल में अथवा उसके पश्चात् हमारे सहयोगी युवा देवमण्डल के माध्यम से, उसका श्रेय डॉ. उमेश पालीवाल जी को मिलना ही चाहिए। इस वेदसेवा तथा शोधकार्य के प्रकाशन तथा प्रचार -प्रसार की सामर्थ्य भी उनमें ही है, अतः इसका दायित्व तथा अधिकार स्वाभाविक रूप से उनका है ही। सहयोगी युवा देवमण्डल उनके संरक्षण में कार्य करने में सक्षम है। हम तो स्वयम् को उनका धन्यवाद कर पाने की स्थिति में भी नहीं पा रहे हैं।

डॉ. कृष्णदत्त जी ने भी कठिन समय में महत्वपूर्ण सहयोग देकर हमारा मनोबल बनाये रखने का कार्य किया है, इसके लिए हम उनके अतीव आभारी हैं। हम अपने अन्य सभी उदारमना सहयोगियों के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

हमारे वेद तथा संस्कृत भाषा को सरल एवम् जन साधारण के लिए बोधगम्य बनाने के इस प्रयास में श्री अमित गुप्त जी, श्री गौरव श्रीवास्तव जी, श्री राहुल सिंह जी तथा सुश्री हर्षिता अवस्थी जी का योगदान अविस्मरणीय है। श्री अमित गुप्त जी उनमें वरिष्ठ हैं। इस कार्य की व्यवस्था बनाने में उनका महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। परिस्थितिवश उनको प्रबन्धन तथा मुद्रण व्यवस्था का कार्य देखना पड़ा, भविष्य में लेखन-सम्पादन का कार्य भी मुख्यतः उनको ही करना है। परम पिता परमात्मा इस कार्य के लिए उनको आवश्यक संसाधन, मनोबल तथा योग्यता- क्षमता प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

युवा सहयोगी श्री गौरव श्रीवास्तव जी ने निष्ठा, समर्पण तथा परिश्रम पूर्वक इस अमृत विद्या को सीखा - समझा तथा कार्य किया, उससे हमारी आशा - अपेक्षा बढ़ी है। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री गौरव जी इस देवकार्य को आगे बढ़ायेंगे तथा चारो वेदों का निष्पक्ष एवम् प्रामणिक भाष्य प्रस्तुत करेंगे।

हम कर्म करते हुए शत वर्षों तक सक्रिय जीवन जियें, यह वेद का निर्देश है। वानप्रस्थ-संन्यास की परम्परा हमें दायित्व-भार से अथवा कहें कि अधिकार भावना से मुक्त होने का मार्ग भी दिखाती है। इसमें विरोधाभास नहीं अनुभव होना चाहिए। एक आयु के पश्चात् हमें दायित्व-भार युवा कन्धों पर डालकर कर्म से निर्लिप्त हो जाना चाहिए। जितना हम कर सकते थे, जितना ईश्वर ने हमसे कार्य कराना चाहा था, उतना जैसा भी बन पड़ा, हमने कर दिया। शेष कार्य युवाओं को पूर्ण करना है। यही तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा का सन्देश है, यही निष्काम कर्मयोग है, यही कर्म में लिप्त न होने की भावना है। न कर्म लिप्यते नरे कहकर वेद भगवान् ने भी यही आश्वासन तथा मार्गदर्शन दिया है। कर्म तो करना है, परन्तु उसके फल की चिन्ता का भार नहीं ढोना है। कार्य का उचित फल तो होगा ही, उसमें परिवर्तन कर पाना किसी के वश की बात नहीं है। जो लक्ष्य हम नहीं पा सके, उसको लेकर भी हमें चिन्ता नहीं करनी है। स्वीकार करें कि ईश्वर ने हमसे इतना ही कार्य करना चाहा था, अतः हम इतना ही कर सके।

इसी भावना के साथ अब हम अपने को मुक्त कर रहे हैं। चारो वेदों का सरल पाठ तैयार हो गया है, यजुर्वेद के प्रथम पाँच तथा अन्तिम सात अध्यायों का धातुज पदार्थ भाष्य प्रकाशित हो गया है। इन बारह अध्यायों को यजुर्वेदीय कर्मयोग द्वादशी के रूप में स्वीकार करना है। सरल संस्कृत व्याकरण तथा धात्वादि कोश भी प्रकाशित हो गये हैं। इनकी सहायता से सम्पूर्ण वेद का अर्थ भाष्य करना सरलता से सम्भव हो गया है। हमारे युवा सहयोगी श्री गौरव जी चारो वेदों का धातुज शब्दकोश तैयार करने में सक्षम हैं। अवसर मिले तो वे वेदभाष्य के साथ ही पाणिनीय अष्टाध्यायी का भी युग की आवश्यकता के अनुरूप सम्पादन कर सकते हैं। वैदिक महापुराण का सम्पादन करना भी उनके लिए कठिन नहीं है। आवश्यक संसाधन जुटाने का दायित्व समाज के साधन-सम्पन्न सज्जनों का है। डॉ. उमेश पालीवाल जी तथा डॉ. कृष्ण दत्त जी का संरक्षण उन्हें प्राप्त है। अब भविष्य में लेखन-सम्पादन का दायित्व श्री गौरव जी ही संभालेंगे। परम पिता परमात्मा उन्हें सफलता प्रदान करे।

यह देवमणडल इस देवकार्य को सफल करे, पूर्णता प्रदान करे हमारी यही शुभकामना है। भविष्य में हमारे समस्त लेखन- सम्पादन कार्य के प्रकाशन तथा प्रचार - प्रसार का दायित्व तथा अधिकार हमारे सहयोगी देवमण्डल को समान रूप से है। संशोधन - परिवर्तन में श्री अमित जी तथा श्री गौरव जी की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए।

आशा है, आप सभी का सहयोग हमारे युवा देवमण्डल को इस वेदकार्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए प्राप्त होता रहेगा।

स्वामी शरण

ॐ

अथर्ववेद

प्रथमम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

मेधाजजन सूक्त 1

1. ये त्रिषप्ताः परियन्ति, विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिः बला तेषाम्, तन्वो अद्य दधातु मे ।।1।।
2. पुनः आ इहि वाचः पते, देवेन मनसा सह।
वसोः पते नि रमय मयि, एव अस्तु मयि श्रुतम्।।2।।
3. इह एव अभि वि तनु, उभे आर्त्नी इव ज्यया।
वाचः पतिः नि यच्छतु मयि, एव अस्तु मयि श्रुतम्।।3।।
4. उपहुतो वाचः पतिः उप अस्मान्, वाचः पतिः ह्वयताम्।
सम् श्रुतेन गमेमहि, मा श्रुतेन वि राधिषि।।4।।

रोग-उपशमन सूक्त 2

5. विद्मा शरस्य पितरम्, पर्जन्यम् भूरि-धायसम्।
विद्मो सु अस्य मातरम्, पृथिवीम् भूरिवर्पसम्।।1।।
6. ज्या के परि णो नम, अश्मानम् तन्वम् कृधि।
वीड़ुः वरीयः अरातीः, अप द्वेषांसि आ कृधि।।2।।
7. वृक्षम् यद् गावः परि-सस्वजाना,
अनुस्फुरम् शरम् अर्चन्ति ऋभुम्।
शरुम् अस्मद् यावय दिद्युम् इन्द्र।।3।।
8. यथा द्याम् च पृथिवीम् च, अन्तः तिष्ठति तेजनम्।
एवा रोगम् च आ-स्रावम् च, अन्तः तिष्ठतु मुञ्ज इत्।।4।।

मूत्र मोचन सूक्त 3

9. विद्मा शरस्य पितरम्, पर्जन्यम् शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते
निसेचनम् बहिः ते अस्तु बाल् इति।।1।।
10. विद्मा शरस्य पितरम्, मित्रम् शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते
नि-षेचनम्, बहिः ते अस्तु बाल् इति।।2।।
11. विद्मा शरस्य पितरम्, वरुणम् शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते
निषेचनम् बहिः ते अस्तु बाल् इति।।3।।
12. विद्मा शरस्य पितरम्, चन्द्रम् शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते
निषेचनम् बहिः ते अस्तु बाल् इति।।4।।
13. विद्मा शरस्य पितरम्, सूर्यम् शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते
निषेचनम् बहिः ते अस्तु बाल् इति।।5।।
14. यत् आन्त्रेषु गवीन्योः, यत् वस्तौ अधि संश्रुतम्।
एवा ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्।।6।।
15. प्र ते भिनद्मि मेहनम्, वर्त्रम् वेशन्त्या इव।
एवा ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्।।7।।
16. विषितम् ते वस्तिबिलम्, समुद्रस्य उदधेः-इव।
एवा ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्।।8।।
17. यथा इषुका परा-अपतत्, अवसृष्टा अधि धन्वनः।
एवा ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्।।9।।

अपांभेसज (जल चिकित्सा) सूक्त 4

18. अम्बयो यन्ति अध्वभिः, जामयो अध्वरीयताम्।
पृञ्चतीः मधुना पयः।।1।।
19. अमूः या उप सूर्ये, याभिः वा सूर्यः सह।
ता नो हिन्वन्तु अध्वरम्।।2।।
20. अपो देवीः उप ह्वये, यत्र गावः पिबन्ति नः।
सिन्धुभ्यः कर्त्वम् हविः।।3।।
21. अप्सु अन्तः अमृतम्, अप्सु भेषजम्।
अपाम् उत प्रशस्तिभिः, अश्वा भवथ वाजिनो।
गावो भवथ वाजिनीः।।4।।

अपांभेसज (जल चिकित्सा) सूक्त 5

22. आपो हि ष्ठा मयोभुवः, ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।।1।।
23. यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयत इह नः
उशतीः-इव मातरः।।2।।
24. तस्मा अरम् गमाम, वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।।3।।
25. ईशाना वार्याणाम्, क्षयन्तीः चर्षणीनाम्।
अपो याचामि भेषजम्।।4।।

अपांभेसज (जल चिकित्सा) सूक्त 6

26. शम् नो देवीः अभिष्टये, आपो भवन्तु पीतये।
शम् योः अभि स्रवन्तु नः।।1।।
27. अप्सु मे सोमो अब्रवीत्, अन्तः विश्वानि भेषजा।
अग्निम् च विश्वशम्भुवम्।।2।।
28. आपः पृणीत भेषजम्, वरूथम् तन्वे मम।
ज्योक् च सूर्यम् दृशे।।3।।
29. शम् नः आपो धन्वन्याः, शम् उ सन्तु अनूप्याः।
शम् नः खनित्रिमा आपः, शम् उ याः कुम्भ
आभृताः, शिवा नः सन्तु वार्षिकीः।।4।।

द्वितीयो अनुवाकः

यातुधाननाशन सूक्त 7

30. स्तुवाम् अग्न आ वह, यातुधानम् किमीदिनम्।
त्वम् हि देव वन्दितो, हन्ता दस्योः बभूविथ।।1।।
31. आजस्य परमेष्ठिन्, जातवेदः तनूवशिन्।
अग्ने तौलस्य प्र अशान, यातुधानम् वि लापय।।2।।
32. वि लपन्तु यातुधाना, अत्त्रिणो ये किमीदिनः।
अथ इदम् अग्ने नो, हविः इन्द्रः च प्रति हर्यतम्।।3।।
33. अग्निः पूर्व आ रभताम्, प्र इन्द्रो नुदतु बाहुमान्।
ब्रवीतु सर्वो यातुमान्, अयम् अस्मि इति आ इत्य।।4।।
34. पश्याम ते वीर्य जातवेदः,
प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः।
त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात्,
त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उप इदम्।।5।।
35. आ रभस्व जातवेदो, अस्माक अर्थाय जज्ञिषे।
दूतो नो अग्ने भूत्वा, यातुधानान् वि लापय।।6।।
36. त्वम् अग्ने यातुधानान्, उप बद्धान् इह आ वह।
अथ एषाम् इन्द्रो वज्रेण अपि शीर्षाणि वृश्चतु।।7।।

यातुधाननाशन सूक्त 8

37. इदम् हविः यातुधानान्, नदी फेनम् इव आ वहत्।
य इदम् स्त्री पुमान् अकः, इह स स्तुवताम् जनः।।1।।
38. अयम् स्तुवान आगमत्, इमम् स्म प्रति हर्यत।
बृहस्पते वशे लब्ध्वा, अग्नीषोमा वि विध्यतम्।।2।।
39. यातुधानस्य सोमप, जहि प्रजा नयस्व च।
नि स्तुवानस्य पातय, परम् अक्षि उत अवरम्।।3।।
40.यत्र एषाम् अग्ने जनिमानि वेत्थ,
गुहा सताम् अत्त्रिणाम् जातवेदः।
तान् त्वम् ब्रह्मणा वावृधानो,
जहि एषाम् शततर्हम् अग्ने।।4।।

विजयप्रार्थना सूक्त 9

41. अस्मिन् वसु वसवो धारयन्तु,
इन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः।
इमम् आदित्या उत विश्वे च देवा,
उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु।।1।।
42. अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः अस्तु,
सूर्यो अग्निः उत वा हिरण्यम्।
सपत्ना अस्मद् अधरे भवन्तु उत्तमम्,
नाकम् अधि रोहय इमम्।।2।।
43. येन् इन्द्राय समभरः पयांसि,
उत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः।
तेन त्वम् अग्न इह वर्धय इमम्,
सजातानाम् श्रैष्ठ्य आ धेहि एनम्।।3।।
44. आ एषाम् यज्ञम् उत वर्चो ददे अहम्,
रायः पोषम् उत चित्तानि अग्ने।
सपत्ना अस्मत् अधरे भवन्तु उत्तमम्,
नाकम् अधि रोहय इमम्।।4।।

पाशविमोचन सूक्त 10

45. अयम् देवानाम् असुरो वि राजति,
वसा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः।
ततः परि ब्रह्मणा शाशदान,
उग्रस्य मन्योः उत् इमम् नयामि।।1।।
46. नमः ते राजन् वरुण अस्तु मन्यवे,
विश्वम् हि उग्र निचिकेषि द्रुग्धम्।
सहस्रम् अन्यान् प्र सुवामि साकम्,
शतम् जीवाति शरदः तव अयम्।।2।।
47. यद् उवक्थ अनृतम्, जिह्वया वृजिनम् बहु।
राज्ञः त्वा सत्यधर्मणो, मुञ्चामि वरुणात् अहम्।।3।।
48. मुञ्चामि त्वा वैश्वानरात्, अर्णवात् महतः परि।
सजातान् उग्र इह आ वद, ब्रह्म चा अप चिकीहि नः।।4।।

नारीसुखप्रसूति सूक्त 11

49. वषट् ते पूषन् अस्मिन्, सूतौ
अर्यमा होता कृणोतु वेधाः।
सिस्रताम् नारी ऋतप्रजाता,
वि पर्वाणि जिहताम् सूतवै।।1।।
50. चतस्रो दिवः प्रदिशः, चतस्रो भूम्या उत।
देवा गर्भ सम् ऐरयन्, तम् वि ऊर्णुवन्तु सूतवे।।2।।
51. सूषा वि ऊर्णोतु वि, योनिम् हापयामसि।
श्रथया सूषणे त्वम् अव, त्वम् विष्कले सृज।।3।।
52. नेव मांसे न पीवसि, नेव मज्जसु आहतम्।
अव एतु पृश्नि शेवलम् शुने जरायु,
अत्तवे अव जरायु पद्यताम्।।4।।
53. वि ते भिनद्मि मेहनम्, वि योनिम् वि गवीनिके।
वि मातरम् च पुत्रम् च वि कुमारम्,
जरायुणा अव जरायु पद्यताम्।।5।।
54. यथा वातो यथा मनो, यथा पतन्ति पक्षिणः।
एव आ त्वम् दशमास्य साकम्, जरायुणा
पत अव जरायु पद्यताम्।।6।।

तृतीयो अनुवाकः

यक्ष्मानाशन सूक्त 12

55. जरायुजः प्रथम उस्रियो वृषा,
वातभ्रजा स्तनयन् एति वृष्टया।
स नो मृडाति तन्व ऋजुगो रूजन्,
य एकम् ओजः त्रेधा विचक्रमे।।1।।
56. अङ्गे अङ्गे शोचिषा शिश्रियाणम्,
नमस्यन्तः त्वा हविषा विधेम।
अङ्कान् समङ्कान् हविषा विधेम,

यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता।।2।।
57. मुञ्च शीर्षक्तया उत कास एनम्,
परुष्परुः आविवेशा यो अस्य।
यो अभ्रजा वातजा यः च शुष्मो,
वनस्पतीन् सचताम् पर्वतान् च।।3।।
58. शम् मे परस्मै गात्राय, शम् अस्तु अवराय मे।
शम् मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः, शम् अस्तु तन्वे मम।।4।।

विद्युत् सूक्त 13

59. नमः ते अस्तु विद्युते, नमः ते स्तनयित्नवे।
नमः ते अस्तु अश्मने, येना दूडाशे अस्यसि।।1।।
60. नमः ते प्रवतो नपाद्, यतः तपः समूहसि।
मृडया नः तनूभ्यो, मयः तोकेभ्यः कृधि।।2।।
61. प्रवतो नपान् नम एव अस्तु तुभ्यम्,
नमः ते हेतये तपुषे च कृण्मः।
विद्म ते धाम परमम् गुहा यत्,
समुद्रे अन्तः निहिता असि नाभिः।3।
62. याम् त्वा देवा असृजन्त विश्व,
इषुम् कृण्वाना असनाय धृष्णुम्।
सा नो मृज विदथे गृणाना, तस्यै ते नमो अस्तु देवि।।4।।

कुलपाकन्या सूक्त 14

63. भगम् अस्या वर्च आ अदिषि, अधि वृक्षादिव स्रजम्।
महाबुध्न इव पर्वतो, ज्योक् पितृषु आस्ताम्।।1।।
64. एषा ते राजन् कन्या, वधूः नि धूयताम् यम।
सा मातुः बध्यताम् गृहे, अथो भ्रातुः अथो पितुः।।2।।
65. एषा ते कुलपा राजन्, ताम् उ ते परि दद्मसि।
ज्योक् पितृषु आसाता, आ शीर्ष्णः समोप्यात्।।3।।
66. असितस्य ते ब्रह्मणा, कश्यपस्य गयस्य च।
अन्तः-कोशमिव जामयो, अपि नह्यामि ते भगमे।।4।।

पुष्टिकर्म सूक्त 15

67. सम् सम् स्रवन्तु सिन्धवः, सम् वाताः सम् पतत्रिणः।
इमम् यज्ञम् प्रदिवो मे जुषन्ताम्,
संस्राव्येण हविषा जुहोमि।।1।।
68. इह एव हवमा यात म इह,
संस्रावणा उत इमम् वर्धयता गिरः।
इह आ एतु सर्वो यः पशुः, अस्मिन् तिष्ठतु या रायिः।।2।।
69. ये नदीनाम् संस्रवन्ति, उत्सासः सदम् अक्षिताः।
तेभिः मे सर्वैः संस्रावैः, धनम् सम् स्रावयामसि।।3।।
70. ये सर्पिषः संस्रवन्ति, क्षीरस्य चोदकस्य च।
तेभिः मे सर्वैः संस्रावैः, धनम् सम् स्रावयामसि।।4।।

शत्रुबाधन सूक्त 16

71. ये अमावास्याम् रात्रिम्, उदस्थुः व्राजम् अत्त्रिणः।
अग्निः तुरीयो यातुहा, सो अस्मभ्यम् अधि ब्रवत्।।1।।
72. सीसाय अधि आह वरुणः, सीसाय अग्निः उप अवति।
सीसम् म इन्द्रः प्र अयच्छत्, तत् अङ्ग यातुचातनम्।।2।।
73. इदम् विष्कन्धम् सहत, इदम् बाधते अत्त्रिणः।
अनेन विश्वा ससहे, या जातानि पिशाच्याः।।3।।
74. यदि नो गाम् हंसि, यदि अश्वम् यदि पूरुषम्।
तम् त्वा सीसेन विध्यामो, यथा नो असो अवीरहा।।4।।

चतुर्थो अनुवाकः

रुधिर-स्राव-निवर्तन-धमनी-बन्धन सूक्त 17

75. अमूः याः यन्ति योषितो, हिरा लोहतवाससः।
अभ्रातर इव जामयः, तिष्ठन्तु हतवर्चसः।।1।।
76. तिष्ठा अवरे तिष्ठ पर, उत त्वम् तिष्ठ मध्यमे।
कनिष्ठिका च तिष्ठति, तिष्ठात् इत् धमनिः मही।।2।।
77. शतस्य धमनीनाम्, सहस्रस्य हिराणाम्।
अस्थुः इत् मध्यमा इमाः, साकम् अन्ता अरंसत।।3।।
78. परि वः सिकतावती, धनूः बृहती अक्रमीत्।
तिष्ठत इलयता सु कम्।।4।।

अलक्ष्मीनाशन सूक्त 18

79. निः लक्ष्म्यम् ललाभ्यम्, निः अरातिम् सुवामसि।
अथ या भद्रा तानि नः, प्रजाया अरातिम् नयाम् असि।।1।।
80. निः अरणिम् सविता साविषक् पदोः,
निः हस्तयोः वरुणो मित्रो अर्यमा।
निः अस्मभ्यम् अनुमती रराणा,
प्र इमाम् देवा असाविषुः सौभगाय।2।
81. यत्त आत्मनि तन्वाम् घोरम्
अस्ति, यत् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा।
सर्वम् तत् वाचा अप हन्मो वयम्,
देवः त्वा सविता सूदयतु।।3।।
82. रिश्यपदीम् वृषदतीम्, गोषेधाम् विधमाम् उत।
विलीढ्यम् ललाभ्यम्, ता अस्मत् नाशयामासि।।4।।

शत्रुनिवारण सूक्त 19

83. मा नो विदन् विव्याधिनो, मो अभि व्याधिनो विदन्।
आरात् शरव्या अस्मद्, विषूचीः इन्द्र पातय।।1।।
84. विष्वञ्चो अस्मत् शरवः,
पतन्तु ये अस्ता ये च अस्याः।
दैवीः मनुष्येषवो, मम अमित्रान् वि विध्यत।।2।।
85. यो नः स्वो यो अरणः सजात,
उत निष्ट्यो यो अस्मान् अभिदासति।
रुद्रः शरव्य या एतान्, मम अमित्रान् वि विध्यतु।।3।।
86. यः सपत्नो यो असपत्नो, यः च द्विषन् शपाति नः।
देवाः तम् सर्वे धूर्वन्तु, ब्रह्म वर्म मम अन्तरम्।।4।।

शत्रुनिवारण सूक्त 20

87. अदारसृद् भवतु देव सोम,

अस्मिन् यज्ञे मरुतो मृडता नः।
मा नो विदत् अभिभा मो अशस्तिः,
मा नो विदत् वृजिना द्वेष्या या।1।
88. यो अद्य सेन्यो वधो, अघायूनाम् उदीरते।
युवम् तम् मित्रावरुणौ, अस्मत् यावयतम् परि।।2।।
89. इतः च यत् अमुतः, च यत् वधम् वरुण यावय।
वि महत् शर्म यच्छ, वरीयो यावया वधम्।।3।।
90. शास इत्था महान्, असि अमित्रसाहो अस्तृतः।
न यस्य हन्यते सखा, न जीयते कदा चन।।4।।

शत्रुनिवारण सूक्त 21

91. स्वस्तिदा विशाम् पतिः, वृत्रहा विमधो वशी।
वृषा इन्द्रः पुर एतु नः, सोमपा अभयंकरः।।1।।
92. वि न इन्द्र मृधो जहि, नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमम् गमया तमो यो, अस्मान् अभिदासति।।2।।
93. वि रक्षो वि मृधो जहि, वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युम् इन्द्र वृत्रहन्, अमित्रस्य अभिदासतः।।3।।
94. अप इन्द्र द्विषतो मनो, अप जिज्यासतो वधम्।
वि महत् शर्म यच्छ, वरीयो यावया वधम्।।4।।

पञ्चमो अनुवाकः

हृद्-रोगकमलानाशन सूक्त 22

95. अनु सूर्यम् उत् अयताम्, हृद्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन, तेन त्वा परि दध्मसि।।1।।
96. परि त्वा रोहितैः वर्णैः, दीर्घायुत्वाय दध्मसि।
यथा अयम् अरपा, असत् अथो अहरितो भुवत्।।2।।
97. या रोहिणीः देवत्या, गावो या उत रोहिणीः।
रूपम् रूपम् वयोवयः, ताभिः त्वा परि दध्मसि।।3।।
98. सुकेषु ते हरिमाणः, रोपणाकासु दध्मसि।
अथो हारिद्रवेषु ते, हरिमाणम् नि दध्मसि।।4।।

श्वेत कुष्ठ नाशन सूक्त 23

99. नक्तंजाता असि ओषधे, रामे कृष्णे असिक्नि च।
इदम् रजनि रजय, किलासम् पलितम् च यत्।।1।।
100. किलासम् च पलितम्, निरितो नाशया पृषत्।
आ त्वा स्वो विशताम्, वर्णः परा शुक्लानि पातय।।2।।
101. असितम् ते प्रलयनम्, आस्थानम् असितम् तव।
असिक्नि असि ओषधे, निः इतो नाशया पृषत्।।3।।
102. अस्थिजस्य किलासस्य, तनूजस्य च यत् त्वचि।
दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा, लक्ष्म श्वेतम् अनीनशम्।।4।।

श्वेत कुष्ठ नाशन सूक्त 24

103. सुपर्णो जातः प्रथमः, तस्य त्वम् पित्तम् आसिथ।
तत् आसुरी युधा जिता, रूपम् चक्रे वनस्पतीन्।।1।।
104. आसुरी चक्रे प्रथमा इदम्,
किलासभेषजम् इदम् किलासनाशनम्।
अनीनशत् किलासम्, सरूपाम् अकरत् त्वचम्।।2।।
105. सरूपा नाम ते माता, सरूपो नाम ते पिता।
सरूपकृत् त्वम् ओषधे, सा सरूपम् इदम् कृधि।।3।।
106. श्यामा सरूपम् करणी, पृथिव्या अधि उत्-भृता।
इदम् ऊ षु प्र साधय, पुना रूपाणि कल्पय।।4।।

ज्वर नाशन सूक्त 25

107. यत् अग्निः अपो अदहत् प्रविश्य,
यत्र अकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि।
तत्र त आहुः परमम् जनित्रम्,
स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन्।1।
108. यदि अर्चिः यदि वा असि शोचिः,
शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम्।
हूडुः नाम असि हरितस्य देव,
स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन्।2।
109.यदि शोको यदि वा अभिशोको,
यदि वा राज्ञो वरुणस्य असि पुत्रः।
हूडुः नाम असि हरितस्य देव,
स नः संविद्वान् परिव वृङ्ग्धि तक्मन्।3।
110. नमः शीताय तक्मने, नमो रूपाय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येद्युः उभयद्युः अभि एति,
तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने।।4।।

शर्म (सुख) प्राति सूक्त 26

111. आरे असौ अस्मद् अस्तु, हेतिः देवासो असत्।
आरे अश्मा यम् अस्यथ।।1।।
112. सखा असौ अस्मभ्यम् अस्तु,
रातिः सखा इन्द्रो भगः।
सविता चित्रराधाः।।2।।
113. यूयम् नः प्रवतो नपात्, मरुतः सूर्यत्वचसः।
शर्म यच्छाथ सप्रथाः।।3।।
114. सुषूदत मृडत मृडया नः तनूभ्यो,
मयः तोकेभ्यः कृधि।।4।।

स्वस्ति अयन सूक्त 27

115. अमूः पारे पृदाक्वः, त्रिषप्ता नः जरायवः।
तासाम् जरायुभिः वयम् अक्ष्यौ,
अपि व्ययामसि अघायोः परिपन्थिनः।1
116. विषूची एतु कृन्तती, पिनाकमिव बिभ्रती।
विष्वक् पुनः भुवा मनो, असमृद्धा अघायवः।।2।।
117. न बहवः सम् अशकन्, न अर्भका अभि दाधृषुः।
वेणोः अद्गा इव अभितो, असमृद्धा अघायवः।।3।।
118. प्र इतम् पादौ प्र स्फुरतम्, बहतम् पृणतो गृहान्।
इन्द्राणी एतु प्रथमा, अजीता अमुषिता पुरः।।4।।

रक्षोघ्न सूक्त 28

119. उप प्र अगात् देवो अग्नी, रक्षोहा अमीवचातनः।
दहन् अप द्वयाविनो, यातुधानान् किमीदिनः।।1।।
120. प्रति दह यातुधानान्, प्रति देव किमीदिनः।
प्रतीचीः कृष्णवर्तने, सम् दह यातुधान्यः।।2।।
121. या शशाप शपनेन, या अघम् मूरम् आदधे।
या रसस्य हरणाय जातम्, आरेभे तोकम् अत्तु सा।।3।।
122. पुत्रम् अत्तु यातुधानीः, स्वसारम् उत नप्त्यम्।
अधा मिथो विकेश्यो वि घ्नताम्,
यातुधान्यो वि तृह्यन्ताम् अराय्यः।4

षष्ठो अनुवाकः

राष्ट्र अभिवर्धन, सपत्नक्षयण सूक्त 29

123. अभीवर्तेन मणिना, येन इन्द्रो अभि वावृधे।
तेन अस्मान् ब्रह्मणः, पते अभि राष्ट्राय वर्धय।।1।।
124. अभिवृत्य सप्तनान्, अभि या नो अरातयः।
अभि पृतन्यन्तम्, तिष्ठ, अभि यो नो दुरस्यति।।2।।
125. अभि त्वा देवः सविता, अभि सोमो अवीवृधत्।
अभि त्वा विश्वा भूतानि, अभिवर्तो यथा असंसि।।3।।
126. अभीवर्तो अभिभवः, सपत्नक्षयणो मणिः।
राष्ट्राय मह्यम् बध्यताम्, सपत्नेभ्यः पराभुवे।।4।।
127. उत् असौ सूर्यो अगात्, उत् इदम् मामकम् वचः।
यथा अहम् शत्रुहो असानि, असपत्नः सपत्नहा।।5।।
128. सपत्नक्षयणो वृषा, अभिराष्ट्रो विषासहिः।
यथा अहम् एषाम् वीराणाम्, विराजानि जनस्य च।।6।।

दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 30

129. विश्वे देवा वसवो रक्षते इमम्,
उत आदित्या जागृत यूयम् अस्मिन्।
मा इमम् सनाभिः उत वा अन्यनाभिः,
मा इमम् प्रापत् पौरुषेयो वधो यः ।।1।।
130. ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः,
सचेतसो मे शृणुत इदम् उक्तम्।
सर्वेभ्यो वः परि ददामि एतम्,
स्वस्ति एनम् जरसे वहाथ।।2।।
131. ये देवा दिवि स्थ ये पृथिव्याम्,
ये अन्तरिक्ष ओषधीषु पशुषु अप्सु अन्तः।
ते कृणुत जरसम् आयुः अस्मै, शतम्
अन्यान् परि वृणक्तु मृत्तयून्।3।
132. येषाम् प्रयाजा उत वा अनुयाजा,
हुतभागा अहुतादः च देवाः।
येषाम् वः पञ्च प्रदिशो विभक्ताः,
तान् वो अस्मै सत्रसदः कृणोमि।4।

पाशमोचन सूक्त 31

133. आशानाम् अशापालेभ्यः, चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः।
इदम् भूतस्य अध्यक्षेभ्यो, विधेम हविषा वयम्।।1।।
134. य आशानाम् अशापालाः, चत्वार स्थन देवाः।
ते नो निर्ऋत्याः पाशेभ्यो, मुञ्चता अंहसो-अंहसः।।2।।
135. अस्रामः त्वा हविषा यजामि,
अश्लोणः त्वा घृतेन जुहोमि।
य आशानाम् अशापालः तुरीयो,
देवः स नः सुभूतम् आ इह वक्षत्।।3।।
136. स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु,
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वम् सुभूतम् सुविदत्रम्,
नो अस्तु ज्योक् एव दृशेम सूर्यम्।।4।।

महद्ब्रह्म सूक्त 32

137. इदम् जनासो विदथ, महत् ब्रह्म वदिष्यति।
न तत् पृथिव्याम् नो दिवि, येन प्राणन्ति वीरुधः।।1।।
138. अन्तरिक्ष आसाम्, स्थाम श्रान्तसदामिव।
आस्थानम् अस्य भूतस्य, विदुः तत् वेधसो न वा।।2।।
139. यत् रोदसी रेजमाने, भूमिः च निरतक्षतम्।
आर्द्रम् तत् अद्य सर्वदा, समुद्रस्य एव स्रोत्याः।।3।।
z40. विश्वम् अन्याम् अभीवार,
तत् अन्यस्याम् अधि श्रितम्।
दिवे च विश्ववेदसे, पृथिव्यै च अकरम् नमः।।4।।

आपः सूक्त 33

141. हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका,
यासु जातः सविता यासु अग्निः।
आ अग्नि गर्भम् दधिरे सुवर्णाः,
ता न आपः शम् स्योना भवन्तु।।1।।
142. यासाम् राजा वरुणो याति,
मध्य सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम्।
आ अग्नि गर्भम् दधिरे सुवर्णाः,
ता न आपः शम् स्योना भवन्तु।।2।।
143. यासाम् देवा दिवि कृण्वन्ति,
भक्षम् या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
या अग्निम् गर्भम् दधिरे सुवर्णाः,
ता न आपः शम् स्योना भवन्तु।3।
144. शिवेन मा चक्षुषा पश्यत आपः,
शिवया तन्वा उप स्पृशत त्वचम् मे।
घृतश्.चुतः शुचयो याः पावकाः,
ता न आपः शम् स्योना भवन्तु।।4।।

मधुविद्या सूक्त 34

145. इयम् वीरूत् मधुजाता, मधुना त्वा खनामसि।
मधोः अधि प्रजाता असि, सा नो मधुमतः कृधि।।1।।
146. जिह्वाया अग्रे मधु मे, जिह्वामूले मधूलकम्।

170. दीर्घायुत्वाय बृहते रणाय,
अरिष्यन्तो दक्षमाणाः सदा एव।
मणिम् विष्कन्धदूषणम्, जङ्गिडम् बिभृमो वयम्।।1।।
171. जङ्गिडो जम्भात् विशरात्,
विष्कन्धात् अभिशोचनात्।
मणिः सहस्रवीर्यः, परि णः पातु विश्वतः।।2।।
172. अयम् विष्कन्धम् सहते, अयम् बाधते अत्रिणः।
अयम् नो विश्वभेषजो, जङ्गिडः पातु अंहसः।।3।।
173. देवैः दत्तेन मणिना, जङ्गिडेन मयोभुवा।
विष्कन्धम् सर्वा रक्षांसि, व्यायामे सहामहे।।4।।
174. शणः च जङ्गिडः च, विष्कन्धात् अभि रक्षताम्।
अरण्यात् अन्य आभृतः, कृष्या अन्यो रसेभ्यः।।5।।
175. कृत्यादूषिः अयम्, मणिः अथो अरातिदूषिः।
अथो सहस्वान् जङ्गिडः, प्र ण आयूंषि तारिषत्।।6।।

इन्द्रशौर्य सूक्त 5

176. इन्द्र जुषस्व प्र वह, आ याहि शूर हरिभ्याम्।
पिबा सुतस्य मतेः इह, मधोः चकानः चारुः मदाय।।7।।
177. इन्द्र जठरम् नव्यो, न पृणस्व मधोः दिवो न।
अस्य सुतस्य स्वः न, उप त्वा मदाः सुवाचो अगुः।।2।।
178. इन्द्रः तुराषाण्मित्रो, वृत्रम् यो जघान यतीः न।
बिभेद बलम् भृगुः न, ससहे शत्रून् मदे सोमस्य।।3।।
179. आ त्वा विशन्तु सुतास इन्द्र पृणस्व,
कुक्षी विड्ढि शक्र धिया इहि आ नः।
श्रुधी हवम् गिरो मे जुषस्व इन्द्र,
स्वयुग्भिः मत्स्व इह महे रणाय।4।
180. इन्द्रस्य नु प्रा वोचम् वीर्याणि,
यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन् अहिम् अनु अपः ततर्द,
प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्।।5।।
181.अहन् अहिम् पर्वते शिश्रियाणम्,
त्वष्टा अस्मै वज्रम् स्वर्यम् ततक्ष।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना, अञ्जः
समुद्रम् अव जग्मुः आपः।।6।।
182. वृषायमाणो अवृणीत सोमम्,
त्रिकद्रुकेषु अपिबत् सुतस्य।
आ सायकम् मघवा अदत्त वज्रम्,
अहन् एनम् प्रथमजाम् अहीनाम्।।7।।

द्वितीयो अनुवाकः

सपत्नहा अग्नि सूक्त 6

183. समाः त्वा अग्न ऋतवो वर्धयन्तु,
संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या।
सम् दिव्येन दीदिहि रोचनेन,
विश्वा आ भाहि प्रदिशः चतस्रः।।1।।
184. सम् च इध्यस्व अग्ने प्र च वर्धय,
इमम् उत च तिष्ठ महते सौभगाय।
मा ते रिषन् उपसत्तारो अग्ने,
ब्रह्माणः ते यशसः सन्तु मान्ये।।2।।
185. त्वाम् अग्ने वृणते ब्राह्मणा,
इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः।
सपत्नहा अग्ने अभिमातिजित्
भव, स्वे गये जागृहि अप्रयुच्छन्।।3।।
186. क्षत्रेण अग्ने स्वेन सम् रभस्व,
मित्रेण अग्ने मित्रधा यतस्व।
सजातानाम् मध्यम् अस्था राज्ञाम्,
अग्ने विहव्यो दीदिहि इह।4।
187. अति निहो अति सृधो, अति अचित्तीः अति द्विषः।
विश्वा हि अग्ने दुरिता तर त्वम्,
अथ अस्मभ्यम् सहवीरम् रयिम् दाः।

शापमोचन सूक्त 7

188. अघद्विष्टा देवजाता, वीरुत् शपथयोपनी।
आपो मलमिव प्र अनैक्षीत्, सर्वान् मत् शपथान् अधि।।1।।
189. यः च सापत्नः शपथो, जाम्याः शपथः च यः।
ब्रह्मा यत् मन्युतः शपात्, सर्वम् तत् नो अधस्पदम्।।2।।
190. दिवो मूलम् अवततम्, पृथिव्या अधि उत्तमम्।
तेन सहस्रकाण्डेन, परि णः पाहि विश्वतः।।3।।
191. परि माम् परि मे प्रजाम्, परि णः पाहि यत् धनम्।
अरातिः नो मा तारीत् मा नः, तारिषुः अभिमातयः।।4।।
192. शप्तारम् एतु शपथो, यः सुहार्त् तेन नः सह।
चक्षुः मन्त्रस्य दुर्हार्दः, पृष्टीः अपि शृणीम् असि।।5।।

क्षेत्रिय-रोगनाशन सूक्त 8

193. उदगाताम् भगवती, विचृतौ नाम तारके।
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चताम्, अधमम् पाशम् उत्तमम्।।1।।
194. अप इयम् रात्रि उच्छतु, अप उच्छन्तु अभिकृत्वरीः।
वीरुत् क्षेत्रियनाशनी, अप क्षेत्रियम् उच्छतु।।2।।
195. बभ्रोः अर्जुनकाण्डस्य यवस्य,
ते पलाल्या तिलस्व तिलपिञ्ज्या।
वीरुत् क्षेत्रियनाशनी, अप क्षेत्रियम् उच्छतु।।3।।
196. नमः ते लाङ्लेभ्यो, नम ईषायुगेभ्यः।
वीरुत् क्षेत्रियनाशनी, अप क्षेत्रियम् उच्छतु।।4।।
197. नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो, नमः
संदेश्येभ्यो, नमः क्षेत्रस्य पतये।
वीरुत् क्षेत्रियनाशनी, अप क्षेत्रियम् उच्छतु।।5।।

दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 9

198. दशवृक्ष मुञ्चेमम् रक्षसो ग्राहि,
आ अधि यैनम् जग्राह पर्वसु।
अथो एनम् वनस्पते, जीवानाम् लोकम् उन्नय।।1।।
199. आ अगात् उत् आगात् अयम्,
जीवानाम् व्रातम् अपि अगात्।
अभूत् उ पुत्राणाम् पिता, नृणाम् च भगवत्तमः।।2।।
200. अधीतीः अधि अगात् अयम्, अधि जीवपुरा अगन्।
शतम् हि अस्य भिषजः, सहस्रम् उत वीरुधः।।3।।
201. देवाः ते चीतिम्, अविदन् ब्रह्माण उत वीरुध।
चीतिम् ते विश्वे देवा, अविदन् भूम्याम् अधि।।4।।
202. यः चकार स निः करत्, स एव सुभिषक्तमः।
स एव तुभ्यम् भेषजानि, कृणवत् भिषजा शुचिः।।5।।

पाशमोचन सूक्त 10

203. क्षेत्रियात् त्वा निः ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्।।1।।
204. शम् ते अग्निः सह अद्भिः अस्तु,
शम् सोमः सह ओषधीभिः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निः ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।2।।
205. शम् ते वातो अन्तरिक्षे वयो धात्,
शम् ते भवन्तु प्रदिशः चतस्रः
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।3।।
206. इमा या देवीः प्रदिशः चतस्रो,
वातपत्नीः अभि सूर्यो विचष्टे।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।4।।
207. तासु त्वा अन्तः जरसि अदधामि,
प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।5।।
208. अमुक्था यक्ष्मात् दुरितात्,
अवद्यात् द्रुहः पाशात्, ग्राह्याः च उत् अमुक्थाः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।6।।
209. अहा अरातिम् अविदः स्योनम्,
अपि अभूः भद्रे सुकृतस्य लोके।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।7।।
210. सूर्यम् ऋतम् तमसो ग्राह्या अधि,
देवा मुञ्चन्तो असृजन् निरेणसः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्, निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।।8।।

श्रेयः प्राप्ति सूक्त 11

211. दूष्या दूषिः असि, हेत्या हेतिः असि,
मेन्या मेनिः असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम।।1।।
212. स्रक्त्यो असि प्रतिसरो असि, प्रति अभिचरणो असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम।।2।।
213. प्रति तम् अभि चर यो, अस्मान्
द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम।।3।।
214. सूरिः असि, वर्चोधा असि, तनूपानो असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम।।4।।
215. शुक्रो असि भ्राजो असि, स्वः असि ज्योतिः असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 12

216. द्यावापृथिवी उरु अन्तरिक्षम्,
क्षेत्रस्य पत्नी उरुगायो अद्भुतः।
उत अन्तरिक्षम् उरु वातगोपम्,
त इह तप्यन्ताम् मयि तप्यमाने।।1।।
217. इदम् देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ,
भरद्वाजो मह्यम् उक्थानि शंसति।
पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यताम्,
यो अस्माकम् मन इदम् हिनस्ति।।2।।
218. इदम् इन्द्र शृणुहि सोमप,
यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि।
वृश्चामि तम् कुलिशेनेव वृक्षम्,

मम इत् अह ऋतौ असो, मम चित्तम् उपायसि।।2।।
147. मधुमत् मे निक्रमणम्, मधुमत् मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमत्, भूयासम् मधुसन्दृशः।।3।।
148. मधोः अस्मि मधुतरो, मधुघान् मधुमत्तरः।
माम् इत् किल त्वम्, वनाः शाखाम् मधुमतीमिव।।4।।
149. परि त्वा परितत्नुना, इक्षुणा अगाम् अविद्विषे।
यथा माम् कामिनी असो, यथा मत् अपगा असः।।5।।

दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 35

150. यत् अबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यम्,
शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तत् ते बध्नामि आयुषे वर्चसे,
बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।।1।।
151. नैनम् रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते,
देवानाम् ओजः प्रथमजम् हि एतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायण् हिरण्यम्,
स जीवेषु कृणुते दीर्घम् आयुः।।2।।
152. अपाम् तेजो ज्योतिः ओजो बलम्,
च वनस्पतीनाम् उत वीर्याणि।
इन्द्र इव इन्द्रियाणि अधि धारयामो,
अस्मिन् तत् दक्षमाणो बिभरत् हिरण्यम्।3।
153. समानाम् मासाम् ऋतुभिः त्वा वयम्,
संवत्सरस्य पयसा पिपर्मि।
इन्द्राग्नी विश्वे देवाः ते,
अनु मन्यन्ताम् अहृणीयमानाः।।4।।

प्रथमम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

द्वितीयम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

परमधाम सूक्त 1

154. वेनः तत् पश्यत् परमम् गुहा यद्,
यत्र विश्वम् भवति एक रूपम्।
इदम् पृश्निः अदुहत् जायमानाः,
स्वः विदो अभि अनूषत व्राः।।1।।
155. प्र तत् वोचेत् अमृतस्य विद्वान्,
गन्धर्वो धाम परमम् गुहा यत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहा अस्य,
यः तानि वेद स पितुः पिता असत्।2
156. स नः पिता जनिता स उत
बन्धुः, धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानाम् नामध एक एव, तम्
संप्रश्नम् भुवना यन्ति सर्वा।।3।।
157. परि द्यावापृथिवी सद्य आयम्,
उप आतिष्ठे प्रथमजाम् ऋतस्य।
वाचमिव वक्तरि भुवनेष्ठा,
धास्युः एष ननु एषः अग्निः।।4।।
158. परि विश्वा भुवनानि आयम्
ऋतस्य, तन्तु विततम् दृशे कम्।
यत्र देवा अमृतम् आनशानः,
समाने योनौ अधि ऐरयन्त।।5।।

भुवनपति सूक्त 2

159. दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यः पतिः,
एक एव नमस्यो विक्षु ईड्यः।
तम् त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव,
नमः ते अस्तु दिवि ते सधस्थम्।1।
160. दिवि स्पृष्टो यजतः सूर्यत्वक्,
अवयाता हरसो दैव्यस्य।
मृडात् गन्धर्वो भुवनस्य यः पतिः,
एक एव नमस्यः सुशेवाः।।2।।
161. अनवद्याभिः सम् उ जग्म,
आभिः अप्सरासु अपि गन्धर्व आसीत्।
समुद्र आसाम् सदनम् म आहुः,
यतः सद्य आ च परा च यन्ति।।3।।
162. अभ्रिये दिद्युत् नक्षत्रिये या,
विश्वावसुम् गन्धर्वम् सचध्वे।
ताभ्यो वो देवीः नम इत् कृणोमि।।4।।
163. याः क्लन्दाः तमिषीचयो, अक्षकामा मनोमुहः।
ताभ्यो गन्धर्वपत्नीभ्यो, अप्सराभ्यो अकरम् नमः।।5।।

आस्रवाभेषज सूक्त 3

164. अदो यत् अवधावति, अवत्कम् अधि पर्वतात्।
तत् ते कृणोमि भेषजम्, सुभेषजम् यथा असिसि।।1।।
165. आत् अङ्गा कुवित् अङ्गा, शतम् या भेषजानि ते।
तेषाम् असि त्वम् उत्तमम, अनास्रावम् अरोगणम्।।2।।
166. नीचैः खनन्ति असुरा, अरुस्राणम् इदम् महत्।
तत् आस्रावस्य भेषजम्, तत् उ रोगम् अनीनशत्।।3।।
167. उपजीका उत् भरन्ति, समुद्रात् अधि भेषजम्।
तत् आस्रावस्य भेषजम्, तत् उ रोगम् अशीशमत्।।4।।
168. अरुस्राणम् इदम् महत्, पृथिव्या अधि उद्भृतम्।
तत् आस्रावस्य भेषजम्, तत् उ रोगम् अनीनशत्।।5।।
169. शम् नो भवन्तु, आप ओषधयः शिवाः।
इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षस, आरात्
विसृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम्।6

दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 4

यो अस्माकम् मन इदम् हिनस्ति।।3।।
219.अशीतिभिः तिसृभिः, सामगेभिः
आदित्येभिः, वसुभिः अङ्गिरोभिः।
इष्टापूर्तम् अवतु नः पितृणाण्,
आ अमुम् ददे हरसा दैव्येन।।4।।
220. द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथाम्,
विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम्।
अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापम्,
आ ऋच्छतु अपकामस्य कर्ता।।5।।
221. अतीव यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म,
वा यो निन्दिषत् क्रियमाणम्।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु,
ब्रह्मद्विषम् द्यौः अभिसंतपाति।।6।।
222. सप्त प्राणान् अष्टौ मन्यः, तान् ते वृश्चामि ब्रह्मणा।
अया यमस्य सादनम्, अग्निदूतो अरङ्कृतः।।7।।
223. आ दधामि ते पदम्, समिद्धे जातेवेदसि।
अग्निः शरीरम् वेवेष्टु, असुम् वाक् अपि गच्छतु।।8।।

दीर्घायु प्राप्ति सूक्त 13

224. आयुः दा अग्ने जरसम् वृणानो,
घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने।
घृतम् पीत्वा मधु चारु गव्यम् पिता,
इव पुत्रान् अभि रक्षतात् इमम्।1।
225. परि धत्त धत्त नो वर्चसा इमम्,
जरामृत्युम् कृणुत दीर्घम् आयुः।
बृहस्पतिः प्र अयच्छत् वास, एतत्
सोमाय राज्ञे परिधातवा उ।।2।।
226. परि इदम् वासो अधिथाः स्वस्तये,
अभूः गृष्टीनाम् अभिशस्तिपा उ।
शतम् च जीव शरदः पुरूची रायः,
च पोषम् उप सम् व्ययस्व।।3।।
227. आ इहि अश्मानम्, आ तिष्ठ अश्मा भवतु ते तनूः।
कृण्वन्तु विश्वे देवा, आयुः ते शरदः शतम्।।4।।
228.यस्य ते वासः प्रथमवास्यम् हरामः,
तम् त्वा विश्वे अवन्तु देवाः।
तम् त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानम्,
अनु जायन्ताम् बहवः सुजातम्।5।

दस्यु-नाशन सूक्त 14

229. निः सालाम् धृष्णुम् धिषणम्,
एकवाद्याम् जिघत्स्वम्।
सर्वाः चण्डस्य नप्त्यो, नाशयामः सदान्वाः।।1।।
230. निः वो गोष्ठात् अजामसि,
निः अक्षात् निः उपानसात्।
निः वो मगुन्द्या दुहितरो, गृहेभ्यः चातयामहे।।2।।
231. असौ यो अधरात्, गृहः तत्र सन्तु अराय्यः।
तत्र सेदिः नि उच्यतु, सर्वाः च यातुधन्यः।।3।।
232. भूतपतिः निः अजतु, इन्द्रः च इतः सदान्वाः।
गृहस्य बुध्न आसीनाः, ता इन्द्रो वज्रेण अधि तिष्ठतु।।4।।
233. यदि स्थ क्षेत्रियाणाम्, यदि वा पुरुषेषिताः।
यदि स्थ दस्युभ्यो जाता, नश्यत इतः सदान्वाः।।5।।
234. परि धामानि आसाम्, आशुः गाष्ठाम् इव असरन्।
अजैषम् सर्वान् आजीन्, वो नश्यत इतः सदान्वाः।।6।।

अभय-प्राप्ति सूक्त 15

235. यथा द्यौः च पृथिवी च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः।।1।।
236. यथा अहः च रात्री च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः।।2।।
237. यथा सूर्यः च चन्द्रः च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः।।3।।
238. यथा ब्रह्म च क्षत्रम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः।।4।।
239. यथा सत्यम् च अनृतम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः।।5।।
240. यथा भूतम् च भव्यम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः।।2।।

सुरक्षा सूक्त 16

241. प्राणापानौ मृत्योः, मा पातम् स्वाहा।।1।।
242. द्यावापृथिवी उपश्रुत्या, मा पातम् स्वाहा।।2।।
243. सूर्य चक्षुषा, मा पाहि स्वाहा।।3।।
244. अग्ने वैश्वानर विश्वैः, मा देवैः पाहि स्वाहा।।4।।
245. विश्वम्भर विश्वेन, मा भरसा पाहि स्वाहा।।5।।

बलप्राप्ति सूक्त 17

246. ओजो असि, ओजो मे दाः स्वाहा।।1।।
247. सहो असि, सहो मे दाः स्वाहा।।2।।
248. बलम् असि, बलम् मे दाः स्वाहा।।3।।
249. आयुः असि, आयुः मे दाः स्वाहा।।4।।
250. श्रोतम् असि, श्रोत्रम् मे दाः स्वाहा।।5।।
251. चक्षुः असि, चक्षुः मे दाः स्वाहा।।6।।
252. परिपाणम् असि, परिपाणम् मे दाः स्वाहा।।7।।

चतुर्थो अनुवाकः

शत्रुनाशन सूक्त 18

253. भ्रातृव्यक्षयणम् असि,
भ्रातव्यचातनम् मे दाः स्वाहा।।1।।
254. सपत्नक्षयणम् असि,

सपत्नचातनम् मे दाः स्वाहा।।2।।
255. अरायक्षयणम् असि,
अरायचातनम् मे दाः स्वाहा।।3।।
256. पिशाचक्षयणम् असि,
पिशाचचातनम् मे दाः स्वाहा।।4।।
257. सदान्वाक्षयणम् असि,
सदान्वाचातनम् मे दाः स्वाहा।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 19

258. अग्ने यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।1।।
259. अग्ने यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।2।।
260. अग्ने यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।3।।
261. अग्ने यत् ते शोचिः तेन तम् प्रति शोच,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।4।।
262. अग्ने यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 20

263. वायो यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।1।।
264. वायो यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।2।।
265. वायो यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।3।।
266. वायो यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।4।।
267. वायो यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 21

268. सूर्य यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।1।।
269. सूर्य यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।2।।
270. सूर्य यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।3।।
271. सूर्य यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।4।।
272. सूर्य यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 22

273. चन्द्र यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।1।।
274. चन्द्र यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।2।।
275. चन्द्र यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।3।।
276. चन्द्र यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।4।।
277. चन्द्र यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 23

278. आपो यत् वः तपः, तेन तम् प्रति तपत।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।।1।।
279. आपो यत् वो हरः, तेन तम् प्रति हरत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।2।।
280. आपो यत् वो अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्चत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।3।।
281. आपो यत् वः शोचिः, तेन तम् प्रति शोचत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।4।।
282. आपो यत् वः तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणुत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 24

283. शेरभक शेरभ पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।1।।
284. शेवृधक शेवृध पुनः,
वो यन्तु यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः
प्राहैत् तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।2।।
285. म्रोक अनुम्रोक पुनः, वो यन्तु
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।3।।
286. सर्प अनुपसर्प पुनः,
वो यन्तु यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।4।।
287. जूर्णि पुनः वो यन्तु यातवः, पुनः हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः,
प्राहैत् तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।5।।
288. उपब्धे पुनः वो यन्तु यातवः, पुनः हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत् ,

तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।6।।
289. अर्जुनि पुनः वो यन्तु यातवः,
पुनः हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः
प्राहैत् तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।7।।
290. भरूजि पुनः वो यन्तु यातवः, पुनः हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः
प्राहैत् तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त।।8।।

पृश्निपर्णी सूक्त 25

291. शम् नो देवी पृश्निपर्णी, अशम् निर्ऋत्या अकः।
उग्रा हि कण्वजम्भनी, ताम् अभक्षि सहस्वतीम्।।1।।
292. सहमाना इयम् प्रथमा, पृश्निपर्णी अजायत।
तया अहम् दुर्णाम्नाम् शिरो, वृश्चामि शकुनेरिव।।2।।
293. अरायम् असृक्पावानम्, यः च स्फातिम् जिहीर्षति।
गर्भादम् कण्वम् नाशय, पृश्निपर्णि सहस्व च।।3।।
294. गिरिम् एनान् आ वेशय, कण्वान् जीवितयोपनान्।
तान् त्वम् देवि पृश्निपर्णी, अग्निरिव अनुदहन् इहि।।4।।
295. पराच यत्र एनान् प्र णुद, कण्वान् जीवितयोपनान्।
तमांसि यत्र गच्छन्ति, तत् क्रव्यादो अजीगमम्।।5।।

पशुसंवर्धन सूक्त 26

296. आ इह यन्तु पशवो ये परेयुः,
वायुः येषाम् सहचारम् जुजोष।
त्वष्टा येषाम् रुपधेयानि वेदास्मिन्,
तान् गोष्ठे सविता नि यच्छतु।।1।।
297. इमम् गोष्ठम् पशवः सम् स्रवन्तु,
बृहस्पतिः आ नयतु प्रजानन्।
सिनीवाली नयतु आग्रम् एषाम्,
आजग्मुषो अनुमते नि यच्छ।।2।।
298. सम् सम् स्रवन्तु पशवः, सम् अश्वा सम् उ पूरुषाः।
सम् धान्यस्य या स्फातिः, संस्राव्येण हविषा जुहोमि।।3।।
299. सम् सिञ्चामि गवाम् क्षीरम्,
सम् आज्येन बलम् रसम्।
संसिक्ता अस्माकम् वीरा, ध्रुवा गावो मयि गोपतौ।।4।।
300. आ हरामि गवाम् क्षीरम्, आ अहार्षम् धान्यम् रसम्।
आहृता अस्माकम् वीरा, आ पत्नीः इदम् अस्तकम्।।5।।

पञ्चमो अनुवाकः

शत्रुपराजय सूक्त 27

301. न इत् शत्रुः प्राशम् जयाति, सहमाना अभिभूः असि।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।1।।
302. सुपर्णः त्वा अनु अविन्दत्,
सूकरः त्वा अखनत् नसा।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।2।।
303. इन्द्रो ह चक्रे त्वा, बाहौ असुरेभ्य स्तरीतवे।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।3।।
304. पाटाम् इन्द्रो वि आश्नात्, असुरेभ्य स्तरीतवे।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।4।।
305. तया अहम् शत्रून साक्ष, इन्द्रम् सालावृकान् इव।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।5।।
306. रुद्र जलाषभेषज, नीलशिखण्ड कर्मकृत्।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।6।।
307. तस्य प्राशम् त्वम् जहि, यो न इन्द्र अभि दासति।
अधि नो ब्रूहि शक्तिभिः, प्राशि माम् उत्तरम् कृधि।।7।।

दीर्घायु-प्राप्ति सूक्त 28

308. तुभ्यम् एव जरिमन् वर्धताम् अयम्,
मा इमम् अन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतम् ये।
माता इव प्रमना उपस्थे मित्र, एनम्
मित्रियात् पातु अंहसः।।1।।
309. मित्र एनम् वरुणो वा रिशादा,
जरामृत्युम् कृणुताम् संविदानौ।
तत् अग्निः होता वयुनानि विद्वान्,
विश्वा देवानाम् जनिमा विवक्ति।2।
310. त्वम् ईशिषे पशूनाम् पार्थिवानाम्,
ये जाता उत वा ये जनित्राः।
मा इमम् प्राणो हासीत मो अपानो,
मा इमम् मित्रा वधिषुः मो अमित्राः।।3।।
311. द्यौः त्वा पिता पृथिवी माता,
जरामृत्युम् कृणुताम् संविदाने।
यथा जीवा अदितेः उपस्थे, प्राणापानाभ्याम्
गुपितः शतम् हिमाः।।4।।
312. इमम् अग्न आयुषे वर्चसे नय,
प्रियम् रेतो वरुण मित्रराजन्।
माता अस्मा अदिते शर्म यच्छ,
विश्वे देवा जरदष्टिः यथासत्।।5।।

दीर्घायुष्य सूक्त 29

313. पार्थिवस्य रसे देवा, भगस्य तन्वो बले।
आयुष्यम् अस्मा अग्निः,
सूर्यो वर्च आ धात् बृहस्पतिः।।1।।
314. आयुः अस्मै धेहि जातवेदः,
प्रजाम् त्वष्टः अधिनिधेहि अस्मै।
रायः पोषम् सवितः आ सुव अस्मै,
शतम् जीवाति शरदः तव अयम्।2।
315. आशीर्ण ऊर्जम् उत सौप्रजास्त्वम्,
दक्षम् धत्तम् द्रविणम् सचेतसौ।
जयम् क्षेत्राणि सहसा अयम् इन्द्र,

कृण्वानो अन्यान् अधरान् सपत्नान्।3
316. इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो,
मरुद्भिः उग्रः प्रहितो न आ अगन्।
एषः वाम् द्यावापृथिवी, उपस्थे मा क्षुधत् मा तृषत्।।4।।
317. ऊर्जम् अस्मा ऊर्जस्वती धत्तम्,
पयो अस्मै पयस्वती धत्तम्।
ऊर्जम् अस्मै द्यावापृथिवी अधाताम्,
विश्वे देवा मरुत ऊर्जम् आपः।।5।।
318. शिवाभिः ते हृदयम् तर्पयामि,
अनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चाः।
सवासिनौ पिबताम् मन्थम् एतम्,
अश्वनो रूपम् परिधाय मायाम्।।6।।
319. इन्द्र एताम् ससृजे विद्धो अग्र ऊर्जाम्,
स्वधाम् अजराम् सा त एषा।
तया त्वम् जीव शरदः सुवर्चा,
मा त आ सुस्रोत् भिषजः ते अक्रन्।।7।।

कामिनी-मनो-अभिमुखीकरण सूक्त 30

320. यथा इदम् भूम्या अधि, तृणम् वातो मथायति।
एव आ मथ्नामि ते मनो, यथा माम्
कामिनी असो, यथा मत् अपागा असः ।।1।।
321. सम् च इत् नयाथो अश्विना, कामिना सम् च वक्षथः।
सम् वाम् भगासो अग्मत, सम् चित्तानि सम् उ व्रता ।।2।।
322. यत् सुपर्णा विवक्षवो, अनमीवा विवक्षवः।
तत्र मे गच्छतात् हवम्, शल्य इव कुल्मलम् यथा।।3।।
323. यत् अन्तरम् तत् बाह्यम्,
यत् बाह्यम् तत् अन्तरम्।
कन्यानाम् विश्वरूपाणाम्, मनो गृभाय ओषधे।।4।।
324. आ इयम् अगन् पतिकामा,
जनिकामो अहम् आ अगमम्।
अश्वः कनिक्रदत् यथा भगेन, अहम् सह आ अगमम्।।5।।

कृमिजम्भन सूक्त 31

325. इन्द्रस्य या मही दृषत्, क्रिमेः विश्वस्य तर्हणी।
तया पिनष्मि सम् क्रिमीन्, दृषदा खल्वान् इव।।1।।
326. दृष्टम् अदृष्टम् अतृहम्, अथो कुरूरुम् अतृहम्।
अल्गण्डून् सर्वान् शलुनान्
क्रिमीन्, वचसा जम्भयामसि।।2।।
327. अल्गण्डून हन्मि महता वधेन,
दूना अदूना अरसा अभूवन्।
शिष्टान् अशिष्टान् नि तिरामि वाचा,
यथा क्रिमीणाम् नकिः उच्छिषातै।।3।।
328. अन्वान्त्र्यम् शीर्षण्यम्, अथो पार्ष्टेयम् क्रिमीन्।
अवस्कवम् व्यध्वरम् क्रिमीन्, वचसा जम्भयामसि।।4।।
329. ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेषु,
ओषधीषु पशुषु अप्सु अन्तः।
ये अस्माकम् तन्वम् आविविशुः,
सर्वम् तत् हन्मि जनिम क्रिमीणाम्।

षष्ठो अनुवाकः

कृमिनाशन सूक्त 32

330. उद्यन् आदित्यः क्रिमीन् हन्तु,
निम्रोचन हन्तु रश्मिभिः।
ये अन्तः क्रिमयो गवि।।1।।
331. विश्वरूपम् चतुः अक्षम्, क्रिमि सारङ्गम् अर्जुनम्।
शृणामि अस्य पृष्टीः, अपि वृश्चामि यत् शिरः।।2।।
332. अत्रिवत् वः क्रिमयो, हन्मि कण्ववत् जमदग्निवत्।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा, सम् पिनष्मि अहम् क्रिमीन्।।3।।
333. हतो राजा क्रिमीणम्, उत एषाम् स्थपतिः हतः।
हतो हतमाता क्रिमीः, हतभ्राता हतस्वसा।।4।।
334. हतासो अस्य वेशसो, हतासः परिवेशसः।
अथो ये क्षुल्लका इव, सर्वे ते क्रिमयो हताः।।5।।
335. प्र ते शृणामि शृङ्गे, याभ्याम् वितुदायसि।
भनद्मि ते कुषुम्भम्, यः ते विषधानः।।6।।

यक्ष्मविबर्हण सूक्त 33

336. अक्षीभ्याम् ते नासिकाभ्याम्,
कर्णाभ्याम् छुबुकात् अधि।
यक्ष्मम् शीर्षण्यम् मस्तिष्कात्,
जिह्वाया वि वृहामि ते।।1।।
337. ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः, कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मम् दोषण्यम् अंसाभ्याम्, बाहुभ्याम् वि वृहामि ते।।2।।
338. हृदयात् ते परि क्लोम्नो, हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मम् मतस्नाभ्याम् प्लीह्नो, यक्नः ते वि वृहामसि।।3।।
339. आन्त्रेभ्यः ते गुदाभ्यो, वनिष्ठोः उदरात् अधि।
यक्ष्मम् कुक्षिभ्याम् प्लाशेः, नाभ्या वि वृहामि ते।।4।।
340. उरुभ्याम् ते अष्ठीवद्भ्याम्, पार्ष्णिभ्याम् प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मम् भसद्यम् श्रोणिभ्याम्,
भासदम् भंससो वि वृहामि ते।।5।।
341. अस्थिभ्यः ते मज्जभ्यः, स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मम् पाणिभ्याम् अङ्गुलिभ्यो,
नखेभ्यो वि वृहामि ते।।6।।
342. अङ्गे अङ्गे लोम्नि लोम्नि, यः ते पर्वणि पर्वणि।
यक्ष्मम् त्वचस्यम् ते वयम् कश्यपस्य,

वीबर्हेण विष्वञ्चम् वि वृहामसि

पशुगण सूक्त 34

343. य ईशे पशुपतिः पशूनाम्,
चतुष्पदाम् उत यो द्विपदाम्।
निष्क्रीतः स यज्ञियम् भागम् एतु,
रायः पोषा यजमानम् सचन्ताम्।1।
344. प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो,
गातुम् धत्त यजमानाय देवाः।
उपाकृतम् शशमानम् यत् अस्थात्,
प्रियम् देवानाम् अपि एतु पाथः।2।
345. ये बध्यमानम् अनु दीध्याना,
अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च।
अग्निः तान् अग्रे प्र मुमोक्तु,
देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः।।3।।
346. ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपो,
विरूपाः सन्तो बहुधा एक रूपाः।
वायुः तान् अग्रे प्र मुमोक्तु,
देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः।।4।।
347. प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे,
प्राणम् अङ्गेभ्यः परि आचरन्तम्।
दिवम् गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः,
स्वर्गम् याहि पथिभिः देवयानैः।।5।।

विश्वकर्मा सूक्त 35

348. ये भक्षयन्तो न वसूनि आनृधुः,
यान् अग्नयो अन्वतप्यन्त धिष्ण्याः।
या तेषाम् अवया दुरिष्टिः स्विष्टिम्,
नः ताम् कृणवत् विश्वकर्मा।।1।।
349. यज्ञपतिम् ऋषय एनसा आहुः,
निर्भक्तम् प्रजा अनुतप्यमानम्।
मथव्यान् स्तोकान् अप यान् रराध,
सम् नः तेभिः सृजतु विश्वकर्मा।2।
350. अदान्यान् सोमपान् मन्यमानो,
यज्ञस्य विद्वान् समये न धीरः।
यत् एनः चकृवान् बद्ध एष तम्,
विश्वकर्मन् प्र मुञ्चा स्वस्तये।।3।।
351. घोरा ऋषयो नमो अस्तु एभ्यः चक्षुः,
यत् एषाम् मनसः च सत्यम्।
बृहस्पतये महिष द्युमत् नमो,
विश्वकर्मन् नमः ते पाहि अस्मान्।।4।।
352. यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिः मुखम् च,
वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमम् यज्ञम् विततम् विश्वकर्मणा
देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।।5।।

पतिवेदन सूक्त 36

353. आ नो अग्ने सुमतिम् संभलो गमेत्,
इमाम् कुमारीम् सह नो भगेन।
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुः,
ओषम् पत्या सौभगम् अस्तु अस्यै।।1।।
354. सोमजुष्टम् ब्रह्मजुष्टम्, अर्यम्णा सम्भृतम् भगम्।
धातुः देवस्य सत्येन, कृणोमि पतिवेदनम्।।2।।
355. इयम् अग्ने नारी पतिम् विदेष्ट,
सोमो हि राजा सुभगाम् कृणोति।
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति,
गत्वा पतिम् सुभगा वि राजतु।।3।।
356. यथा अखरो मघवन् चारुः,
एष प्रियो मृगाणाम् सुषदा बभूव।
एव आ भगस्य जुष्टेयम् अस्तु नारी,
संप्रिया पत्या अविराधयन्ती।।4।।
357. भगस्य नावम् आ रोह, पूर्णाम् अनुपदस्वतीम्।
तया उप प्रतारय, यो वरः प्रतिकाम्यः।।5।।
358. आ क्रन्दय धनपते, वरम् आनसम् कृणु।
सर्वम् प्रदक्षिणम् कृणु, यो वरः प्रतिकाम्यः।।6।।
359. इदम् हिरण्यम् गुल्गुलु, अयम् औक्षो अथो भगः।
एते पतिभ्यः त्वाम् अदुः, प्रतिकामाय वेत्तवे।।7।।
360. आ ते नयतु सविता नयतु, पतिः यः प्रतिकाम्यः।
त्वम् अस्यै धेहि ओषधे।।8।।

द्वितीयम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

तृतीयम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

शत्रुसेना सम्मोहन सूक्त 1

361. अग्निः नः शत्रून् प्रति एतु विद्वान्,
प्रतिदहन् अभिशस्तिम् अरातिम्।
स सेनाम् मोहयतु परेषाम्,
निर्हस्तान् च कृणवत् जातवेदाः।।1।।
362. यूयम् उग्रा मरुत ईदृशे स्थ,
अभि प्र इत मृणत सहध्वम्।

अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे,
अग्निः हि एषाम् दूतः प्रत्येतु विद्वान्।2
363. अमित्रसेनाम् मघवन्, अस्मान् शत्रुयतीम् अभि।
युवम् तान् इन्द्र वृत्रहन्, अग्निः च दहतम् प्रति।।3।।
364. प्रसूत इन्द्र प्रवता हरिभ्याम्,
प्र ते वज्रः प्रमृणन् एतु शत्रून्।
जहि प्रतीचो अनूचः पराचो, विष्वक्
सत्यम् कृणुहि चित्तम् एषाम्।।4।।
365. इन्द्र सेनाम्, मोहय अमित्राणाम्।
अग्नेः वातस्य ध्राज्या, तान् विषूचो वि नाशय।।5।।
366. इन्द्रः सेनाम् मोहयतु, मरुतो घ्नन्तु ओजसा।
चक्षूंषि अग्निः आ दत्ताम्, पुनः एतु पराजिता।।6।।

शत्रुसेना सम्मोहन सूक्त 2

367. अग्निः नो दूतः प्रत्येतु विद्वान्,
प्रतिदहन् अभिशस्तिम् अरातिम्।
स चित्तानि मोहयतु परेषाम्,
निर्हस्तान् च कृणवत् जातवेदाः।।1।।
368. अयम् अग्निः अमूमुहत्, यानि चित्तानि वो हृदि।
वि वो धमतु ओकसः, प्र वो धमतु सर्वतः।।2।।
369. इन्द्र चित्तानि मोहयन्, अर्वाङ् आकूत्या चर।
अग्नेः वातस्य ध्राज्या, तान् विषूचो वि नाशय।।3।।
370. वि आकूतय एषाम्, इत अथो चित्तानि मुह्यत।
अथो यत् अद्य एषाम् हृदि, तत् एषाम् परि निः जहि।।4।।
371. अमीषाम् चित्तानि प्रतिमोहयन्ती,
गृहाण अङ्गानि अप्वे परा इहि।
अभि प्र इहि निः दह हृत्सु शोकैः ग्राह्या,
अमित्रान् तमसा विध्य शत्रून्।।5।।
372. असौ या सेना मरुतः परेषाम् अस्मान्,
आ एति अभि ओजसा स्पर्धमाना।
ताम् विध्यत तमसा अपव्रतेन यथा,
एषाम् अन्यो अन्यम् न जानात्।6

स्वराजपुनः स्थापन सूक्त 3

373. अचिक्रदत् स्वपा इह भुवत्,
अग्ने वि अचस्व रोदसी उरूची।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस,
आ अमुम् नय नमसा रातहव्यम्।।1।।
374. दूरे चित् सन्तम् अरुषास,
इन्द्रम् आ च्यावयन्तु सख्याय विप्रम्।
यत् गायत्रीम् बृहतीम् अर्कम्,
अस्मै सौत्रामण्या दधृषन्त देवाः।।2।।
375. अद्भ्यः त्वा राजा वरुणो ह्वयतु,
सोमः त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः।
इन्द्रः त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः,
श्योनो भूत्वा विश आ पत इमाः।3।
376. श्येनो हव्यम् नयतु आ परस्मात्,
सअन्यक्षेत्रे अपरुद्धम् चरन्तम्।
अश्विना पन्थाम् कृणुताम् सुगम् त,
इमम् सजाता अभिसंविशध्वम्।4।
377. ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः, प्रति मित्रा अवृषत।
इन्द्राग्नी विश्वे देवाः, ते विशि क्षेमम् अदीधरन्।।5।।
378. यः ते हवम् विवदत्, सजातो यः च निष्ट्यः।
अपाञ्चम् इन्द्र तम् कृत्वा, अथ इमम् इह अव गमय।।6।।

सूक्त 3राजासंवरण

379. आ त्वा राष्ट्रम् सह वर्चसा उत् इहि,
प्राङ् विशाम् पतिः एकराट् त्वम् वि राज।
सर्वाः त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तु,
उपसद्यो नमस्यो भव इह।।1।।
380. त्वाम् विशो वृणताम् राज्याय,
त्वाम् इमाः प्रदिशः पञ्च देवीः।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व,
ततो न उग्रो वि भजा वसूनि।।2।।
381.अच्छ त्वा यन्तु हविनः सजाता,
अग्निः दूतो अजिरः सम् चरातै।
जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु,
बहुम् बलिम् प्रति पश्यासा उग्रः।।3।।
382. अश्विना त्वा अग्रे मित्रावरुणा उभा,
विश्वे देवा मरुतः त्वा ह्वयन्तु।
अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व,
ततो न उग्रो वि भजा वसूनि।।4।।
383. आ प्र द्रव परमस्याः परावतः,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्।
तत् अयम् राजा वरुणः तथा आह,
स त्वा अयम् अह्वत् स उप इदम् आ इहि ।।5।।
384. इन्द्रेन्द्र मनुष्याः परा इहि सम्,
हि अज्ञास्था वरुणैः संविदानः।
स त्वा अयम् अह्वत् स्वे सधस्थे,
स देवान् यक्षत् स उ कल्पयात् विशः।।6।।
385. पथ्या रेवतीः बहुधा विरूपाः,
सर्वाः संगत्य वरीयः ते अक्रन्।
ताः त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु,
दशमीम् उग्रः सुमना वश इह।।7।।

राजा और राजकृत सूक्त 5

386. आ अयम् अगन् पर्णमणिः,

बली बलेन प्रमृणन् सपत्नान्।
ओजो देवानाम् पय ओषधीनाम्,
वर्चसा मा जिन्वतु अप्रयावन्।।1।।
387. मयि क्षत्रम् पर्णमणे, मयि धारयतात् रयिम्।
अहम् राष्ट्रस्य अभीवर्गे, निजो भूयासम् उत्तमः।।2।।
388. यम् निदधुः वनस्पतौ, गुह्यम् देवाः प्रियम् मणिम्।
तम् अस्मभ्यम् सह आयुषा, देवा ददतु भर्तवे।।3।।
389. सोमस्य पर्णः सह उग्रम् आ अगन्, इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टः।
तम् प्रियासम् बहु रोचमानो, दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।।4।।
390. आ मा अरुक्षत् पर्णमणिः, मह्या अरिष्टतातये।
यथा अहम् उत्तरो असानि, अर्यम्ण उत संविदः।।5।।
391. ये धीवानो रथकाराः, कर्मारा ये मनीषिणः।
उपस्तीन् पर्ण मह्यम् त्वम्, सर्वान् कृण्वभितो जजान्।।6।।
392. ये राजानो राजकृतः, सूता ग्रामण्यः च ये।
उपस्तीन् पर्ण मह्यम् त्वम्,
सर्वान् कृणु अभितो जजान्।।7।।
393. पर्णो असि तनूपातनः, सयोनिः वीरो वीरेण मया।
संवत्सरस्य तेजसा, तेन बध्नामि त्वा मणे।।8।।

द्वितीयो अनुवाकः

शत्रुनाशन सूक्त 6

394. पुमान् पुंसः परिजातो, अश्वत्थः खदिरात् अधि।
स हन्तु शत्रून् मामकान् यान्,
अहम् द्वेष्मि ये च माम्।।1।।
395. तान् अश्वत्थ निः शृणीहि, शत्रून् वैबाधदोधतः।
इन्द्रेण वृत्रघ्नास मेदी, मित्रेण वरुणेन च।।2।।
396. यथा अश्वत्थ निररभनो, अन्तः महति अर्णवे।
एव आ तान् सर्वान् निर् भङ्ग्धि,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम्।।3।।
397. सः सहमानः चरसि, सासहान इव ऋषभः।
तेन् अश्वत्थ त्वया वयम्, सपत्नान् सहिषीमहि।।4।।
398. सिनातु एनान् निर्ऋतिः, मृत्योः पाशैः अमोक्यैः।
अश्वत्थ शत्रून् मामकान्,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम्।।5।।
399. यथा अश्वत्थ वानस्पत्यान्, आरोहन् कृणुषे अधरान्।
एव आ मे शत्रोः मूर्धानम्, विष्वक् भिन्धि सहस्व च।।6।।
400. ते अधराञ्चः प्र प्लवन्ताम्,
छिन्ना नौः इव बन्धनात्।
न वैबाधप्रणुत्तानाम्, पुनः अस्ति निवर्तनम्।।7।।
401. प्र एनान् नुदे मनसा, प्र चित्तेन उत ब्रह्मणा।
प्र एनान् वृक्षस्य शाखया, अश्वत्थस्य नुदामहे।।8।।

यक्ष्मनाशन सूक्त 7

402. हरिणस्य रघुष्यदो, अधि शीर्षणि भेषजम्।
स क्षत्रियम् विषाणया, विषूचीनम् अनीनशत्।।1।।
403. अनु त्वा हरिणो वृषा, पद्भिः चतुर्भिः अक्रमीत्।
विषाणे वि ष्य गुष्पितम्, यत् अस्य क्षेत्रियम् हृदि।।2।।
404. अदो यत्व अवरोचते, चतुष्पक्षम् इव छदिः।
तेना ते सर्वम् क्षेत्रियम्, अङ्गेभ्यो नाशयामसि।।3।।
405. अमू ये दिवि सुभगे, विचृतौ नाम तारके।
वि क्षेत्रयस्य मुञ्चताम्, अधमम् पाशम् उत्तमम्।।4।।
406. आप इत् वा उ भेषजीः, आपो अमीवचतनीः।
आपो विश्वस्य भेषजीः, ताः त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात्।।5।।
407. यदासुतेः क्रियमाणायाः, क्षेत्रियम् त्वा व्यानशे।
वेद अहम् तस्य भेषजम्, क्षेत्रियम् नाशयामि त्वत्।।6।।
408. अपवासे नक्षत्राणाम्, अपवास उषसाम् उत।
अप अस्मत् सर्वम् दुर्भूतम्, अप क्षेत्रियम् उच्छतु।।7।।

राष्ट्रधारण सूक्त 8

409.आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः,
संवेशयन् पृथिवीम् उस्रियाभिः।
अथ अस्मभ्यम् वरुणो वायुः अग्निः,
बृहत् राष्ट्रम् संवेश्यम् दधातु।।1।।
410. धाता रातिः सविता इदम् जुषन्ताम्,
इन्द्रः त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः।
हुवे देवीम् अदितिम् शूरपुत्राम्,
सजातानाम् मध्यमेष्ठा यथा असानि।2।
411. हुवे सोमम् सवितारम् नमोभिः विश्वान्,
आदित्यान् अहम् उत्तरत्वे।
अयम् अग्निः दीदायत् दीर्घम्
एव, सजातैः इद्धो अप्रतिब्रुवद्भि।।3।।
412.इह इत् असाथ न परो गमाथ,
इर्यो गोपाः पुष्टपतिः व आ अजत्।
अस्मै कामाय उप कामिनीः, विश्वे वो देवा उपसंयन्तु।।4।।
413. सम् वो मनासि सम् व्रता, सम् आकूतीः नमामसि।
अमी ये विव्रता स्थन, तान् वः सम् नमयामसि।।5।।
414.अहम् गृभ्णामि मनसा मनांसि,
मम चित्तम् अनु चित्तेभः आ इत।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि,
मम यातम् अनुवर्त्मान आ इत।।6।।

दुःखनाशन सूक्त 9

415. कर्शफस्य विशफस्य, द्यौः पिता पृथिवी माता।
यथा अभिचक्र देवाः, तथा अप कृणुता पुनः।।1।।
416. अश्रेष्माणो अधारयन्, तथा तत् मनुना कृतम्।
कृणोमि वध्रि विष्कन्धम्, मुष्काबर्हो गवाम् इव।।2।।
417. पिशङ्गे सूत्रे खृगलम्, तत् आ बध्नाति वेधसः।

श्रवस्युम् शुष्मम् काबवम्, वध्रिम् कृणवन्तु बन्धुरः।।3।।
418. येना श्रवस्यव चरथ, देवा इव असुरमायया।
शुनाम् कपिरिव दूषणो, बन्धुरा काबवस्य च।।4।।
419. दुष्ट्यै हि त्वा भत्स्यामि, दूषयिष्यामि काबवम्।
उदाशवो रथा इव, शपथेभिः सरिष्यथ।।5।।
420. एकशतम् विष्कन्धानि, विष्ठिता पृथिवीम् अनु।
तेषाम् त्वाम् अग्र उत् जहरुः, मणि विष्कन्धदूषणम्।।6।।

रायस्पोषप्राप्ति सूक्त 10

421. प्रथमा ह वि उवास, सा धेनुः अभवत् यमे।
सा नः पयस्वती दुहाम्, उत्तराम्-उत्तराम् समाम्।।1।।
422. याम् देवाः प्रतिनन्दन्ति, रात्रिम् धेनुम् उपायतीम्।
संवत्सरस्य या पत्नी, सा नो अस्तु सुमङ्गली।।2।।
423. संवत्सरस्य प्रतिमाम्, याम् त्वा रात्री उपास्महे।
सा न आयुष्मतीम् प्रजाम्, रायस्पोषेण संसृज।।3।।
424.इयम् एव सा या प्रथमा वि औच्छत्,
आसु इतरासु चरति प्रविष्टा।
महान्तो अस्याम् महिमानो अन्तः,
वधूः जिगाय नवगत् जनित्री।।4।।
425.वानस्पत्या ग्रावाणो घोषम् अक्रत,
हविः कृणवन्तः परिवत्सरीणम्।
एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।।5।।
426. इडायाः इदम् घृतवत् सरीसृपम्,
जातवेदः प्रति हव्या गृभाय।
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपाः,
तेषाम् सप्तानाम् मयि रन्तिः अस्तु।।6।।
427. आ मा पुष्टे च पोषे च,
रात्रि देवानाम् सुमतौ स्याम।
पूर्णा दर्वे परा पत, सुपूर्णा पुनः आ पत।
सर्वान् यज्ञान् सम्भुञ्जती, इषम् ऊर्जम् न आ भर।।7।।
428. आ आयम् अगन् संवत्सरः, पतिः एकाष्टके तव।
सा न आयुष्मतीम् प्रजाम्, रायः पोषेण संसृज।।8।।
429. ऋतून यज ऋतुपतीन्, आर्तवान् उत हायनान्।
समाः संवत्सरान् मासान्, भूतस्य पतये यजे।।9।।
430. ऋतुभ्यः त्वा आर्तवेभ्यो, माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः।
धात्रे विधात्रे समृधे, भूतस्य पतये यजे।।10।।
431. इडया जुह्वतो वयम्, देवान् घृतवता यजे।
गृहान् अलुभ्यतो वयम्, सम् विशेम उप गोमतः।।11।।
432. एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान,
गर्भम् महिमानम् इन्द्रम्।
तेन देवा वि असहन्त शत्रून्,
हन्ता दस्यूनाम् अभवत् शचीपतिः।।12।।
433. इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे, दुहिता असि प्रजापतेः।
कामान् अस्माकम् पूरय, प्रति गृह्णाहि नो हविः।।13।।

तृतीयो अनुवाकः

दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 11

434. मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कम्,
अज्ञातयक्ष्मात् उत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिः जग्राह यदि एतत् एनम्,
तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तम् एनम्।1।
435. यदि क्षितायुः यदि वा परेतो,
यदि मृत्योः अन्तिकम् नीत एव।
तम् आ हरामि निर्ऋतेः उपस्थात्,
अस्पार्षम् एनम् शतशारदाय।।2।।
436. सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा,
हविषा आ अहार्षम् एनम्।
इन्द्रो यथा एनम् शरदो नयाति,
अति विश्वस्य दुरितस्य पारम्।।3।।
437. शतम् जीव शरदो वर्धमानः,
शतम् हेमन्तान् शतम् उ वसन्तान्।
शतम् त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः,
शतायुषा हविषा आ अहार्षम् एनम् ।।4।।
438. प्र विशतम् प्राणापानौ, अनड्वाहाविव व्रजम्।
वि अन्ये यन्तु मृत्यवो, यान् आहुः इतरान् शतम्।।5।।
439. इह एव स्तम् प्राणापानौ, मा अप गातम् इतो युवम्।
शरीरम् अस्य अङ्गानि, जरसे वहतम् पुनः।।6।।
440. जरायै त्वा परि ददामि, जरायै नि धुवामि त्वा।
जरा त्वा भद्रा नेष्ट वि अन्ये यन्तु,
मृत्यवो यान आहुः इतरान् शतम्।।7।।
441. अभि त्वा जरिमा अहित, गाम् उक्षणम् इव रज्ज्वा।
यः त्वा मृत्युः अभि अधत्त, जायमानम् सुपाशया।
तम् ते सत्यस्य हस्ताभ्याम्, उत् अमुञ्चत् बृहस्पतिः।।8।।

शालानिर्माण सूक्त 12

442. इह एव ध्रुवाम् मिनोमि शालाम्,
क्षेमे तिष्ठाति घृतम् उक्षमाणा।
ताम् त्वा शाले सर्ववीराः सुवीरा,
अरिष्टवीरा उप सम् चरेम।।1।।
443. इह एव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शाले,
अश्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वती,
उत् श्रयस्व महते सौभगाय।।2।।
444. धरुणी असि शाले, बृहत् छन्दाः पूतिधान्या।
आ त्वा वत्सो गमेत् आ कुमार,
आ धेनवः सायम् आस्पन्दमानाः।।3।।

445. इमाम् शालाम् सविता वायुः इन्द्रो,
हस्पतिः नि मिनोतु प्रजानन्।
उक्षन्तु उद्ना मरुतो घृतेन,
भगो नो राजा नि कृषिम् तनोतु।।4।।
446. मानस्य पत्नि शरणा स्योना,
देवी देवेभिः निमिता असि अग्रे।
तृणम् वसाना सुमना असः त्वम्,
अथ अस्मभ्यम् सहवीरम् रयिम् दाः।।5।।
447. ऋतेन स्थूणाम् अधि रोह वंश उग्रो,
विराजन् अप वृङ्क्ष्व शत्रून्।
मा ते रिषन् उपसत्तारो गृहाणाम्,
शाले शतम् जीवेम शरदः सर्ववीराः।6।
448. आ इमाम् कुमारः तरुण, आ वत्सो जगता सह।
आ इमाम् परिस्रुतः कुम्भ, आ दध्नः कलशैः अगुः।।7।।
449. पूर्णम् नारि प्र भर कुम्भम् एतम्,
घृतस्य धाराम् अमृतेन संभृताम्।
इमाम् पातृन् अमृतेन आ सम् अङ्ग्धि,
इष्टापूर्तम् अभि रक्षाति एनाम्
450. इमा आपः प्र भरामि, अयक्ष्मा यक्ष्मानाशनीः।
गृहान् उप प्र सीदामि, अमृतेन सह अग्निना।।9।।

आपो देवता सूक्त 13

451. यत् अदः संप्रयतीः, अहौ अनदत आ हते।
तस्मात् आ नद्यो नाम स्थ,
ता वो नामानि सिन्धवः।।1।।
452. यत् प्रेषिता वरुणेन, आत् शीभम् समवल्गत।
तत् आप्नोत् इन्द्रो वो यतीः,
तस्मात् आपो अनु ष्ठन्।।2।।
453. अपकामम् स्यन्दमाना, अवीवरत वो हि कम्।
इन्द्रो वः शक्तिभिः देवीः,
तस्मात् वाः नाम वो हितम्।।3।।
454. एको वो देवो अपि अतिष्ठत्, स्यन्दमाना यथावशम्।
उत् आनिषुः महीः इति, तस्मात् उदकम् उच्यते।।4।।
455. आपो भद्रा घृतम् इत् आप आसन्,
अग्नीषोमौ बिभ्रति आप इत् ताः।
तीव्रो रसो मधुपृचाम् अरंगम,
आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत्।।5।।
456. आत् इत् पश्यामि उत वा शृणोमि,
आ मा घोषो गच्छति वाङ् मा आसाम्।
मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि,
हिरण्यवर्णा अतृपम् यदा वः।।6।।
457. इदम् व आपो हृदयम्, अयम् वत्स ऋतावरीः।
इह इत्थम् आ इत शक्वरीः, यत्र इदम् वेशयामि वः।।7।।

गोष्ठ सूक्त 14

458. सम् वो गोष्ठेन सुषदा, सम् रय्या सम् सुभूत्या।
अहः जातस्य यत् नाम तेना, वः सम् सृजामसि।।1।।
459. सम् वः सृजतु अर्यमा, सम् पूषा सम् बृहस्पतिः।
सम् इन्द्रो यो धनंजयो, मयि पुष्यत यत् वसु।।2।।
460. संजग्मानाः अबिभ्युषीः, अस्मिन् गोष्टे करीषिणीः।
बिभ्रतीः सोम्यम् मधु, अनमीवा उप एतन।।3।।
461. इह एव गाव आ इतन, इहो शकेव पुष्यत।
इह एव उत प्र जायध्वम्, मयि संज्ञानम् अस्तु वः।।4।।
462. शिवो वो गोष्ठो भवतु, शारिशाकेव पुष्यत।
इह एव उत प्र जायध्वम्, मया वः सृजामसि।।5।।
463. मया गावो गोपतिना सचध्वम्,
अयम् वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः।
रायः पोषेण बहुला भवन्तीः,
जीवा जीवन्तीः उप वः सदेम।।6।।

वाणिज्य सूक्त 15

464.इन्द्रम् अहम् वणिजम् चोदयामि,
स न आ एतु पुरएता नो अस्तु।
नुदन् अरातिम् परिपन्थिनम् मृगम्,
स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम्।1।
465. ये पन्थानो बहवो देवयाना,
अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति।
ते मा जुषन्ताम् पयसा घृतेन,
यथा क्रीत्वा धनम् आहराणि।।2।।
466. इध्मेन अग्न इच्छमानो घृतेन,
जुहोमि हव्यम् तरसे बलाय।
यावत् ईशे ब्रह्मणा वन्दमान,
इमाम् धियम् शतसेयाय देवीम्।।3।।
467. इमाम् अग्ने शरणिम् मीमृषो,
नो यम् अध्वानम् अगाम दूरम्।
शुनम् नो अस्तु प्रपणो विक्रयः,
च प्रतिपणः फलिनम् मा कृणोतु।
इदम् हव्यम् संविदानौ जुषेथाम् शुनम्,
नो अस्तु चरितम् उत्थितम् च।।4।।
468. येन धनेन प्रपणम् चरामि,
धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तत् मे भूयो भवतु मा कनीयो,
अग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध।5
469. येन धनेन प्रपणम् चरामि,
धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तस्मिन् म इन्द्रो रुचिम् आ दधातु,
प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः।6।

470. उप त्वा नमसा वयम्, होतः वैश्वानर स्तुमः।
स नः प्रजासु आत्मसु, गोषु प्राणेषु जागृहि।।7।।
471. विश्वाहा ते सदम् इत् भरेम,
अश्वाय इव तिष्ठते जातवेदः।
रायः पोषेण समिषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेषा रिषाम।।8।।

चतुर्थो अनुवाकः

कल्याणार्थ-प्रार्थना सूक्त 16

472. प्रातः अग्निम् प्रातः इन्द्रम् हवामहे,
प्रातः मित्रावरुणा प्रातः अश्विना।
प्रातः भगम् पूषणम् ब्रह्मणः,
पतिम् सोमम् उत रुद्रम् हवामहे।।1।।
473. प्रातर्जितम् भगम् उग्रम् हवामहे,
वयम् पुत्रम् अदितेः यो विधर्ता।
आध्रः चित् यम् मन्यमानः तुरः चित् राजा,
चित् यम् भगम् भक्षि इति आह।।2।।
474.भग प्रणेतः भघ सत्यराधो,
भग इमाम् धयम् उत् अवा ददत् नः।
भग प्र णो जनय गोभिः अश्वैः,
भग प्र नृभिः नृवन्तः स्याम।।3।।
475. उत इदानीम् भगवन्तः स्याम्,
उत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उत उदितौ मघवन् सूर्यस्य,
वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम।।4।।
476. भग एव भगवान् अस्तु देवः,
तेन आ वयम् भगवन्तः स्याम।
तम् त्वा भग सर्व इत् जोहवीमि,
स नो भग पुरएता भव इह।।5।।
477. सम् अध्वराय उषसो नमन्त,
दधिक्रावेव शुचये पदाय।
अर्वाचीनम् वसुविदम् भगम् मे रथमिव,
अश्वा वाजिन आ वहन्तु।6।
478. अश्वावतीः गोमतीः न उषासो,
वीरवतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।
घृतम् दुहाना विश्वतः प्रपीता,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा न।।7।।

कृषि सूक्त 17

479. सीरा युञ्जन्ति कवयो, युगा वि तन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नयौ।।1।।
480. युनक्त सीरा वि युगा तनोत,
कृते योनौ वपत इह बीजम्।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असत् नो,
नेदीय इत् सृण्यः पक्वम् आ यवन्।2
481. लाङ्गलम् पवीरवत्, सुशीमम् सोमसत्सरु।
उत् इत् वपतु गाम् अविम् प्रस्थावत्,
रथवाहनम् पीबरीम् च प्रफवर्यम्।।3।।
482. इन्द्रः सीताम् नि गृह्णातु, ताम् पूषा अभि रक्षतु।
सा नः पयस्वती दुहाम्, उत्तराम्-उत्तराम् समाम्।।4।।
483. शुनम् सुफाला वि तुदन्तु भूमिम्,
शुनम् कीनाश अनु यन्तु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना,
सुपिप्पला ओषधीः कर्तम् अस्मै।।5।।
484. शुनम् वाहाः शुनम्, नरः कृषतु लाङ्गलम्।
शुनम् वरत्रा बध्यन्ताम्, शुनम् अष्ट्राम् उत् इङ्गय।।6।।
485. शुनासीरा इह स्म मे जुषेथाम्।
यत् दिवि चक्रथुः पयः, तेन इमाम् उप सिञ्चतम्।।7।।
486. सीते वन्दामहे त्वा, अर्वाची सुभगे भव।
यथा नः सुमना असो, यथा नः सुफला भुवः।।8।।
487. घृतेन सीता मधुना समक्ता,
विश्वैः दैवैः अनुमता मरुद्भिः।
सा नः सीते पयसा अभ्याववृत्स्व,
ऊर्जस्वती घृतवत् पिन्वमाना।।9।।

वनस्पति सूक्त 18

488. इमाम् खनामि ओषधिम्, वीरुधाम् बलवत्तमाम्।
यया सपत्नीम् बाधते, यया संविन्दते पतिम्।।1।।
489. उत्तानपर्णे सुभगे, देवजूते सहस्वति।
सपत्नीम् मे परा णुद, पतिम् मे केवलम् कृधि।।2।।
490. नही ते नाम जग्राह, नो अस्मिन् रमसे पतौ।
पराम् एव परावतम्, सपत्नीम् गमयामसि।।3।।
491. उत्तरा अहम् उत्तरे, उत्तरा इत् उत्तराभ्यः।
अधः सपत्नी या मम, अधरा सा अधराभ्यः।।4।।
492. अहम् अस्मि सहमाना, अथो त्वम् असि सासहिः।
उभे सहस्वती भूत्वा, सपत्नीम् मे सहावहै।।5।।
493. अभि ते अधाम् सहमानाम्,
उप ते अधाम् सहीयसीम्।
माम् अनु प्र ते मनो वत्सम् गौरिव,
धावतु पथा वारिव धावतु।।6।।

अजरक्षत्र सूक्त 19

494. संशितम् म इदम् ब्रह्म, संशितम् वीर्यम् बलम्।
संशितम् क्षत्रम् अजरम् अस्तु,
जिष्णुः येषाम् अस्मि पुरोहितः।।1।।
495. सम् अहम् एषाम् राष्ट्रम् स्यामि,

सम् ओजो वीर्यम् बलम्।
वृश्चामि शत्रूणाम् बाहून्, अनेन् हविषा अहम्।।2।।
496. नीचैः पद्यन्ताम् अधरे भवन्तु,
ये नः सूरिम् मघवानम् पृतन्यान्।
क्षिणामि ब्रह्मणा अमित्रान्, उन्नयामि स्वान् अहम्।।3।।
497. तीक्ष्णीयांसः परशोः, अग्नेः तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो, येषाम् अस्मि पुरोहितः।।4।।
498. एषाम् अहम् आयुधा सम् स्यामि,
एषाम् राष्ट्रम् सुवीरम् वर्धयामि।
एषाम् क्षत्रम् अजरम् अस्तु जिष्णु,
एषाम् चित्तम् विश्वे अवन्तु देवाः।5
499. उत् हर्षन्ताम् मघवन् वाजिनानि,
उत् वीराणाम् जयताम् एतु घोषः।
पृथम् घोषा उलुलयः, केतुमन्त उत् ईरताम्।
देवा इन्द्रज्येष्ठा, मरूतो यन्तु सेनया।।6।।
500. प्र इत् आ जयता नर, उग्रा वः सन्तु बाहवः।
तीक्षणेषवो अबलधन्वनो हत,
उग्रायुधा अबलान् उग्रबाहवः।।7।।
501. अवसृष्टा पर पत, शरव्ये ब्रह्मसंशिते।
जय अमित्रान् प्र पद्यस्व जहि एषाम् वरम्,
वरम् मा अमीषाम् मोचि कश्चन ।।8।।

वनस्पति सूक्त 20

502. अयम् ते योनिः ऋत्वियो, यतो जातो अरोचथाः।
तम् जानन् अग्न आ रोह अधा, नो वर्धया रयिम्।।1।।
503. अग्ने अच्छ आ वद इह, नः प्रत्यङ् नः सुमना भव।
प्र णो यच्छ विशाम् पते, धनदा असि नः त्वम्।।2।।
504. प्र णो यच्छतु अर्यमा, प्र भगः प्र बृहस्पतिः।
प्र देवीः प्र उत सूनृता, रयिम् देवी दधातु मे।।3।।
505. सोमम् राजानम् अवसे, अग्निम् गीर्भिः हवामहे।
आदित्यम् विष्णुम् सूर्यम्, ब्रह्माणम् च बृहस्पतिम्।।4।।
506. त्वम् नो अग्ने अग्निभिः, ब्रह्म यज्ञम् च वर्धय।
त्वम् नो देव दातवे, रयिम् दानाय चोदय।।5।।
507. इन्द्रवायू उभौ इह, सुहवा इह हवामहे।
यथा नः सर्व इत् जनः संगत्याम्,
सुमना असत् दानकामः च नो भुवत्।।6।।
508. अर्यमणम् बृहस्पतिम्, इन्द्रम् दानाय चोदय।
वातम् विष्णुम् सरस्वतीम्, सवितारम् च वाजिनम्।।7।।
509. वाजस्य नु प्रसवे सम् बभूविम,
इमा च विश्वा भुवनानि अन्तः।
उत अदित्सन्तम् दापयतु प्रजानन् रयिम्,
च नः सर्ववीरम् नि यच्छ।8
510. दुह्राम् में पञ्च प्रदिशो, दुह्राम् उर्वीः यथाबलम्।
प्र आपेयम् सर्वा आकूतीः, मनसा हृदयेन च।।9।।
511. गोसनिम् वाचम् उदेयम्, वर्चसा मा अभ्युदिहि।
आ रुन्धाम् सर्वतो वायुः, त्वष्टा पोषम् दधातु मे।।10।।

पञ्चमो अनुवाकः

शान्ति क्त 21

512. ये अग्नयो अप्सु अन्तः, ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु।
य आविवेश ओषधी यो वनस्पतीः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।।1।।
513. यः सोमे अन्तः यो गोषु अन्तः,
यः आविष्टो वयः-सु यो मृगेषु।
य आविवेश द्विपदो यः चतुष्पदः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।2
514. य इन्द्रेण सरथम् याति,
देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः।
यम् जोहवीमि पृतनासु सासहिम् तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।3
515. यो देवो विश्वात् यम् उ कामम् आहुः,
यम् दातारम् प्रतिगृह्णन्तम् आहुः।
यो धीरः शक्रः परिभूः अदाभ्यः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।4।
516. यम् त्वा होतारम् मनसा अभि संविदुः,
त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः।
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।।5।।
517. उक्षान्नाय वशान्नाय, सोमपृष्टाय वेधसे।
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।।6।।
518. दिवम् पृथिवीम् अनु अन्तरिक्षम्,
ये विद्युतम् अनुसंचरन्ति।
ये दिक्षु अन्तः ये वाते अन्तः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्।7।
519. हिरण्यपाणि सवितारम् इन्द्रम्,
बृहस्पतिम् वरुणम् मित्रम् अग्निम्।
विश्वान् देवान् अङ्गिरसो हवामह,
इमम् क्रव्यादम् शमयन्तु अग्निम्।8
520. शान्तो अग्निः क्रव्यात्, शान्तः पुरुषरेषणः।
अथो यो विश्वदाव्यः, तम् क्रव्यादम् अशीशमम्।।9।।
521. ये पर्वताः सोमपृष्ठा, आप उत्तानशीवरीः।
वातः पर्जन्य आत् अग्निः, ते क्रव्यादम् अशीशमन्।

वर्चः प्राप्ति सूक्त 22

522. हस्तिवर्चसम् प्रथताम् बृहत् यशो,
अदित्या यत् तन्वः संबभूव।

तत् सर्वे सम् अदुः मह्यम् एतत्,
विश्वे देवा अदितिः सजोषाः।।1।।
523. मित्रः च वरुणः च, इन्द्रो रुद्रः च चेततु।
देवासो विश्वधायसः, ते मा अञ्जन्तु वर्चासा।।2।।
524. येन हस्ती वर्चसा संबभूव,
येन राजा मनुष्येषु अप्सु अन्तः।
येन देवा देवताम् अग्र आयन् तेन माम्,
अद्य वर्चसा अग्ने वर्चस्विनम् कृणु।।3।।
525. यत् ते वर्चो जातवेदो, बृहत् भवति आहुतेः।
यावत् सूर्यस्य वर्च, आसुरस्य च हस्तिनः।
तावत् मे अश्विना वर्च, आ धत्ताम् पुष्करस्रजा।।4।।
526. यावत् चतस्रः प्रदिशः, चक्षुः यावत् सम् अश्नुते।
तावत् समैतु इन्द्रियम्, मयि तत् हस्तिवर्चसम्।।5।।
527. हस्ती मृगाणाम् सुषदाम्, अतिष्ठलान् बभूव हि।
तस्य भगेन वर्चसा, अभि षिञ्चामि माम् अहम्।।6।।

वीरप्रसूति सूक्त 23

528. येन वेहत् बभूविथ, नाशयामसि तत् त्वत्।
इदम् तत् अन्यत्र त्वत्, अप दूरे नि दध्मसि।।1।।
529. आ ते योनि गर्भ एतु, पुमान् बाण इव इषुधिम्।
आ वीरो अत्र जायताम्, पुत्रः ते दशमास्यः।।2।।
530. पुमांसम् पुत्रम् जनय, तम् पुमान् अनु जायताम्।
भवासि पुत्राणाम् माता, जातानाम् जनयाः च यान्।।3।।
531. यानि भद्राणि बीजनि, ऋषभा जनयन्ति च।
तैः त्वम् पुत्रम् विन्दस्व, सा प्रसूः धेनुका भव।।4।।
532. कृणोमि ते प्राजापत्यम्, आ योनिम् गर्भ एतु ते।
विन्दस्व त्वम् पुत्रम् नारि यः तुभ्यम्,
शम् असत् शम् उ तस्मै त्वम् भव।।5।।
533. यासाम् द्यौः पिता पृथिवी माता,
समुद्रो मूलम् वीरुधाम् बभूव।
ताः त्वा पुत्रविद्याय दैवीः, प्र अवन्तु ओषधयः।।6।।

समृद्धिप्राप्ति सूक्त 24

534. पयस्वतीः ओषधयः, पयस्वत् मामकम् वचः।
अथो पयस्वतीनाम् आ भरे अहम् सहस्रशः।।7।।
535. वेद अहम् पयस्वन्तम्, चकार धान्यम् बहु।
संभृत्वा नाम यो देवः,
तम् वयम् हवामहे यो-यो अयज्वनः।।2।।
536. इमा याः पञ्च प्रदिशो, मानवीः पञ्च कृष्टयः।
वृष्टे शापम् नदीरिव, इह स्फातिम् समावहान्।।3।।
537. उत् उत्सम् शतधारम्, सहस्रधारम् अक्षितम्।
एव अस्माक इदम् धान्यम्, सहस्रधारम् अक्षितम्।।4।।
538. शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त सम् किर।
कृतस्य कार्यस्य च इह, स्फातिम् समावह।।5।।
539. तिस्रो मात्रा गन्धर्वाणाम्, चतस्रो गृहपत्नयाः।
तासाम् या स्फातिमत्तमा, तया त्वा अभि मृशामसि।।6।।
540. उपोहः च समूहः च, क्षतारौ ते प्रजापते।
तौ इह आ वहताम् स्फातिम्,
बहुम् भूमानम् अक्षितम्।।7।।

कामबाण सूक्त 25

541. उत्तुदः त्वा उत् तुदतु, मा धृथाः शयने स्वे।
इषुः कामस्य या भीमा, तया विध्यामि त्वा हृदि।।1।।
542. आधीपर्णाम् कामश्लाम्, इषुम् सङ्कल्पकुल्मलाम्।
ताम् सुसंनताम् कृत्वा, कामो विध्यतु त्वा हृदि।।2।।
543. या प्लीहानम् शोषयति, कामस्य इषुः सुसंनता।
प्राचीनपक्षा व्योषा तया, विध्यामि त्वा हृदि।।3।।
544. शुचा विद्धा व्योषया, शुष्कास्या अभि सर्प मा।
मृदुः निमन्युः केवली, प्रियवादिनी अनुव्रता।।4।।
545. आ अजामि त्वा अजन्या, परि मातुः अथो पितुः।
यथा मम क्रतौ असो, मम चित्तम् उपायसि।।5।।
546. वि अस्यै मित्रावरुणौ, हृदः चित्तानि अस्यतम्।
अथ एनाम् अक्रतुम् कृत्वा, मम एव कृणुतम् वशे।।6।।

षष्ठो अनुवाकः

दिक्षु आत्मरक्षा सूक्त 26

547. ये अस्याम् स्थ प्राच्याम् दिशि हेतयो,
नाम देवाः तेषाम् वो अग्निः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा।।1।।
548. ये अस्याम् स्थ दक्षिणायाम् दिशि अविष्यवो,
नाम देवाः तेषाम् वः काम इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा।।2।।
549. ये अस्याम् स्थ प्रतीच्याम् दिशि वैराजा,
नाम देवाः तेषाम् व आप इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा।।3।।
550. ये अस्याम् स्थ उदीच्याम् दिशि,
प्रविध्यन्तो नाम देवाः तेषाम् वो वात इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा।।4।।
551. ये अस्याम् स्थ ध्रुवायाम् दिशि निलिम्पा,
नाम देवाः तेषाम् व ओषधीः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा।।5।।
552. ये अस्याम् स्थ ऊर्ध्वायाम् दिशि अवस्वन्तो,
नाम देवाः तेषाम् वो बृहस्पतिः इषवः।

ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा।।6।।

शत्रु निवारण सूक्त 27

553. प्राची दिक् अग्निः अधिपतिः,
असितो रक्षिता आदित्या इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः।।1।।
554. दक्षिणा दिक् इन्द्रो अधिपतिः,
तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः।।2।।
555. प्रतीची दिक् वरुणो अधिपतिः,
पृदाकु रक्षिता अन्नम् इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः।।3।।
556. उदीची दिक् सोमो अधिपतिः,
स्वजो रक्षिता अशनिः इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम,
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः।।4।।
557. ध्रुवा दिक् विष्णुः अधिपतिः,
कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम,
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः।।5।।
558. ऊर्ध्वा दिक् बृहस्पतिः अधिपतिः,
श्वित्रो रक्षिता वर्षम् इषवः।
तेभ्यो नमो अधि पतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः।।6।।

पशुपोषण सूक्त 28

559. एकैकया एषा सृष्ट्या सम् बभूव,
यत्र गा असृजन्त भूतकृतो विश्वरूपाः।
यत्र विजायते यमिनी अपर्तुः,
सा पशून् क्षिणाति रिफती रुशती।।1।।
560. एषा पशून् सम् क्षिणाति, क्रव्यात् भूत्वा व्यद्वरी।
उत एनाम् ब्रह्मणे दद्यात्, तथा स्योना शिवा स्यात्।।2।।
561. शिवा भव पुरुषेभ्यो, गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा।
शिवा अस्मै सर्व अस्मै, क्षेत्राय शिवा न इह एधि।।3।।
562. इह पुष्टिः इह रस इह, सहस्रसातमा भव।
पशून् यमिनि पोषय।।4।।
563. यत्रा सुहार्दाम् सुकृतो मदन्ति,
विहाय रोगम् तन्वः स्वायाः।
तम् लोकम् यमिनी अभिसम्बभूव,
सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशून् च ।।5।।
564. यत्रा सुहार्दाम् सुकृताम्,
अग्निहोत्रहुताम् यत्र लोकः।
तम् लोकम् यमिनी अभिसम्बभूव,
सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशून् च।।6।।

अवि सूक्त 29

565. यत् राजानो विभजन्त इष्टापूर्तस्य षोडशम्,
यमस्य अमी सभासदः।
अविः तस्मात् प्र मुञ्चति, दत्तः शितिपात् स्वधा।।1।।
566. सर्वान् कामान् पूरयति, आभवन् प्रभवन् भवन्।
आकूतिप्रो अविः दत्तः, शितिपात् उप दस्यति।।2।।
567. यो ददाति शितिपादम्, अविम् लोकेन संमितम्।
स नाकम् अभ्यारोहति यत्र शुल्को,
न क्रियते अबलेन बलीयसे।।3।।
568. पञ्चापूपम् शितिपादम्, अविम् लोकेन संमितम्।
प्र दाता उप जीवति, पितृणाम् लोके अक्षितम्।।4।।
569. पञ्चापूपम् शितिपादम्, अविम् लोकेन संमितम्।
प्रदाता उप जीवति, सूर्यामासयोः अक्षितम्।।5।।
570. इरा इव न उप दस्यति, समुद्र इव पयो महत्।
देवौ सवासिनौ इव, शितिपात् न उत् दस्यति।।6।।
571. क इदम् कस्मा अदात्, कामः कामाय अदात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता, कामः समुद्रमा विवेश।
कामेन त्वा प्रति गृह्णामि काम एतत् ते।।7।।
572. भूमिः त्वा प्रति गृह्णातु, अन्तरिक्षम् इदम् महत्।
मा अहम् प्राणेन मा आत्मना,
मा प्रजया प्रतिगृह्य वि राधिषि।।8।।

सांमनस्य सूक्त 30

573. सहृदयम् सांमनस्यम्, अविद्वेषम् कृणोमि वः।
अन्यो अन्यम् अभि हर्यत, वत्सम् जातमिव अघ्नया।।1।।
574. अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीम्, वाचम् वदतु शन्तिवाम्।।2।।

575. मा भ्राता भ्रातरम् द्विक्षत्, मा स्वसारम् उत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा, वाचम् वदत भद्रया।।3।।
576. येन देवा न वियन्ति, नो च विद्विषते मिथः।
तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे, संज्ञानम् पुरुषेभ्यः।।4।।
577. ज्यायस्वन्तः चित्तिनो मा वि यौष्ट,
संराधयन्तः सधुराः चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त आ इत,
सध्रीचीनान् वः संमनसः कृणोमि।।5।।
578. समानी प्रपा सह वो अन्नभागः,
समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चो अग्निम् सपर्यत अरा, नाभमिव अभितः।।6।।
579. सध्रीचीनान् वः संमनसः कृणोमि,
एकश्नुष्टीन् संवननेन सर्वान्।
देवा इव अमृतम् रक्षमाणाः,
सायम्प्रातः सौमनसो वो अस्तु।।7।।

यक्ष्मनाशन सूक्त 31

580. वि देवा जरसा अवृतन्, वि त्वम् अग्ने अरात्या।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।1।।
581. वि आर्त्या पवमानो, वि शक्रः पापकृत्यया।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।2।।
582. वि ग्राम्याः पशव आरण्यैः,
वि आपः तृष्णया असरन्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।3।।
583. वि इमे द्यावापृथिवी इतो, वि पन्थानो दिशंदिशम्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।4।।
584. त्वष्टा दुहित्रे वहतुम् युनक्ति,
इदम् विश्वम् भुवनम् वि याति।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।5।।
585. अग्निः प्राणान् सम् दधाति, चन्द्रः प्राणेन संहितः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।6।।
586. प्राणेन विश्वतोवीर्यम्, देवाः सूर्यम् सम् ऐरयन्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।7।।
587. आयुष्मताम् आयुष्कृताम्, प्राणेन जीव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।8।।
588. प्राणेन प्राणताम् प्र अन, इह एव भव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।9।।
589. उत् आयुषा सम् आयुषा, ओषधीनाम् रसेन।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।10।।
590. आ पर्जन्यस्य वृष्ट्या, उत् अस्थाम् अमृता वयम्।।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा।।11।।

तृतीयम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

चतुर्थम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

ब्रह्मविद्या सूक्त 1

591. ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात्,
वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतः,
च योनिम् असतः च वि वः।।1।।
592. इयम् पित्र्या राष्ट्री एतु अग्रे,
प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतम् सुरुचम् ह्वारम् अह्यम्,
घर्मम् श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।
593.प्र यो जज्ञे विद्वान् अस्य बन्धुः,
विश्वा देवानाम् जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उत् जभार मध्यात्,
नीचैः उच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।3
594.स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था,
मही क्षेमम् रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायत् वि जातो,
द्याम् सद्म पार्थिविम् च रजः।।4।।
595. स बुध्नयात् आष्ट्र जनुषो अभि अग्रम्,
बृहस्पतिः देवता तस्य सम्राट।
अहः यत् शुक्रम् ज्योतिषो जनिष्टाथ,
द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।
596. नूनम् तत् अस्य काव्यो हिनोति,
महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम्।
एष जज्ञे बहुभिः साकम् इत्था,
पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।
597. यो अथर्वाणम् पितरम् देवबन्धुम्,
बृहस्पतिम् नमसा अव च गच्छात्।
त्वम् विश्वेषाम् जनिता यथा असः,
कविः देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

आत्मविद्या सूक्त 2

598. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यो अस्य ईशे द्विपदो चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।1।।
599. यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एक इत् राजा जगतो बभूव।

यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।2।।
600. यम् क्रन्दसी अवतः चस्कभाने,
भियसाने रोदसी अह्वयेथाम्।
यस्य असौ पन्था रजसो विमानः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।3।।
601. यस्य द्यौः ऊर्वी पृथिवी च मही,
यस्य अद उरु अन्तरिक्षम्।
यस्य असौ सूरो विततो महित्वा,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।4।।
602. यस्य विश्वे हिमन्वतो महित्वा,
समुद्रे यस्य रसाम् इत् आहुः।
इमाः च प्रदिशो यस्य बाहू,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।5।।
603. आपो अग्रे विश्वम् आवन्,
गर्भम् दधाना अमृता ऋतज्ञाः।
यासु देवीषु अधि देव आसीत्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।6।।
604. हिरण्यगर्भः सम् अवर्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एक आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् उत द्याम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।7।।
605. आपो वत्सम् जनयन्तीः, गर्भम् अग्रे समैरयन्।
तस्य उत जायमानस्य उल्ब आसीत् हिरण्ययः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।8।।

शत्रुनाशन सूक्त 3

606. उद इतः त्रयो अक्रमन्, व्याघ्र पुरुषो वृकः।
हिरुक् हि यन्ति सिन्धवो हिरक् देवो,
वनस्पतिः हिरुङ् नमन्तु शत्रवः।1
607. परेण एतु पथा वृकः, परमेण उत तस्करः।
परेण दत्वती रज्जुः, परेण अघायुः अर्षतु।।2।।
608. अक्ष्यौ च ते मुखम्, च ते व्याघ्र जम्भयामसि।
आत् सर्वान् विंशतिम् नखान।।3।।
609. व्याघ्रम् दत्वताम् वयम्, प्रथमम् जम्भयामसि।
आत् उ स्तेनम् अथ अहिम्, यातुधानम् अथो वृकम्।।4।।
610. यो अद्य स्तेन आयति, स संपिष्टो अप अयति।
पथाम् अपध्वंसेन एतु, इन्द्रो वज्रेण हन्तु तम्।।5।।
611. मूर्णा मृगस्य दन्ता, अपिशीर्णा उ पृष्टयः।
निम्रुक् ते गोधा भवतु, नीचा अयात् शशयुः मृगः।।6।।
612. यत् संयमो न वि यमो, वि यमो यत् न संयमः।
इन्द्रजा सोमजा आथर्वणम्, असि व्याघ्रजम्भनम्।।7।।

वाजीकरण सूक्त 4

613. याम् त्वा गन्धर्वो, अखनत् वरुणाय मृतभ्रजे।
ताम् त्वा वयम् खनामसि, ओषधि शेपहर्षणीम्।।1।।
614. उत् उषा उत् उ सूर्य, उत् इदम् मामकम् वचः।
उत् एजतु प्रजापतिः, वृषा शुष्मेण वाजिना।।2।।
615. यथा स्म ते विरोहतो, अभितप्तमिव अनति।
ततः ते शुष्मवत्तरमि, इयम् कृणोतु ओषधिः।।3।।
616. उत् शुष्मा ओषधीनाम्, सार ऋषभाणाम्।
सम् पुंसाम् इन्द्र वृष्ण्यम्, अस्मिन् धेहि तनूवशिन्।।4।।
617. अपाम् रसः प्रथमजो, अथो वनस्पतीनाम्।
उत सोमस्य भ्राता असि, उत आर्शम् असि वृष्ण्यम्।।5।।
618. अद्य अग्ने अद्य सवितः, अद्य देवि सरस्वति।
अद्य अस्य ब्रह्मणः पते, धनुः इव आ तानया पसः।।6।।
619. आ अहम् तनोमि ते पसो, अधि ज्यामिव धन्वनि।
क्रमस्व ऋश इव रोहितम्, अनवग्लायता सदा।।7।।
620. अश्वस्य अश्वतरस्य, अजस्य पेत्वस्य च।
अथ ऋषभस्य ये वाजाः तान्,
अस्मिन् धेहि तनूवशिन्।।8।।

स्वापन सूक्त 5

621. सहस्रशृङ्गो वृषभो, यः समुद्रात् उदाचरत्।
तेना सहस्येन वयम्, नि जनान् स्वापयामसि।।1।।
622. न भूमिम् वातो अति वाति, नाति पश्यति कः चन।
स्त्रियः च सर्वाः स्वापय, शुनः च इन्द्रसखा चरन्।।2।।
623. प्रोष्ठेशयाः तल्पेशया, नारीः या वह्यशीवरीः।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयः, ता सर्वाः स्वापयामसि।।3।।
624. एजदेजत् अजग्रभम्, चक्षुः प्राणम् अजग्रभम्।
अङ्गानि अजग्रभम् सर्वा, रात्रीणाम् अतिशर्वरे।।4।।
625. य आस्ते यः चरति, यः च तिष्ठन् विपश्यति।
तेषाम् सम् दध्मो अक्षीणि, यथा इदम् हर्म्यम् तथा।।5।।
626. स्वप्तु माता स्वप्तु पिता,
स्वप्तु श्वा स्वप्तु विश्पतिः।
स्वपन्तु अस्यै ज्ञातयः, स्वप्तु अयम् अभितो जनः।।6।।
627. स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन, सर्वम् नि ष्वापया जनम्।
ओत्सूर्यम् अन्यान् स्वापय आव्युषम्,
जागृतात् अहम् इन्द्र इव अरिष्टो अक्षितः।।7।।

द्वितीयो अनुवाकः

विषघ्न सूक्त 6

628. ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः।
स सोमम् प्रथमः पपौ, स चकार अरसम् विषम्।।1।।
629. यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा,
यावत् सप्त सिन्धवो वितष्ठिरे।
वाचम् विषस्य दूषणीम्, ताम् इतो निः अवादिषम्।।2।।
630. सुपर्णः त्वा गरुत्मान्, विष प्रथमम् आवयत्।

न अमीमदो न अरूरुप, उत अस्मा अभवः पितुः।।3।।
631. यः ते आस्यत् पञ्चाङ्गुरिः,
वक्रात् चित् अधि धन्वनः।
अपस्कम्भस्य शल्यात्, निः अवोचम् अहम् विषम्।।4।।
632. शल्यात् विषम् निः अवोचम्, प्राञ्जनात् उत पर्णधेः।
अपाष्ठात् शृङ्गात् कुल्मलान्,
निः अवोचम् अहम् विषम्।।5।।
633. अरसः ते इषो शल्यो, अथो ते अरसम् विषम्।
उत अरसस्य वृक्षस्य धनुः, ते अरस अरसम्।।6।।
634. ये अपीषन् ये अदिहन्, य आस्यन् ये अवासृजन्।
सर्वे ते वध्रयः कृता, वध्रिः विषगिरिः कृतः।।7।।
635. वध्रयः ते खनितारो, वध्रिः त्वम् असि ओषधे।
वध्रिः स पर्वतो गिरिः, यतो जातम् इदम् विषम्।।8।।

विषनाशन सूक्त 7

636. वाः इदम् वारयातै, वरणावत्याम् अधि।
तत्र अमृतस्य आसिक्तम्, तेना ते वारये विषम्।।1।।
637. अरसम् प्राच्यम् विषम्, अरसम् यत् उदीच्यम्।
अथ इदम् अधराच्यम्, करम्भेण वि कल्पते।।2।।
638. करम्भम् कृत्वा तिर्यम्, पीबस्पाकम् उदारथिम्।
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो, जक्षिवान् स न रूरुपः।।3।।
639. वि ते मदम् मदावति, शरमिव पातयामसि।
प्र त्वा चरुमिव येषन्तम्, वचसा स्थापयामसि।।4।।
640. परि ग्राममिव आचितम्, वचसा स्थापयामसि।
तिष्ठा वृक्ष इव स्थाम्नि, अभ्रिखाते न रूरुपः।।5।।
641. पवस्तैः त्वा परि अक्रीणन्, दूर्शेभिः अजनैः उत।
प्रक्रीः असि त्वम् ओषधे, अभ्रिखाते न रूरुपः।।6।।
642. अनाप्ता ये वः प्रथमा, यानि कर्माणि चक्रिरे।
वीरान् नो अत्र मा दभन्, तत् व एतत् पुरो दधे।।7।।

राज्याभिषेक सूक्त 8

643. भूतो भूतेषु पय आ दधाति,
स भूतानाम् अधिपतिः बभूव।
तस्य मृत्युः चरति राजसूयम्,
स राजा राज्यम् अनु मन्यताम् इदम्।1।
644. अभि प्र इहि मा अप, वेन उग्रः चेत्ता सपत्नहा।
आ तिष्ठ मित्रवर्धन, तुभ्यम् देवा अधि ब्रुवन्।।2।।
645. आतिष्ठन्तम् परि विश्वे अभूषन्,
श्रियम् वसानः चरति स्वरोचिः।
महत् तत् वृष्णो असुरस्य नाम,
आ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ।।3।।
646. व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे, वि क्रमस्व दिशो महीः।
विशः त्वा सर्वा वाञ्छन्तु, आपो दिव्याः पयस्वतीः।।4।।
647. आ आपो दिव्याः पयसा मदन्ति,
अन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम्।
तासाम् त्वा सर्वासाम् अपाम्, अभि षिञ्चामि वर्चसा।।5।।
648. अभि त्वा वर्चसा असिचन्, आपो दिव्याः पयस्वतीः।
यथा असो मित्रवर्धनः तथा, त्वा सविता करत्।।6।।
649. एना व्याघ्रम् परिषस्वजानाः,
सिंहम् हिन्वन्ति महते सौभगाय।
समुद्रम् न सुभुवः तस्थिवांसम्,
मर्मज्यन्ते द्वीपिनम् अप्सु अन्तः।।7।।

आञ्जन सूक्त 9

650. आ इहि जीवम् त्रायमाणम्, पर्वतस्य असि अक्ष्यम्।
विश्वेभिः देवैः दत्तम्, परिधिः जीवनाय कम्।।1।।
651. परिमाणम् पुरुषाणाम्, परिपाणम् गवाम् असि।
अश्वानाम् अर्वताम्, परिपाणाय तस्थिषे।।2।।
652. उत असि परिपाणम्, यातुजम्भनम् आञ्जन।
उत अमृतस्य त्वम् वेत्थ अथो असि,
जीवभोजनम् अथो हरितभेषजम्।
653. यस्य आञ्जन प्रसर्पसि, अङ्गमङ्गम् परुष्परुः।
ततो यक्ष्मम् वि बाधस, उग्रो मध्यमशीरिव।।4।।
654. न एनम् प्राप्नोति शपथो,
न कृत्या न अभि शोचनम्।
न एनम् विष्कन्धम् अश्नुते, यः त्वा बिभर्ति आञ्जन।।5।।
655. असन्मन्त्रात् दुस्वपन्यात्, दुष्कृतात् शमलात् उत।
दुर्हार्दः चक्षुषो घोरात्, तस्मात् नः पाहि आञ्जन।।6।।
656. इदम् विद्वान् आञ्जन, सत्यम् वक्ष्यामि न अनृतम्।
सनेयम् अश्वम् गाम् अहम्, आत्मानम् तव पुरुष।।7।।
657. त्रयो दासा आञ्जनस्य, तक्मा बलास आत् अहिः।
वर्षिष्ठः पर्वतानाम्, त्रिककुत् नाम ते पिता।।8।।
658. यत् आञ्जनम् त्रैककुदम्, जातम् हिमवतः परि।
यातून् च सर्वान् जम्भयत्, सर्वान् च यातुधान्यः।।9।।
659. यदि वा असि त्रैककुदम्, यदि यामुनम् उच्यसे।
उभे ते भद्रे नाम्नी ताभ्याम्, नः पाहि आञ्जन।।10।।

शङ्खमणि सूक्त 10

660. वातात् जातो अन्तरिक्षात्, विद्युतो ज्योतिषः परि।
स नो हिरण्यजाः शङ्खः, कृशनः पातु अंहसः।।1।।
661. यो अग्रतो रोचनानाम्, समुद्रात् अधि जज्ञिषे।
शङ्खेन हत्वा रक्षांसि, अत्रिणो वि षहामहे।।2।।
662. शङ्खेन अमीवाम् अमतिम्, शङ्खेन उत सदान्वाः।
शङ्खो नो विश्वभेषजः, कृशनः पातु अंहसः।।3।।
663. दिवि जातः समुद्रजः, सिन्धुतः परि आभृतः।
स नो हिरण्यजाः शङ्ख, आयुष्प्रतरणो मणिः।।4।।
664. समुद्रात् जातो मणिः, वृत्रात् जातो दिवाकरः।
सो अस्मान् सर्वतः, पातु हेत्या देवासुरेभ्यः।।5।।

665. हिरण्यानाम् एको असि, सोमात् त्वम् अधि जज्ञिषे।
रथे त्वम् असि दर्शत इषुधौ,
रोचनः त्वम् प्र ण आयूंषि तारिषत्।।6।।
666. देवानाम् अस्थि कृशनम् बभूव,
तत् आत्मन्वत् चरति अप्सु अन्तः।
तत् ते बध्नामि आयुषे वर्चसे बलाय,
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय कार्शनः त्वा अभि रक्षतु।।7।।

तृतीयो अनुवाकः

अनड्वान् सूक्त 11

667. अनड्वान् दाधार पृथिवीम् उत द्याम्,
अनड्वान् दाधार ऊरु अन्तरिक्षम्।
अनड्वान् दाधार प्रदिशः षड् ऊर्वीः,
अनड्वान् विश्वम् भुवनम् आ विवेश।।1।।
668. अनड्वान् इन्द्रः स पशुभ्यो वि चष्टे,
त्रयान् शक्रो वि मिमीते अध्वनः।
भूतम् भविष्यत् भुवना दुहानः,
सर्वा देवानाम् चरति व्रतानि।।2।।
669. इन्द्रो जातो मनुष्येषु अन्तः,
घर्मः तप्तः चरति शोशुचानः।
सुप्रज्ञाः सन् स उदारे न सर्षत्,
यो न अशनीयात् अनडुहो विजानन्।3।
670. अनड्वान् दुहे सुकृतस्य लोक आ एनम्,
प्याययति पवमानः पुरस्तात्।
पर्जन्यो धारा मरुत ऊधो अस्य,
यज्ञो पयो दक्षिणा दोहो अस्य।।4।।
671.यस्य न ईशे यज्ञपतिः न यज्ञो,
न अस्य दात ईशे न प्रतिग्रहीता।
यो विश्वजित् विश्वभृत् विश्वकर्मा,
घर्मम् नो ब्रूत यतमः चतुष्पात्।।5।।
672. येन देवाः स्वः आरुरुहुः,
हित्वा शरीरम् अमृस्य नाभिम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकम्,
घर्मस्य व्रतेन तपसा यशस्यवः।।6।।
673. इन्द्रो रुपेणा अग्निः वहेन,
प्रजापतिः परमेष्ठी विराट्।
विश्वानरे अक्रमत वैश्वानरे, अक्रमत अनडुहि
अक्रमत सो अदृंहयत सो अधारयत्।।7।।
674. मध्यम् एतत् अनडुहो, यत्र एष वह आहितः।
एतावत् अस्य प्राचीनम्, यावान् प्रत्यङ् समाहितः।।8।।
675. यो वेद अनडुहो दोहान्, सप्त अनुपदस्वतः।
प्रजाम् च लोकम् च आप्नोति, तथा सप्तऋषयो विदुः।।9।।
676. पद्भिः सेदिम् अवक्रामन्,
इराम् जङ्घाभिः उत् खिदन्।
श्रमेण अनड्वा कीलालम्, कीनाशः च अभि गच्छतः।।10।।
677. द्वादश वा एता रात्रीः, व्रत्या आहुः प्रजापतेः।
तत्र उप ब्रह्म यो वेद, तत् वा अनडुहो व्रतम्।।11।।
678. दुहे सायम् दुहे प्रातः, दुहे मध्यन्दिनम् परि।
दोहा ये अस्य संयन्ति, तान् विद्म अनु पदस्वतः।।12।।

रोहिणी वनस्पति सूक्त 12

679. रोहणी असि रोहणी, अस्थ्नः छिन्नस्य रोहणी।
रोहय इदम् अरुन्धति।।1।।
680. यत् ते रिष्टम् यत् ते द्युत्तम्,
अस्ति पेष्ट्रम् त आत्मनि।
धाता तत् भद्रया पुनः, सम् दधत् परुषा परुः।।2।।
681. सम् ते मज्जा मज्ज्ञा, भवतु सम् उ ते परुषा परुः।
सम् ते मांसस्य विस्रस्तम्, सम् अस्थि अपि रोहतु।।3।।
682. मज्जा मज्ज्ञा सम् धीयताम्, चर्मणा चर्म रोहतु।
असृक् ते अस्थि रोहतु, मांसम् मांसेन रोहतु।।4।।
683. लोम लोम्ना सम् कल्पया,
त्वचा सम् कल्पया त्वचम्।
असृक् ते अस्थि रोहतु, छिन्नम् सम् धेहि ओषधे।।5।।
684. स उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव,
रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः।
प्रति तिष्ठ ऊर्ध्वः।।6।।
685. यदि कर्तम् पतित्वा संशश्रे,
यदि वा अश्मा प्रहृतो जघान।
ऋभू रथस्येव अङ्गानि, सम् दधत् परुषा परुः।।7।।

रोग निवारण सूक्त 13

686. उत देवा अवहितम्, देवा उत् नयथा पुनः।
उत आगः चक्रुषम् देवा, देवा जीवयथा पुनः।।1।।
687. द्वा इमौ वातौ वात, आ सिन्धोः आ परावतः।
दक्षम् ते अन्यो आवातु, वि अन्यो वातु यत् रपः।।2।।
688. आ वात वाहि भेषजम्, वि वात वाहि यत् रपः।
त्वम् हि विश्वभेषज, देवानाम् दूत ईयसे।।3।।
689. त्रायन्ताम् इमम् देवाः, त्रायन्ताम् मरुताम् गणाः।
त्रायन्ताम् विश्वा भूतानि, यथा अयम् अरपा असत्।।4।।
690. आ त्वा अगमम् शंतातिभिः अथो अरिष्टतातिभिः।
दक्षम् त उग्रम आ अभारिषम् परा यक्ष्मम् सुवामि ते।।5।।
691. अयम् मे हस्तो भगवान् अयम् मे भगवत्तरः।
अयम् मे विश्वभेषजो अयम् शिवाभिमर्शनः।।6।।
692. हस्ताभ्याम् दशशाखाभ्याम् जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्याम् हस्ताभ्याम्
ताभ्याम् त्वा अभि मृशामसि।।7।।

स्वर्ज्योति प्राप्ति सूक्त 14

693. अजो हि अग्नेः अजनिष्ट शोकात्,
सो अपश्यत् जनितारम् अग्रे।
तेन देवा देवताम् अग्र आयन्,
तेन रोहान् रुरुहुः मेध्यासः।।1।।
694. क्रमध्वम् अग्निना नाकम्, उख्यान् हस्तेषु बिभ्रतः।
दिवः पृष्ठम् स्वः गत्वा, मिश्रा देवेभिः आध्वम्।।2।।
695. पृष्ठात् पृथिव्या अहम् अन्तरिक्षम् आ अरुहम्,
अन्तरिक्षात् दिवम् आ अरुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्, स्वः ज्योतिः अगाम् अहम्।।3।।
696. स्वः यन्तो न अप ईक्षन्त,
आ द्याम् रोहन्ति रोदसी।
यज्ञम् ये विश्वतोधारम् सुविद्वांसो वितेनिरे।।4।।
697. अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानाम्,
चक्षुः देवानाम् उत मानुषाणाम्।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः,
स्वः यन्तु यजमानाः स्वस्ति।।5।।
698. अजम् अनज्मि पयसा घृतेन,
दिव्यम् सुपर्णम् पयसम् बृहन्तम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकम्,
स्वः आरोहन्तः अभि नाकम् उत्तमम्।।6।।
699. पञ्चौदनम् पञ्चभिः अंङ्गुलिभिः दर्व्या,
उत् हर पञ्चधा एतम् ओदनम्।
प्राच्याम् दिशि शिरो अजस्य धेहि,
दक्षिणायाम् दिशि दक्षिणम् धेहि पार्श्वम्।।7।।
700. प्रतीच्याम् दिशि भसदम् अस्य धेहि,
उत्तरस्याम् दिशि उत्तरम् धेहि पार्श्वम्।
ऊर्ध्वायाम् दिशि अजस्य अनूकम् धेहि,
दिशि ध्रुवायाम् धेहि पाजस्यम्,
अन्तरिक्षे मध्यतो मध्यम् अस्य।।8।।
701. शृतम् अजम् शृतया प्र ऊर्णुहि त्वचा,
सर्वैः अङ्गैः सम्भृतम् विश्वरूपम्।
स उत तिष्ठ इतो अभि नाकम् उत्तमम्,
पद्भिः चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु।।9।।

वृष्टि सूक्त 15

702.सम् उत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः,
सम् अभ्राणि वातजूतानि यन्तु।
महऋषभस्य नदतो नमस्वतो,
वाश्रा आपः पृथिवीम् तर्पयन्तु।।1।।
703.सम् ईक्षयन्तु तविषाः सुदानवो,
अपाम् रसा ओषधीभिः सचन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिम् पृथक्,
जायन्ताम् ओषधयो विश्वरूपाः।2।
704. सम् ईक्षयस्व गायतो नभांसि,
अपाम् वेगासः पृथक् उत् विजन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिम् पृथक्,
जायन्ताम् वीरुधो विश्वरूपाः।।3।।
705. गणाः त्वा उप गायन्तु,
मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक्।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो, वर्षन्तु पृथिवीम् अनु।।4।।
706. उत् ईरयत मरुतः समुद्रतः,
त्वेषो अर्को नभ उत् पातयाथ।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो,
वाश्रा आपः पृथिवीम् तर्पयन्तु।।5।।
707. अभि क्रन्द स्तनय अर्दय उदधिम् भूमिम्,
पर्जन्य पयसा सम् अङ्गधि।
त्वया सृष्टम् बहुलम् आ एतु वर्षम्,
आशारैषी कृशगुः एतु अस्तम्।।6।।
708. सम् वो अवन्तु सुदानव, उत्सा अजगरा उत।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा, वर्षन्तु पृथिवीम् अनु।।7।।
709. आशाम् आशाम् वि द्योतताम्,
वाता वान्तु दिशोदिशः।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः, सम् यन्तु पृथिवीम् अनु।।8।।
710. आपो विद्युत् अभ्रम् वर्षम् सम् वो अवन्तु,
सुदानव उत्सा अजगरा उत।
मरुद्भि प्रच्युता मेघाः, प्र अवन्तु पृथिवीम् अनु।।9।।
711. अपाम् अग्निः तनूभिः संविदानो,
य ओषधीनाम् अधिपा बभूव।
स नो वर्षम् वनुताम् जातवेदाः,
प्राणम् प्रजाभ्यो अमृतम् दिवः परि।10।
712. प्रजापतिः सलिलात् आ समुद्रात्,
आप ईरयन् उदधिम् अर्दयाति।
प्र प्यायताम् वृष्णो अश्वस्य रेतो अर्वाङ्स,
एतेन स्तनयित्नुना आ इहि।
713. अपो निषिञ्चन् असुरः पिता नः श्वसन्तु,
गर्गरा अपाम् वरुण अव नीचीः अपः सृज।
वदन्तु पृश्निबाहवो, मण्डूका इरिणा अनु।।13।।
714. संवत्सम् शशयाना, ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचम् पर्जन्य जिन्विताम्, प्र मण्डूका अवादिषुः।।13।।
715. उप प्रवद मण्डूकि, वर्षम् आ वद तादुरि।
मध्ये ह्रदस्य प्लवस्व, विगृह्य चतुरः पदः।।14।।
716. खण्वखा3इ खैमखा3इ मध्ये तदुरि।
वर्षम् वनुध्वम् पितरो, मरुताम् मन इच्छत।।15।।
717. महान्तम् कोशम् उत् अच अभि षिञ्च,
सविद्युतम् भवतु वातु वातः।
तन्वताम् यज्ञम् बहुधा विसृष्टा,

आनन्दिनीः ओषधयो भवन्तु।।16।।

चतुर्थो अनुवाकः

सत्यानृतसमीक्षक सूक्त 16

718. बृहन् एषाम् अधिष्ठाता, अन्तिकादिव पश्यति।
यः तायत् मन्यते चरन्, सर्वम् देवा इदम् विदुः।।1।।
719. यः तिष्ठति चरति यः च वञ्चति,
यो निलायम् चरति यः प्रतङ्कम्।
द्वौ संनिषद्य यत् मन्त्रयेते,
राजा तत् वेद वरुणः तृतीयः।।2।।
720. उत इयम् भूमिः वरुणस्य राज्ञ,
उत असौ द्यौः बृहती दूरे अन्ता।
उतो समुद्रौ वरुणस्य कुक्षी,
उत अस्मिन् अल्प अदके निलीनः।।3।।
721. उत यो द्याम् अतिसर्पात् परस्तात्,
न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः।
दिव स्पशः प्र चरन्ति इदम् अस्य,
सहस्राक्षा अति पश्यन्ति भूमिम्।4।
722.सर्वम् तत् राजा वरुणो वि चष्टे,
यत् अन्तरा रोदसी यत् परस्तात्।
संख्याता अस्य निमिषो जनानाम् अक्षान्,
इव श्वघ्नी नि मिनोति तानि।।5।।
723. ये ते पाशा वरुण सप्त सप्त,
त्रेधा तिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः।
छिनन्तु सर्वे अनृतम् वदन्तम्,
यः सत्यवादी अति तम् सृजन्तु।।6।।
724. शतेन पाशैः अभि धेहि वरुण एनम्,
मा ते मोचि अनृतवाङ् नृंचक्षः।
आस्ताम् जाल्म उदरम् श्रंशयित्वा कोश,
इव अबन्धः परिकृत्यमानः।7।
725. यः समाम्यो वरुणो यो व्याम्यो,
यः संदेश्यो वरुणो यो विदेश्यः।
यो दैवो वरुणो यः च मानुषः।।9।।
726.तैः त्वा सर्वैः अभि ष्यामि पाशैः,
असौ अमुष्यायण अमुष्याः पुत्र।
तान् उ ते सर्वान्, अनु संदिशामि।।10।।

अपामार्ग सूक्त 17

727. ईशानाम् त्वा भेषजानाम्, उज्जेष आ रभामहे।
चक्रे सहस्रवीर्यम्, सर्वस्मा ओषधे त्वा।।1।।
728. सत्यजितम् शपथयावनीम्, सहमानाम् पुनः सराम्।
सर्वाः सम् अह्विं ओषधीः, इतो नः पारयात् इति।।2।।
729. या शशाप शपनेन, या अघम् मूरम आदधे।
या रसस्य हरणाय जाम्, आरेभे तोकम् अत्तु सा।।3।।
730. याम् ते चक्रुः आमे पात्रे, याम् चक्रुः नीललोहिते।
आमे मांसे कृत्याम् याम्, चक्रुः तया कृत्याकृतो जहि।।4।।
731. दौष्वप्न्यम् दौर्जीवित्यम्, रक्षो अभ्वम् अराय्यः।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचः, ता अस्मत् नाशयामसि।।5।।
732. क्षुधामारम् तृष्णामारम्, अगोतम् अनपत्यताम्।
अपामार्ग त्वया वयम् सर्वम्, तत् अप मृज्महे।।6।।
733. तृष्णामारम् क्षुधामारम्, अथो अक्षपराजयम्।
अपामार्ग त्वया वयम्, सर्वम् तत् अप मृज्महे।।7।।
734. अपामार्ग ओषधीनाम्, सर्वासाम् एक इत् वशी।
तेन ते मृज्म आस्थितम्, अथ त्वम् अगदः चर।।8।।

अपामार्ग सूक्त 18

735. समम् ज्योतिः सूर्येण, अह्ना रात्री समावती।
कृणोमि सत्यम् ऊतये, अरसाः सन्तु कृत्वरीः।।1।।
736. यो देवाः कृत्याम् कृत्वा, हरात् अविदुषो गृहम्।
वत्सो धारुरिव मातरम्, तम् प्रत्यक् उप पद्यताम्।।2।।
737. अमा कृत्वा पाप्मानम्, यः तेन अन्यम् जिघांसति।
अश्मानः तस्याम् दग्धायाम्, बहुलाः फट् करिक्रति।।3।।
738. सहस्रधामन् विशिखान्, विग्रीवान् शायया त्वम्।
प्रति स्म चक्रुषे कृत्याम्, प्रियाम् प्रियवते हर।।4।।
739. अनया अहम् ओषध्या, सर्वाः कृत्या अदूदुषम्।
याम् क्षेत्रे चक्रुः याम् गोषु, याम् वा ते पुरुषेषु।।5।।
740. यः चकार न शशाक कर्तुम्, शश्रे पादम् अङ्गुरिम्।
चकार भद्रम् अस्मभ्यम्, आत्मने तपनम् तु सः।।6।।
741. अपामार्गो अप मार्ष्टु, क्षेत्रियम् शपथः च यः।
अप अह यातुधानीः, अप सर्वा अराय्यः।।7।।
742. अपमृज्य यातुधानान्, अप सर्वा अराव्यः।
अपामार्ग त्वया वयम्, सर्वम् तत् अप मृज्महे।।8।।

अपामार्ग सूक्त 19

743. उतो असि अबन्धुकृत्, उतो असि नु जामिकृत्।
उतो कृत्याकृतः प्रजाम्, नडमिव आछिन्धि वार्षिकम्।।1।।
744. ब्राह्मणेन पर्युक्त, असि कण्वेन नार्षदेन।
सेना एव एषि त्विषीमती न तत्र भयम्,
अस्ति यत्र प्राप्नोषि ओषधे।2।
745. अग्रम् एषि ओषधीनाम्, ज्योतिषेव अभिदीपयन्।
उत त्राता असि पाकस्य, अथो हन्ता असि रक्षसः।।3।।
746. यत् अदो देवा असुरान्, त्वया अग्रे निरकुर्वत।
ततः त्वम् अधि ओषधे, अपामार्गो अजायथाः।।4।।
747. विभिन्दती शतशाखा, विभिन्दन् नाम ते पिता।
प्रत्यक् वि भिन्धि त्वम्,
तम् यो अस्मान् अभिदासति।।5।।
748. असत् भूम्याः सम् अभवत्,
तत् याम् एति महत् व्यचः।

तत् वै ततो विधूपायत्, प्रत्यक् कर्त्तारम् ऋच्छतु।।6।।
749. प्रत्यङ् हि संबभूविथ, प्रतीचीनफलः त्वम्।
सर्वान् मत् शपथान्, अधि वरीयो यावय वधम्।।7।।
750. शतेन मा परि पाहि, सहस्रेण अभि रक्ष मा।
इन्द्र ते वीरुधाम् पत उग्र, ओज्मानम् आ दधत्।।8।।

पिशाचक्षयण सूक्त 20

751. आ पश्यति प्रति पश्यति, परा पश्यति पश्यति।
दिवम् अन्तरिक्षम् आत् भूमिम्,
सर्वम् तत् देवि पश्यति।।1।।
752. तिस्रो दिवः तिस्रः पृथिवी,
षट् च इमाः प्रदिशः पृथक्।
त्वया अहम् सर्वा भूतानि, पश्यानि देवि ओषधे।।2।।
753. दिव्यस्य सुपर्णस्य, तस्य ह असि कनीनिका।
सा भूमिम् आ रुरोहिथ, वह्यम् श्रान्ता वधूरिव।।3।।
754. ताम् मे सहस्राक्षो देवो, दक्षिणे हस्त आ दधत्।
तया अहम् सर्वम् पश्यामि, यः च शूद्र उत आर्यः।।4।।
755. आविः कृणुष्व रूपाणि, मा आत्मानम् अप गूहथाः।
अथो सहस्रचक्षो त्वम्, प्रति पश्याः किमीदिनः।।5।।
456. दर्शय मा यातुधानान्, दर्शय यातुधान्यः।
पिशाचान् सर्वान् दर्शय, इति त्वा रभ ओषधे।।6।।
457. कश्यपस्य चक्षुः असि, शुन्याः च चतुरक्ष्याः।
वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तम्, मा पिशाचम् तिरः क रः।।7।।
458. उत् अग्रभम् परिपाणात्, यातुधानम् किमीदिनम्।
तेन अहम् सर्वम् पश्यामि, उत शूद्रम् उत आर्यम्।।8।।
459. यो अन्तरिक्षेण पतति, दिवम् यः च अतिसर्पति।
भूमिम् यो मन्यते नाथम्, तम् पिशाचम् प्र दर्शय।।9।।

पञ्चमो अनुवाकः

सूक्त 21

760.आ गावो अग्मन् उत भद्रम् अक्रन्,
सीदन्तु गोष्ठे रणयन्तु अस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युः,
इन्द्राय पूर्वीः उषसो दुहानाः।।1।।
761. इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत,
उप इत् ददाति न स्वम् मुषायति।
भूयो-भूयो रयिम् इत् अस्य वर्धयन्,
अभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्।।2।।
762. न ता नशन्ति न दभाति तस्करो,
न आसाम् आमित्रः व्यथिः आ दधर्षति।
देवान् च याभिः यजते ददाति च ज्योक्,
इत् ताभिः सचते गोपतिः सह।।3।।
763. न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते,
न संस्कृतत्रम् उप यन्ति ता अभि।
उरुगायम् अभयम् तस्य ता अनु गावो,
मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः।4।
764. गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छात्,
गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र,
इच्छामि हृदा मनसा चित् इन्द्रम्।।5।।
765. यूयम् गावो मेदयथा कृशम्,
चित् अश्रीरम् चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रम् गृहम् कृणुथ भद्रवाचो,
बृहत् वो वय उच्यते सभासु।।6।।
766. प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः,
शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा व स्तेन ईशत मा अघशंसः,
परि वो रुद्रस्य हेतिः वृणक्तु।।7।।

अमित्रक्षयण सूक्त 22

767.इमम् इन्द्र वर्धय क्षत्रियम् म,
इमम् विशाम् एकवृषम् कृणु त्वम्।
निः अमित्रान् अक्ष्णुहि अस्य सर्वान्,
तान् रन्धय अस्मा अहम् उत्तरेषु।1
768.आ इमम् भज ग्राम् अश्वेषु,
गोषु निः तम् भज यो अमित्रो अस्य।
वर्ष्म क्षत्राणाम् अयम् अस्तु,
राजा इन्द्र शत्रुम् रन्धय सर्वम् अस्मै।2।
769. अयम् अस्तु धनपतिः धनानाम्,
अयम् विशाम् विश्पतिः अस्तु राजा।
अस्मिन् इन्द्र महि वर्चासि धेहि,
अवर्चसम् कृणुहि शत्रुम् अस्य।।3।।
770. अस्मै द्यावापृथिवी भूरि वामम्,
दुहाथाम् घर्मदुघे इव धेनू।
अयम् राजा प्रिय इन्द्रस्य भूयात्,
प्रियो गवाम् ओषधीनाम् पशूनाम्।4।
771. युनज्मि त उत्तरावन्तम् इन्द्रम्,
येन जयन्ति न पराजयन्ते।
यः त्वा करत् एकवृषम् जनानाम्,
उत राज्ञाम् उत्तमम् मानवानाम्।।5।।
772. उत्तरः त्वम् अधरे ते सपत्ना,
ये के च राजन् प्रतिशत्रवः ते।
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवान्,
शत्रूयताम् आ भरा भोजनानि।।6।।
773. सिंहप्रतीको विशो अद्धि सर्वा,
व्याघ्रप्रतीको अव बाधस्व शत्रून्।
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवान्,

शत्रूयताम् आ खिदा भोजनानि।।7।।

पापमोचन सूक्त 23

774.अग्नेः मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः,
पाञ्चजन्यस्य बहुधा यम् इन्धते।
विशोविशः प्रविशिवांसम् ईमहे, स नो मुञ्चतु अंहसः।।1।।
775. यथा हव्यम् वहसि जातवेदो,
यथा यज्ञम् कल्पयसि प्रजानन्।
एवा देवेभ्यः सुमतिम् न आ वह,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।2।।
776. यामन्-यामन् उपयुक्तम्,
वहिष्ठम् कर्मन्-कर्मन् आ भगम्।
अग्निम् ईडे रक्षोहणम् यज्ञवृधम् घृताहुतम्,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।3।।
777. सुजातम् जातवेदसम्, अग्निम् वैश्वानरम् विभुम्।
हव्यवाहम् हवामहे, स नो मुञ्चतु अंहसः।।4।।
778. येन ऋषयो बलम् अद्योतयन् युजा,
येन असुराणाम् अयुवन्त मायाः।
येन अग्निना पणीन् इन्द्रो जिगाय,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।5।।
779. येन देवा अमृतम् अन्वविदन्,
येन ओषधीः मधुमतीः अकृण्वन्।
येन देवाः स्वः आ अभरन्, स नो मुञ्चतु अंहसः।।6।।
780. यस्य इदम् प्रदिशि यत् विरोचते,
यत् जातम् जनितव्यम् च केवलम्।
स्तौभि अग्निम् नाथितो जोहवीमि,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।7।।

पापमोचन सूक्त 24

781. इन्द्रस्य मन्महे शश्वत् इत् अस्य मन्महे,
वृत्रघ्न स्तोमा उप मा इमे आगुः।
यो दाशुषः सुकृतो हवम् एति, स नो मुञ्चतु अंहसः।।1।।
782. य उग्रीणाम् उग्रबाहुः ययुः,
यो दानवानाम् बलम् आरुरोज।
येन जिताः सिन्धवो येन गावः, स नो मुञ्चतु अंहसः।।2।।
783. यः चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्वित्,
यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम्।
यस्य अध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।3।।
784. यस्य वशास ऋषभास उक्षणो,
यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे।
यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।4।।
785. यस्य जुष्टिम् सोमिनः कामयन्ते,
यम् हवन्त इषुम् अन्तम् गविष्टौ।
यस्मिन् अर्कः शिश्रिये, यस्मिन्
ओजः स नो मुञ्चतु अंहसः।।5।।
786. यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे,
यस्य वीर्यम् प्रथमस्य अनुबुद्धम्।
येन उद्यतो वज्रो अभ्यायत अहिम्,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।6।।
787. यः संग्रामान् नयति सम् युधे वशी,
यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि।
स्तौमि इन्द्रम् नाथितो जोहवीमि,
स नो मुञ्चतु अंहसः।।7।।

पापमोचन सूक्त 25

788. वायोः सवितुः विदथानि मन्महे,
यौ आत्मन्वत् विशयो यौ च रक्षथः।
यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुः, तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।1।।
789. ययोः संख्याता वरिमा पार्थिवानि,
याभ्याम् रजो युपितम् अन्तरिक्षे।
ययोः प्रायम् न अन्वानशे कः चन,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।2।।
790. तव व्रते नि विशन्ते जनासः,
त्वयि उदिते प्र ईरते चित्रभानो।
युवम् वायो सविता च भुवनानि,
रक्षथः तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।3।।
791. अप इतो वायो सविता च दुष्कृतम्,
अप रक्षांसि शिमिदाम् च सेधतम्।
सम् हि ऊर्जया सृजथः सम् बलेन,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।4।।
792. रयिम् मे पोषम् सविता उत वायुः,
तनू दक्षम् आ सुवताम् सुशेवम्।
अयक्ष्मतातिम् मह इह धत्तम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।5।।
793. प्र सुमतिम् सवितः वाय ऊतये,
महस्वन्तम् मत्सरम् मादयाथः।
अर्वाक् वामस्य प्रवतो नि यच्छतम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।6।।
794. उप श्रेष्ठा न आशिषो, देवयोः धामन् अस्थिरन्।
स्तौमि देवम् सवितारम् च वायुम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।7।।

षष्ठो अनुवाकः

अमित्रक्षयण सूक्त 26

795. मन्वे वाम् द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ,
ये अप्रथेथाम् अमिता योजनानि।

प्रतिष्ठे हि अभवतम् वसूनाम्,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।1।।
796. प्रतिष्ठे हि अभवतम् वसूनाम्,
प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।2।।
797. असंतापे सुतपसौ हुवे अहम्,
ऊर्वी गम्भीरे कविभिः नमस्ये।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।3।।
798. ये अमृतम् बिभृतो ये हवींषि,
ये स्रोत्या बिभृथो ये मनुष्यान्।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।4।।
799. ये उस्रिया बिभृथो ये वनस्पतीन्,
ययोः वाम् विश्वा भुवनानि अन्तः।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।5।।
800. ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्याम्,
ऋते न किम् चन शक्नुवन्ति।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।6।।
801.यत् मा इदम् अभिशोचति,
येन-येन वा कृतम् पौरषेयात् न दैवात्।
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः।।7।।

पापमोचन सूक्त 27

802.मरुताम् मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु,
प्र इमम् वाजम् वाजसाते अवन्तु।
आशूनिव सुयमान् अह्व ऊतये, ते नो मुञ्चतु अंहसः।।1।।
803. उत्सम् अक्षितम् व्यचन्ति ये सदा,
य आसिञ्चन्ति रसम् ओषधीषु।
पुरो दधे मरुतः पृश्निमातृन्, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।।2।।
804.पयो धेनूनाम् रसम् ओषधीनाम्,
जवम् अर्वताम् कवयो य इन्वथ।
शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनाः,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।।3।।
805. अपः समुद्रात् दिवम् उत् वहन्ति,
दिवः पृथिवीम् अभि ये सृजन्ति।
ये अद्भिः ईशाना मरुतः चरन्ति,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।।4।।
806. ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन,
ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति।
ये अद्भिः ईशाना मरुतो वर्षयन्ति,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।।5।।
807. यदी इत् इदम् मरुतो मारुतेन,
यदि देवा दैव्येन ईदृक आर।
यूयम् ईशिध्वे वसवः तस्य निष्कृतेः,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।।6।।
808. तिग्मम् अनीकम् विदितम् सहस्वन्,
मारुतम् शर्धः पृतनासु उग्रम्।
स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।।7।।

पापमोचन सूक्त 28

809. भवाशर्वौ मन्वे वाम् तस्य वित्तम्,
ययोः वाम् इदम् प्रदिशि यत् विरोचते।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।1।।
810. ययोः अभ्यध्व उत यत् दूरे चित्,
यौ विदितौ इषुभृताम् असिष्ठौ।
यौ अस्य इशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।2।।
811. सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवे अहम्,
दूरेगव्यूती स्तुवन् एमि उग्रौ।
यौ अस्य इशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।3।।
812.यौ आरेभाथे बहु साकम् अग्रे,
प्र च इत् अस्राष्ट्रम् अभिभाम् जनेषु।
यौ अस्य इशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।4।।
813. ययोः वधात् न अपपद्यते,
कः चन अन्तः देवेषु उत मानुषेषु।
यौ अस्य इशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।5।।
814. यः कृत्याकृत् मूलकृत् यातुधानो,
नि तस्मिन् धत्तम् वज्रम् उग्रौ।
यौ अस्य इशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।6।।
815. अधि नो ब्रूतम् पृतनासु उग्रौ,
सम् वज्रेण सृजतम् यः किमीदी।
स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।7।।

पापमोचन सूक्त 29

816. मन्वे वाम् मित्रावरुणौ ऋतावृधौ,

सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे।
प्र सत्यावानम् अवथो भरेषु, तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।1।।
817. सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे,
प्र सत्यावानम् अवथो भरेषु।
यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।2।।
818. यौ अङ्गिरसम् अवथो यौ अगस्तिम्,
मित्रावरुणा जमदग्निम् अत्रिम्।
यौ कश्यपम् अवथो यौ वसिष्ठम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।3।।
819. यौ श्यावाश्वम् अवथो वध्र्यश्वम्,
मित्रावरुमा पुरुमीढम् अमित्रम्।
यौ विमदम् अवथः सप्तवध्रिम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।4।।
820. यौ भरद्वाजम् अवथो यौ गविष्ठिरम्,
विश्वामित्रम् वरुण मित्र कुत्सम्।
यौ कक्षीवन्तम् अवथः प्र उत कण्वम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।5।।
821. यौ मेधातिथिम् अवथो यौ त्रिशोकम्,
मित्रावरुणौ उशनाम् काव्यम् यौ।
यौ गोतमम् अवथः प्र उत मुद्गलम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।6।।
822. ययो रथः सत्यवर्त्म ऋजुरश्मिः,
मिथुया चरन्तम् अभियाति दूषयन्।
स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितौ जौहवी,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः।।7।।

राष्ट्रदेवी सूक्त 30

823. अहम् रुद्रेभिः वसुभिः चरामि,
अहम् आदित्यैः उत विश्वदेवैः।
अहम् मित्रावरुणा उभा बिभर्मि,
अहम् इन्द्राग्नी अहम् अश्विना उभा।1।
824. अहम् राष्ट्री संगमनी वसूनाम्,
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
ताम् मा देवा वि अदधुः पुरुत्रा,
भूरिस्थात्राम् भूरि आवेशयन्तः।।2।।
825. अहम् एव स्वयम् इदम् वदामि,
जुष्टम् देवानाम् उत मानुषाणाम्।
यम् कामये तम् तम् उग्रम् कृणोमि,
तम् ब्रह्माणम् तम् ऋषिम् तम् सुमेधाम्।।3।।
826. मया सो अन्नम् अत्ति यो विपश्यति,
यः प्राणति य ईम् शृणोति उक्तम्।
अमन्तवो माम् त उप क्षियन्ति,
श्रुधि श्रुत श्रद्धेयम् ते वदामि।।4।।
827. अहम् रुद्राय धनुः आ तनोमि,
ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहम् जनाय समदम् कृणोमि,
अहम् द्यावापृथिवी आ विवेश।।5।।
828. अहम् सोमम् आहनसम् बिभर्मि,
अहम् त्वष्टारम् उत पूषणम् भगम्।
अहम् दधामि द्रविणा हविष्मते,
सुप्राव्या यजमानाय सुन्वते।।6।।
829. अहम् सुवे पितरम् अस्य मूर्धन्,
मम योनिः अप्सु अन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानि विश्वा,
उत अमूम् द्याम् वर्ष्मणा उप स्पृशामि।7
830. अहम् एव वात इव प्र वामि,
आरभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्या,
एतावती महिम्ना सम् बभूव।।8।।

सप्तमो अनुवाकः

सेनानिरीक्षण सूक्त 31

831. त्वया मन्यो सरथम् आरुजन्तो,
हर्षमाणा हृषितासो मरुत्वन्।
तिग्मेषव आयुधा संशिशाना,
उप प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः।।1।।
832. अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व,
सेनानीः नः सहुरे हूत एधि।
हत्वाय शत्रून् वि भजस्व वेद ओजो,
मिमानो वि मृधो नुदस्व।।2।।
833. सहस्व मन्यो अभिमातिम् अस्मै,
रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्र इहि शत्रून्।
उग्रम् ते पाजो ननु आ रुरुध्रे,
वशी वशम् नयासा एकज त्वम्।।3।।
834. एको बहूनाम् असि मन्य ईडिता,
विशम्-विशम् युद्धाय सम् शिशाधि।
अकृत्तरुक् त्वया युजा वयम्,
द्युमन्तम् घोषम् विजयाय कृण्मसि।।4।।
835.विजेषकृत् इन्द्र इव अनवब्रवो,
अस्माकम् मन्यो अधिपा भव इह।
प्रियम् ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्म,
आ तम् उत्सम् यत आबभूथ।5।
836. आभूत्या सहजा वज्र सायक,
सहो बिभर्षि सहभूत उत्तरम्।
क्रत्वा नो मन्यो सह मेदी एधि,

महाधनस्य पुरुहूत संसृजि।।6।।
837. संसृष्टम् धनम् उभयम् समाकृतम्,
अस्मभ्यम् धत्ताम् वरुणः च मन्युः।
भियो दधाना हृदयेषु शत्रवः,
पराजितासो अप नि लयन्ताम्।।7।।

सेना संयोजन सूक्त 32

838. यः ते मन्यो अविधत् वज्र सायक,
सह ओजः पुष्यति विश्वम् आनुषक्।
साह्याम दासम् आर्यम् त्वया युजा वयम्,
सहस्कृतेन सहसा सहस्वता।
839. मन्युः इन्द्रो मन्युः एव आस देवो,
मन्युः होता वरुणो जातवेदाः।
मन्युः विश ईडते मानुषीः याः,
पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः2।।
840. अभि इहि मन्यो तवसः तवीयान्,
तपसा युजा वि जहि शत्रून्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च,
विश्वा वसूनि आ भरा त्वम् नः।।3।।
841. त्वम् हि मन्यो अभिभूत्योजाः,
स्वयंभूः भामो अभिमातिषाहः।
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहीयान्,
अस्मासु ओजः पृतनासु धेहि।।4।।
842. अभागः सन् अप परेतो अस्मि,
त्व क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः।
तम् त्वा मन्यो अक्रतुः जिहीड अहम्,
स्वा तनूः बलदावा न आ इहि।5
843. अयम् ते अस्मि उप न आ इहि,
अर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वदावन्।
मन्यो वज्रिन अभि न आ ववृत्स्व,
हनाव दस्यून् उत बोधि आपेः।।6।।
844. अभि प्र इहि दक्षिणतो भवा,
नो अध आ वृत्राणि जङ्घनाव भूरि।
जुहोमि ते धरुणम् मध्वो अग्रम्,
उभौ उपांशु प्रथमा पिबाव।।7।।

पापनाशन सूक्त 33

845. अप नः शोशुचत् अघम्, अग्ने शुशुग्धि आ रयिम्।
अप नः शोशुचत् अघम्।।1।।
846. सुक्षेत्रिया सुगातुया, वसूया च यजामहे।
अप नः शोशुचत् अघम्।।2।।
847. प्र यत् भन्दिष्ठ एषाम्, प्र अस्माकासः च सूरयः
अप नः शोशुचत् अघम्।।3।।
848. प्र यत् ते अग्ने सूरयो, जायेमहि प्र ते वयम्।
अप नः शोशुचत् अघम्।।4।।
849. प्र यत् अग्नेः सहस्वतो, विश्वतो यन्ति भानवः।
अप नः शोशुचत् अघम्।।5।।
850. त्वम् हि विश्वतोमुख, विश्वतः परिभूः असि।
अप नः शोशुचत् अघम्।।6।।
851. द्विषो नो विश्वतोमुख, अति नावेव पारय।
अप नः शोशुचत् अघम्।।7।।
852. स नः सिन्धुमिव नावा, अति पर्षा स्वस्तये।
अप नः शोशुचत् अघम्।।8।।

ब्रह्मौदन सूक्त 34

853. ब्रह्म अस्य शीर्षम् बृहत् अस्य,
पृष्ठम् वामदेव्यम् उदरम् ओदनस्य।
छन्दांसि पक्षौ मुखम् अस्य सत्यम्,
विष्टारी जातः तपसो अधि यज्ञः।।1।।
854. अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः,
शुचयः शुचिम् अपि यन्तु लोकम्।
नैषाम् शिश्नम् प्र दहति जातवेदाः,
स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणम् एषाम्।।2।।
855. विष्टारिणम् ओदनम् ये पचन्ति न,
एनान् अवर्तिः सचते कदा चन।
आस्ते यम उप याति देवान्,
सम् गन्धर्वैः मदते सोम्येभिः।।3।।
856. विष्टारिणम् ओदनम् ये पचन्ति न,
एनान् यमः परि मुष्णाति रेतः।
रथी ह भूत्वा रथयान ईयते पक्षी,
ह भूत्वा अति दिवः सम् एति।।4।।
857. एष यज्ञानाम् विततो वहिष्ठो,
विष्टारिणम् पक्त्वा दिवम् आ विवेश।
आण्डीकम् कुमुदम् सम् तनोति,
बिसम् शालूकम् शफको मुलाली।
एताः त्वा धारा उप यन्तु, सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्,
पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु, पुष्करिणीः समन्ताः।।5।।
858. घृतह्रदा मधुकूलाः सुरोदकाः,
क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना।
एताः त्वा धारा उप यन्तु, सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्,
पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः।।6।।
859. चतुरः कुम्भान् चतुर्धा ददामि,
क्षीरेण पूर्णाम् उदकेन दध्ना।
एताः त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्,
पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः।।7।।
860.इमम् ओदनम् नि दधे ब्राह्मणेषु,
विष्टारिणम् लोकजितम् स्वर्गम्।

स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो,
विश्वरूपा धेनु कामदुघा मे अस्तु।8।

मृत्युसंतरण सूक्त 35

861. यम् ओदनम् प्रथमजा ऋतस्य,
प्रजापतिः तपसा ब्रह्मणे अपचत्।
यो लोकानाम् विघृतिः न अभिरेषात्,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्।।1।।
862. येन अतरन् भूतकृतो अति मृत्युम्,
यम् अन्वविन्दन् तपसा श्रमेण।
यम् पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वम्,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्।2।
863. यो दाधार पृथिवीम् विश्वभोजसम्,
यो अन्तरिक्षम् आ अपृणात् रसेन।
यो अस्तभ्नात् दिवम् ऊर्ध्वो महिम्ना,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्।।3।।
864. यस्मात् मासा निर्मिताः त्रिंशदराः संवत्सरो,
यस्मात् निर्मितो द्वादशारः।
अहोरात्रा यम् परियन्तो न आपुः,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्।4।
865. यः प्राणदः प्राणदवान् बभूव,
यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति।
ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वाः,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्।6।
866. यस्मात् पक्वात् अमृतम् संबभूव,
यो गायत्र्या अधिपतिः बभूव।
यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्।7।
867. अव बाधे द्विषन्तम् देवपीयुम्,
सपत्ना ये मे अप ते भवन्तु।
ब्रह्मौदनम् विश्वजितम् पचामि,
शृणवन्तु मे श्रद्दधानस्य देवाः।।7।।

अष्टमो अनुवाकः

सत्यौजा अग्नि सूक्त 36

868. तान् सत्यौजाः प्र दहतु, अग्निः वैश्वानरो वृषा।
यो नो दुसरस्यात् दिप्सात्,
च अथो यो नो अरातियात्।।1।।
869. यो नो दिप्सत् अदिप्सतो, यः च दिप्सति।
वैश्वानरस्य दंष्ट्रयोः, अग्नेः अपि दधामि तम्।।2।।
870. य आगरे मृगयन्ते, प्रतिक्रोशे अमावास्ये।
क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः, सर्वान् तान् सहसा सहे।।3।।
871. सहे पिशाचान् सहसा, एषाम् द्रविणम् ददे।
सर्वान् दुरस्यतो हन्मि, सम् म आकूतिः ऋध्यताम्।।4।।
872. ये देवाः तेन हासन्ते, सूर्येण मिमते जवम्।
नदीषु पर्वतेषु, ये सम् तैः पशुभिः विदे।।5।।
873. तपनो अस्मि पिशाचानाम्, व्याघ्रो गोमतामिव।
श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा, ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम्।।6।।
874. न पिशाचैः सम् शक्नोमि, न स्तेनैः न वनर्गुभिः।
पिशाचाः तस्मात् नश्यन्ति,
यम् अहम् ग्रामम् आविशे।।7।।
875. यम् ग्रामम् आविशत, इदम् उग्रम् सहो मम।
पिशाचाः तस्मात् नश्यन्ति, न पापम् उप जानते।।8।।
876. ये मा क्रोधयन्ति लपिता, हस्तिनम् मशका इव।
तान् अहम् मन्ये दुर्हितान्, जने अल्पशयून् इव।।9।।
877. अभि तम् निर्ऋतिः धत्ताम्,
अश्वमिव अश्वाभिधान्या।
मल्वो यो मह्यम् क्रुध्यति, स उ पाशात् मुच्यते।।10।।

कृमिनाशन सूक्त 37

878. त्वया पूर्वम् अथर्वाणो, जघ्नू रक्षांसि ओषधे।
त्वया जघान कश्यपः, त्वया कण्वो अगस्त्यः।।1।।
879. त्वया वयम् अप्सरसो, गन्धर्वान् चातयामहे।
अजशृङ्गि अज रक्षः, सर्वान् गन्धेन नाशय।।2।।
880. नदीम् यन्तु अप्सरसो, अपाम् तारम् अवश्वसम्।
गुल्गुलूः पीला नलदी, औक्षगन्धि प्रमन्दनी।
तत् परा इत अप्सरसः, प्रतिबुद्धा अभूतन।।3।।
881. यत्र अश्वत्थाः न्यग्रोधा, महावृक्षाः शिखण्डिनः।
तत् परा इत अप्सरसः, प्रतिबुद्धा अभूतन।।4।।
882.यत्र वः प्रेङ्खा हरिता अर्जुना,
उत यत्र आघाटाः कर्कर्यः संवदन्ति।
तत् परा इत अप्सरसः, प्रतिबुद्धा अभूतन।।5।।
883. आ इयम् अगन् ओषधीनाम्, वीरुधाम् वीर्यावती।
अजशृङ्गी अराटकी, तीक्ष्णशृङ्गी वि ऋषतु।।6।।
884. आनृत्यतः शिखण्डिनो, गन्धर्वस्य अप्सरापतेः।
भिनद्मि मुषकौ, अपि यामि शेपः।।7।।
885. भीमा इन्द्रस्य हेतयः, शतम् ऋष्टीः अयस्मयीः।
ताभिः हविरदान् गन्धर्वान्, अवकादान् वि ऋषतु।।8।।
886. भीमा इन्द्रस्य हेतयः, शतम् ऋष्टीः हिरण्ययीः।
ताभिः हविरदान् गन्धर्वान्, अवकादान् वि ऋषतु।।9।।
887. अवकादान् अभिशोचान्, अप्सु ज्योतय मामकान्।
पिशाचान् सर्वान् ओषधे, प्र मृणीहि सहस्व च।।10।।
888. श्वेव एकः कपिरिव, एकः कुमारः सर्वकेशकः।
प्रियो दृश इव भूत्वा गन्धर्वः सचते स्त्रियः,
तम् इतो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्यावता।।11।।
889. जाया इत् वो अप्सरसो गन्धर्वाः पतयो यूयम्।
अप धावत अमर्त्या, मर्त्यान् मा सचध्वम्।।12।।

वाजिनीवान् ऋषभ सूक्त 38

890. उद्भिदन्दतीम् संजयन्तीम्, अप्सराम् साधुदेविनीम्।
ग्लहे कृतानि कृण्वानाम्, अप्सराम् ताम् इह हुवे।।1।।
891. विचिन्वतीम् आकिरन्तीम्, अप्सराम् साधुदेविनीम्।
ग्लहे कृतानि गृह्णानाम्, अप्सराम् ताम् इह हुवे।।2।।
892. या अयैः परिनृत्यति, आददाना कृतम् ग्लहात्।
सा नः कृतानि सीषती, प्रहाम् आप्नोतु मायया।
सा नः पयस्वती आ एतु, मा नो जैषुः इदम् धनम्।।3।।
893. या अक्षेषु प्रमोदन्ते, शुचम् क्रोधम् च बिभ्रती।
आनन्दिनीम् प्रमोदिनीम्, अप्सराम् ताम् इह हुवे।।4।।
894. सूर्यस्य रश्मीन् अनु याः संचरन्ति,
मरीचीः वा अनुसंचरन्ति।
यासाम् ऋषभो दूरतो वाजिनीवान्,
सद्यः लोकान् पर्यैति रक्षन्।
स न आ एतु होमम् इमम् जुषाणो,
अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवान् ।5।
895. अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन्,
कर्कीम् वत्साम् इह रक्ष वाजिन्।
इमे ते स्तोका बहुला आ इहि अव्राङ् इयम्,
ते कर्की इह ते मनो अस्तु।।6।।
896. अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन्,
कर्कीम् वत्साम् इह रक्ष वाजिन्।
अयम् घासो अयम् व्रज, इह वत्साम् नि बध्नीमः।
यथानाम व ईश्महे स्वाहा ।।7।।

सन्नति सूक्त 39

897. पृथिव्याम् अग्नये, सम् अनमन् स आर्ध्नोत्।
यथा पृथिव्याम् अग्नये समनमन्,
एवा मह्यम् संनमः सम् नमन्तु।1।
898. पृथिवी धेनुः तस्या अग्निः वत्सः।
सा मे अग्निना वत्सेन, इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्, पोषम् रयिम् स्वाहा।।2।।
899. अन्तरिक्षे वायवे, सम् अनमन् स आर्ध्नोत्।
यथा अन्तरिक्षे वायवे समनमन्,
एवा मह्यम् संनमः सम् नमन्तु।।3।।
900. अन्तरिक्षम् धेनुः, तस्या वायुः वत्सः।
सा मे वायुना वत्सेन, इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्, पोषम् रयिम् स्वाहा।।।4।।
901. दिवि आदित्याय, सम् अनमन् स आर्ध्नोत्।
यथा दिवि आदित्याय समनमन्,
एवा मह्यम् संनमः सम् नमन्तु ।5।
902. द्यौः धेनुः तस्या, आदित्यो वत्सः।
सा म आदित्येन वत्सेन, इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्, पोषम् रयिम् स्वाहा।।6।।
903. दिक्षु चन्द्राय, सम् अनमन् स आर्ध्नोत्।
यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्,
एवा मह्यम् संनमः सम् नमन्तु।।7।।
904. दिशो धेनवः, तासाम् चन्द्रो वत्सः।
ता मे चन्द्रेण वत्सेन, इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्, पोषम् रयिम् स्वाहा।।8।।
905. अग्नौ अग्निः चरति प्रविष्ट,
ऋषीणाम् पुत्रो अभिशस्तिपा उ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि,
मा देवानाम् मिथुया कर्म भागम्।।9।।
906. हृदा पूतम् मनसा जातवेदो,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्त आस्यानि तव जातवेदः,
तेभ्यो स जुषस्व हव्यम्।।10।।

शत्रु नाशन सूक्त 40

907. ये पुरस्तात जुहवति जातवेदः,
प्राच्या दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
अग्निम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।।1।।
908. ये दक्षिणतो जुहवति जातवेदो,
दक्षिणाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
यमम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यन्थन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।2
909. ये पञ्चात् जुहवति जातवेदः,
प्रतीच्या दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
वरुणम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।3
910.य उत्तरतो जुहवति जातवेद,
उदीच्या दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
सोमम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।4
911. ये अधस्तात् जुहवति जातवेदो,
ध्रुवाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
भूमिम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।5
912. ये अन्तरिक्षात् जुहवति जातवेदो,
व्यध्वाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
वायुम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।4
913. य उपरिष्टात् जुहवति जातवेद,
ऊर्ध्वाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।

सूर्यम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।4।
914. ये दिशाम् अन्तर्देशेभ्यो जुहवति जातवेदः,
सर्वाभ्यो दिग्भयो अभिदासन्ति अस्मान्।
ब्रह्म ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि।4।

चतुर्थम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

पञ्चमम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

अमृता सूक्त 1

915. ऋधक्-मन्त्रो योनिम् य आबभूव,
अमृतासुः वर्धमानः सुजन्मा।
अदब्धासुः भ्राजमानो अहेव, त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि।।1।।
916. आ यो धर्माणि प्रथमः ससाद,
ततो वपूंषि कृणुषे पुरूणि।
धास्युः योनिम् प्रथम आ विवेश,
आ यो वाचम् अनुदिताम् चिकेत।2।
917. यः ते शोकाय तन्वम् रिरेच क्षरत्,
हिरण्यम् शुचयो अनु स्वाः।
अत्रा दधेते अमृतानि नाम,
अस्मे वस्त्राणि विश आ ईरयन्ताम्।।3।।
918. प्र यत् एते प्रतरम् पूर्व्यम्,
गुः सदः-सद आतिष्ठन्तो अजुर्यम्।
कविः शुषस्य मातरा रिहाणे,
जाम्यै धुर्यम् पतिम् आ ईरयेथाम्।।4।।
919. तत् ऊ षु ते महत् पृथुज्मन्,
नमः कविः काव्येना कृणोमि।
यत् सम्यञ्चौ अभियन्तौ अभि क्षाम्,
अत्रा मही रोधचक्रे वावृधेते।।5।।
920.सप्त मर्यादाः कवयः ततक्षुः,
तासाम् इत् एकाम् अभि अंहुरो गात्।
आयोः ह स्कम्भ उपमस्य नीडे,
पथाम् विसर्गे धरुणेषु तस्थौ।।6।।
921.उत अमृतासुः व्रत एमि कृण्वन्,
असुः आत्मा तन्वः तत् सुमद्गुः।
उ वा शक्रो रत्नम् दधाति,
ऊर्जया वा यत् सचते हविर्दाः।।7।।
922. उत पुत्रः पितरम् क्षत्रम् ईडे,
ज्येष्ठम् मर्यादम् अह्वयन् स्वस्तये।
दर्शन् नु ता वरुण याः ते विष्ठा,
आवः आवर्व्रततः कृणवो वपूंषि।।8।।
923. अर्धम् अर्धेन पयसा पृणक्षि,
अर्धेन शुष्म वर्धसे अमुर।
अविम् वृधाम शग्मियम् सखायम्,
वरुणम् पुत्रम् आदित्या इषिरम्।
कवि-शस्तानि अस्मै वपूंषि,
अवोचाम रोदसी सत्यवाचा।।9।।

भुवनज्येष्ठ सूक्त 2

924. तत् इत् आस भुवनेषु ज्येष्ठम्,
यतो जज्ञ उग्रः त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून्,
अनु यत् एनम् मदन्ति विश्व ऊमाः।1।
925. वावृधानः शवसा भूर्योजाः,
शत्रुः दासाय भियसम् दधाति।
अव्यनत् च व्यनत् च सस्नि,
सम् ते नवन्त प्रभृता मदेषु।।2।।
926. त्वे क्रतुम् अपि पृञ्चन्ति भूरि,
द्विः यत् एते त्रिः भवन्ति ऊमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा सम् अदः,
सु मधु मधुना अभि योधीः।
927. यदि चित् नु त्वा धना जयन्तम्,
रणे-रणे अनु मदन्ति विप्राः।
ओजीयः शुष्मिन् स्थिरम् आ तनुष्व,
मा त्वा दभन् दुरेवासः कशोकाः4
928. त्वया वयम् शाशद्महे रणेषु,
प्र-पश्यन्तो युधेन्यानि भूरि।
चोदयामि त आयुधा वचोभि,
सम् ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि।।5।।
929. नि तत् दधिषे अवरे परे,
च यस्मिन् आविथ अवसा दुरोणे।
आ स्थापयत मातरम् जिगत्नुम्,
अत इन्वत कर्वराणि भूरि।।6।।
930. स्तुष्व वर्ष्मन् पुरुवर्त्मानम्,
सम् ऋभ्वाणम् इनतमम् आप्तम् आप्त्यानाम्।
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः,
प्र सक्षति प्रतिमानम् पृथिव्याः।।7।।
931. इमा ब्रह्म बृहद्.दिवः कृणवत्,
इन्द्राय शूषम् अग्नियः स्वर्षाः।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजा तुरः,

चित् विश्वम् अर्णवत् तपस्वान्।।8।।
932.एवा महान् बृहत्-दिवो अथर्वा,
अवोचत् स्वाम् तन्वम् इन्द्रम् एव।
स्वरासौ मातरिभ्वरी अरिप्रे हिन्वन्ति च,
एने शवसा वर्धयन्ति च।।9।।

विजय प्रार्थना सूक्त 3

933.मम अग्ने वर्चो विहवेषु अस्तु,
वयम् त्वा इन्धानाः तन्वम् पुषेम।
मह्यम् नमन्ताम् प्रदिशः चतस्रः,

त्वया अध्यक्षेण पृतना जयेम।।1।।
934. अग्ने मन्युम् प्रतिनदन् परेषाम्,
त्वम् नो गोपा परि पाहि विश्वतः।
अपाञ्चो यन्तु निवता दुसस्यवो अमा,
एषाम् चित्तम् प्रबुधाम् विनेशत् ।।2।।
935. मम देवा विहवे सन्तु सर्व,
इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुः अग्निः।
मम अन्तरिक्षम् उरुलोकम् अस्तु,
मह्यम् वातः पवताम् कामाय अस्मै।।3।।
936. मह्यम् यजन्ताम् मम यानि इष्टा,
आकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु।
एनो मा नि गाम् कतमत् चन अहम्,
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु मा इह।।4।।
937. मयि देवा द्रविणम् आ यजन्ताम्,
मयि आशीः अस्तु मयि देवहूतिः।
दैवा होतारः सनिषन् न एतत्,
अरिष्ठाः स्याम तन्वा सुवीराः।।5।।
938. दैवीः षट् ऊर्वीः उरु नः कृणोत,
विश्वे देवासः इह मादयध्वम्।
मा नो विदत् अभिभाः मो अशस्तिः,
मा नो विदत् वृजिना द्वेष्या या।6
939. तिस्रो देवीः महि नः शर्म यच्छत,
प्रजायै नः तन्वे यत् च पुष्टम्।
मा हास्महि प्रजया मा तनूभिः,
मा रधाम द्विषते सोम राजन्।।7।।
940. उरुव्यचा नो महिषः शर्म यच्छतु,
अस्मिन् हवे पुरुहूतः पुरुक्षु।
स नः प्रजायै हर्यश्व मृज इन्द्र,
मा नो रीरिषो मा परा दाः।।8।।
941. धाता विधाता भुवनस्य यः पतिः,
देवः सविता अभिमातिषाहः।
आदित्या रुद्रा अश्विना उभा देवाः,
पान्तु यजमानम् निर्ऋथात्।।9।।
942. ये नः सपत्ना अप ते भवन्तु,
इन्द्राग्निभ्याम् अव बाधामह एनान्।
आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशो न उग्रम्,
चेत्तारम् अधिराजम् अक्रत।।10।।
943. अर्वाञ्चम् इन्द्रम् अमुतो हवामहे,
यो गोजित् धनजित् अश्वजित् यः।
इमम् नो यज्ञम् विहवे शृणोतु,
अस्माकम् अभूः हर्यश्व मेदी।।11।।

कुष्ठतक्मनाशन सूक्त 4

944. यो गिरिषु अजायथा, वीरुधाम् बलवत्तमः।
कुष्ठ आ इहि तक्मनाशन, तक्मानम् नाशयन् इतः।।1।।
945. सुपर्ण सुवने गिरौ, जातम् हिमवतः परि।
धनैः अभि श्रुत्वा यन्ति, विदुः हि तक्मनाशनम्।।2।।
946. अश्वत्थो देवसदनः, तृतीयस्याम् इतो दिवि।
तत्रा अमृतस्य चक्षणम्, देवाः कुष्ठम् अवन्वत।।3।।
947. हिरण्ययी नौः अचरत्, हिरण्यबन्धना दिवि।
तत्रा अमृतस्य पुष्पम्, देवाः कुष्ठम् अवन्वत।।4।।
948. हिरण्ययाः पन्थान आसन्, अरित्राणि हिरण्यया।
नावो हिरण्ययीः आसन्, याभिः कुष्ठम् निरावहन्।।5।।
949. इमम् मे कुष्ठ पूरुषम्, तम् आ वह तम् निः कुरु।
तम् ऊ मे अगदम् कृधि।।6।।
950. देवेभ्यो अधि जातो असि, सोमस्य असि सखा हितः।
स प्राणाय व्यानाय, चक्षुषे मे अस्मै मृड।।7।।
951. उदङ् जातो हिमवतः, स प्राच्याम् नीयसे जनम्।
तत्र कुष्ठस्य नामानि, उत्तमानि वि भेजिरे।।8।।
952. उत्तमो नाम कुष्ठ असि, उत्तमो नाम ते पिता।
यक्ष्मम् च सर्वम् नाशय, तक्मानम् च अरसम् कृधि।।9।।
953. शीर्षामयम् उपहत्याम्, अक्ष्योः तन्वो रपः।
कुष्ठः तत् सर्वम् निः करत्, दैवम् समह वृष्ण्यम्।।10।।

लाक्षा सूक्त 5

954. रात्री माता नभः पिता, अर्यमा ते पितामहः।
सिलाची नाम वै असि, सा देवानाम् असि स्वसा।।1।।
955. यः त्वा पिबति जीवति, त्रायसे पुरुषम् त्वम्।
भर्त्री हि शश्वताम् असि, जनानाम् च न्यञ्चनी।।2।।
956. वृक्षम्-वृक्षम् आ रोहसि, वृषण्यन्ती इव कन्यला।
जयन्ती प्रत्यातिष्ठन्ती, स्परणी नाम वा असि।।3।।
957. यत् दण्डेन यते इष्वा, यत् वा अरूः हरसा कृतम्।
तस्य त्वम असि निष्कृतिः,
सा इमम् निः कृधि पूरुषम्।।4।।
958. भद्रात् प्लक्षात् निः तिष्ठसि,
अश्वत्थात् खदिरात् धवात्।

भद्रात् न्यग्रोधात् पर्णात्, सा नः आ इहि अरुन्धति।।5।।
959. हिरण्यवर्णे सुभगे, सूर्य-वर्णो वपुः-तमे।
रुतम् गच्छासि निष्कृते, निष्कृतिः नाम वा असि।।6।।
960. हिरण्यवर्णे सुभगे, शुष्मे लोमशवक्षणे।
अपाम् असि स्वसा लाक्षे, वातो ह आत्मा बभूव ते।।7।।
961. सिलाची नाम कानीनो, अजबभ्रु पिता तव।
अश्वो यमस्य यः श्यावः तस्य,
ह अस्ना असि उक्षिता।।8।।
962. अश्वस्य अस्नः सम्पतिता, सा वृक्षान् अभि सिष्यदे।
सरा पतत्रिणी भूत्वा, सा न आ इहि अरुन्धति।।9।।

तीयो अनुवाकः

ब्रह्मविद्या सूक्त 6

963. ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात्,
वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः,
सतः च योनिम् असतः च वि वः।।1।।
964. अनाप्ता ये वः प्रथमा, यानि कर्माणि चक्रिरे।
वीरान् नो अत्र मा दभन्, तत् व एतत् पुरो दधे।।2।।
965. सहस्रधार एव ते सम् अस्वरन्,
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः।
तस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः,
पदे-पदे पाशिनः सन्ति सेतवे।।3।।
966. परि ऊ षु प्र धन्वा वाजसातये, परि वृत्राणि सक्षणिः।
द्विषः तत् अधि अर्णवेन ईयसे सनिस्रसो नाम असि,
त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः।।4।।
967. नु एतेन अरात्सीः असौ स्वाहा।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ,
सोमारुद्रौ इह सु मृडतम् नः।।5।।
968. अव एतेन अरात्सीः असौ स्वाहा।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ,
सोमारुद्रौ इह सु मृडतम् नः।।6।।
969. अप एतेन अरात्सीः असौ स्वाहा।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ,
सोमारुद्रौ इह सु मृडतम् नः।।7।।
970. मुमुक्तम् अस्मान्, दुरितात् अवद्यात्,
जुषेथाम् यज्ञम् अमृतम्, अस्मासु धत्तम्।।8।।
971. चक्षुषो हेते मनसो हेते, ब्रह्मणो हेते तपसः च हेते।
मेन्या मेनिः असि अमेनयः ते सन्तु,
ये अस्मान् अभि अघायन्ति।।9।।
972. यो अस्मान् चक्षुषा मनसा चित्त्या,
आकूत्या च यो अघायुः अभिदासात्।
त्वम् तान् अग्ने मेन्या, अमेनीन् कृणु स्वाहा।।10।।
973. इन्द्रस्य गृहो असि तम् त्वा प्र पद्ये,
तम् त्वा प्र विशामि सर्वगुः।
सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः, सह यत् मे अस्ति तेन।।11।।
974. इन्द्रस्य शर्म असि तम् त्वा प्र पद्ये,
तम् त्वा प्र विशामि सर्वगुः।
सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः, सह यत् मे अस्ति तेन।।12।।
975. इन्द्रस्य वर्म असि तम् त्वा प्र पद्ये,
तम् त्वा प्र विशामि सर्वगुः।
सर्वपूरुषः सर्वआत्मा सर्वतनूः,
सह यत् मे अस्ति तेन।।13।।
976. इन्द्रस्य वरूथम् असि तम् त्वा प्र पद्ये,
तम् त्वा प्र विशामि सर्वगुः।
सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः, सह यत् मे अस्ति तेन।।14।।

अरातिनाशन सूक्त 7

977. आ नो भर मा परि ष्ठा अराते,
मा नो रक्षीः दक्षिणाम् नीयमानाम्।
नमो वीर्त्साया असमृद्धये, नमो अस्तु अरातये।।1।।
978. यम् अराते पुरोधत्से, पुरुषम् परिरापिणम्।
नमः ते तस्मै कृण्मो, मा वनिम् व्यथयीः मम।।2।।
979. प्र णो वनिः देवकृता, दिवा नक्तम् च कल्पताम्।
अरातिम् अनुप्रेमः वयम्, नमो अस्तु अरातये।।3।।
980. सरस्वीम् अनुमतिम्, भगम् यन्तो हवामहे।
वाचम् जुष्टाम् मधुमतीम्,
अवादिषम् देवानाम् देवहूतिषु।।4।।
981. यम् याचामि अहम्, वाचा सरस्वत्या मनोयुजा।
श्रद्धा तम् अद्य विन्दतु, दत्ता सोमेन बभ्रुणा।।5।।
982. मा वनिम् मा वाचम् नो वि ईर्त्सीः,
उभौ इन्द्राग्नी आ भरताम् नो वसूनि।
सर्वे नो अद्य दित्सन्तो, अरातिम् प्रति हर्यत।।6।।
983. परो अप इहि असमृद्धे, वि ते हेति नयामसि।
वेद त्वा अहम् निमीवन्तीम्, नितुदन्तीम् अराते।।7।।
984. उत नग्ना बोभुवती, स्वप्नया सचसे जनम्।
अराते चित्तम् वीर्त्सन्ती, आकूतिम् पुरुषस्य च।।8।।
985. या महती महोन्माना, विश्वा आशा व्यानशे।
तस्यै हिरण्यकेश्यै, निर्ऋत्या अकरम् नमः।।9।।
986. हिरण्यवर्णा सुभगा, हिरण्यकशिपुः मही।
तस्यै हिरण्यद्रापये, अरात्या अकरम् नमः।।10।।

शत्रुनाशन सूक्त 8

987. वैकङ्कतेन इध्मेन, देवेभ्यः आज्यम् वह।
अग्ने तान् इह मादय, सर्वे आ यन्तु मे हवम्।।1।।
988. इन्द्र आ याहि मे हवम्, इदम् करिष्यामि तत् शृणु।
इम ऐन्द्रा अतिसरा, आकूतिम् सम् नमन्तु मे।

तेभिः शकेम वीर्यम्, जातवेदः तनूवशिन्।।2।।
989. यत् असौ अमुतो, देवा अदेवः सन् चिकीर्षति।
मा तरय अग्निः हव्यम् वाक्षीत् हवम् देवा अस्य,
मा उप गुः मम् एव हवम् आ इतन।।3।।
990. अति धावत अतिसराः, इन्द्रस्य वचसा हत।
अविम् वृक इव मथ्नीत स वो जीवन्,
मा मोचि प्राणम् अस्य अपि नह्यत।।4।।
991. यम् अमी पुरो दधिरे, ब्रह्माणम् अपभूतये।
इन्द्र स ते अधस्पदम्, तम् प्रति अस्यामि मृत्यवे।।5।।
992. यदि प्रेयुः देवपुरा, ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे।
तनूपानम् परिपाणम् कृण्वानम्,
यत् उपोचिरे सर्वम् तत् अरसम् कृधि ।।6।।
993. यान् असौ अतिसरान्, चकार कृण्वत् च यान्।
त्वम् तान् इन्द्र वृत्रहन् प्रतीचः पुनः,
आ कृधि यथा अमुम् तृणहाम् जनम् ।।7।।
994. यथा इन्द्र उत्-वाचनम्, लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम्।
कृण्वे अहम् अधरान् तथा,
अमून् शश्वतीभ्यः समाभ्यः।।8।।
995. अत्र एनान् इन्द्र वृत्र-हन्, उग्रः मर्मणि विध्य।
अत्र एव एनान् अभि तिष्ठ, इन्द्र मेदी अहम् तव।
अनु त्वा इन्द्र आ रभामहे, स्याम सुमतौ तव।।9।।

आत्मा सूक्त 9

996. दिवे स्वाहा।।1।।
997. पृथिव्यै स्वाहा।।2।।
998. अन्तरिक्षाय स्वाहा।।3।।
999. अन्तरिक्षाय स्वाहा।।4।।
1000. दिवे स्वाहा।।5।।
1001. पृथिव्यै स्वाहा।।6।।
1002. सूर्यो मे चक्षुः वात प्राणो,
अन्तरिक्षम् आत्मा पृथिवी शरीरम्।
अस्तृतो नाम अहम् अयम् अस्मि स आत्मानम्,
नि दधे द्यावापृथिवीभ्याम् गोपीथाय।।7।।
1003. उत् आयुः उत् बलम्, उत् कृतम् उत् कृत्याम्,
उत् मनीषाम् उत् इन्द्रियम्।
आयुष्कृत् आयुष्पत्नी स्वधावन्तौ,
गोपा मे स्तम् गोपायतम् मा।
आत्मसदौ मे स्तम् मा मा हिंसिष्टम्।।8।।

आत्मरक्षा सूक्त 10

1004. अश्मवर्म मे असि यो मा प्राच्या,
दिशो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।1।।
1005. अश्मवर्म मे असि यो मा दक्षिणाया,
दिशो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।2।।
1006. अश्मवर्म मे असि यो मा प्रतीच्या,
दिशो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।3।।
1007. अश्वर्म मे असि यो मा उदीच्या,
दिशो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।4।।
1008. अश्मवर्म मे असि यो मा ध्रुवाया,
दिशो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।5।।
1009. अश्मवर्म मे असि यो मा ऊर्ध्वाया,
दिशो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।6।।
1010. अश्मवर्म मे असि यो मा दिशाम्,
अन्तर्देशेभ्यो अघायुः अभिदासात्।
एतत् स ऋच्छात्।।7।।
1011. बृहता मन उप ह्ये, मातरिश्वना प्राणापानौ।
सूर्यात् चक्षुः अन्तरिक्षात्, श्रोत्रम् पृथिव्याः शरीरम्।
सरस्वत्या वाचम् उप ह्वयामहे मनोयुजा।।8।।

तृतीयो अनुवाकः

संपत् कर्म सूक्त 11

1012. कथम् महे असुराय अब्रवीः,
इह कथम् पित्रे हरये त्वेषनृम्णः।
पृश्निम् वरुण दक्षिणाम् ददावान,
पुनर्मघ त्वम् मनसा अचिकित्सीः।1
1013. न कामेन पुनर्मघो भवामि,
सम् चक्षे कम् पृश्निम् एताम् उप अजे।
केन नु त्वम् अथर्वन् काव्येन,
केन जातेन असि जातवेदः।।2।।
1014. सत्यम् अहम् गभीरः काव्येन,
सत्यम् जातेन अस्मि जातवेदाः।
न मे दासो न आर्यो महित्वा,
व्रतम् मीमाय यत् अहम् धरिष्ये।।3।।
1015. न त्वत् अन्यः कवितरो,
न मेधया धीर-तरः वरुण स्वधावन्।
त्वम् ता विश्वा भुवनानि वेत्थ,
स चित् नु त्वत् जनो मायी बिभाय।4।
1016. त्वम् हि अङ्ग वरुण स्वधावन्,
विश्वा वेत्थ जनिमा सुप्रनीते।
किम् रजस एना परो अन्यत् अस्ति,
एना किम् परेण अवरम् अमुर।5।

1017. एकम् रजस एना परो अन्यत् अस्ति,
एना पर एकेन दुर्नशम् चित् अर्वाक्।
तत् ते विद्वान् वरुण प्र ब्रवीमि अधोवचसः,
पणयो भवन्तु नीचैः दासा उप सर्पन्तु भूमिम्।।6।।
1018. त्वम् हि अङ्ग वरुण ब्रवीषि,
पुनर्मघेषु अवद्यानि भूरि।
मो षु पणीन् अभि एतावतो,
भूत् मा त्वा वोचन् अराधसम् जनासः।7।
1019.मा मा वोचन् अराधसम्,
जनासः पुनः ते पृश्निम् जरितः ददामि।
स्तोत्रम् मे विश्वम् आ याहि शचीभीः,
अन्तः विश्वासु मानुषीषु दिक्षु।8।
1020. आ ते स्तोत्राणि उद्यतानि यन्तु,
अन्तः विश्वासु मानुषीषु दिक्षु।
देहि नु मे यत् मे अदत्तो असि,
युज्मो मे सप्तपदः सखा असि।।9।।
1021. समा नौ बन्धुः वरुण समा जा वेद,
अहम् तत् यत् नौ एषा, समा जा।
ददामि तत् यत् ते अदत्तो अस्मि,
युज्यः ते सप्तपदः सखा अस्मि।10।
1022. देवो देवाय गृणते वयोधा,
विप्रो विप्राय स्तुवते सुमेधाः।
अजीजनो हि वरुण स्वधावन्,
अथर्वाणम् पितरम् देवबन्धुम्।
तस्मा उ राधः कृणुहि सुप्रशस्तम्,
सखा नो असि परमम् च बन्धुः।11।

ऋतयज्ञ सूक्त 12

1023. समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे,
देवो देवान् यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहः चिकित्वान्,
त्वम् दूतः कविः असि प्रचेताः।।1।।
1024.तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान्,
मध्वा समञ्जन् स्वदय सुजिह्व।
मन्मानि धीभिः उत यज्ञम् ऋन्धन्,
देवत्रा च कृणुहि अध्वरम् नः।।2।।
1025. आजुह्वान् ईड्यो वन्द्यः च,
आ याहि अग्ने वसुभिः सजोषाः।
त्वम् देवानाम् असि यह्व होता,
स एनान् यक्षि इषितो यजीयान्।।3।।
1026. प्राचीनम् बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या,
वस्तोः अस्या वृज्यते अग्रे अन्हाम्।
वि ऊ प्रथते वितरम् वरीयो, देवेभ्यो अदितये स्योनम्।।4।।
1027. व्यचस्वतीः ऊर्विया वि श्रयन्ताम्,
पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः।
देवीः द्वारो बृहतीः विश्वमिन्वाः,
देवेभ्यो भवत सुप्रायनाः।।5।।
1028. आ सुष्वयन्ती यजते उपाके,
उषसानक़्ता सदताम् नि योनौ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे,
अधि श्रियम् शुक्रपिशम् दधाने।।6।।
1029. दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा,
मिमान् यज्ञम् मनुषो यजध्यै।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू,
प्राचीनम् ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता।।7।।
1030. आ नो यज्ञम् भारती तूयम्,
एतु इडा मनुष्वत् इह चेतयन्ती।
तिस्रो देवीः बर्हिः आ इदम् स्योनम्,
सरस्वतीः स्वपसः सदन्ताम्।8।
1031. य इमे द्यावापृथिवी जनित्री,
रूपैः अपिशत् भुवनानि विश्वा।
तम् अद्य होतः इषितो यजीयान्,
देवम् त्वष्टारम् इह यक्षि विद्वान्।।9।।
1032. उपावसृज त्मन्या समञ्जन्,
देवानाम् पाथः ऋतुथा हवींषि।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः,
स्वदन्तु हव्यम् मधुना घृतेन।।10।।
1033. सद्यो जातो वि अमिमीत यज्ञम्,
अग्निः देवानाम् अभवत् पुरोगाः।
अस्य होतुः प्रशिषि ऋतस्य,
वाचि स्वाहाकृतम् हविः अदन्तु देवाः।11।

सर्पविषनाशन सूक्त 13

1034. ददिः हि मह्यम् वरुणो दिवः,
कविः वचोभिः उग्रैः नि रिणामि ते विषम्।
खातम् अखातम् उत सक्तम् अग्रभम्,
इरा इव धन्वन् नि जजास ते विषम्।।1।।
1035. यत् ते अपोदकम् विषम्, तत् ते एतासु अग्रभम्।
गृह्णामि ते मध्यमम् उत्तमम् रसम्,
उत अवमम् भियसा नेशत् आत् उ ते।।2।।
1036. वृषा मे रवो नभसा न तन्यतुः,
उग्रेण ते वचसा बाध आत् उ ते।
अहम् तम् अस्य नृभिः अग्रभम् रसम्,
तमस इव ज्योतिः उत् एतु सूर्यः।।3।।
1037. चक्षुषा ते चक्षुः हन्मि, विषेण हन्मि ते विषम्।
अहे म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यक्, अभि एतु त्वा विषम्।।4।।

1038. कैरात पृश्ने उपतृण्य बभ्र,
आ मे शृणुत असिता अलीकाः।
मा मे सख्युः स्तामानम् अपि स्थात,
आश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम्।5
1039. असितस्य तैमातस्य, बभ्रोः अपोदकस्य च।
सात्रासाहस्य अहम् मन्योः अव ज्यामिव,
धन्वनो वि मुञ्चामि रथान् इव ।।6।।
1040. आलिगी च विलिगी च, पिता च माता च।
विद्म वः सर्वतो बन्धु, अरसाः किम् करिष्यथ।।7।।
1041. उरुगूलाया दुहिता, जाता दासी असिक्न्या।
प्रतङ्कम् दद्रुषीणाम्, सर्वासाम् अरसम् विषम्।।8।।
1042. कर्णा श्वावित् तत् अब्रवीत्, गिरेः अवचरन्तिका।
याः काः च इमाः खनित्रिमाः,
तासाम् अरसतमम् विषम्।।9।।
1043. ताबुवम् न ताबुवम् न, घ इत् त्वम् असि ताबुवम्।
ताबुवेन अरसम् विषम्।।10।।
1044. तस्तुवम् न तस्तुवम् न,
घ इत् त्वम् असि तस्तुवम्।
तस्तुवेन अरसम् विषम्।।11।।

कृत्यापरिहरण सूक्त 14

1045. सुपर्णः त्वा अनु अविन्दत्,
सूकरः त्वा अखनत् नसा।
दिप्स ओषधे त्वम् दिप्सन्तम्, अव कृत्याकृतम् जहि।।1।।
1046. अव जहि यातुधानान्, अव कृत्याकृतम् जहि।
अथो यो अस्मान् दिप्सति, तम् उ त्वम् जहि ओषधे।।2।।
1047. रिश्यस्य इव परिशासम्, परिकृत्य परि त्वचः।
कृत्याम् कृत्याकृते देवाः, निष्कमिव प्रति मुञ्चत।।3।।
1048. पुनः कृत्याम् कृत्याकृते, हस्त-गृहय परा नय।
समक्षम् अस्मा आ धेहि, यथा कृत्याकृतम् हनत्।।4।।
1049. कृत्याः सन्तु कृत्याकृते, शपथः शपथीयते।
सुखो रथ इव वर्तताम् कृत्या, कृत्याकृतम् पुनः।।5।।
1050. यदि स्त्री यदि वा पुमान्, कृत्याम् चकार पाप्मने।
ताम् उ तस्मै नयामसि, अश्वमिव अश्वाभिधान्या।।6।।
1051. यदि वा असि देवकृता, यदि वा पुरुषैः कृता।
ताम् त्वा पुनः नयामसि, इन्द्रेण सयुजा वयम्।।7।।
1052. अग्ने पृतनाषाट्, पृतना सहस्व।
पुनः कृत्याम् कृत्याकृते, प्रतिहरणेन हरामसि।।8।।
1053. कृतव्यधनि विध्य तम्, यः चकार तम् इत् जहि।
न त्वाम् अचक्रुषे वयम्, वधाय सम् शिशीमहि।।9।।
1054. पुत्र इव पितरम् गच्छ, स्वज इव अभिष्ठितो दश।
बन्धमिव अवक्रामी गच्छ, कृत्ये कृत्याकृतम् पुनः।।10।।
1055. उदेणीव वारणी, अभिस्कन्दम् मृगीव।
कृत्या कर्तारम् ऋच्छतु।।11।।
1056. इष्वा ऋजीयः पततु, द्यावापृथिवी तम् प्रति।
सा तम् मृगमीव गृहणातु, कृत्या कृत्याकृतम् पुनः।।12।।
1057. अग्निरिव एतु प्रतिकूलम्, अनुकूलमिव उदकम्।
सुखो रथ इव वर्तताम् कृत्या, कृत्याकृतम् पुनः।।13।।

रोग-उपशमन सूक्त 15

1058. एका च मे दश च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।1।।
1059. द्वे च मे विंशतिः च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।2।।
1060. तिस्रः च मे त्रिंशत् च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।3।।
1061. चतस्रः च मे चत्वारिंशत् च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।4।।
1062. पञ्च च मे पञ्चाशत् च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।5।।
1063. षट् च मे षष्टिः च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।6।।
1064. सप्त च मे सप्ततिः च मे, अप-वक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।7।।
1065. अष्ट च मे अशीतिः च मे, अप-वक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।8।।
1066. नव च मे नवतिः च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।9।।
1067. दश च मे शतम् च मे, अपवक्तारः ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।10।।
1068. शतम् च मे सहस्रम् च, अपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि, मधु मे मधुला करः।।11।।

चतुर्थो अनुवाकः

वृषरोगशमन सूक्त 16

1069. यदि एकवृषो असि, सृज अरसो असि।।1।।
1070. यदि द्विवृषो असि, सृज अरसो असि।।2।।
1071. यदि त्रिवृषो असि, सृज अरसो असि।।3।।
1072. यदि चतुर्वृषो असि, सृज अरसो असि।।4।।
1073. यदि पञ्चवृषो असि, सृज अरसो असि।।5।।
1074. यदि षट्वृषो असि, सृज अरसो असि।।6।।
1075. यदि सप्तवृषो असि, सृज अरसो असि।।7।।
1076. यदि अष्टवृषो असि, सृज अरसो असि।।8।।
1077. यदि नववृषो असि, सृज अरसो असि।।9।।
1078. यदि दशवृषो असि सृज अरसो असि।।10।।
1079. यदि एकादशो असि, सृज अरसो असि।।11।।

ब्रह्मजाया सूक्त 17

1080. ते अवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे,
अकूपारः सलिलः मातरिश्वा।
वीड़ुहरा तप उग्रम् मयोभूः,
आपः देवीः प्रथमजा ऋतस्य।।1।।
1081.सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायाम्,
पुनः प्र अयच्छत् अहृणीयमानः।
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसीत्,
अग्निः होता हस्तगृह्य आ निनाय।2।
1082. हस्तेन एव ग्राह्य आधिः अस्या,
ब्रह्मजाया इति च इत् अवोचत्।
न दूताय प्रहेया तस्थ एषा,
तथा राष्ट्रम् गुपितम् क्षत्रियस्य।।3।।
1083. याम् आहुः तारका एषा विकेशी,
इति दुच्छुनाम् ग्रामम् अवपद्यमानाम्।
सा ब्रह्मजाया वि दुनोति राष्ट्रम्,
यत्र प्रापादि शश उल्कुषीमान्।।4।।
1084. ब्रह्मचारी चरति वेविषत् विषः,
स देवानाम् भवति एकम् अङ्गम्।
तेन जायाम् अनु अविन्दत् बृहस्पतिः,
सोमेन नीताम् जुह्वम् न देवाः।।5।।
1085. देवा वा एतस्याम् अवदन्त,
पूर्वे सप्तऋषयः तपसा ये निषेदुः।
भीमा जाया ब्राह्मणस्य अपनीता,
दुर्धाम् दधाति परमे व्योमन्।।6।।
1086. ये गर्भा अवपद्यन्ते,
जगत् यत् च अपलुप्यते।
वीरा ये तृह्यन्ते मिथो, ब्रह्मजाया हिनस्ति तान्।।7।।
1087. उत यत् पतयो दश, स्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणाः।
ब्रह्मा च इत् हस्तम् अग्रहीत्, स एव पतिः एकधा।।8।।
1088. ब्राह्मण एव पतिः, न राजन्यो न वैश्यः।
तत् सूर्यः प्रब्रुवन् एति, पञ्चभ्यो मानवेभ्यः।।9।।
1089. पुनः वै देवा अददुः, पुनः मनुष्या अददुः।
राजानः सत्यम् गृह्णाना, ब्रह्मजायाम् पुनः ददुः।।10।।
1090. पुनर्दाय ब्रह्मजायाम्, कृत्वा देवैः निकिल्बिषम्।
ऊर्जम् पृथिव्या भक्त्वा, उरुगायम् उप आसते।।11।।
1091. न अस्य जाया शतवाही, कल्यामी तल्पम् आ शये।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते, ब्रह्मजाया अचित्त्या।।12।।
1092. न विकर्णः पृथुशिराः, तस्मिन् वेश्मनि जायते।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते, ब्रह्मजाया अचित्त्या।।13।।
1093. न अस्य क्षत्ता निष्कग्रीवः, सूनानाम् एति अग्रतः।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते, ब्रह्मजाया अचित्त्या।।14।।
1094. न अस्य श्वेतः कृष्णकर्णो, धुरि युक्तो महीयते।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते, ब्रह्मजाया अचित्त्या।।15।।
1095. न अस्य क्षेत्रे पुष्करिणी,
न आण्डीकम् जायते बिसम्।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते, ब्रह्मजाया अचित्त्या।।16।।
1096. न अस्मै पृश्निम् वि दुहन्ति,
ये अस्या दोहम् उपासते।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते, ब्रह्मजाया अचित्त्या।।17।।
1097. न अस्य धेनुः कल्याणी, न अनड्वान् सहते धुरम्।
विजानिः यत्र ब्राह्मणो, रात्रिम् वसति पापया।।18।।

ब्रह्मगवी सूक्त 18

1098. न एताम् ते देवा अददुः, तुभ्यम् नृपते अत्तवे।
मा ब्राह्मणस्य राजन्य, गाम् जिघत्सो अनाद्याम्।।1।।
1099. अक्षद्रुग्धः राजन्यः, पाप आत्मपराजितः।
स ब्राह्मणस्य गाम् अद्यात्, अद्य जीवानि मा श्वः।।2।।
1100. आविष्टिता अघविषा, पृदाकूरिव चर्मणा।
सा ब्राह्मणस्य राजन्य, तृष्टा एषा गौः अनाद्या।।3।।
1101. निः वै क्षत्रम् नयति हन्ति वर्चो,
अग्निरिव आरब्धो वि दुनोति सर्वम्।
यः ब्राह्मणम् मन्यते अन्नम् एव,
स विषस्य पिबति तैमातस्य।।4।।
1102. य एनम् हन्ति मृदुम् मन्यमानो,
देवपीयुः धनकामो न चित्तात्।
सम् तस्य इन्द्रः हृदये अग्निम् इन्ध,
उभे एनम् द्विष्टो नभसी चरन्तम्।।5।।
1103. न ब्राह्मणो हिंसितव्यो, अग्निः प्रियतनोः इव।
सोमो हि अस्य दायाद, इन्द्रो अस्य अभिशस्तिपाः।।6।।
1104. शतापाष्ठाम् नि गिरति,
ताम् न शक्नोति निः खिदन्।
अन्नम् यो ब्रह्मणाम् मल्वः,
स्वादु अद्भि इति मन्यते।।7।।
1105. जिह्वा ज्या भवति कुल्मलम् वाक् नाडीका,
दन्ताः तपसा अभिदिग्धाः।
तेभिः ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्,
हृद्-बलैः धनुर्भिः देवजूतैः।।8।।
1106. तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेति मन्तो,
याम् अस्यन्ति शरव्याम् न सा मृषा।
अनुहाय तपसा मन्युना, च
उत दूरात् अव भिन्दन्ति एनम्।।9।।
1107. ये सहस्रम् अराजन्, आसन् दशशता उत।
ते ब्राह्मणस्य गाम् जग्ध्वा, वैतहव्याः परा अभवन्।।10।।
1108. गौः एव तान् हन्यमाना, वैतहव्याम् अव अतिरत्।
ये केसरप्राबन्धायाः, चरमाजाम् अपेचिरन्।।11।।
1109. एकशतम् ता जनता, या भूमिः व्यधूनुत।

प्रजाम् हिंसित्वा ब्राह्मणीम्,
असम्भव्यम् परा अभवन्।।12।।
1110. देवपीयुः चरति मर्त्येषु,
गरगीर्णः भवति अस्थिभूयान्।
यो ब्राह्मणम् देवबन्धुम् हिनस्ति न,
स पितृयानम् अपि एति लोकम्।।13।।
1111. अग्निः वै नः पदवायः, सोमो दायाद उच्यते।
हन्ता अभिशस्ता इन्द्रः, तथा तत् वेधसो विदुः।।14।।
1112. इषुरिव दिग्धा नृपते, पृदाकूरिव गोपते।
सा ब्राह्मणस्य इषुः घोरा, तया विध्यति पीयतः।।15।।

ब्रह्मगवी सूक्त 19

1113. अतिमात्रम् अवर्धन्त न, उदिव दिवम् अस्पृशन्।
भृगुम् हिंसित्वा सृञ्जया, वैतहव्याः परा अभवन्।।1।।
1114. ये बृहत्सामानम् आङ्गिरसम्,
आपर्यन् ब्राह्मणम् जनाः।
पेत्वः तेषाम् उभयादम्, अविः तोकानि आवयत्।।2।।
1115. ये ब्राह्मणम् प्रत्यष्ठीवन्,
ये वा अस्मिन् शुल्कम् ईषिरे।
अस्नः ते मध्ये कुल्यायाः, केशान् खादन्त आसते।।3।।
1116. ब्रह्मगवी पच्यमाना, यावत् सा अभि विजङ्गहे।
तेजो राष्ट्रस्य निः हन्ति, न वीरो जायते वृषा।।4।।
1117. क्रूरम् अस्याः आशसनम्, तृष्टम् पिशितम् अस्यते।
क्षीरम् यत् अस्याः पीयते, तत् वै पितृषु किल्विषम्।।5।।
1118. उग्रो राजा मन्यमानो, ब्राह्मणम् यो जिघत्सति।
परा तत् सिच्यते राष्ट्रम्, ब्राह्मणो यत्र जीयते।।6।।
1119. अष्टापदी चतुरक्षी, चतुः-श्रोत्रा चतुर्हनुः।
द्वि-आस्या द्विजिह्वा भूत्वा,
सा राष्ट्रम् अव धूनुते ब्रह्मज्यस्य।।7।।
1120. तत् वै राष्ट्रम् आ स्रवति,
नावम् भिन्नामिव उदकम्।
ब्रह्माणम् यत्र हिंसन्ति, तत् राष्ट्रम् हन्ति दुच्छुना।।8।।
1121. तम् वृक्षा अप सेधन्ति,
छायाम् नो मा उप गा इति।
यो ब्राह्मणस्य सत् धनम्, अभि नारद मन्यते।।9।।
1122. विषम् एतत् देवकृतम्, राजा वरुणो अब्रवीत्।
न ब्राह्मणस्य गाम् जग्ध्वा, राष्ट्रे जागार कः चन।।10।।
1123. नव एव ता नवतयो, या भूमिः व्यधूनुत।
प्रजाम् हिंसित्वा ब्राह्मणीम्,
असम्भव्यम् परा अभवन्।।11।।
1124. याम् मृताय अनुबध्नन्ति, कूद्यम् पदयोपनीम्
तत् वै ब्रह्मज्य ते देवा, उपस्तरणम् अब्रुवन्।।12।।
1125. अश्रूणि कृपमाणस्य, यानि जीतस्य वावृतुः।
तम् वै ब्रह्मज्य ते देवा, अपाम् भागम् अधारयन्।।13।।
1126. येन मृतम् स्नपयन्ति, श्मश्रूणि येन उन्दते।
तम् वै ब्रह्मज्य ते देवा, अपाम् भागम् अधारयन्।।14।।
1127. न वर्षम् मैत्रावरुणम्, ब्रह्मज्यम् अभि वर्षति।
न अस्मै समितिः कल्पते, न मित्रम् नयते वशम्।।15।।

शत्रुसेनात्रासन सूक्त 20

1128.उच्चैः घोषो दुन्दुभिः सत्वनायन,
वानस्पत्यः सम्भृतः उस्रियाभिः।
वाचम् क्षुणुवानो दमयन् सपत्नान्,
सिंह इव जेष्यन् अभि तंस्तनीहि।1।
1129. सिंह इव अस्तानीत् द्रुवयः विबद्धो,
अभिक्रन्दन् ऋषभः वासिताम् इव।
वृषा त्वम् वध्रयः ते सपत्नाः,
ऐन्द्रः ते शुष्मः अभिमातिषाहः।।2।।
1130. वषेव यूथे सहसा विदानो,
गव्यन् अभि रुव संधनाजित्।
शुचा विध्य हृदयम् परेषाम् हित्वा,
ग्रामान् प्रच्युताः यन्तु शत्रवः।।3।।
1131. सम्जयन् पृतनाः ऊर्ध्वमायुः,
गृह्या गृहानो बहुधा वि चक्ष्व।
दैवीम् वाचम् दुन्दुभे आ गुरस्व,
वेधाः शत्रूणाम् उप भरस्व वेदः।।4।।
1132. दुन्दुभेः वाचम् प्रयताम् वदन्तीम्,
आशृण्वती नाथिता घोषबुद्धा।
नारी पुत्रम् धावतु हस्तगृह्य,
आमित्री भईता समरे वधानाम्।।5।।
1133. पूर्वो दुन्दुभे प्र वदासि वाचम्,
भूम्याः पृष्ठे वद रोचमानः।
अमित्रसेनाम् अभिजञ्जभानो,
द्युमत् वद दुन्दुभे सूनृतावत्।।6।।
1134. अन्तरा इमे नभसी घोषो अस्तु,
पृथक् ते ध्वनयो यन्तु शीभम्।
अभि क्रन्द स्तनय उत्पिपानः,
श्लोककृत मित्रतूर्याय स्वर्धी।।7।।
1135. धीभिः कृतः प्र वदाति वाचम्,
उत् हर्षय सत्वनाम् आयुधानि।
इन्द्रमेदी सत्वनः नि ह्वयस्व मित्रैः,
अमित्रान् अव जङ्घनीहि।।8।।
1136. सम्क्रन्दनः प्रवदो धृष्णुसेनः,
प्रवेदकृत बहुधा ग्रामघोषी।
श्रेयो वन्वानो वयुनानि विद्वान्,
कीर्तिम् बहुभ्यो वि हर द्विराजे।।9।।

1137.श्रेयः-केतो वसुजित् सहीयान्,
संग्रामजित् संशितो ब्रह्मणा असि।
अंशूनिव ग्रावा अधिषवणे,
अद्रिः गव्यन् दुन्दुभे अधि नृत्य वेदः।10।
1138. शत्रूषाट् नीषाट् अभिमातिसहो,
गवेषणः सहमान उद्.भित्।
वाग्वी इव मन्त्रम् प्र भरस्व वाचम्,
सांग्राम जित्याय इषम् उत् वद इह।।11।।
1139. अच्युतच्युत् समदो गमिष्ठो,
मृधो जेता पुरएता अयोध्यः।
इन्द्रेण गुप्तो विदथा निचिक्यत्,
हृद्द्योतनो द्विषताम् याहि शीभम्।।12।।

शत्रुसेनात्रासन सूक्त 21

1140. विहृदयम् वैमनस्यम्, वद अमित्रेषु दुन्दुभे।
विद्वेषम् कश्मशम् भयम् अमित्रेषु,
नि दध्मसि अव एनान् दुन्दुभे जहि।
1141. उद्वेपमाना मनसा, चक्षुषा हृदयेन च।
धावन्तु बिभ्यतो अमित्राः प्रत्रासेन आज्ये हुते।।2।।
1142. वानस्पत्यः सम्भृत, उस्रियाभिः विश्वगोत्र्यः।
प्रत्रासम् अमित्रेभ्यो, वद आज्येन अभिघारितः।।3।।
1143. यथा मृगाः सम्विजन्त, आरण्याः पुरुषात् अधि।
एवा त्वम् दुन्दुभे अमित्रान् अभि क्रन्द,
प्र त्रासय अथो चित्तानि मोहय।
1144. यथा वृकात् अजावयो, धावन्ति बहु बिभ्यतीः।
एवा त्वम् दुन्दुभे, अमित्रान् अभि क्रन्द,
प्र त्रासय अथो चित्तानि मोहय ।।5।।
1145. यथा श्येनात् पतत्रिणः संविजन्ते,
अहर्दिवि सिंहस्य स्तनथोः यथा।
एवा त्वम् दुन्दुभे अमित्रान् अभि क्रन्द,
प्र त्रासय अथो चित्तानि मोहय ।।6।।
1146. परा अमित्रान् दुन्दुभिना, हरिणस्य अजिनेन च।
सर्वे देवाः अतित्रसन्, ये संग्रामस्य ईशते।।7।।
1147. यैः इन्द्रः प्रक्रीडते, पद्.घोषैः छायया सह।
तैः अमित्राः त्रसन्तु नो अमी, ये यन्ति अनीकशः।।8।।
1148. ज्याघोषा दुन्दुभयो, अभि क्रोशन्तु या दिशः।
सेनाः पराजिता यतीः, अमित्राणाम् अनीकशः।।9।।
1149. आदित्य चक्षुः आ दत्स्व, मरीचयो अनु धावत।
पत्सङ्गिनीः आ सजन्तु, विगते बाहुवीर्ये।।10।।
1150. यूयम् उग्रा मरुतः पृश्निमातरः,
इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून्।
सोमो राजा वरुणो राजा, महादेव उत मृत्युः इन्द्रः।।11।।
1151. एता देवसेनाः, सूर्यकेतवः सचेतसः।
अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा।।12।।

पञ्चमो अनुवाकः

तक्मनाशन सूक्त 22

1152. अग्निः तक्मानम् अप बाधताम् इतः,
सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः।
वेदिः बर्हिः समिधः शोशुचाना,
अप द्वेषांसि अमुया भवन्तु।।1।।
1153. अयम् यो विश्वान् हरितान् कृणोषि,
उत् शोचयन् अग्निरिव अभिदुन्वन्।
अधा हि तक्मन् अरसः हि भूया,
अधा न्यङ् अधराङ् वा परा इहि।।2।।
1154. यः परुषः पारुषेयो, अवध्वंस इव अरुणः।
तक्मानम् विश्वधावीर्य, अधराञ्चम् परा सुवा।।3।।
1155. अधराञ्चम् प्र हिणोमि, नमः कृत्वा तक्मने।
शकम्भरस्य मुष्टिहा, पुनः एतु महावृषान्।।4।।
1156. ओको अस्य मूजवन्त, ओको अस्य महावृषाः।
यावत् जातः तक्मन् तावान्, असि बल्हिकेषु न्योचरः।।5।।
1157. तक्मन् व्याल वि गद, व्यङ् भूरि यावय।
दासीम् निष्टक्वरीम् इच्छ, ताम् वज्रेण सम् अर्पय।।6।।
1158. तक्मन् मूजवतो गच्छ, बल्हिकान् वा परस्तराम्।
शूद्राम् इच्छ प्रफर्व्यम् तान्, तक्मन् वीव धूनुहि।।7।।
1159. महावृषान् मूजवतो, बन्धु अद्धि परेत्य।।
प्र एतानि तक्मने ब्रूमो, अन्यक्षेत्राणि वा इमा।।8।।
1160. अन्यक्षेत्रे न रमसे, वशी सन् मृडयासि नः।
अभूत् उ प्रार्थः तक्मा, स गमिष्यति बल्हिकान्।।9।।
1161. यत् त्वम् शीतो अथो, रूरः सह कासा अवेपयः।
भीमाः ते तक्मन् हेतयः,
ताभिः स्म परि वृङ्ग्धि नः।।10।।
1162. मा स्म एतान् सखीन् कुरुथा,
बलासम् कासम् उद्युगम्।
मा स्म अतो अर्वाङ् आ ऐः पुनः,
तत् त्वा तक्मन् उप ब्रुवे।11।।
1163. तक्मन् भ्रात्रा बलासेन, स्वस्रा कासिकया सह।
पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छ, अमुम् अरणम् जनम्।।12।।
1164. तृतीयकम् वितृतीयम्, सदन्दिम् उत शारदम्।
तक्मानम् शीतम् रूरम्, ग्रैष्मम् नाशय वार्षिकम्।।13।।
1165. गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्यो, अङ्गेभ्यो मगधेभ्यः।
प्रैष्यन् जनम् इव शेवधिम्, तक्मानम् परि दद्मसि।।14।।

कृमिघ्न सूक्त 23

1166. ओते मे द्यावापृथिवी, ओता देवी सरस्वती।
ओतौ मे इन्द्रः च अग्निः च,
क्रिमिम् जम्भयताम् इति।।1।।

1167. अस्य इन्द्र कुमारस्य, क्रिमीन् धनपते जहि।
हता विश्वा अरातय, उग्रेण वचसा मम।।2।।
1168. यो अक्ष्यौ परिसर्पति, यो नासे परिसर्पति।
दताम् यो मध्यम् गच्छति, तम् क्रिमिम् जम्भयामसि।।3।।
1169. सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ, कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ।
बभ्रुः च बभ्रुकर्णः च गृध्रः, कोकः च ते हताः।।4।।
1170. ये क्रिमयः शितिकक्षा, ये कृष्णाः शितिबाहवः।
ये के च विश्वरूपाः तान्, क्रिमीन् जम्भयामसि।।5।।
1171. उत् पुरस्तात् सूर्य, एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा।
दृष्टान् च घ्नन अदृष्टान् च,
सर्वान् च प्रमृणन् क्रिमीन्।।6।।
1172. येवाषासः कष्कषास, एजत् काः शिपवित्नुकाः।
दृष्टः च हन्यताम् क्रिमिः, उत अदृष्टः च हन्यताम्।।7।।
1173. हतो येवाषः क्रिमीणाम्, हतो नदनिमा उत।
सर्वान् नि मष्मषा अकरम्, दृषदा खल्वान् इव।।8।।
1174. त्रिशीर्षाणाम् त्रिककुदम्, क्रिमिम् सारङ्गम् अर्जुनम्।
शृणामि अस्य पृष्टीः, अपि वृश्चामि यत् शिरः।।9।।
1175. अत्त्रिवत् वः क्रिमयो,
हन्मि कण्ववत् जमदग्निवत्।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा, सम् पिनष्मि अहम् क्रिमीन्।।10।।
1176. हतो राजा क्रिमीणाम्, उत एषाम् स्थपतिः हतः।
हतो हतमाता क्रिमिः, हतभ्राता हतस्वसा।।11।।
1177. हतासो अस्य वेशसो, हतासः परिवेशसः।
अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे, ते क्रिमयो हताः।।12।।
1178. सर्वेषाम् च क्रिमीणाम्, सर्वासाम् च क्रिमीणाम्।
भिनद्मि अश्मना शिरो, दहामि अग्निना मुखम्।।13।।

ब्रह्मकर्म सूक्त 24

1179. सविता प्रसवानाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।1।।
1180. अग्निः वनस्पतीनाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।2।।
1181. द्यावापृथिवी दातृणाम् अधिपत्नी ते मा अवताम्।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।3।।
1182. वरुणो अपाम् अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।4।।
1183. मित्रावरुणौ वृष्ट्या, अधिपती तौ मा अवताम्।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।5।।
1184. मरुतः पर्वतानाम्, अधिपतयः ते मा अवन्तु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।6।।
1185. सोमो वीरुधाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।7।।
1186. वायुः अन्तरिक्षस्य, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।8।।
1187. सूर्यः चक्षुषाम् अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।9।।
1188. चन्द्रमा नक्षत्राणाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।10।।
1189. इन्द्रो दिवो अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।11।।
1190. मरुताम् पिता पशूनाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,

अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।12।।
1191. मृत्युः प्रजानाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।13।।
1192. यमः पितृणाम्, अधिपतिः स मा अवतु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।14।।
1193. पितरः परे ते मा अवन्तु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।15।।
1194. तता अवरे ते मा अवन्तु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।16।।
1195. तत ततामहाः ते मा अवन्तु।
अस्मिन् ब्रह्मणि अस्मिन् कर्मणि,
अस्याम् पुरोधायाम् अस्याम् प्रतिस्थायाम्,
अस्याम् चित्त्याम् अस्याम् आकूत्याम्,
अस्याम् आशिषि अस्याम् देवहूत्याम् स्वाहा।।17।।

गर्भाधान सूक्त 25

1196. पर्वतात् दिवो योनेः,
अङ्गात्-अङ्गात् सम् आभृतम्।
शेपो गर्भस्य रेतोधाः, सरौ पर्णमिव आ दधत्।।1।।
1197. यथा इयम् पृथिवी मही, भूतानाम् गर्भम् आदधे।
एवा दधामि ते गर्भम्, तस्मै त्वाम् अवसे हुवे।।2।।
1198. गर्भम् धेहि सिनीवालि, गर्भम् धेहि सरस्वति।
गर्भम् ते अश्विना उभा, धत्ताम् पुष्करस्रजा।।3।।
1199. गर्भम् ते मित्रावरुणौ, गर्भम् देवो बृहस्पतिः।
गर्भम् ते इन्द्रोः च अग्निः च, गर्भम् धाता दधातु ते।।4।।
1200. विष्णुः योनिम् कल्पयतु, त्वष्ठा रूपाणि पिंशतु।
आ सिञ्चतु प्रजापतिः, धाता गर्भम् दधातु ते।।5।।
1201. यत् वेद राजा वरुणो, यत् वा देवी सरस्वती।
यत् इन्द्रो वृत्रहा वेद, तत् गर्भ करणम् पिव।।6।।
1202. गर्भो असि ओषधीनाम्, गर्भो वनस्पतीनाम्।
गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो, अग्ने गर्भम् आ इह धाः।।7।।
1203. अधि स्कन्द वीरयस्व, गर्भम् आ धेहि योन्याम्।
वृषा असि वृष्ण्यवन् प्रजायै, त्वा आ नयाम् असि।।8।।
1204. वि जिहीष्व बार्हत् सामे, गर्भः ते योनिमा शयाम्।
अदुः ते देवाः पुत्रम्, सोमपा उभयाविनम्।।9।।
1205. धातः श्रेष्ठेन रूपेण, अस्या नार्याः गवीन्योः।
पुमांसम् पुत्रम आ धेहि, दशमे मासि सूतवे।।10।।
1206. त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेण, अस्या नार्याः गवीन्योः।
पुमांसम् पुत्रम आ धेहि, दशमे मासि सूतवे।।11।।
1207. सवितः श्रेष्ठेन रूपेण, अस्या नार्याः गवीन्योः।
पुमांसम् पुत्रम आ धेहि, दशमे मासि सूतवे।।12।।
1208. प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेण, अस्या नार्याः गवीन्योः।
पुमांसम् पुत्रम आ धेहि, दशमे मासि सूतवे।।13।।

नवशाला सूक्त 26

1209. यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहा,
अग्निः प्रविद्वान् इह वो युनक्तु।1।
1210. युनक्ति देवः सविता प्रजानन्,
अस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा।।2।।
1211. इन्द्र उक्थमदानि अस्मिन् यज्ञे,
प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा।
1212. प्रैषा यज्ञे निविदः स्वाहा शिष्टाः,
पत्नीभिः वहत इह युक्ताः।4।
1213.छन्दांसि यज्ञे मरुतः स्वाहा,
माता इव पुत्रम् पिपृत इह युक्ताः।5
1214. आ इयम् अगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिः,
यज्ञम् तन्वाना अदितिः स्वाहा।।6।।
1215. विष्णुः युनक्तु बहुधा तपांसि,
अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।7।।
1216. त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा,
अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।8।।
1217. भगो युनक्तु आशिषो नु अस्मा,
अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा।।9।।
1218. सोमो युनक्तु बहुधा पयांसि,
अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।10।।
1219. इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याणि,
अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।11।।
1220. अश्विना ब्रह्मणा यातम् अर्वाञ्चौ,
वषट्कारेण यज्ञम् वर्धयन्तौ।
बृहस्पते ब्रह्मणा आ याहि अर्वाङ् यज्ञो,
अयम् स्वः इदम् यजमानाय स्वाहा।।12।।

षष्टो अनुवाकः

अग्नि सूक्त 27

1221. ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति,
ऊर्ध्वा शुक्रा शोचींषि अग्ने।
द्युमत्तमा सुप्रतीकः ससूनुः,
तनूनपात् असुरो भूरिपाणिः।।1।।
1222. देवो देवेषु देवः पथो, अनक्ति मध्वा घृतेन।।2।।
1223. मध्वा यज्ञम् नक्षति प्रैणानो नराशंसो,
अग्निः सुकृत् देवः सविता विश्ववारः।।3।।
1224. अच्छा अयम् एति शवसा घृता,
चित् ईडानो वह्निः नमसा।4।
1225. अग्निः स्रुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षत्,
अस्य महि मानम् अग्नेः।।5।।
1226. तरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवः च,
अतिष्ठन् वसुधातरः च।।6।।
1227. द्वारो देवीः अनु अस्य विश्वे,
व्रतम् रक्षन्ति विश्वहा।।7।।
1228. उरु व्यचसा अग्नेः धाम्ना पत्यमाने।
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषसानक्ता,
इमम् यज्ञम् अवतारम् अध्वरम् नः ।।8।।
1229. दैवा होतार ऊर्ध्वम् अध्वरम्,
नो अग्नेः जिह्वया अभि, गृणत गृणता नः स्विष्टये।
तिस्रो देवीः बर्हिः आ इदम् सदन्ताम्,
इडा सरस्वती मही भारती गृणाना।।9।।
1230. तत् नः तुरीपम् अद्.भुतम् पुरुक्षु,
देव त्वष्टा रायः पोषम् वि ष्य नाभिम् अस्य।।10।।
1231. वनस्पते अव सृजा रराणः।
त्मना देवेभ्यो अग्निः हव्यम् शमिता स्वदयतु।।11।।
1232. अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः।
इन्द्राय यज्ञम् विश्वे देवा, हविः इदम् जुषन्ताम्।।12।।

दीर्घायु सूक्त 28

1233. नव प्राणान् नवभिः सम् मिमीते,
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
हरिते त्रीणि रजते त्रीणि,
अयसि त्रीणि तपसा आविष्ठितानि।।1।।
1234. अग्निः सूर्यः चन्द्रमा भूमिः,
आपो द्यौ अन्तरिक्षम् प्रदिशो दिशः च।
आर्तवा ऋतुभिः सम्विदाना,
अनेन मा त्रिवृता पारयन्तु।।2।।
1235. त्रयः पोषाः त्रिवृति श्रयन्ताम्,
अनक्तु पूषा पयसा घृतेन।
अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा,
भूमा पशूनाम् त इह श्रयन्ताम्।।3।।
1236. इमम् आदित्या वसुना सम् उक्षत,
इमम् अग्ने वर्धय वावृधानः।
इमम् इन्द्र सम् सृज वीर्येण अस्मिन्,
त्रिवृत् श्रयन्ताम् पोषयिष्णु।।4।।
1237.भूमिः त्वा पातु हरितेन विश्वभृत्,
अग्निः पिपर्तु अयसा सजोषाः।
वीरुतभिः ते अर्जुनम् संविदानम्,
दक्षम् दधातु सुमनस्यमानम्।।5।।
1238. त्रेधा जातम् जन्मना इदम् हिरण्यम्,
अग्नेः एकम् प्रियतमम् बभूव,
सोमस्य एकम् हिंसितस्य परा अपतत्।
अपाम् एकम् वेधसाम् रेत आहुः तत्,
ते हिरण्यम् त्रिवृत् अस्तु आयुषे।6।
1239. त्र्यायुषम् जमदग्ने, कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
त्रेधा अमृतस्य चक्षणम्, त्रीणि आयूंषि ते अकरम्।।7।।
1240. त्रयः सुपर्णाः त्रिवृता यत् आयन्,
एकाक्षरम् अभिसंभूय शक्राः।
प्रति औहन् मृत्युम् अमृतेन,
साकम् अन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा।8।
1241. दिवः त्वा पातु हरितम्, मध्यात् त्वा पातु अर्जुनम्।
भूम्या अयस्मयम् पातु प्र, अगात् देवपुरा अयम्।।9।।
1242. इमाः तिस्रो देवपुराः, ताः त्वा रक्षन्तु सर्वतः।
ताः त्वम् बिभ्रत् वर्चस्वी, उत्तरः द्विषताम् भव।।10।।
1243. पुरम् देवानाम् अमृतम् हिरण्यम्,
य आवेधे प्रथमो देवो अग्रे।
तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोमि,
अनु मन्यताम् त्रि-वृत् आ-बधे मे।।11।।
1244. आ त्वा चृततु अर्यमा, पूषा आ बृहस्पतिः।
अहः जातस्य यत् नाम्, तेन त्वा अति चृतामसि।।12।।
1245. ऋतुभिः त्वा आर्तवैः, आयुषे वर्चसे त्वा।
सम्वत्सरस्य तेजसा, तेन संहनु कृण्मसि।।13।।
1246.घृतात् उल्लुप्तम् मधुना समक्तम्,
भूमिदृंहम् अच्युतम् पारयिष्णु।
भिन्दत् सपत्नान् अधरान् च कृण्वत्,
आ मा रोह महते सौभगाय।14।

रक्षोघ्न सूक्त 29

1247. पुरस्तात् युक्तो वह जातवेदो,
अग्ने विद्धि क्रियमाणम् यथा इदम्।
त्वम् भिषक् भेषजस्य असि कर्ता,
त्वया गाम् अश्वम् पुरुषम् सनेम्।1।
1248. तथा तत् अग्ने कृणु जातवेदो,
विश्वेभि देवै सह सम्विदानः।
यो नो दिदेव यतमो जघास यथा,

सो अस्य परिधिः पताति।।2।।
1249. यथा सो अस्य परिधिः पताति,
तथा तत् अग्ने कृणु जातवेदः।
विश्वेभिः देवैः सह सम्विदानः।।3।।
1250. अक्ष्यौ नि विध्य हृदयम् नि विध्य,
जिह्वाम् नि तृन्द्धि प्र दतो मृणीहि।
पिशाचो अस्य यतमो जघास,
अग्ने यविष्ठ प्रति तम् शृणीहि।।4।।
1251. यत् अस्य हृतम् विहृतम् यत् पराभृतम्,
आत्मनो जग्धम् यतमत् पिशाचैः।
तत् अग्ने विद्वान् पुनः आ भार,
त्वम् शरीरे मांसम् असुम् आ ईरयामः।।5।।
1252. आमे सुपक्वे शबले विपक्वे,
यो मा पिशाचा अशने ददम्भ।
तत् आत्मना प्रजया पिशाचा,
वि यातयन्ताम् अगदो अयम् अस्तु।।6।।
1253. क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भ,
अकृष्टपच्ये अशने धान्ये यः।
तत् आत्मना प्रजया पिशाचा,
वि यातयन्ताम् अगदो अयम् अस्तु।।7।।
1254.अपाम् मा पाने यतमो ददम्भ,
क्रव्यात् यातूनाम् शयने शयानम्।
तत् आत्मना प्रजया पिशाचा,
वि यातयन्ताम् अगदो अयम् अस्तु।।8।।
1255. दिवा मा नक़्तम् यतमो ददम्भ,
क्रव्यात् यातूनाम् शयने शयानम्।
तत् आत्मना प्रजया पिशाचा,
वि यातयन्ताम् अगदो अयम् अस्तु।।9।।
1256. क्रव्यादम् अग्ने रुधिरम्,
पिशाचम् मनोहनम् जहि जातवेदः।
तम् इन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु,
छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः।।10।।
1257.सनात् अग्ने मृणसि यातुधानान्,
न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
सहमूरान् अनु दह क्रव्यादो,
मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः।।11।।
1258. समाहर जातवेदो, यत् हृतम् यत् पराभृतम्।
गात्राणि अस्य वर्धन्ताम्, अंशुरिव आ प्यायताम्।।12।।
1259. सोमस्येव जातवेदः, अंशुः आ प्यायताम् अयम्।
अग्ने विरप्शिनम् मेध्यम्, अयक्ष्मम् कृणु जीवतु।।13।।
1260. एताः ते अग्ने समिधः, पिशाचजम्भनीः।
ताः त्वम् जुषस्व प्रति च, एना गृहाण जातवेदः।।14।।
1261. तार्ष्टाघीः अग्ने समिधः, प्रति गृह्णाहि अर्चिषा।
जहातु क्रव्यात् रूपम्, यो अस्य मांसम् जिहीर्षति।।15।।

दीर्घायुष्य सूक्त 30

1262. आवतः त आवतः, परावतः त आवतः।
इह एव भव मा नु गा मा पूर्वान् अनु गाः,
पुतृन् असुम् बध्नामि ते दृढम्।।1।।
1263. यत् त्वा अभिचेरुः, पुरुषः स्वो यत् अरणो जनः।
उन्मोचन प्रमोचने, उभे वाचा वदामि ते।।2।।
1264. यत् दुद्रोहिथ शेपिषे, स्त्रियै पुंसे अचित्त्या।
उन्मोचन प्रमोचने, उभे वाचा वदामि ते।।3।।
1265. यत् एनसो मातृकृतात्, शेषे पितृकृतात् च यत्।
उन्मोचन-प्रमोचने, उभे वाचा वदामि ते।।4।।
1266. यत् ते माता यत् ते पिता,
जामिः भ्राता च सर्जतः।
प्रत्यक् सेवस्व भेषजम्, जरदष्टिम् कृणोमि त्वा।।5।।
1267. इह एधि पुरुष, सर्वेण मनसा सह।
दूतौ यमस्य मा अनु गा, अधि जीवपुरा इहि।।6।।
1268. अनुहूतः पुनः आ इहि, विद्वान् उदयनम् पथः।
आरोहणम् आक्रमणम्, जीवतो-जीवतो अयनम्।।7।।
1269. मा बिभेः न मरिष्यसि, जरदष्टिम् कृणोमि त्वा।
निः अवोचम् अहम् यक्ष्मम्,
अङ्गेभ्यो अङ्गज्वरम् तव।।8।।
1270. अङ्भेदो अङ्गज्वरो, यः च ते हृदयामयः।
य़क्ष्मः श्येन इव प्र अपप्तत्, वाचा साढः परस्तराम्।।9।।
1271. ऋषी बोधप्रतीबोधौ, अस्वप्नो यः च जागृविः।
तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ, दिवा नक़्तम् च जागृताम्।।10।।
1272. अयम् अग्निः उपसद्य, इह सूर्य उत् एतु ते।
उदेहि मृत्योः गम्भीरात्, कृष्णात् चित् तमसः परि।।11।।
1273. नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे,
नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति।
उत्पारणस्य यो वेद तम् अग्निम्,
पुरो दधे अस्मा अरिष्टतातये।।12।।
1274. आ एतु प्राण आ एतु मनः,
आ एतु चक्षुः अथो बलम्।
शरीरम् अस्य सम् विदाम्,
तत् पद्भ्याम् प्रति तिष्ठतु।।13।।
1275. प्राणेन अग्ने चक्षुषा सम् सृज,
इमम् सम् ईरय तन्वा सम् बलेन।
वेत्थ अमृतस्य मा नु गात्, मा नु भूमिगृहो भुवत्।।14।।
1276. मा ते प्राण उप दसत्, मो अपानो अपि धायि ते।
सूर्यः त्वा अधिपतिः मृत्योः, उदायच्छतु रश्मिभिः।।15।।
1277. इयम् अन्तः वदति, जिह्वा बद्धा पनिष्पदा।
त्वया यक्ष्मम् निः अवोचम्, शतम् रोपीः च तक्मनः।।16।।

1278. अयम् लोकः प्रियतमो, देवानाम् अपराजितः।
यस्मै त्वम् इह मृत्यवे, दिष्टः पुरुष जज्ञिषे।
स च त्वा अनु .हवयामसि, मा पुरा जरसो मृथाः।।17।।

कृत्यापरिहरण सूक्त 31

1279. याम् ते चक्रुः आमे पात्रे, याम् चक्रुः मिश्रधान्ये।
आमे मांसे कृत्याम् याम्,
चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।1।।
1280. याम् ते चक्रुः कृकवाकौ, अजे वा याम् कुरीरिणि।
अव्याम् ते कृत्याम् याम्,
चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।2।।
1281. याम् ते चक्रुः एकशफे, पशूनाम् उभयादति।
गर्दभे कृत्याम् याम्, चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।3।।
1282. याम् ते चक्रुः अमूलायाम्, बलगम् वा नराच्याम्।
क्षेत्रे ते कृत्याम् याम्, चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।4।।
1283. याम् ते चक्रुः गार्हपत्ये, पूर्वाग्नौ उत दुश्चितः।
शालायाम् कृत्याम् याम्, चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।5।।
1284. याम् ते चक्रुः सभायाम्, याम् चक्रुः अधिदेवने।
अक्षेषु कृत्याम् याम्, चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।6।।
1285. याम् ते चक्रुः सेनायाम्, याम् चक्रुः इष्वायुधे।
दुन्दुभौ कृत्याम् याम्, चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।7।।
1286. याम् ते कृत्याम् कूपे,
अवदधुः श्मशाने वा निचख्नुः।
सद्मनि कृत्याम् याम्, चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्।।8।।
1287. याम् ते कृत्याम् पुरुषास्थे,
अग्नौ सम्-कसुके च याम्।
म्रोकम् निर्दाहम् क्रव्यादम्, पुनः प्रति हरामि ताम्।।9।।
1288. अपथेन आ जभार एनाम्,
ताम् पथा इतः प्र हिण्यमसि।
अधीरो मर्याधीरेभ्यः, सम् जभार अचित्त्या।।10।।
1289. यः चकार न शशाक, कर्तुम् शश्रे पादम् अङ्गुरिम्।
चकार भद्रम् अस्मभ्यम्, अभगो भगवद्भ्यः।।11।।
1290. कृत्याकृतम् बलगिनम्, मूलिनम् शपथेय्यम्।
इन्द्रः तम् हन्तु महता,
वधेन अग्निः विध्यतु अस्तया।।12।।

पञ्चमम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

षष्ठम् काण्डम्

अभृतप्रदाता सूक्त 1

1291. दोषो गाय बृहत्, गाय द्युमत् धेहि।
आथर्वण स्तुहि, देवम् सवितारम्।।1।।
1292. तम् उ ष्टुहि यः अन्तः सिन्धौ सूनुः।
सत्यस्य युवानाम्, अद्रोघवाचम् सुशेवम्।।2।।
1293. स घा नो देवः सविता, साविषत् अमृतानि भूरि।
उभे सुष्टुती सुगातवे।।3।।

जेताइन्द्र सूक्त 2

1294. इन्द्राय सोमम् ऋत्विजः, सुनोत आ च धावत।
स्तोतुः यो वचः, शृणवत् हवम् च मे।।1।।
1295. आ यम् विशन्तु इन्दवो, वयो न वृक्षम् अन्धसः।
विरप्शिन् वि मृधो जहि रक्षस्विनीः।।2।।
1296. सुनोता सोमपाव्ने, सोमम् इन्द्राय वज्रिणे।
युवा जेता ईशानः स पुरुष्टुतः।।3।।

आत्मगोपन सूक्त 3

1297. पातम् न इन्द्रापूषणा, अदितिः पान्तु मरुतः।
अपाम् नपात् सिन्धवः सप्त पातन,
पातु नो विष्णुः उत द्यौः।।1।।
1298. पाताम् नो द्यावापृथिवी अभिष्टये,
पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती,
पातु अग्निः शिवा ये अस्य पायवः।।2।
1299. पाताम् नो देवा अश्विना शुभा पती,
उषाषानक्ता उत न उरुष्यताम्।
अपाम् नपात् अभिहृती गयस्य,
चित् देव त्वष्टः वर्धय सर्वतातये।।3।।

आत्मगोपन सूक्त 4

1300. त्वष्टा मे दैव्यम् वचः, पर्जन्यो ब्रह्मणः पतिः।
पुत्रैः भ्रातृभिः अदितिः नु पातु,
नो दुष्टरम् त्रायमाणम् सहः।।1।।
1301. अंशो भगो वरुणो मित्रो,
अर्यमा अदितिः पान्तु मरुतः।
अप तस्य द्वेषो गमेत् अभिहृतो,
यवयत् शत्रुम् अन्तितम्।।2।।
1302. धिये सम् अश्विना प्र अवतम् न उरुष्या,
ण उरुज्मन् अप्रयुच्छन्।
द्यौः पितः यावय दुच्छुना या।।3।।

वर्चः प्राप्ति सूक्त 5

1303. उत् एनम् उत्तरम्, नय अग्ने घृतेन आहुत।
सम् एनम् वर्चसा सृज, प्रजया च बहुम् कृधि।।1।।
1304. इन्द्र इमम् प्रतरम् कृधि, सजातानाम् असत् वशी।
रायः पोषेण सम् सृज, जीवातवे जरसे नय।।2।।
1305. यस्य कृण्मो हविः गृहे, तम् अग्ने वर्धया त्वम्।
तस्मै सोमो अधि ब्रवत्, अयम् च ब्रह्मणः पतिः।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 6

1306. यो अस्मान् ब्रह्मणः, पते देवो अभिमन्यते।
सर्वम् तम् रन्धयासि, मे यजमानाय सुन्वते।।1।।
1307. यो नः सोम सुशंसिनो, दुःशंष आदिदेशति।
वज्रेण अस्य मुखे जहि, स संपिष्टो अप अयति।।2।।
1308. यो नः सोम अभिदासति, सनाभिः यः च निष्ट्यः।
अप तस्य बलम् तिर, महीव द्यौः वधत्मना।।3।।

असुरक्षयण सूक्त 7

1309. येन सोम अदितिः पथा, मित्रा वा यन्ति अद्रुहः।
तेना नो अवसा आ गहि।।1।।
1310. येन सोम साहन्त्य, असुरान् रन्धयासि नः।
तेना नो अधि वोचत।।2।।
1311. येन देवा असुराणाम्, ओजांसि अवृणीध्वम्।
तेना नः शर्म यच्छत।।3।।

कामात्मा सूक्त 8

1312. यथा वृक्षम् लिबुजा, समन्तम् परिसस्वजे।
एवा परिष्वजस्व माम्, यथा माम् कामिनी असो,
यथा मत् न अपगा असः।।1।।
1313. यथा सुपर्णः प्रपतन्, पक्षौ निहन्ति भूम्याम्।
एवा नि हन्मि ते मनो यथा माम्,
कामिनी असो यथा मत् न अपगा असः।।2।।
1314. यथा इमे द्यावापृथिवी, सद्यः पर्येति सूर्यः।
एवा परि एमि ते मनो यथा माम् कामिनी असो,
यथा मत् न अपगा असः।।3।।

कामात्मा सूक्त 9

1315. वाञ्छ मे तन्वम् पादौ,
वाञ्छ अक्ष्यौ वाञ्छ सक्थ्यौ।
अक्ष्यौ वृषण्यन्त्याः केशा माम्, ते कामेन शुष्यन्तु।।1।।
1316. मम त्वा दोषणिश्रिषम्, कृणोमि हृदयश्रिषम्।
यथा मम क्रतौ असो, मम चित्तम् उपायसि।।2।।
1317. यासाम् नाभिः आरेहणम्, हृदि सम्वननम् कृतम्।
गावो घृतस्य मातरो, अमूम् सम् वानयन्तु मे।।3।।

संप्रोक्षण सूक्त 10

1318. पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्यो,
अग्नये अधिपतये स्वाहा।।1।।
1319. प्राणाय अन्तरिक्षाय वयोभ्यो,
वायवे अधिपतये स्वाहा।।2।।
1320. दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यो,
सूर्याय अधिपतये स्वाहा।।3।।

द्वितीयो अनुवाकः

पुंसवन सूक्त 11

1321. शमीम् अश्वत्थ आरूढः, तत्र पुंसुवनम् कृतम्।
तत् वै पुत्रस्य वेदनम्, तत् स्त्रीषु आ भरामसि।।1।।
1322. पुंसि वै रेतो भवति, तत् स्त्रियाम् अनु षिच्यते।
तत् वै पुत्रस्य वेदनम्, तत् प्रजापतिः अब्रवीत्।।2।।
1323. प्रजापतिः अनुमतिः, सिनीवाली अवीक्लृपत्।
स्त्रैसूयम् अन्यत्र दधत्, पुमांसम् उ दधत् इह।।3।।

सर्पविष निवारण सूक्त 12

1324. परि द्याम् इव सूर्यो, अहीनाम् जनिम् अगमम्।
रात्री जगत् इव अन्यत् हंसात्,
तेन आ ते वारये विषम्।।1।।
1325. यत् ब्रह्मभिः यत् ऋषिभिः,
यत् देवैः विदितम् पुरा।
यत् भूतम् भव्यम् आसन्वत्, तेन आ ते वारये विषम्।।2।।
1326. मध्वा पृञ्चे नद्यः, पर्वता गिरयो मधु।
मधु परुष्णी शीपाला, शम् आस्ने अस्तु शम् हृदे।।3।।

मृत्युञ्जय सूक्त 13

1327. नमो देववधेभ्यो, नमो राजवधेभ्यः।
अथो ये विश्यानाम् वधा तेभ्यो, मृत्यो नमो अस्तु ते।।1।।
1328. नमः ते अधिवाकाय, परावाकाय ते नमः।
सुमत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै ते इदम् नमः।।2।।
1329. नमः ते यातुधानेभ्यो, नमः ते भेषजेभ्यः।
नमः ते मृत्यो मूलेभ्यो, ब्राह्मणेभ्य इदम् नमः।।3।।

बलासनाशन सूक्त 14

1330. अस्थिस्रम् सम् परुस्रंसम्, आस्थितम् हृदयामयम्।
बलासम् सर्वम् नाशय, अङ्गेष्ठा यः च पर्वसु।।1।।
1331. निः बलासम् बलासिनः, क्षिणोमि मुष्करम् यथा।
छिनद्भि अस्य बन्धनम्, मूलम् उर्वार्वा इव।।2।।
1332. निः बलास इत प्र पत, आशुङ्गः शिशुको यथा।
अथो इट इव हायनो, अप द्राहि अवीरहा।।3।।

शत्रुनिवारण सूक्त 15

1333. उत्तमो असि ओषधीनाम्, तव वृक्षा उपस्तयः।
उपस्तिः अस्तु सो अस्माकम्,
यो अस्मान् अभिदासति।।1।।
1334. सबन्धुः च असबन्धुः च, यो अस्मान् अभिदासति।
तेषाम् सा वृक्षाणाम् इव, अहम् भूयासम् उत्तमः।।2।।
1335. यथा सोम ओषधीनाम्, उत्तमो हविषाम् कृतः।
तलाशा वृक्षाणाम् इव, अहम् भूयासम् उत्तमः।।3।।

अक्षिरोगभेषज सूक्त 16

1336. आबयो अनाबयो, रसः त उग्र आबयो।
आ ते करम्भम् अद्मसि।।1।।
1337. विहह्ल नाम ते पिता, मदवती नाम ते माता।
स हिन त्वम् असि, यः त्वम् आत्मानम् आवयः।।2।।
1338. तौविलिके अव ईलय, अव अयम् ऐलब ऐलयीत्।
बभ्रुः च बभ्रुकर्णः च, अप इहि निः आल।।3।।
1339. अलसाला असि पूर्वा, सिलाञ्जाला असि उत्तरा।
नीलागलसाला।।4।।

गर्भदृंहण सूक्त 17

1340. यथा इयम् पृथिवी मही, भूतानाम् गर्भम् आदधे।
एवा ते ध्रियताम् गर्भो, अनु सूतुम् सवितवे।।1।।
1341. यथा इयम् पृथिवी मही, दाधार इमान् वनस्पतीन्।
एव आ ते ध्रियताम् गर्भो, अनु सूतुम् सवितवे।।2।।
1342. यथा इयम् पृथिवी मही, दाधार पर्वतान् गिरीन्।
एवा ते ध्रियताम् गर्भो, अनु सूतुम् सवितवे।।3।।
1343. यथा इयम् पृथिवी मही, दाधार विष्ठितम् जगत्।
एव आ ते ध्रियताम् गर्भो, अनु सूतुम् सवितवे।।4।।

ईर्ष्याविनाशन सूक्त 18

1344. ईर्ष्याया ध्राजिम् प्रथमाम्,
प्रथम् अस्या उत अपराम्।
अग्निम् हृदय्यम् शोकम्, तम् ते निः वापयामसि।।1।।
1345. यथा भूमः मृतमना, मृतात् मृतमनः तरा।
यथा उत मम्रुषो मन, एव ईर्ष्योः मृतम् मनः।।2।।
1346. अदो यत् ते हृदि श्रितम्, मनः कम् पतयिष्णुकम्।
ततः ते ईर्ष्याम् मुञ्चामि, निः ऊष्माणाम् दृतेः इव।।3।।

पावमान सूक्त 19

1347. पुनन्तु मा देवजनाः, पुनन्तु मनवो धिया।
पुनन्तु विश्वा भूतानि, पवमानः पुनातु मा।।1।।
1348. पवमानः पुनातु मा, क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
अथो अरिष्टतातये।।2।।
1349. उभाभ्याम् देव सवितः, पवित्रेण सवेन च।
अस्मान् पुनीहि चक्षसे।।3।।

यक्ष्मनाशन सूक्त 20

1350. अग्नेरिव अस्य दहत एति शुष्मिण,
उतेव मत्तो विलपन् अप अयति।
अन्यम् अस्मत् इच्छतु कम् चित् अव्रतः,
तपुः वधाय नमो अस्तु तक्मने।।1।।
1351. नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने,
नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते।
नमो दिवे नमः पृथिव्यै, तक्मने नम ओषधीभ्यः।।2।।
1352. अयम् यो अभिशोचयिष्णुः,
विश्वा रुपाणि हरिता कृणोषि।
तस्मै ते अरुणाय बभ्रवे नमः,
कृणोमि वन्याय तक्मने।।3।।

तृतीयो अनुवाकः

केशवर्धनी ओषधि सूक्त 21

1353. इमा याः तिस्रः पृथिवीः, तासाम् ह भूमिः उत्तमा।
तासाम् अधि त्वचो अहम्, भेषजम् सम् उ जग्रभम्।।1।।
1354. श्रेष्ठम् असि भेषजानाम्, वसिष्ठम् वीरुधानाम्।
सोमो भग इव यामेषु, देवेषु वरुणो यथा।।2।।
1355. रेवतीः अनाधृषः, सिषासवः सिषासथ।
उत स्थ केशदृंहणीः, अथो ह केशवर्धनी।।3।।

भैषज्य सूक्त 22

1356.कृष्णम् नियानम् हरयः सुपर्णा,
अपो वसाना दिवम् उत् पतन्ति।
ते आ अववृत्रन् सदनात् ऋतस्य,
आत् इत् घृतेन पृथिवीम् वि ऊदुः।1।
1357. पयस्वती कुणुथ अप ओषधी शिवी,
यत् एजथ मरुतो रुक्मवक्षसः।
ऊर्जम् च तत्र सुमतिम् च पिन्वत,
यत्र नरो मरुतः सिञ्चथा मधु।।2।।
1358. उदप्रुतो मरुतः तान् इयर्त,
वृष्टिः या विश्वा निवतः पृणाति।
एजाति ग्लहा कन्येव तुन्ना,
एरुम् तुन्दाना पत्येव जाया।।3।।

अपांभैषज्य सूक्त 23

1359. सस्रुषीः तत् अपसो, दिवा नक्तम् च सस्रुषीः।
वरेण्यक्रतुः अहम् अपो, देवीः उप ह्वये।।1।।
1360. ओता आपः कर्मण्या, मुञ्चन्तु इतः प्रनीयते।
सद्यः कृण्वन्तु एतवे।।2।।
1361. देवस्य सवितुः सवे, कर्म कृण्वन्तु मानुषाः।
शम् नो भवन्तु, अप ओषधीः शिवाः।।3।।

अपांभैषज्य सूक्त 24.

1362. हिमवतः प्र स्रवन्ति, सिन्धौ समह संगमः।
आपो ह मह्यम् तत् देवीः, ददन् हृद्योत-भेषजम्।।1।।
1363. यत् मे अक्ष्योः आदिद्योत,
पार्ष्ण्योः प्रपदोः च यत्।
आपः तत् सर्वम् निः करन्, भिषजाम् सुभिषक्तमाः।।2।।
1364. सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः, सर्वा या नद्य स्थन।
दत्त नः तस्य भेषजम्, तेना वो भुनजामहै।।3।

मन्याविनाशन सूक्त 25

1365. पञ्च च याः पञ्चाशत् च, सम्यन्ति मन्या अभि।
इतः ताः सर्वा नश्यन्तु, वाका अपचितामिव।।1।।

1366. सप्त च याः सप्ततिः च, सम्यन्तु ग्रैव्या अभि।
इतः ताः सर्वा नश्यन्तु, वाका अपचितामिव।।2।।
1367. नव च या नवतिः च, सम्यन्ति स्कन्ध्याः अभि।
इतः ताः सर्वा नश्यन्तु, वाका अपचितामिव।।3।।

पाप्मनाशन सूक्त 26

1368. अव मा पाप्मन् सृज, वशी सन् मृडयासि नः।
आ मा भद्रस्य लोके, पाप्मन् धेहि अविह्रुतम्।।1।।
1369. यो नः पाप्मन् न जहासि,
तम् उ त्वा जहिमो वयम्।
पथाम् अनु व्यावर्तने अन्यम्, पाप्मा अनु पद्यताम्।।2।।
1370. अन्यत्र अस्मत् नि उच्यतु, सहस्राक्षो अमर्त्यः।
यम् द्वेषाम् तम् ऋच्छतु,
यम् उ द्विष्मः तत् इत् जहि।।3।।

अरिष्टक्षयण सूक्त 27

1371. देवाः कपोत इषितो यत् इच्छन्,
दूतो निर्ऋत्या इदम् आजगाम।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिम्,
शम् नो अस्तु द्विपदे शम् चतुष्पदे1
1372. शिवः कपोत इषितो नो अस्तु,
अनागा देवाः शकुनो गृहम् नः।
अग्निः हि विप्रो जुषताम् हविः न,
परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु।।2।।
1373.हेतिः पक्षिणी न दभाति अस्मान्,
आष्ट्री पदम् कृणुते अग्निधाने।
शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु,
मा नो देवा इह हिंसीत् कपोतः।3

अरिष्टक्षयण सूक्त 28

1374. ऋचा कपोतम् नुदत प्रणोदम्,
इषम् मदन्तः परि गाम् नयामः।
सम्लोभयन्तो दुरिता पदानि,
हित्वा न ऊर्जम् प्र पदात् पृथिष्ठः।।1।।
1375. परि इमे अग्निम, अर्षत परि इमे गाम् अनेषत।
देवेषु अक्रत श्रवः, क इमान् आ दधर्षति।।2।।
1376. यः प्रथम् प्रवतम् आससाद,
बहु-भ्यः पन्थाम् अनुपस्पशानः।
यो अस्य ईशे द्विपदो यः चतुष्पदः,
तस्मै ययाम नमो अस्तु मृत्यवे।3।

अरिष्टक्षयण सूक्त 29

1377. अमून् हेतिः पतत्रिणी नि एतु,
यत् उलूको वदति मोघम् एतत्।
यत् वा कपोतः पदम् अग्नौ कृणोति।।1।।
1378. यौ ते दूतो निर्ऋते इदम् एतो,
अप्रहितौ प्रहितौ वा गृहम् नः।
कपोत-उलूकाभ्याम् अपदम् तत् अस्तु।।2।।
1379. अवैरहत्याय इदम् आ पपत्यात्,
सुवीरताया इदमा आ ससद्यात्।
पराङ् एव परा वद पराचीम् अनु सम्वतम्।
यथा यमस्य त्वा गृहे अरसम्,
प्रतिचाकशान् आभूकम् प्रतिचाकशान्।3।

पापशमन सूक्त 30

1380. देवा इमम् मधुना सम्युतम्,
यवम् सरस्वत्याम् अधि मणौ अचर्कृषुः।
इन्द्रः आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः,
कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः।।1।।
1381. यः ते मदो अवकेशो विकेशो,
येन अभिहस्यम् पुरुषम् कृणोषि।
आरात् त्वत् अन्या वनानि वृक्षि, त्वम्
शमि शतवल्शा वि रोह।।2।।
1382. बृहत्पलाशे सुभगे, वर्षवृद्धे ऋतावरि।
मातेव पुत्रेभ्यो, मृड केशेभ्यो शमि।।3।।

गौ सूक्त 31.

1383. आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्,
असदत् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः।।1।।
1384. अन्तः चरित रोचना, अस्य प्राणात् अपानतः।
वि अख्यत् महिषः स्वः।।2।।
1385. त्रिंशत् धाम वि राजति, वाक् पतङ्गो अशिश्रियत्।
प्रति वस्तोः अहः द्युभिः।।3।।

चतुर्थो अनुवाकः

यातुधानक्षयण सूक्त 32

1386. अन्तर्दावे जुहुता सु एतत्, यातुधानक्षयणम् घृतेन।
आरात् रक्षांसि प्रति दह त्वम् अग्ने न,
नो गृहाणाम् उप तीतपासि।1।
1387.रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् पिशाचाः पृष्टीः,
वो अपि शृणातु यातुधानाः।
वीरुत् वो विश्वतोवीर्या, यमेन सम् अजीगमत्।।2।।
1388. अभयम् मित्रावरुणौ इह अस्तु,
नो अर्चिषा अत्त्रिणो नुदतम् प्रतीचः।
मा ज्ञातारम् मा प्रतिष्ठाम् विदन्त,
मिथो वि-घ्नाना उप यन्तु मृत्युम्।3

इन्द्रस्तव सूक्त 33

1389. यस्य इदम् आ रजो, युजः तुजे जना वनम् स्वः।
इन्द्रस्य रन्त्यम् बृहत्।।1।।
1390. न आधृष आ दधृषते, धृषाणो धृषितः शवः।

पुरा यथा व्यथिः श्रव, इन्द्रस्य न आधृषे शवः।।2।।
1391. स नो ददातु तमा रयिम्, उरुम् पिशङ्ग-संदृशम्।
इन्द्रः पतिः तुविष्टमो जनेषु आ।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 34

1392. प्र अग्नये वाचम् ईरय, वृषभाय क्षितीनाम्।
स नः पर्षत् अति द्विषः।।1।।
1393. यो रक्षांसि निजूर्वति, अग्निः तिग्मेन शोचिषा।
स नः पर्षत् अति द्विषः।।2।।
1394. यः परस्याः परावतः, तिरो धन्व अतिरोचते।
स नः पर्षत् अति द्विषः।।3।।
1395. यो विश्वा अभि विपश्यति, भुवना सम् च पश्यति।
स नः पर्षत् अति द्विषः।।4।।
1396. यो अस्य पारे रजसः, शुक्रो अग्निः अजायत।
स नः पर्षत् अति द्विषः।।5।।

वैश्वानर सूक्त 35

1397. वैश्वानरो न ऊतय, आ प्र यातु परावतः।
अग्निः नः सुष्टुतीः उप।।1।।
1398. वैश्वानरो न आ अगमत्, इमम् यज्ञम् सजूः उप।
अग्निः उक्थेषु अंहसु।।2।।
1399. वैश्वानरो अङ्गिरसाम्,
स्तोमम् उक्थम् च चाक्लृपत्।
आ एषु द्युम्नम् स्वः यमत्।।3।।

वैश्वानर सूक्त 36

1400. ऋतावानम् वैश्वानरम्, ऋतस्य ज्योतिषः पतिम्।
अजस्रम् घर्मम् ईमहे।।1।।
1401. स विश्वा प्रति चाक्लृपे, ऋतून् उत् सृजते वशी।
यज्ञस्य वय उत्तिरन्।।2।।
1402. अग्निः परेषु धामसु, कामो भूतस्य भव्यस्य।
सम्राट् एको वि राजति।।3।।

शापनाशन सूक्त 37

1403. उप प्र अगात् सहस्राक्षो, युक्त्वा शपथो रथम्।
शप्तारम् अनुइच्छन् मम, वृक इव अविमतो गृहम्।।1।।
1404. परि णो वृङ्ग्धि शपथ, ह्रदम् अग्निरिवा दहन्।
शप्तारम् अत्र नो जहि, दिवो वृक्षमिव अशनिः।।2।।
1405. यो नः शपात् अपशतः, शपतो यः च नः शपात्।
शुने पेष्ट्रमिव अवक्षामम्, तम् प्रति अस्यामि मृत्यवे।।3।।

वर्चस्य सूक्त 38

1406. सिंहे व्याघ्रे उत या पृदाकौ,
त्विषिः अग्नौ ब्राह्मणे सूर्ये या।
इन्द्रम् या देवी सुभगा जजान,
सा न आ एतु वर्चसा सम्विदाना।।1।।
1407. या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरण्ये,
त्विषिः अप्सु गोषु या पुरुषेषु।
इन्द्रम् या देवी सुभगा जजान,
सा न आ एतु वर्चसा सम्विदाना।।2।
1408. रथे अक्षेषु ऋषभस्य वाजे,
वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे।
इन्द्रम् या देवी सुभगा जजान,
सा न आ एतु वर्चसा सम्विदाना।।3।।
1409. राजन्ये दुन्दुभौ आयतायाम्,
अश्वस्य वाजे पुरुषस्य मायौ।
इन्द्रम् या देवी सुभगा जजान,
सा न आ एतु वर्चसा सम्विदाना।4।

वर्चस्य सूक्त 39

1410. यशो हविः वर्धताम् इन्द्रजूतम्,
सहस्रवीर्यम् सुभृतम् सहस्कृतम्।
प्रसर्स्राणम् अनु दीर्घाय चक्षषे,
हविष्मन्तम् मा वर्धय ज्येष्ठतातये।।1।।
1411. अच्छा न इन्द्रम् यशसम्,
यशोभिः यशस्विनम् नमसाना विधेम।
स नो रास्व राष्ट्रम् इन्द्रजूतम्,
तस्य ते रातौ यशसः स्याम।।2।।
1412. यशा इन्द्रो यशा अग्निः, यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्य, अहम् अस्मि यशस्तमः।।3।।

अभय सूक्त 40

1413. अभयम् द्यावापृथिवी इह अस्तु नो अभयम्,
सोमः सविता नः कृणोतु।
अभयम् नो अस्तु उरु अन्तरिक्षम्,
सप्तऋषीणाम् च हविषा अभयम् नो अस्तु।।1।।
1414. अस्मै ग्रामाय प्रदिशः चतस्र ऊर्जम्,
सुभूतम् स्वस्ति सविता नः कृणोतु।
अशत्रु इन्द्रः अभयम् नः कृणोतु,
अन्यत्र राज्ञाम् अभि यातु मन्युः।।2।।
1415. अनमित्रम् नो अधरात्, अनमित्रम् न उत्तरात्।
इन्द्र अनमित्रम् नः पश्चात्, अनमित्रम् पुरः कृधि।।3।।

01-**दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 41**

1416. मनसे चेतसे धिय, आकूतय उत चित्तये।
मत्यै श्रुताय चक्षसे, विधेम हविषा वयम्।।1।।
1417. अपानाय व्यानाय, प्राणाय भूरिधायसे।
सरस्वत्या उरुव्यचे, विधेम हविषा वयम्।।2।।
1418. मा नो हासिषुः ऋषयो दैव्या,
ये तनूपा ये नः तन्वः तनूजा।
अमर्त्या मर्त्यान् अभि नः सचध्वम्,
आयुः धत्त प्रतरम् जीवसे नः।3।

पञ्चमो अनुवाकः

परस्परचित्त-एकीकरण सूक्त 42

1419. अव ज्यामिव धन्वनो, मन्युम् तनोमि ते हृदः।
यथा सम्मनसौ भूत्वा, सखायाविव सचावहै।।1।।
1420. सखायाविव सचावहा, अव मन्युम् तनोमि ते।
अधस्ते अश्मनो मन्युम्, उप अस्यामसि यो गुरुः।।2।।
1421. अभि तिष्ठामि ते मन्युम्, पाष्ण्यां प्रपदेन च।
यथा अवशो न वादिषो, मम चित्तम् उप आयसि।।3।।

मन्युशमन सूक्त 43

1422. अयम् दर्भो विमन्युकः, स्वाय च अरणाय च।
मन्योः विमन्युकस्य अयम्, मन्युशमन उच्यते।।1।।
1423. अयम् यो भूरिमूलः, समुद्रम् अवतिष्ठति।
दर्भः पृथिव्या उत्थितो, मन्युशमन उच्यते।।2।।
1424. वि ते हनव्याम् शरणिम्, वि ते मुख्याम् नयामसि।
यथा अवशो न वादिषो, मम चित्तम् उप आयसि।।3।।

रोगनाशन सूक्त 44

1425. अस्थात् द्यौः अस्थात् पृथिवी,
अस्थात् विश्वम् इदम् जगत्।
अस्थुः वृक्षा ऊर्ध्वस्वप्नाः, तिष्ठात् रोगो अयम् तव।।1।।
1426. शतम् या भेषजानि ते, सहस्रम् संगतानि च।
श्रेष्ठम् आस्रावभेषजम् वसिष्ठम् रोगनाशनम्।।2।।
1427. रुद्रस्य मूत्रम् असि, अमृतस्य नाभिः।
विषाणका नाम वा असि पितृणाम्,
मूलात् उत्थिता वातीकृतनाशनी।3।

दुःष्वप्न-नाशन सूक्त 45

1428. परो अप इहि मनस्पाप, किम् अशस्तानि शंससि।
परा इहि न त्वा कामये वृक्षान् वनानि,
सम् चर गृहेषु गोषु मे मनः।1।
1429. अवशसा निः-शसा यत् पराशसा,
उपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः।
अग्निः विश्वानि अप दुष्कृतानि,
अजुष्टानि आरे अस्मत् दधातु।।2।।
1430. यत् इन्द्र ब्रह्मणाः, पते अपि मृषा चरामसि।
प्रचेताः न आङ्गिरसो, दुरितात् पातु अंहसः।।3।।

दुष्वप्न-नाशन सूक्त 46

1431. यो न जीवो असि न मृतो,
देवानाम् अमृतगर्भो असि स्वप्न।
वरुणानी ते माता यमः, पिता अररुः नाम असि।।1।।
1432. विद्म ते स्वप्न जनित्रम् देवजामीनाम्,
पुत्रो असि यमस्य करणः।
अन्तको असि मृत्युः असि।
तम् त्वा स्वप्न तथा सम् विद्म,
स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि।।2।।
1433. यथा कलाम् यथा शफम्, यथा ऋणम् सम्नयन्ति।
एवा दुष्वप्न्यम्, सर्वम् द्विषते सम् नयामसि।।3।।

दीर्घायुप्राप्ति सूक्त 47

1434. अग्निः प्रातः सवने पातु अस्मान्,
वैश्वानरो विश्वकृत् विश्वशंभूः।
स नः पावको द्रविणे दधातु,
आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम।।1।।
1435.विश्वे देवा मरुत इन्दो अस्मान्,
अस्मिन् द्वितीये सवने न जह्युः।
आयुष्मन्तः प्रियम् एषाम् वदन्तः,
वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम।।2।।
1436. इदम् तृतीयम् सवनम् कवीनाम्,
ऋतेन ये चमसम् ऐरयन्त।
ते सौधन्वानाः स्वः आनशानाः,
स्विष्टिम् नो अभि वस्यो नयन्तु।।3।।

स्वस्तिवाचन सूक्त 48

1437. श्येनो असि गायत्र-छन्दा अनु त्वा रभे।
स्वस्ति मा सम् वह अस्य, यज्ञस्य उदृचि स्वाहा।।1।।
1438. ऋभुः असि जगच्छन्दा अनु त्वा रभे।
स्वस्ति मा सम् वह अस्य, यज्ञस्य उदृचि स्वाहा।।2।।
1439. वृषासि त्रिष्टुपछन्दा अनु त्वा रभे।
स्वस्ति मा सम् वह अस्य, यज्ञस्य उदृचि स्वाहा।।3।।

सूक्त 49

1440. नहि ते अग्ने तन्वः, क्रूरम् आनंश मर्त्यः।
कपिः बभस्ति तेजनम्, स्वम् जरायु गौरिव।।1।।
1441. मेष इव वै सम् च वि च उरु,
अच्यसे यत् उत्तरद्रौ उपरः च खादतः।
शीर्ष्णा शिरो अप्ससा अप्सो अर्दयन्,
अंशून् बभस्ति हरितेभिः आसभिः।।2।।
1442. सुपर्णा वाचम् अक्रत उप द्यवि,
आखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः।
नि यत् नियन्ति उपरस्य निष्कृतिम्,
पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्रितः।।3।।

अभययाचना सूक्त 50

1443. हतम् तर्दम् समङ्कम् आखुम् अश्विना,
छिन्तम् शिरो अपि पृष्टीः शृणीतम्।
यवान् न इत् अदान् अपि नह्यतम्,
मुखम् अथ अभयम् कृणुतम् धान्याय।।1।।
1444. तर्द है पतङ्ग है, जभ्य हा उपक्वस।
ब्रह्मेव असम्स्थितम् हविः अनदन्त,
इमान् यवान् अहिंसन्तो अपोदित।।2।।

1445. तर्दापते वघापते, तृष्ठजम्भा आ शृणोत मे।
य आरण्या व्यद्वरा ये के च स्थ व्यद्वराः,
तान् सर्वान् जम्भयामसि।3।

एनोनाशन सूक्त 51

1446. वायोः पूतः पवित्रेण, प्रत्यङ्ग सोमो अति द्रुतः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा।।1।।
1447. आपो अस्मान् मातरः सूदयन्तु,
घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वम् हि रिप्रम् प्रवहन्ति देवीः,
उत् इत् आभ्यः शुचिः आ पूत एमि।2
1448. यत् किम् च इदम् वरुण दैव्ये जनै,
अभिद्रोहम् मनुष्याः चरन्ति।
अचित्त्या च इत् तव धर्म आ युयोपिम,
मा नः तस्मात् एनसो देव रीरिषः।।3।।

षष्ठो अनुवाकः

भैषज्य सूक्त 52

1449. उत् सूर्यो दिव एति, पुरो रक्षांसि निजूर्वन्।
आदित्यः पर्वतेभ्यो, विश्वदृष्टो अदृष्टहा।।1।।
1450. नि गावो गोष्ठे असदन्, नि मृगासो अविक्षत।
नि ऊर्मयो नदीनाम्, नि अदृष्टा अलिप्सत।।2।।
1451. आयुर्ददम् विपश्चित्म्, श्रुताम् कण्वस्य वीरुधम्।
आ अभारिषम् विश्वभेशजीम्,
अस्य अदृष्टान् नि शमयत्।।3।।

सर्वतोरक्षण सूक्त 53

1452. दयौः च म इदम् पृथिवी च प्रचेतसौ,
शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु।
अनु स्वधा चिकिताम् सोमो अग्निः,
वायुः नः पातु सविता भगः च।1।
1453. पुनः प्राणः पुनः आत्मा न आ एतु,
पुनः चक्षुः पुनः असुः न आ एतु।
वैश्वानरो नो अदब्धः तनूपा,
अन्तः तिष्ठाति दुरितानि विश्वा।।2।।
1454. सम् वर्चसा पयसा सम् तनूभिः,
अगन्महि मनसा सम् शिवेन।
त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोतु,
अनु नो मार्ष्टु तन्वो यत् विरिष्टम्।।3।।

अमित्रदम्भन सूक्त 54

1455. इदम् तत् युज उत्तरम्, इन्द्रम् शुम्भामि अष्टये।
अस्य क्षत्रम् श्रियम् महीम्, वृष्टिरिव वर्धया तृणम्।।1।।
1456. अस्मै क्षत्रम् अग्नीषोमौ, अस्मै धारयतम् रयिम्।
इमम् राष्ट्रस्य अभिवर्गे, कृणुतम् युज उत्तरम्।।2।।
1457. सबन्धुः च असबन्धुः च, यो अस्मान् अभिदासति।
सर्वम् चम् रन्धयासि, मे यजमानाय सुन्वते।।3।।

सौमनस्य सूक्त 55

1458. ये पन्थानो बहवो देवयाना,
अन्तरा द्यावापृथिवी सम् चरन्ति।
तेषाम् अज्यानिम् यतमो वहाति,
तस्मै मा देवाः परि धत्त इह सर्वे।।1।।
1459. ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः,
शरत् वर्षाः स्विते नो दधात।
आ नो गोषु भजत आ प्रजायाम्,
निवात इत् वः शरणे स्याम।।2।।
1460. इदा वत्सराय परिवत्सराय,
सम्वत्सराय कृणुता बृहत् नमः।
तेषाम् वयम् सुमतौ यज्ञियानाम्,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम्।।3।।

सर्प-रक्षण सूक्त 56

1461. मा नो देवा अहिः वधीत्, सतोकान् सहपुरुषान्।
सम्यतम् न वि ष्परत् व्यात्तम् न,
सम् यमत् नमो देवजनेभ्यः।।1।।
1462. नमो अस्तु असिताय, नमः तिरश्चिराजये।
स्वजाय बभ्रवे नमो, नमो देवजनेभ्यः।।2।।
1463. सम् ते हन्मि दता, दतः सम् उ ते हन्वा हनू।
सम् ते जिह्वया जिह्वाम्,
सम् उ आस्ना अह आस्यम्।।3।।

जल-चिकित्सा सूक्त 57

1464. इदम् इत् वा उ भेषजम्, इदम् रुद्रस्य भेषजम्।
येन इषुम् एकतेजनाम्, शतशल्याम् अपब्रवत्।।1।।
1465. जालाषेण अभि सिञ्चत, जालाषेण उप सिञ्चत।
जालाषम् उग्रम् भेषजम्, तेन नो मृड जीवसे।।2।।
1466. शम् च नो मयः च नो,
मा च नः किम् चन आममत्।
क्षमा रपो विश्वम् नो अस्तु भेषजम्,
सर्वम् नो अस्तु भेषजम्।।3।।

यशः प्राप्ति सूक्त 58

1467.यशसम् मा इन्द्रो मघवान् कृणोतु,
यशसम् द्यावापृथिवी उभे इमे।
यशसम् मा देवः सविता कृणोतु,
प्रियो दातुः दक्षिणाया इह स्याम्।।1।।
1468. यथा इन्द्रो द्यावापृथिव्योः यशस्वान्,
यथा आप ओषधीषु यशस्वतीः।
एवा विश्वेषु देवेषु, वयम् सर्वेषु यशसः स्याम।।2।।
1469. यशा इन्द्रो यशा अग्निः, यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्य, अहम् अस्मि यशस्तमः।।3।।

ओषधि सूक्त 59

1470. अनडुतभ्यः त्वम् प्रथमम्, धेनुभ्यः त्वम् अरुन्धति।
अधेनवे वयसे शर्म, यच्छ चतुष्पदे।।1।।
1471. शर्म यच्छतु ओषधिः, सह देवीः अरुन्धती।
करत् पयस्वन्तम् गोष्ठम्, अयक्ष्मान् उत पुरुषान्।।2।।
1472. विश्वरूपाम् सुभगाम्, अच्छावदामि जीवलाम्।
सा नो रुद्रस्य अस्ताम्, हेतिम् दूरम् नयतु गोभ्यः।।3।।

पतिलाभ सूक्त 60

1473. अयम् आ याति अर्यमा, पुरस्तात् विषितस्तुपः।
अस्या इच्छन् अग्रुवै पतिम्, उत जायाम् अजानये।।1।।
1474. अश्रमत् इयम् अर्यमन्, अन्यासाम् समनम् यती।
अङ्गो अर्यमन् अस्याः, अन्या समनम् आयति।।2।।
1475. धाता दाधार पृथिवीम्, धाता द्याम् उत सूर्यम्।
धाता अस्यै अग्रवै पतिम्, दधातु प्रतिकाम्यम्।।3।।

विश्वस्रष्टा सूक्त 61

1476. मह्यम् आपो मधुमत् आ ईरयन्ताम्,
मह्यम् सूरो अभरत् ज्योतिषे कम्।
मह्यम् देवा उत विश्वे तपोजा,
मह्यम् देवा सविता व्यचो धात्।।1।।
1477. अहम् विवेच पृथिवीम् उत द्याम्,
अहम् ऋतून् अजनयम् सप्त साकम्।
अहम् सत्यम् अनृतम् यत् वदामि,
अहम् दैवीम् परि वाचम् विशः च।2
1478. अहम् जजान पृथिवीम् उत द्याम्,
अहम् ऋतून् अजनयम् सप्त सिन्धून्।
अहम् सत्यम् अनृतम् यत् वदामि,
यो अग्नीषोमौ अजुषे सखाया।।3।।

सप्तमो अनुवाकः

पावमान सूक्त 62

1479. वैश्वानरो रश्मिभिः नः पुनातु,
वातः प्राणेन इषिरो नमोभिः।
द्यावापृथिवी पयसा पयस्वती,
ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम्।।1।।
1480. वैश्वानरीम् सूनृताम् आ रभध्वम्,
यस्या आशाः तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया गणन्तः सधमादेषु, वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।।2।।
1481. वैश्वानरीम् वर्चस आ रभध्वम्,
शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
इह इडया सधमादम् मदन्तो,
ज्योक् पश्येम सूर्यम् उच्चरन्तम्।।3।।

वर्चोबलप्राप्ति सूक्त 63

1482. यत् ते देवी निर्ऋतिः आबबन्ध,
दाम ग्रीवासु अविमोक्यम् यत्।
तत् ते वि ष्यामि आयुषे वर्चसे बलाय,
अदोमदन् अन्नम् अद्धि प्रसूतः।।1।।
1483. नमो अस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजो,
अयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यम् पुनः इत् त्वाम् ददाति,
तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे।।2।।
1484. अयस्मये द्रुपदे बेधषे इह,
अभिहितो मृत्युभिः ये सहस्रम्।
यमेन त्वम् पितृभिः सम्विदान,
उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम्।।3।।
1485. सम् सम् इत् युवसे वृषन्,
अग्ने विश्वानि अर्य आ।
इडः पदे सम् इध्यसे, स नो वसूनि आ भर।।।4।।

सांमनस्य सूक्त 64

1486. सम् जानीध्वम् सम् पृच्यध्वम्,
सम् वो मनांसि जानताम्।
देवा भागम् यथा पूर्वे, सम् जानाना उपासते।।1।।
1487. समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानम् व्रतम् सह चित्तम् एषाम्।
समानेन वो हविषा जुहोमि,
समानम् चेतो अभिसंविशध्वम्।।2।।
1488. समानी व आकूतिः, समाना हृदयानि वः।
समानम् अस्तु वो मनो, यथा वः सुसह असति।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 65

1489. अव मन्युः अव आयता, अव बाहू मनोयुजा।
पराशर त्वम् तेषाम् पराञ्चम्,
शुष्मम् अर्दय अधा नो रयिमा कृधि।1।
1490. निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तम्, यम् देवाः शरुम् अस्यथ।
वृश्चामि शत्रूणाम् बाहून्, अनेन हविषा अहम्।।2।।
1491. इन्द्रः चकार प्रथमम्, नैर्हस्तम् असुरेभ्यः।
जयन्तु सत्वानो मम, स्थिरेण इन्द्रेण मेदिना।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 66

1492. निर्हस्तः शत्रुः अभिदासन् अस्तु,
ये सेनाभिः युधम् आयन्ति अस्मान्।
सम अर्पय इन्द्र महता वधेन,
द्रातू एषाम् अघहारो विविद्धः।।1।।
1493. आतन्वाना आयच्छन्तो, अस्यन्तो ये च धावथ।
निर्हस्ताः शत्रवः स्थन इन्द्रो, वो अद्य परा अशरीत्।।2।।
1494. निर्हस्ताः सन्तु शत्रवो, अङ्गा एषाम् म्लापयामसि।
अथ एषाम् इन्द्र वेदांसि, शतशो वि भजामहै।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 67

1495. परि वर्त्मानि सर्वत, इन्द्रः पूषा च सस्रतुः।
मुहयन्तु अद्य अमूः सेना, अमित्राणाम् परस्तराम्।।1।।
1496. मूढाः अमित्राः चरत, अशीर्षाण इव अहयः।
तेषाम् वा अग्निमूढानाम्, इन्द्रो हन्तु वरम्वरम्।।2।।
1497. आ एषु नह्य वृषा अजिनम्,
हरिणस्य आ भियम् कृधि।
पराङ् अमित्र एषतु, अर्वाची गौः उप एषतु।।3।।

वपन सूक्त 68

1498. आ अयम् अगन् सविता क्षुरेण,
उष्णेन वाय उदकेन आ इहि।
आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः,
सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः।1।
1499. अदितिः श्मश्रु वपतु, आप उन्दन्तु वर्चसा।
चिकित्सतु प्रजापतिः, दीर्घायुत्वाय चक्षसे।।2।।
1500. येन अवपत् सविता क्षुरेणस,
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्।
तेन ब्रह्माणो वपत इदम् अस्य गोमान्,
अश्ववान् अयम् अस्तु प्रजावान्।।3।।

वर्चस् प्राप्ति सूक्त 69

1501. गिरौ अरगराटेषु, हिरण्ये गोषु यत् यशः।
सुरायाम् सिच्यमानायाम्, कीलाले मधु तत् मयि।।1।।
1502. अश्विना सारघेण मा मधुना, अङ्क्तम् शुभः पती।
यथा भर्गस्वतीम् वाचम्, आवदानि जनान् अनु।।2।।
1503. मयि वर्चो अथो यशो, अथो यज्ञस्य यत् पयः।
तत् मयि प्रपतिः, दिवि द्यामिव दृंहतु।।3।।

अघ्न्या सूक्त 70

1504. यथा मांसम् यथा सुरा, यथा अक्षा अधिदेवने ।
यथा पुंसो वृषण्यत, स्त्रियाम् निहन्यते मनः।
एवा ते अघ्न्ये मनो, अधि वत्से नि हन्यताम्।।1।।
1505. यथा हस्ती हस्तिन्याः, पदेन पदम् उद्युजे।
यथा पुंसो वृषण्यत, स्त्रियाम् निहन्यते मनः।
एवा ते अघ्न्ये मनो, अधि वत्से नि हन्यताम्।।2।।
1506. यथा प्रधिः यथा उपधिः, यथा नभ्यम् प्रधौ अधि।
यथा पुंसो वृषण्यत, स्त्रियाम् निहन्यते मनः।
एवा ते अघ्न्ये मनो, अधि वत्से नि हन्यताम्।।3।।

अन्न सूक्त 71

1507. यत् अन्नम् अद्मि बहुधा विरूपम्,
हिरण्यम् अश्वम् उत गाम् अजाम् अविम्।
यत् एव किम् च प्रतिजग्रह अहम्,
अग्निः तत् होता सुहुतम् कृणोतु।1।
1508. यत् मा हुतम् अहुतम् आजगाम,
दत्तम् पितृभिः अनुमतम् मनुष्यैः।
यस्मात् मे मन उदिव रारजीति,
अग्निः तत् होता सुहुतम् कृणोतु।।2।।
1509. यत् अन्नम् अद्मि अनृतेन देवा दास्यन्,
अदास्यन् उत संम् गृणामि।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवम्,
मह्यम् मधुमत् अस्तु अन्नम्।।3।।

वाजीकरण सूक्त 72

1510. यथा असितः प्रथयते वशान्,
अनु वपूंषि कृण्वन् असुरस्य मायया।
एवा ते शेपः सहसा अयम् अर्को,
अङ्गेन अङ्गम् सम्समकम् कृणोतु।1
1511. यथा पसः तायादरम्, वातेन स्थूलभम् कृतम्।
यावत् परस्वतः पसः, तावत् ते वर्धताम् पसः।।2।।
1512. यावदङ्गीनम् पारस्वतम्,
हास्तिनम् गार्दभम् च यत्।
यावत् अश्वस्य वाजिनः, तावत् ते वर्धताम् पसः।।3।।

अष्टमो अनुवाकः

सांमनस्य सूक्त 73

1513. आ इह यातु वरुणः सोमो,
अग्निः बृहस्पतिः वसुभिः इह यातु।
अस्य श्रियम् उपसंयात सर्व,
उग्रस्य चेत्तुः सम्मनसः सजाताः।।1।।
1514. यो वः शुष्मो हृदयेषु अन्तः,
आकूतिः या वो मनसि प्रविष्टा।
तान् सीवयामि हविषा घृतेन,
मयि सजाता रमतिः वो अस्तु।।2।।
1515. इह एव स्त मा अप यात अधि अस्मत्,
पूषा परस्तात् अपथम् वः कृणोतु।
वास्तोः पतिः अनु वो जोहवीतु,
मयि सजाता रमतिः वो अस्तु।।3।।

सांमनस्य सूक्त 74

1516. सम् वः पृच्यन्ताम् तन्वः,
सम् मनांसि सम् उ व्रता।
सम् वो अयम् ब्रह्मणः पतिः,
भगः सम् वो अजीगमत्।।1।।
1517. सम्ज्ञपनम् वो मनसो, अथो सम्ज्ञपनम् हृदः।
अथो भगस्य यत् श्रान्तम्, तेन सम्ज्ञपयामि।।2।।
1518. यथा आदित्या वसुभिः सम्बभूवः,
मरुत्भिः उग्रा अहृणीयमानाः।
एवा त्रिणामन् अहृणीयमान,
इमान् जजान् सम्मनसः कृधि इह।।3।।

सपत्नक्षयण सूक्त 75

1519. निः अमुम् नुद ओकसः, सपत्नो यः पृतन्यति।
नैर्बाध्येन हविषा इन्द्र, एनम् परा अशरीत्।।1।।
1520. परमाम् तम् परावतम्, इन्द्रो नुदतु वृत्रहा।
यतो न पुनः आयति, शश्वतीभ्यः समाभ्यः।।2।।
1521. एतु तिस्र परावत, एथु पञ्च जनान् अति।
एतु तिस्रो अति रोचना, यतो न पुनः आयति,
शश्वतीभ्यः समाभ्यो, यावत् सूर्यो असत् दिवि।।3।।

आयुष्य सूक्त 76

1522. य एनम् परिषीदन्ति, समादधति चक्षसे।
सम्प्रेद्धो अग्निः जिह्वाभिः, उत् एतु हृदयात् अधि।।1।।
1523. अग्नेः सांतपनस्य, अहम् आयुषे पदम् आ रभे।
अद्धातिः यस्य पश्यति घूमम्, उद्यन्तम् आस्यतः।।2।।
1524. यो अस्य समिधम्, वेद क्षत्रेयेण समाहिताम्।
न अभिह्वारे पदम्, नि दधाति स मृत्यवे।।3।।
1525. न एनम् घ्नन्ति पर्यायिणो,
न सन्नान् अव गच्छति।
अग्नेः यः क्षत्रियो विद्वान्, नाम् गृह्णाति आयुषे।।4।।

सूक्त 77

1526. अस्थात् द्यौः अस्थात् पृथिव्य,
अस्थात् विश्वम् इदम् जगत्।
आस्थाने पर्वता अस्थु, स्थाम्नि अश्वान् अतिष्ठिपम्।।1।।
1527. य उदानट् परायणम्, य उदानट् न्यनम्।
आवर्तनम् निवर्तनम्, यो गोपा अपि तम् हुवे।।2।।
1528. जातवेदो नि वर्तय, शतम् ते सन्तु आवृतः।
सहस्रम् त उपावृतः ताभिः, नः पुनः आ कृधि।।3

धनप्राप्ति प्रार्थना सूक्त 78

1529. तेन भूतेन हविषा, अयम् आ प्यायताम् पुनः।
जायाम् याम् अस्मा आवाक्षुः,
ताम् रसेन अभि वर्धताम्।।1।।
1530. अभि वर्धताम् पयसा अभि राष्ट्रेण वर्धताम्।
रय्या सहस्रवर्चसा इमौ स्ताम् अनुपक्षितौ।।2।।
1531. त्वष्टा जायाम् अजनयत्,
त्वष्टा अस्यै त्वाम् पतिम्।
त्वष्टा सहस्रम् आयूंषि, दीर्घम् आयुः कृणोतु वाम्।।3।।

ऊर्क्-प्राप्ति सूक्त 79

1532. अयम् नो नभसः पति, सम्स्फानो अभि रक्षतु।
असमातिम् गृहेषु नः।।1।।
1533. त्वम् नो नभसः पत ऊर्जम् गृहेषु धारय।
आ पुष्टम् एतु आ वसु।।2।।
1534. देव सम्स्फान, सहस्रपोषस्य ईशिषे।
तस्य नो रास्व तस्य नो धेहि,
तस्य ते भक्तिवांसः स्याम।।3।।

अरिष्टक्षयण सूक्त 80

1535. अन्तरिक्षेण पतति, विश्वा भूता अवचाकशत्।
शुनो दिव्यस्य यत् महः, तेना ते हविषा विधेम।।1।।
1536. ये त्रयः कालकाञ्जा, दिवि देवा इव श्रिताः।
तात् सर्वान् अह्वे ऊतये, अस्मा अरिष्टतातये।।2।।
1537. अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थम्,
समुद्रे अन्तः महिमा ते पृथिव्याम्।
शुनो दिव्यस्य यत् महः, तेन ते हविषा विधेम।।3।।

गर्भाधान सूक्त 81

1538. यन्ता असि यच्छसे, हस्तौ अप रक्षांसि सेधसि।
प्रजाम् धनम् च गृह्णानः, परिहस्तो अभूत् अयम्।।1।।
1539. परिहस्त वि धारय, योनिम् गर्भाय धातवे।
मर्यादे पुत्रम् आ धेहि तम्, त्वम् आ गमय आगमे।।2।।
1540. यम् परिहस्तम् अबिभः, अदितिः पुत्रकाम्या।
त्वष्टा तम् अस्या आ बध्नात्,
यथा पुत्रम् जनात् इति।।3।।

सूक्त 82

1541. आगच्छत आगतस्य, नाम गृह्णामि आयतः।
इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे, वासवस्य शतक्रतोः।।1।।
1542. येन सूर्याम् सावित्रीम्, अश्विना ऊहतुः पथा।
तेन माम् अब्रवीत भगो, जायाम् आ वहतात् इति।।2।।
1543. यः ते अङ्कुशो वसुदानो, बृहन् इन्द्र हिरण्ययः।
तेना जनियते जायाम्, मह्यम् धेहि शची-पते।।3।।

नवमो अनुवाकः

भैषज्य सूक्त 83

1544. अपचितः प्र पतत, सुपर्णो वसतेरिव।
सूर्यः कृणोतु भेषजम्, चन्द्रमा वो अप उच्छतु।।1।।
1545. एनी एका श्येनी एका, कृष्णा एका रोहिणी द्वे।
सर्वासाम् अग्रभम् नाम, अवीरघ्नीः अप इतन।।2।।
1546. असूतिका रामायणी, अपचित् प्र पतिष्यति।
ग्लौः इतः प्र पतिष्यति, स गलुन्तो नशिष्यति।।3।।
1547. वीहि स्वाम् आहुतिम् जुषाणो,
मनसा स्वाहा मनसा यत् इदम् जुहोमि।।4।।

निर्ऋतिमोचन सूक्त 84

1548. यस्याः त आसनि घोरो जुहोमि,
एषाम् बद्धानाम् अवसर्जनाय कम्।
भूमिः इति त्वा अभिप्रमन्वते जना निर्ऋतिः,
इति त्वा अहम् परि वेद सर्वतः।।1।।
1549. भूते हविष्मती भव एष, ते भागो यो अस्मासु।
मुञ्च इमान् अमून् एनसः स्वाहा।।2।।
1550. एवो सु अस्मत् निर्ऋते अनेहा,

त्वम् अयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यम् पुनः इत् त्वाम् ददाति,
तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे।।3।।
1551. अयस्मये द्रुपदे बेधिष इह,
अभिहितो मृत्युभिः ये सहस्रम्।
यमेन त्वम् पितृभिः संविदान,
उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम्।।4।।

यक्ष्मनाशन सूक्त 85

1552. वरणो वारयाता, अयम् देवो वनस्पतिः।
यक्ष्मो यो अस्मिन् आविष्टः, तम् उ देवा अवीवरन्।।1।।
1553. इन्द्रस्य वचसा वयम्, मित्रस्य वरुणस्य च।
देवानाम् सर्वेषाम् वाचा, यक्ष्मम् ते वारयामहे।।2।।
1554. यथा वृत्र इमा आपः, तस्तम्भ विश्वधा यतीः।
एवा ते अग्निना यक्ष्मम्, वैश्वानरेण वारये।।3।।

वृषकामना सूक्त 86

1555. वृषा इन्द्रस्य वृषा दिवो, वृषा पृथिव्या अयम्।
वृषा विश्वस्य भूतस्य, त्वम् एकवृषो भव।।1।।
1556. समुद्र ईशे स्रवताम्, अग्निः पृथिव्या वशी।
चन्द्रमा नक्षत्राणाम् ईशे, त्वम् एकवृषो भव।।2।।
1557. सम्राट् अस् असुराणाम्, ककुत् मनुष्याणाम्।
देवानाम् अर्धभाक् असि, त्वम् एकवृषो भव।।3।।

राज्ञः संवरण सूक्त 87

1558. आ त्वा अहार्षम् अन्तः,
अभूः ध्रुव तिष्ठ अविचाचलत्।
विशः त्वा सर्वा वाञ्छन्तु,
मा त्वत् राष्ट्रम् अधि भ्रशत्।।1।।
1559. इह एव एधि मा अप,
च्योष्ठाः पर्वत इव अविचाचलत्।
इन्द्र इव इह ध्रुवः तिष्ठ, इह राष्ट्रम् उ धारय।।2।।
1560. इन्द्र एतम् अदीधरत्, ध्रुवम् ध्रुवेण हविषा।
तस्मै सोमो अधि ब्रवत्, अयम् च ब्रह्मणः पतिः।।3।।

ध्रुवोराजा सूक्त 88

1561. ध्रुवा द्यौः ध्रुवा पृथिवी, ध्रुवम् विश्वम् इदम् जगत्।
ध्रुवासः पर्वता इमे ध्रुवो, राजा विशाम् अयम्।।1।।
1562. ध्रुवम् ते राजा वरुणो, ध्रुवम् देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवम् त इन्द्रः च अग्निः, च राष्ट्रम् धारयताम् ध्रुवम्।।2।।
1563. ध्रुवो अच्युतः प्र मृणीहि,
शत्रून् शत्रुयतो अधरान् पादयस्व।
सर्वा दिशः सम्मनसः सध्रीचीः,
ध्रुवाय ते समितिः कल्पताम् इह।।3।।

प्रीतिसंजनन सूक्त 89

1564. इदम् यत् प्रेण्यः शिरो, दत्तम् सोमेन वृष्ण्यम्।
ततः परि प्रजातेन, हार्दिम् ते शोचयामसि।।1।।
1565. शोचयामसि ते हार्दिम्, शोचयामसि ते मनः।
वातम् धूम इव सध्र्यङ् माम्, एव अनु एतु ते मनः।।2।।
1566. मह्यम् त्वा मित्रावरुणौ, मह्यम् देवी सरस्वती।
मह्यम् त्वा मध्यम् भूम्या,
उभौ अन्तौ सम् अस्यताम्।।3।।

इषुनिष्कासन सूक्त 90

1567. याम् ते रुद्र इषुम्, आस्यत् अङ्गेभ्यो हृदयाय च।
इदम् ताम् अद्य त्वत् वयम्, विषूचीम् वि वृहामसि।।1।।
1568. याः ते शतम् धमनयो, अङ्गानि अनु विष्ठिताः।
तासाम् ते सर्वासाम् वयम्, निः विषाणि ह्वयामसि।।2।।
1569. नमः ते रुद्र अस्यते, नमः प्रतिहितायै।
नमो विसृज्यमानायै, नमो निपतितायै।।3।।

यक्ष्मनाशन सूक्त 91

1570. इमम् यवम् अष्टायोगैः, षड्योगेभिः अचर्कृषुः।
तेना ते तन्वो रपो, अपाचीनम् अप व्यये।।1।।
1571. न्यक् वातो वाति, न्यक् तपति सूर्यः।
नीचीनम् अघ्न्या दुहे, न्यक् भवतु ते रपः।।2।।
1572. आप इत् वा उ भेषजीः, आपो अमीवचातनीः।
आपो विश्वस्य भेषजीः, ताः ते कृण्वन्तु भेषजम्।।3।।

वाजी सूक्त 92

1573. वातरंहा भवा वाजिन् युज्यमान,
इन्द्रस्य याहि प्रसवे मनोजवाः।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस,
आ ते त्वष्टा पत्सु जवम् दधातु।।1।।
1574. जवः ते अर्वन् निहितो गुहा,
यः श्येने वात उत यो अचरत् परीत्तः।
तेन त्वम् वाजिन् बलवान् बलेन,
आजिम् जय समने पारयिष्णुः।।2।।
1575. तनूः ते वाजिन् तन्वम् नयन्ती वामम्,
अस्मभ्यम् धावतु शर्म तुभ्यम्।
अह्रुतो महो धरुणाय देवो दिवीव,
ज्योतिः स्वम् आ मिमीयात्।।3।।

दशमो अनुवाकः

स्वस्त्ययन सूक्त 93

1576. यमो मृत्युः अघमारो निर्ऋथो,
बभ्रुः शर्वो अस्ता नीलशिखण्डः।
देवजनाः सेनया उत्तस्थिवांसः,
ते अस्माकम् परि वृञ्जन्तु वीरान्।।1।।
1577. मनसा होमैः हरसा घृतेन,
शर्वाय अस्त्र त राज्ञे भवाय।
नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोमि,

अन्यत्र अस्मत् अघविषा नयन्तु।।2।।
1578. त्रायध्वम् नो अघविषाभ्यो,
वधात् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः।
अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा,
वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम।।3।।

सांमनस्य सूक्त 94

1579. सम् वो मनांसि सम् व्रता, सम् आकूतीः नमामसि।
अमी ये विव्रता स्थन तान्, वः सम् नमयामसि।।1।।
1580. अहम् गृभ्णामि मनसा मनांसि,
मम चित्तम् अनु चित्तेभिः आ इत।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि,
मम यातम् अनुवर्त्मान आ इत।।2।।
1581. ओते मे द्यावापृथिवी, ओता देवी सरस्वती।
ओतौ म इन्द्रः च अग्निः च,
ऋध्यास्म इदम् सरस्वति।।3।।

कुष्ठौषधि सूक्त 95

1582. अश्वत्थो देवसदनः, तृतीयस्याम् इतो दिवि।
तत्र अमृतस्य चक्षणम्, देवाः कुष्ठम् अवन्वत्।।1।।
1583. हिरण्ययी नौः अचरत्, हिरण्यबन्धना दिवि।
तत्र अमृतस्य पुष्पम्, देवाः कुष्ठम् अवन्वत।।2।।
1584. गर्भो असि ओषधीनाम्, गर्भो हिमवताम् उत।
गर्भो विश्वस्य भूतस्य, इमम् मे अगदम् कृधि।।3।।

चिकित्सा सूक्त 96

1585. या ओषधयः सोमराज्ञीः, बह्वीः शतविचक्षणाः।
बृहस्पति-प्रसूताः, ता नो मुञ्चन्तु अंहसः।।1।।
1586. मुञ्चन्तु मा शपथ्यात्, अथो वरुण्यात् उत।
अथो यमस्य पड्वीशात्, विश्वस्मात् देवकिल्बिषात्।।2।।
1587.यत् चक्षुषा मनसा यत् च वाचा,
उपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः।
सोमः तानि स्वधया नः पुनातु।।3।।

अभिभूर्वीर सूक्त 97

1588. अभिभूः यज्ञो अभिभूः अग्निः,
अभिभूः सोमो अभिभूः इन्द्रः।
अभि अहम् विश्वाः पृतना यथा असानि,
एव विधेम अग्निहोत्राः इदम् हविः।।1।।
1589. स्वधा अस्तु मित्रावरुणा विपश्चिता,
प्रजावत् क्षत्रम् मधुना इह पिन्वतम्।
बाधेथाम् दूरम् निर्ऋतिम् पराचैः,
कृतम् चित् एन प्र मुमुक्तम् अस्मत्।।2।।
1590. इमम् वीरम् अनु हर्षध्वम् उग्रम्,
इन्द्रम् सखायो अनु सम् रभध्वम्।
ग्रामजितम् गोजितम् वज्रबाहुम्,
जयन्तम् अज्म प्रमृणन्तम् ओजसा।।3।।

अजरक्षत्र सूक्त 98

1591. इन्द्रो जयाति न परा जयाता,
अधिराजो राजसु राजयातै।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यः च, उपसद्यो नमस्यो भव इह।।1।।
1592. त्वम् इन्द्र अधिराजः श्रवस्युः,
त्वम् भूः अभिभूतिः जनानाम्।
त्वम् दैवीः विश इमा वि राज,
आयुष्मत् क्षत्रम् अजरम् ते अस्तु।।2।।
1593. प्राच्या दिशः त्वम् इन्द्र असि,
राजा उत उदीच्या दिशो वृत्रहन् शत्रुहः असि।
यत्र यन्ति स्रोत्याः तत् जितम्,
ते दक्षिणतः वृषभ एषि हव्यः।।3।।

संग्रामजय सूक्त 99

1594. अभि त्वा इन्द्र वरिमतः, पुरा त्वा अंहूरणात् हुवे।
ह्वयामि उग्रम् चेत्तारम्, पुरुनामानम् एकजम्।।1।।
1595. यो अद्य सेन्यो वधो, जिघांसन् न उदीरते।
इन्द्रस्य तत्र बाहू, समन्तम् परि दद्मः।।2।।
1596. परि दद्म इन्द्रस्य बाहू,
समन्तम् त्रातुः त्रायताम् नः।
देव सवितः सोम राजन्, सुमनसम् मा कृणु स्वस्तये।।3।।

विषदूषण सूक्त 100

1597. देवा अदुः सूर्यो अदात्, द्यौः अदात् पृथिवी अदात्।
तिस्रः सरस्वतीः अदुः, सचित्ता विषदूषणाम्।।1।
1598. यत् वो देवा उपजीका, आसिञ्चन् धन्वनि उदकम्।
तेन देवप्रसूतेन, इदम् दूषयता विषम्।।2।।
1599. असुराणाम् दुहिता असि, सा देवानाम् असि स्वसा।
दिवः पृथिव्याः सम्भूता, सा चकर्थ अरसम् विषम्।।3।।

वाजीकरण सूक्त 101

1600. आ वृषायस्व श्वसिहि, वर्धस्व प्रथयस्व च।
यथाङ्गम् वर्धताम् शेपः, तेन योषितम् इत् जहि।।1।।
1601. येन कृशम् वाजयन्ति, येन हिन्वन्ति आतुरम्।
तेन अस्य ब्रह्मणः पते, धनुरिवा तानय पसः।।2।।
1602. आ अहम् तनोमि ते पसो, अधि ज्यामिव धन्वनि।
क्रमस्व ऋश इव रोहितम्, अनव ग्लायता सदा।।3।।

अभिसांमनस्य सूक्त 102

1603. यथा अयम् वाहो अश्विना, समैति सम् च वर्तते।
एव माम् अभि ते मनः, समैतु सम् च वर्तताम्।।1।।
1604. आ अहम् खिदामि ते मनो, राजाश्वः पृष्ट्यामिव।
रेष्मछिन्नम् यथा तृणम्, मयि ते वेष्टताम् मनः।।2।।
1605. आञ्जनस्य मदुघस्य, कुष्ठस्य नलदस्य च।
तुरो भगस्य हस्ताभ्याम्, अनुरोधनम् उत् भरे।।3।।

एकादशो अनुवाकः

शत्रुनाशन सूक्त 103

1606. संदानम् वो बृहस्पतिः, संदानम् सविता करत्।
संदानम् मित्रो अर्यमा, संदानम् भगो अश्विना।।1।।
1607. सम् परमान् सम् अवमान्,
अथो सम् द्यामि मध्यमान्।
इन्द्रः तान् परि अहा दाम्ना,
तान् अग्ने सम् द्या त्वम्।।2।।
1608. अमी ये युधम् आयन्ति, केतून् कृत्वा अनीकशः।
इन्द्रः तान् परि अहाः दाम्ना,
तान् अग्ने सम् द्या त्वम्।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 104

1609. आदानेन संदानेन, अमित्रान् आ द्यामसि।
आपाना ये च एषाम् प्राणा,
असुना असून सम् अच्छिदन्।।1।।
1610. इदम् आदानम् अकरम्, तपसा इन्द्रेण संशितम्।
अमित्रा ये अत्र नः सन्ति, तान् अग्न आ द्या त्वम्।।2।।
1611. आ एनान् द्यताम् इन्द्राग्नी,
सोमो राजा च मेदिनौ।
इन्द्रो मरुत्वान् आदानम्, अमित्रेभ्यः कृणोतु नः।।3।।

कासशमन सूक्त 105

1612. यथा मनो मनस्केतैः, परापतति आशुमत्।
एवा त्वम् कासे प्र पत, मनसः अनु प्रवाय्यम्।।1।।
1613. यथा बाणः सुसंशितः, परापतति आशुमत्।
एवा त्वम् कासे प्र पत, पृथिव्या अनु संवतम्।।2।।
1614. यथा सूर्यस्य रश्मयः, परापतन्ति आशुमत्।
एवा त्वम् कासे प्र पत, समुद्रस्य अनु विक्षरम्।।3।।

दूर्वाशाला सूक्त 106

1615. आयने ते परायणे, दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः।
उत्सो वा तत्र जायताम्, ह्रदो वा पुण्डरीकवान्।।1।।
1616. अपाम् इदम् न्ययनम्, समुद्रस्य निवेशनम्।
मध्ये ह्रदस्य नो गृहाः, पराचीना मुखा कृधि।।2।।
1617. हिमस्य त्वा जरायुणा, शाले परि व्ययामसि।
शीतह्रदा हि नो भुवो, अग्निः कृणोतु भेषजम्।।3।।

विश्वजित् सूक्त 107

1618. विश्वजित् त्रायमाणायै मा परि देहि।
त्रायमाणे द्विपात् च सर्वम् नो रक्ष,
चतुष्पात् यत् च नः स्वम्।।1।।
1619. त्रायमाणे विश्वजिते, मा परि देहि।
विश्वजित् द्विपात् च सर्वम् नो रक्ष,
चतुष्पात् यत् च नः स्वम्।।2।।
1620. विश्वजित् कल्याण्यै, मा परि देहि।
कल्याणि द्विपात् च सर्वम् नो रक्ष,
चतुष्पात् यत् च नः स्वम्।।3।।
1621. कल्याणि सर्वविदे, मा परि देहि।
सर्ववित् द्विपात् च सर्वम् नो रक्ष,
चतुष्पात् यत् च नः स्वम्।।4।।

मेधावर्धन सूक्त 108

1622. त्वम् नो मेधे प्रथमा, गोभिः अश्वेभिः आ गहि।
त्वम् सूर्यस्य रश्मिभिः, त्वम् नो असि यज्ञिया।।1।।
1623. मेधाम् अहम् प्रथमाम् ब्रह्मण्वतीम्,
ब्रह्मजूताम् ऋषिष्टुताम्।
प्रपीताम् ब्रह्मचारिभिः, देवानाम् अवसे हुवे।।2।।
1624. याम् मेधाम ऋभवो विदुः,
याम् मेधाम् असुरा विदुः।
ऋषयः भद्राम् मेधाम् याम् विदुः,
ताम् मयि आ वेशयामसि।।3।।
1625. याम् ऋषयो भूतकृतो, मेधाम् मेधाविनो विदुः।
तया माम् अद्य मेधया, अग्ने मेधाविनम् कृणु।।4।।
1626. मेधाम् सायम् मेधाम् प्रातः,
मेधाम् मध्यन्दिनम् परि।
मेधाम् सूर्यस्य रश्मिभिः, वचसा या वेशयामहे।।5।।

पिप्पली भैषज्य सूक्त 109

1627. पिप्पली क्षिप्तभेषजी, उत अतिविद्धभेषजी।
तामे देवाः सम् अकल्पयन्, इयम् जीवितवा अलम्।।1।।
1628. पिप्पल्यः सम् अवदन्त, आयतीः जननात् अधि।
यम् जीवम् अश्नवामहै, न स रिष्याति पूरुषः।।2।।
1629. असुराः त्वा नि अखनन्,
देवाः त्वा उत् अवपन् पुनः।
वातीकृतस्य भेषजीम्, अथो क्षिप्तस्य भेषजीम्।।3।।

दीर्घायु सूक्त 110

1630. प्रत्न हि कम् ईड्यो अध्वरेषु,
सनात् च होता नव्यः च सत्सि।
स्वाम् च अग्ने तन्वम् पिप्रायस्व,
अस्मभ्यम् च सौभगम आ यजस्व।1
1631. ज्येष्ठघ्नाम् जातो विचृतोः यमस्य,
मूलवर्हणात् परि पाहि एनम्।
अति एनम् नेषत् दुरितानि,
विश्वा दीर्घायु त्वाय शतशारदाय।।2।।
1632. व्याघ्रे अह्नि अजनिष्ट वीरो,
नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः।
स मा वधीत् पितरम् वर्धमानो,
मा मातरम् प्र मिनीत् जनित्रीम्।।3।।

उन्मत्ततामोचन सूक्त 111

1633. इमम् मे अग्ने पुरुषम् मुमुग्धि,
अयम् यो बद्धः सुयतो लालपीति।
अतो अधि ते कृणवत् भागधेयम्,
यदा अनुन्मदितो असति।।1।।
1634. अग्निः ते नि शमयतु, यदि ते मन उद्युतम्।
कृणोमि विद्वान् भेषजम्, यथा अनुन्मदितो अससि।।2।।
1635. देवैनसात् उन्मदितम्, उन्मत्तम् रक्षसः परि।
कृणोमि विद्वान् भेषजम्, यदा अनुन्मदितो अससि।।3।।
1636. पुनः त्वा दुः अप्सरसः, पुनः इन्द्रः पुनः भगः।
पुनः त्वा दुः विश्वे देवा, यथा अनुन्मदितो अससि।।4।।

पाशमोचन सूक्त 112

1637. मा ज्येष्ठम् वधीत् अयम् अग्ने,
एषाम् मूलबर्हणात् परि पाहि एनम्।
स ग्राह्या पाशान् वि चृत प्रजानन्,
तुभ्यम् देवा अनु जानन्तु विश्वे।1।
1638. उत् मुञ्च पाशान् त्वम् अग्न एषाम्,
त्रयः त्रिभिः उत्सिता येभिः आसन्।
स ग्राह्या पाशान् वि चृत प्रजानन्,
पितापुत्रौ मातरम् मुञ्च सर्वान्।2।
1639. येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धो,
अङ्गे-अङ्ग आर्पित उत्सितः च।
वि ते मुच्यन्ताम् विमुचः हि सन्ति,
भ्रूणघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व।3।

द्वादशो अनुवाकः

पापनाशन सूक्त 113

1640. त्रिते देवा अमृजत एतत्,
एनः त्रितः एनत् मनुष्येषु ममृजे।
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे ताम्,
ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु।।1।।
1641. मरीचाः धूमान् प्र विश अनु पाप्मन्,
उदारान् गच्छ उत वा नीहारान्।
नदीनाम् फेनान् अनु तान् वि नश्य,
भ्रूणघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व।2।
1642. द्वादशधा निहितम् त्रितस्य,
अपमृष्टम् मनुष्यैनसानि।
ततो यदि त्वा ग्राहिः आनशे,
ताम् ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु।।3।।

उन्मोचन सूक्त 114

1643. यत् देवा देवहेडनम्, देवासः चकृमा वयम्।
आदित्याः तस्मात् नो यूयम्, ऋतस्य ऋतेन मुञ्चत।।1।।
1644. ऋतस्य ऋतेन आदित्या, यजत्रा मुञ्चत् इह नः।
यज्ञम् यत् यज्ञवाहसः, शिक्षन्तो न उपशेकिम।।2।।
1645. मेदस्वता यजमाना, स्रचा आज्यानि जुह्वतः।
अकामा विश्वे वो देवाः, शिक्षन्तो न उप शेकिम।।3।।

पापमोचन सूक्त 115

1646. यत् विद्वांसो यत् अविद्वांस,
एनांसि चकृमा वयम्।
यूयम् नः तस्मात् मुञ्चत, विश्वे देवाः सजोषसः।।1।।
1647. यदि जाग्रत यदि स्वपन्, एन एनस्य अकरम्।
भूतम् मा तस्मात् भव्यम् च, द्रुपदादिव मुञ्चताम्।।2।।
1648. द्रुपदादिव मुमुचानः, स्विन्नः स्नात्वा मलादिव।
पूतम् पवित्रेणेव आज्यम्, विश्वे शुम्भन्तु मा एनसः।।3।।

मधुमदन्न सूक्त 116

1649. यत् यामम् चक्रुः निखनन्तो अग्रे,
कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया।
वैवस्वते राजनि तत् जुहोमि,
अथ यज्ञियम् मधुमत् अस्तु नो अन्नम्।।1।।
1650. वैवस्वतः कृणवत् भागधेयम्,
मधुभागो मधुना सम् सृजाति मातुः,
यत् एन इषितम् न आगन्,
यत् वा पिता अपराद्धो जिहीडे।।2।।
1651. यद् इदम् मातुः यदि वा पितुः नः,
परि भ्रातुः पुत्रात् चेतसः एन आगन्।
यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते,
तेषाम् सर्वेषाम् शिवो अस्तु मन्युः।।3।।

आनृण्य सूक्त 117

1652. अपमित्यम् अप्रतीत्तम् यत् अस्मि,
यमस्य येन बलिना चरामि।
इदम् तत् अग्ने अनृणो भवामि,
त्वम् पाशान् विचृतम् वेत्थ सर्वान्।1।
1653. इह एव सन्त प्रति दद्म एनत्,
जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत्।
अपमित्य धान्यम् यत् जघस अहम्,
इदम् तत् अग्ने अनृणो भवामि।2
1654. अनृणा अस्मिन् अनृणाः परस्मिन्,
तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयानाः च लोकाः,
सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम।।3।।

आनृण्य सूक्त 118

1655. यत् हस्ताभ्याम् चकृम किल्बिषाणि,
अक्षाणाम् गत्नुम् उपलिप्समानाः।
उग्रम्पश्ये उग्रजितौ तत् अद्य,
अप्सरसौ अनु दत्ताम् ऋणम् नः।।1।।
1656. उग्रम्पश्ये राष्ट्रभृत् किल्बषाणि,

यत् अक्षवृत्तम् अनु दत्तम् न एतत्।
ऋणात् नो न ऋणाम् एर्त्समानो,
यमस्य लोके अधिरज्जुः आ अयत्।2
1657. यस्मा ऋणम् यस्य जायाम्,
उपैमि यम् याचमानो अभ्यैमि देवाः।
ते वाचम् वादिषुः मा उत्तराम्,
मत् देवपत्नी अप्सरसौ अधि इतम्।।3।।

पाशमोचन सूक्त 119

1658. यत् अदीव्यन् ऋणम् अहम् कृणोमि,
अदास्पन् अग्न उत सम्गृणामि।
वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठः,
उत् इत् नयासि सुकृतस्य लोकम्।।1।।
1659. वैश्वानराय प्रति वेदयामि,
यदि ऋणम् संगरो देवतासु।
स एतान् पाशान् विचृतम् वेद सर्वान्,
अथ पक्वेन सह सम् भवेम।।2।।
1660. वैश्वानरः पविता मा पुनातु,
यत् संगरम् अभिधावामि आशाम्।
अनाजानन् मनसा याचमानो,
यत् तत्र एनो अप तत् सुवाभि।।3।।

सुकृतलोक सूक्त 120

1661. यत् अन्तरिक्षम् पृथिवीम् उत द्याम्,
यत् मातरम् पितरम् वा जिहिंसिम।
अयम् तस्मात् गार्हपत्यो नो अग्निः,
उत् इत् नयाति सुकृतस्य लोकम्।।1।।
1662. भूमिः माता अदितिः नो जनित्रम्,
भ्राता अन्तरिक्षम् अभिशस्त्या नः।
द्यौः नः पिता पित्र्यात् शम् भवाति,
जामिम् ऋत्वा मा अव पत्सि लोकात्।।2।।
1663. यत्र आ सुहार्दः सुकृतो मदन्ति,
विहाय रोगम् तन्वः स्वायाः।
अश्लोणा अङ्गैः अह्रुताः स्वर्गे,
तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्।।3।।

सुकृतलोक-प्राप्ति सूक्त 121

1664. विषाणा पाशान् वि ष्य अधि अस्मत्,
य उत्तमाः अधमा वारुणा ये।
दुष्वप्न्यम् दुरितम् नि ष्व अस्मत्,
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्।।1।।
1665. यत् दारुणि बध्यसे यत् च रज्ज्वाम्,
यत् भूम्याम् बध्यसे यत् च वाचा।
अयम् तस्मात् गार्हपत्यो नो अग्निः,
उत् इत् नयाति सु-कृतस्य लोकम्।।2।।
1666. उत् अगाताम् भगवती, विचृतौ नाम तारके।
प्र इह अमृतस्य यच्छताम्, प्र एतु बद्धकमोचनम्।।3।।
1667. वि जिहीष्व लोकम् कृणु,
बन्धात् मुञ्चासि बद्धकम्।
योन्या इव प्रच्युतो गर्भः, पथः सर्वान् अनु क्षिय।।4।।

तृतीयनाक सूक़्त 122

1668. एतम् भागम् परि ददामि विद्वान्,
विश्वकर्मन् प्रथमजा ऋतस्य।
अस्माभिः दत्तम् जरसः परस्तात्,
अच्छिन्नम् तन्तुम् अनु सम् तरेम।1
1669. ततम् तन्तुम् अनु एके तरन्ति,
येषाम् दत्तम् पत्र्यम् आयनेन।
अबन्धु एके ददतः प्रयच्छन्तो दातुम् च,
इत शिक्षान् स स्वर्ग एव।2।
1670. अन्वारेभेथाम् अनुसंसभेथाम्,
एतम् लोकम् श्रतदधानाः सचन्ते।
यत् वाम् पक्वम् परिविष्टम्,
अग्नौ तस्य गुप्तये दम्पती सम् श्रयेथाम्।3
1671. यज्ञम् यन्तम् मनसा बृहन्तम्,
अन्वारोहामि तपसा सयोनिः।
उपहूता अग्ने जरसः परस्तात्,
तृतीये नाके सधमादम् मदेम।।4।।
1672. शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा,
ब्रह्मणाम् हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि।
यत्काम इदम् अभिषिञ्चामि वो अहम्,
इन्द्रो मरुत्वान् स ददातु तत् मे।।5।।

दीर्घायु सूक़्त 123

1673. एतम् सधस्थाः परि वो ददामि,
यम् शेवधिम् आवहात् जातवेदाः।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति,
तम् स्म जानीत परमे व्योमन्।।1।।
1674.जानीत स्म एनम् परमे व्योमन्,
देवाः सधस्था विद लोकम् अत्र।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति,
इष्टापूर्तम् स्म कृणुत आविः अस्मै।।2।।
1675. देवाः पितरः पितरो देवाः।
यो अस्मि सो अस्मि।।3।।
1676. स पचामि स ददामि,
स यजे स दत्तात मा यूषम्।।4।।
1677. नाके राजन् प्रति तिष्ठ, तत्र एतत् प्रति तिष्ठतु।
विद्धि पूर्तस्य नो राजन्, स देव सुमना भव।।5।।

निर्ऋत्यपस्तरण सूक़्त 124

1678. दिवो नु माम् बृहतो अन्तरिक्षात्,
अपाम् स्तोको अभि अपप्तत् रसेन।
सम् इन्द्रियेण पयसा अहम् अग्ने,
छन्दोभिः यज्ञैः सुकृताम् कृतेन।।1।।
1679. यदि वृक्षात् अभ्यपप्तत् फलम् तत्,
यदि अन्तरिक्षात् स उ वायुः एव।
यत्र अस्पृक्षत् तन्वो यत् च वासस,
आपो नुदन्तु निर्ऋतिम् पराचैः।2।
1680. अभ्यञ्जनम् सुरभि सा समृद्धि,
हिरण्यम् वर्चः तत् उ पूत्रमम् एव।
सर्वा पवित्रा वितता अधि अस्मत् तत्,
मा तारीत् निर्ऋतिः मो अरातिः।।3।।

त्रयोदशो अनुवाकः

वीररथ सूक्त 125

1681. वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया,
अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः।
गोभिः संनद्धो असि वीडयस्व,
आस्थाता ते जयतु जेत्वानि।।1।।
1682. दिवः पृथिव्या परि ओज उद्.भृतम्,
वनस्पतिभ्यः परि आभृतम् सहः।
अपाम् ओज्मानम् परि गोभिः आवृतम्,
इन्द्रस्य वज्रम् हविषा रथम् यज।।2।।
1683.इन्द्रस्य ओजो मरुताम् अनीकम्,
मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः।
स इमाम् नो हव्यदातिम् जुषाणो,
देव रथ प्रति हव्या गृभाय।।3।।

दुन्दुभि सूक्त 126

1684. उप श्वासय पृथिवीम् उत दयाम् पुरुत्रा,
ते वन्वताम् विष्ठितम् जगत्।
स दुन्दुभे सजूः इन्द्रेण देवैः,
दूरात् दवीयो अप सेध शत्रून्।।1।।
1685. आ क्रन्दय बलम् ओजो न आ धा,
अभि ष्टन दुरिता बाधमानः।
अप सेध दुन्दुभे दुच्छुनाम् इत,
इन्द्रस्य मुष्टिः असि वीडयस्व।।2।।
1686. प्र अमूम् जय अभि इमे,
जयन्तु केतुमत् दुन्दुभिः वावदीतु।
सम् अश्वपर्णा पतन्तु नो नरो,
अस्माकम् इन्द्र रथिनो जयन्तु।।3।।

यक्ष्मनाशन सूक्त 127

1687. विद्रधस्य बलासस्य, लोहितस्य वनस्पते।
विसल्पकस्य ओषधे, मा उत् शिषः पिशितम् चन।।1।।
1688. यौ ते बलास तिष्ठतः, कक्षे मुष्कौ अपश्रितौ।
वेद अहम् तस्य भेषजम्, चीपुद्रुः अभिचक्षणम्।।2।।
1689. यो अङ्ग्यो यः कर्ण्यो, यो अक्ष्योः विसल्पकः।
वि वृहामो विसल्पकम्, विद्रधम् हृदयामयम्।
परा तम् अज्ञातम् यक्ष्मम्, अधराञ्चम् सुवामसि।।3।।

राजा सूक्त 128

1690. शकधूमम् नक्षत्राणि, यत् राजानम् अकुर्वत।
भद्राहम् अस्मै प्र अयच्छन्, इदम् राष्ट्रम् असात् इति।।1।।
1691. भद्राहम् नो मध्यन्दिने, भद्राहम् सायम् अस्तु नः।
भद्राहम् नो अह्नाम् प्राता, रात्री भद्राहम् अस्तु नः।।2।।
1692. अहोरात्राभ्याम् नक्षत्रेभ्यः, सूर्याचन्द्रमसाभ्याम्।
भद्राहम् अस्मभ्यम् राजन्, शकधूम त्वम् कृधि।।3।।
1693. यो नो भद्राहम् अकरः, सायम् नक्तम् अथो दिवा।
तस्मै ते नक्षत्रराज, शकधूम सदा नमः।।4।।

भगप्राप्ति सूक्त 129

1694. भगेन मा शांशपेन, साकम् इन्द्रेण मेदिना।
कृणोमि भगिनम् मा, अप द्रान्तु अरातयः।।1।।
1695. येन वृक्षाम् अभ्यभवो, भगेन वर्चसा सह।
तेन मा भगिनम् कृणु, अप द्रान्तु अरातयः।।2।।
1696. यो अन्धो यः पुनः-सरो, भगो वृक्षेषु आहितः।
तेन मा भगिनम् कृणु, अप द्रान्तु अरातयः।।3।।

वीर-रथ सूक्त 130

1697. रथजिताम् राथजितेयीनाम्,
अप्सरसाम् अयम् स्मरः।
देवाः प्र हिणुत स्मरम्, असौ माम् अनु शोचतु।।1।।
1698. असो मे स्मरतात् इति, प्रियो मे स्मरतात् इति।
देवाः प्र हिणुत स्मरम्, असौ माम् अनु शोचतु।।2।।
1699. यथा मम स्मरात् असौ,
न अमुष्य अहम् कदा चन।
देवाः प्र हिणुत स्मरम् असौ, माम् अनु शोचतु।।3।।
1700. उत् मादयत मरुतः, उत् अन्तरिक्ष मादय।
अग्ने उत् मादय त्वम्, असौ माम् अनु शोचतु।।4।।

स्मर सूक्त 131

1701. नि शीर्षतो नि पत्तत, आध्यो नि तिरामि ते।
देवाः प्र हिणुत स्मरम्, असौ माम् अनु शोचतु।।1।।
1702. अनुमते अनु इदम् मन्यस्व,
आकूते सम् इदम् नमः।
देवाः प्र हिणुत स्मरम्, असौ माम् अनु शोचतु।।2।।
1703. यत् धावसि त्रियोजनम्, पञ्चयोजनम् आश्विनम्।
ततः त्वम् पुनः आयसि, पुत्राणाम् न असः पिता।।3।।

स्मर सूक्त 132

1704. यम् देवा स्मरम् असिञ्चन्,

अप्सु अन्तः शोशुचानम् सह आध्या।
तम् ते तपामि वरुणस्य धर्मणा।।1।।
1705. यम् विश्वे देवा स्मरम् असिञ्चन्,
अप्सु अन्तः शोशुचानम् सह आध्या।
तम् ते तपामि वरुणस्य धर्मणा।।2।।
1706. यम् इन्द्राणी स्मरम् असिञ्चत्,
अप्सु अन्तः शोशुचानम् सह आध्या।
तम् ते तपामि वरुणस्य धर्मणा।।3।।
1707. यम् इन्द्राग्नी स्मरम् असिञ्चताम्,
अप्सु अन्तः शोशुचानम् सह आध्या।
तम् ते तपामि वरुणस्य धर्मणा।।4।।
1708. यम् मित्रावरुणौ स्मरम् असिञ्चताम्,
अप्सु अन्तः शोशुचानम् सह आध्या।
तम् ते तपामि वरुणस्य धर्मणा।।5।।

मेखलाबन्धन सूक्त 133

1709. य इमाम् देवो मेखलाम् आबबन्ध,
यः संननाह य उ नो युयोज।
यस्य देवस्य प्रशिषा चरामः,
स पारम् इच्छात् स उ नो वि मुञ्चात्।1।
1710. आहुता असि अभिहुता, ऋषीणाम् असि आयुधम्।
पूर्वा व्रतस्य प्राश्नती, वीरघ्नी भव मेखले।।2।।
1711. मृत्योः अहम् ब्रह्मचारी यत् अस्मि,
निर्याचन् भूतात् पुरुषम् यमाय।
तम् अहम् ब्रह्मणा तपसा श्रमेण,
अनया एनम् मेखलया सिनामि।।3।।
1712. श्रद्धाया दुहिता तपसः,
अधि जाता स्वसा ऋषीणाम्।
सा नो मेखले मतिम् आ धेहि,
मेधाम् अथो नो धेहि तप इन्द्रियम् च।।4।।
1713. याम् त्वा पूर्वे भूतकृत, ऋषयः परिबेधिरे।
सा त्वम् परि स्वजस्व, माम् दीर्घायुत्वाय मेखले।।5।।

शत्रुनाशन सूक्त 134

1714. अयम् वज्रः तर्पयताम् ऋतस्य,
अव अस्य राष्ट्रम् अप हन्तु जीवितम्।
शृणातु ग्रीवाः प्र शृणातु, उष्णिहा वृत्रस्येव शचीपतिः।।1।।
1715. अधरोधर उत्तरेभ्यो गूढः, पृथिव्या मा उत् सृपत्।
वज्रेण अवहतः शयाम्।।2।।
1716. यो जिनाति तम् अनु इच्छ,
यो जिनाति तम् इत् जहि।
जिनतो वज्र त्वम् सीमन्तम्, अन्वञ्चम् अनु पातय।।3।।

बलप्राप्ति सूक्त 135

1717. यत् अश्नामि बलम्, कुर्व इत्थम् वज्रम् आ ददे।
स्कन्धान् अमुष्य शातयन्, वृत्रस्येव शचीपतिः।।1।।
1718. यत् पिबामि सम् पिबामि, समुद्र इव सम्पिबः।
प्राणान् अमुष्य सम्पाय, सम् पिबामो अमुम् वयम्।।2।।
1719. यत् गिरामि सम् गिरामि, समुद्र इव सङ्गिरः।
प्राणान् अमुष्य सङ्गीर्य, सम् गिरामो अमुम् वयम्।।2।।

केशदृंहण सूक्त 136

1720. देवी देव्याम् अधि जाता, पृथिव्याम् असि ओषधे।
ताम् त्वा नितत्नि केशेभ्यो, दृंहणाय खनामसि।।1।।
1721. दृंह पत्नान् जनय अजातान्,
जातान् उ वर्षीयसः कृधि।।2।।
1722. यः ते केशो अवपद्यते, समूलो च वृश्चते।
इदम् तम् विश्वभेषज्या, अभि षिञ्चामि वीरुधा।।3।।

केशवर्धन सूक्त 137

1723. याम् जमदग्निः अखनत्, दुहित्रे केशवर्धनीम्।
ताम् वीतहव्यः आ अभरत्, असितस्य गृहेभ्यः।।1।।
1724. अभीशुना मेया आसन्, व्यामेन अनुमेयाः।
केशा नडा इव वर्धन्ताम्, शीर्ष्णः ते असिताः परि।।2।।
1725. दृंह मूलम् आ अग्रम् यच्छ,
वि मध्यम् यामय ओषधे।
केशा नडा इव वर्धन्ताम्, शीर्ष्णः ते असिताः परि।।3।।

क्लीबत्व सूक्त 138

1726. त्वम् वीरुधाम् श्रेष्ठतमा, अभिश्रुता असि ओषधे।
इमम् मे अद्य पुरुषम्, क्लीबम् ओपशिनम् कृधि।।1।।
1727. क्लीबम् कृधि ओपशिनम्, अथो कुरीरिणम् कृधि।
अथ अस्य इन्द्रो ग्रावभ्याम्, उभे भिनत्तु आण्ड्यौ।।2।।
1728. क्लीब क्लीबम् त्वा अकरम्,
वध्रे वध्रिम् त्वा अकरम्,
अरस अरसम् त्वा अकरम्।
कुरीरम् अस्य शीर्षणि, कुम्बम् च अधिनिदध्मसि।।3।।
1729. ये ते नाड्यौ देवकृते, ययोः तिष्ठति वृष्ण्यम्।
ते ते भिनद्मि शम्यया, अमुष्या अधि मुष्कयोः।।4।।
1730. यथा नडम् कशिपुने, स्त्रियो भिन्दन्ति अश्मना।
एवा भिनद्मि ते शेपो, अमुष्या अधि मुष्कयोः।।5।।

सौभाग्यवर्धन सूक्त 139

1731. न्यस्तिका रुरोहिथ, सुभगम् करणी मम।
शतम् तव प्रतानाः, त्रयस्त्रिंशत् नितानाः।
तया सहस्रपर्ण्या, हृदयम् शोषयामि ते।।1।।
1732. शुष्यतु मयि ते हृदयम्, अथो शुष्यतु आस्यम्।
अथो नि शुष्य माम् कामेन, अथो शुष्कास्या चर।।2।।
1733. सम्वननी समुष्पला, बभ्रु कल्याणि सम् नुद।
अमूम् च माम् च सम् नुद, समानम् हृदयम् कधि।।3।।
1734. यथा उदकम् अपपुषः, अपशुष्यति आस्यम्।

एवा नि शुष्य माम् कामेन, अथो शुष्कास्या चर।।4।।
1735. यथा नकुलो विछिद्य, संदधाति अहिम् पुनः।
एवा कामस्य विछिन्नम्, सम् धेहि वीर्यवति।।5।।

सुमङ्गलदन्त सूक्त 140

1736. यौ व्याघ्रौ अवरूढौ, जिघत्सतः पितरम् मातरम् च।
तौ दन्तौ ब्रह्मणः पते, शिवौ कृणु जातवेदः।।1।।
1737. व्रीहिम् अत्तम यवम् अत्तम्,
अथो माषम् अथो तिलम्।
एष वाम् भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ,
मा हिंसिष्टम् पितरम् मातरम् च ।।2।।
1738. उपहूतौ सयुजौ, स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ।
अन्यत्र वाम् घोरम् तन्वः परा एतु दन्तौ,
मा हिंसिष्टम् पितरम् मातरम् च ।।3।।

गोकर्णलक्ष्यकरण सूक्त 141

1739. वायुः एनाः समाकरत्, त्वष्टा पोषाय ध्रियताम्।
इन्द्रः आभ्यो अधि ब्रवत्, रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु।।1।।
1740. लोहितेन स्वधितिना, मिथुनम् कर्णयोः कृधि।
अकर्ताम् अश्विना लक्ष्म, तत् अस्तु प्रजया बहु।।2।।
1741. यथा चक्रुः देवासुरा, यथा मनुष्या उत।
एवा सहस्रपोषाय, कृणुतम् लक्ष्म अश्विना।।3।।

अन्नसमृद्धि सूक्त 142

1742. उत् श्रयस्व बहुः, भव स्वेन महसा यव।
मृणीहि विश्वा पात्राणि, मा त्वा दिव्या अशनिः वधीत्।।1।।
1743. आशृण्वन्तम् यवम् देवम्, यत्र त्वा अच्छावदामसि।
तत् उत् श्रयस्व द्यौरिव, समुद्र इव एधि अक्षित।।2।।
1744. अक्षिताः त उपसदो, अक्षिताः सन्तु राशयः।
पृणन्तो अक्षिताः सन्तु, अत्तारः सन्तु अक्षिताः।।3।।

षष्ठः काण्डः समाप्तः

ॐ

सप्तमम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

आत्मा सूक्त 1

1745. धीती वा ये अनयन् वाचो,
अग्रम् मनसा वा ये अवदन् ऋतानि।
तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधानाः,
तुरीयेण अमन्वत नाम धेनोः।।1।।
1746. स वेद पुत्रः पितरम् स मातरम्,
स सूनुः भुवत् स भुवत् पुनर्मघः।
स द्याम् और्णोत् अन्तरिक्षम् स्वः,
स इदम् विश्वम् अभवत् स आ अभवत्।।2।।

आत्मा सूक्त 2

1747.अथर्वाणम् पितरम् देवबन्धुम् मातुः,
गर्भम् पितुः असुम् युवानम्।
य इमम् यज्ञम् मनसा चिकेत,
प्र णो वोचः तम् इह इह ब्रवः।।1।।

आत्मा सूक्त 3

1748. अया विष्ठा जनयन् कर्वराणि,
स हि घृणिः उरु वराय गातुः।
स प्रत्यदैत् धरुणम् मध्वो अग्रम,
स्वया तन्वा तन्वम् ऐरयत।।2।।

विश्वप्राण सूक्त 4

1749. एकया च दशभिः च सुहुते,
द्वाभ्याम् इष्टये विंशत्या च।
तिसृभिः च वहसे त्रिंशता च,
वियुकभिः वायो इह ता वि मुञ्च।।1।।

आत्मा सूक्त 5

1750. यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवाः,
तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।
ते ह नाकम् महिमानः सचन्त,
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।1।।
1751. यज्ञो बभूव स आ बभूव,
स प्र जज्ञे स उ वावृधे पुनः।
स देवानाम् अधिपतिः बभूव,
सो अस्मासु द्रविणम् आ दधातु।।2।।
1752. यत् देवा देवान् हविषा अयजन्त,
अमर्त्यान् मनसा अमर्त्येन।
मदेम तत्र परमे व्योमन्, पश्येम तत् उदितो सूर्यस्य।।3।।
1753. यत् पुरुषेण हविषा, यज्ञम् देवा अतन्वत।

अस्ति नु तस्मात् ओजीयो, यत् विहव्येन ईजिरे।।4।।
1754.मुग्धा देवा उत शुना अयजन्त,
उत गोः अङ्गैः पुरुधा अयजन्त।
य इमम् यज्ञम् मनसा चिकेत,
प्र णो वोचः तम् इह इह ब्रवः।।5।।

अदिति सूक्त 6

1755. अदितिः द्यौः अदितिः अन्तरिक्षम्,
अदितिः माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवाः अदितिः पञ्च जना,
अदितिः जातम् अदितिः जनित्वम्।1।
1756. महीम् उ षु मातरम् सुव्रतानाम्,
ऋतस्य पत्नीम् अवसे हवामहे।
तुविक्षत्राम् अजरन्तीम् उरूचीम्,
सुशर्माणम् अदितिम् सुप्रणीतिम्।।2।।
1757. सुत्रामाणम् पृथिवीम्,
द्याम् अनेहसम् सुशर्माणम्।
अदितिम् सुप्रणीतिम्।
दैवीम् नावम् स्वरित्राम् अनागसः,
अस्रवन्तीम् आ रुहेम स्वस्तये।।3।।
1758. वाजस्य नु प्रसवे मातरम् महीम्,
अदितिम् नाम वचसा करामहे।
यस्या उपस्थ उरु अन्तरिक्षम्,
सा न शर्म त्रिवरूथम् नि यच्छात्।।4।।

आदित्यगण सूक्त 7

1759. दितेः पुत्राणाम् अदितेः अकारिषम्,
अव देवानाम् बृहताम् अनर्मणाम्।
तेषाम् हि धाम गभिषक् समुद्रियम्,
न एनान् नमसा परो अस्ति कः चन।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 8

1760. भद्रात् अधि श्रेयः प्र इहि,
बृहस्पतिः पुरएता ते अस्तु।
अथ इमम् अस्या वर आ पृथिव्या,
आरेशत्रुम् कृणुहि सर्ववीरम्।।1।।

स्वस्तिदा पूषा सूक्त 9

1761. प्रपथे पथाम् अजनिष्ट पूषा,
प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः।
उभे अभि प्रियतमे सधस्थे,
आ च परा च चरति प्रजानन्।।1।।
1762. पूषा इमा आशा अनु वेद सर्वाः,
सौ अस्मान् अभयतमेन नेषत्।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरो,
अप्रयुच्छन् पुर एतु प्रजानन्।।2।।
1763. पूषन् तव व्रते वयम्, न रिष्येम कदा चन।
स्तोतारः त इह स्मसि।।3।।
1764. परि पूषा परस्तात्, हस्तम् दधातु दक्षिणम्।
पुनः नो नष्टम् आ अजतु, सम् नष्टेन गमेमहि।।4।।

सरस्वती सूक्त 10

1765. यः ते स्तनः शशयुः यो मयोभूः,
यः सुम्नयुः सुहवो यः सुदत्रः।
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि,
सरस्वति तम् इह धातवे कः।।1।।

राष्ट्रसभा सूक्त 11

1766. यः ते पृथु स्तनयित्नु यः ऋष्वो,
दैवः केतुः विश्वम् आभूषति इदम्।
मा नो वधीः विद्युता देव सस्यम्,
मा उत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 12

1767. सभा च मा समितिः च,
अवताम् प्रजापतेः दुहितरौ सम्विदाने ।
येन आ संगच्छा उप मा स शिक्षात्,
चारु वदानि पितरः संगतेषु।।1।।
1768. विद्म ते सभे नाम, नरिष्टा नाम वा असि।
ये ते के च सभासदः, ते मे सन्तु सवाचसः।।2।।
1769. एषाम् अहम् समासीनानाम्,
वर्चः विज्ञानम् आ ददे।
अस्याः सर्वस्याः संसदो, माम् इन्द्र भगिनम् कृणु।।3।।
1770. यत् वो मनः परागतम्, यत् बद्धम् इह वा इह वा।
तत् व आ वर्तयामसि, मयि वो रमताम् मनः।।4।।

सविता सूक्त 13

1771. यथा सूर्यो नक्षत्राणाम्, उद्यन् तेजांसि वर्चः आददे।
एवा स्त्रीणाम् च पुंसाम् च, द्विषताम् वर्च आ ददे।।1।।
1772. यावन्तो मा सपत्नाम्, आयन्तम् प्रतिपश्यथ।
उद्यन् सूर्यः इव सुप्तानाम्, द्विषताम् वर्च आ ददे।।2।।

द्वितीयो अनुवाकः

सविता सूक्त 14

1773. अभि त्वम् देवम् सवितारम्, ओण्योः कविक्रतुम्।
अर्चामि सत्यसवम् रत्नधाम्, अभि प्रियम् मतिम्।।1।।
1774. ऊर्ध्वा यस्य अमतिः, भा अदिद्युतत् सवीमनि।
हिरण्यपाणिः अमिमीत, सुक्रतुः कृपात् स्वः।।2।।
1775. सावीः हि देव प्रथमाय पित्रे,
वर्ष्माणम् अस्मै वरिमाणम् अस्मै।
अथ अस्मभ्यम् सवितः वार्याणि,
दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः।।3।।

1776. दमूना देवः सविता वरेण्यो दधत्,
रत्नम् दक्षम् पितृभ्य आयूंषि।
पिबात् सोमम् ममदत् एनम् इष्टे,
परिज्मा चित् क्रमते अस्य धर्माणि।।4।।

सविता सूक्त 15

1777. ताम् सवितः सत्यसवाम् सुचित्राम्,
आ अहम् वृणे सुमतिम् विश्ववाराम्।
याम् अस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनाम्,
सहस्रधाराम् महिषो भगाय।।1।।

सविता प्रार्थना सूक्त 16

1778. बृहस्पते सवितः वर्धय एनम्,
ज्योतय एनम् महते सौभगाय।
सम्शितम् चित् संतरम् सम् शिशाधि,
विश्व एनम् अनु मदन्तु देवाः।1।

द्रविणार्थ प्रार्थना सूक्त 17

1779. धाता दधातु नो रयिम्, ईशानो जगतः पतिः।
स नः पूर्णेन यच्छतु।।1।।
1780. धाता दधातु दाशुषे, प्राचीम् जीवातुम् अक्षिताम्।
वयम् देवस्य धीमहि, सुमतिम् विश्वराधसः।।2।।
1781. धाता विश्वा वार्या दधातु,
प्रजाकामाय दाशुषे दुरोणे।
तस्मै देवा अमृतम् सम् व्ययन्तु,
विश्वे देवा अदितिः सजोषाः।।3।।
1782. धाता रातिः सविता इदम् जुषन्ताम्,
प्रजापतिः निधिपतिः नो अग्निः।
त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो,
यजमानाय द्रविणम् दधातु।।4।।

वृष्टि सूक्त 18

1783. प्र नभस्व पृथिवि, भिन्द्धि इदम् दिव्यम् नभः।
उद्नो दिवस्य नो धातः, ईशानो वि ष्या दृतिम्।।1।।
1784. न घ्रन् तताप न हिमो जघान,
प्र नभताम् पृथिवी जीरदानुः।
आपः चित् अस्मै घृतम् इत् क्षरन्ति,
यत्र सोमः सदम् इत् तत्र भद्रम्।।2।।

प्रजा सूक्त 19

1785. प्रजापतिः जनयति प्रजा,
इमा धाता दधातु सुमनस्यमानः।
सञ्जानानाः सम्मनसः सयोनयो,
मयि पुष्टम् पुष्टपतिः दधातु।।1।।

अनुमति सूक्त 20

1786. अनु अद्य नो अनुमतिः, यज्ञम् देवेषु मन्यताम्।
अग्निः च हव्यवाहनः, भवताम् दाशुषे मम।।1।।
1787. अनु इत् अनुमते त्वम्, मंससे शम् च नः कृधि।
जुषस्व हव्यम् आहुतम्, प्रजाम् देवि ररास्व नः।।2।।
1788. अनु मन्यताम् अनुमन्यमानः,
प्रजावन्तम् रयिम् अक्षीयमाणम्।
तस्य वयम् हेडसि मा अपि भूम,
सुमृडीके अस्य सुमतौ स्याम।।3।।
1789. यते ते नाम् सुहवम् सुप्रणीते,
अनुमते अनुमतम् सुदानु।
तेन नो यज्ञम् पिपृहि विश्ववारे,
रयिम् नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।4।।
1790. आ इमम् यज्ञम् अनुमतिः जगाम,
सुक्षेत्रतायै सुवीरतायै सुजातम्।
भद्रा हि अस्याः प्रमतिः बभूव,
सा इमम् यज्ञम् अवतु देवगोपा।।5।।
1791. अनुमतिः सर्वम् इदम् बभूव यत् तिष्ठति,
चरति यत् उ च विश्वम् एजति।
तस्याः ते देवि सुमतौ स्याम,
अनुमते अनु हि मंससे नः।।6।।

एको विभुः सूक्त 21

1792. समेत विश्वे वचसा पतिम्,
दिव एको विभूः अतिथिः जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनम् आविवासत्,
तम् वर्तनिः अनु वावृते एकम् इत् पुरु।1।

ज्योति सूक्त 22

1793. अयम् सहस्रम् आ नो दृशे,
कवीनाम् मतिः ज्योतिः विधर्मणि।1
1794. ब्रध्नः समीचीः, उषसः सम् ऐरयन्।
अरेपसः सचेतसः स्वसरे, मन्युमत्तमाः चिते गोः।।2।।

तृतीयो अनुवाकः

दुःष्वप्ननाशन सूक्त 23

1795. दौष्वप्न्यम् दौर्जीवित्यम्, रक्षो अभ्वम् अराय्यः।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचः, ता अस्मत् नाशयामसि।।1।।

सविता सूक्त 24

1796. यत् न इन्द्रो अखनत् यत् अग्निः,
विश्वे देवाः मरुतः यत् स्वर्काः।
तत् अस्मभ्यम् सविता सत्यधर्मा,
प्रजापतिः अनुमतिः नि यच्छात्।1।

विष्णु सूक्त 25

1797. ययोः ओजसा स्कभिता रजांसि,
यौ वीर्यैः वीरतमा शविष्ठा।
यौ पत्येते अप्रतीतौ सहोभिः,
विष्णुम् अगन् वरुणम् पूर्वहूतिः।।1।।

1798. यस्य इदम् प्रदिशि यत् विरोचते,
प्र च अनति वि च चष्टे शचीभिः।
पुरा देवस्य धर्मणा सहोभिः,
विष्णुम् अगन् वरुणम् पूर्वहूतिः।।2।।

विष्णु सूक्त 26

1799. विष्णोः नु कम् प्रा वोचम् वीर्याणि,
यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायत् उत्तरम् सधस्थम्,
विचक्रमाणः त्रेधा उरुगायः।।1।।
1800. प्र तत् विष्णु स्तवते वीर्याणि,
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
परावत आ जगम्यात् परस्याः।।2।।
1801. यस्य उरुषु त्रिषु विक्रमणेषु,
अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।
उरु विष्णो वि क्रमस्व, उरु क्षयाय नः कृधि।
घृतम् घृतयोने पिव, प्रप्र यज्ञपतिम् तिर।।3।।
1802. इदम् विष्णुः वि चक्रमे, त्रेधा नि दधे पदा।
समूढम् अस्य पांसुरे।।4।।
1803. त्रीणि पदा वि चक्रमे, विष्णुः गोपा अदाभ्यः।
इतो धर्माणि धारयन्।।5।।
1804. विष्णोः कर्माणि पश्यत, यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा।।6।।
1805. तत् विष्णोः परमम्, पदम् सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुः आततम्।।7।।
1806. दिवो विष्णो उत वा पृथिव्याः,
महो विष्ण उरो अन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिः वसव्यैः आप्रयच्छ,
दक्षिणात् आ उत सव्यात्।8।

इडा सूक्त 27

1807. इडा एव अस्मान् अनु वस्ताम् व्रतेन,
यस्याः पदे पुनते देवयन्तः।
घृतपदी शक्वरी सोमपृष्ठा,
उप यज्ञम् अस्थित वैश्वदेवी।।1।।

स्वस्ति सूक्त 28

1808. वेदः स्वस्ति द्रुघणः स्वस्तिः,
परशुः वेदिः परशुः नः स्वस्ति।
हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामाः,
ते देवासो यज्ञम् इमम् जुषन्ताम्।।1।।

अग्नाविष्णू सूक्त 29

1809. अग्नाविष्णू महि तत् वाम् महित्वम्,
पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम।
दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ,
प्रति वाम् जिह्वा घृतम् आ चरण्यात्।।2।।
1810. अग्ना विष्णू महि धाम् प्रियम्,
वाम् वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ।
दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ प्रति वाम्,
जिह्वा घृतम् उत् चरण्यात्।।2।।

अञ्जन सूक्त 30

1811. स्वाक्तम् मे द्यावापृथिवी,
स्वाक्तम् मित्रो अकः अयम्।
स्वाक्तम् मे ब्रह्मणः पतिः,
स्वाक्तम् सविता करत्।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 31

1812. इन्द्र ऊतिभिः बहुलाभिः नो अद्य,
यावत् श्रेष्ठाभिः मघवन् शूर जिन्व।
यो नो द्वेष्टि अधरः सः पदीष्ट,
यम् उ द्विष्मः तम् उ प्राणो जहातु।।1।।

दीर्घायु सूक्त 32

1813. उप प्रियम् पनिप्नतम्, युवानम् आहुति वृधम्।
अगन्म बिभ्रतो नमो, दीर्घम् आयुः कृणोतु मे।।1।।

दीर्घायु सूक्त 33

1814. सम् मा सिञ्चन्तु मरुतः,
सम् पूषा सम् बृहस्पतिः।
सम् मा अयम् अग्निः सिञ्चतु,
प्रजया च धनेन च दीर्घम् आयुः कृणोतु मे।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 34

1815. अग्ने जातान् प्र णुदा मे सपत्नान्,
प्रति अजातान् जातवेदो नुदस्व।
अधस्पदम् कृणुष्व ये पृतन्यवः,
अनागसः ते वयम् अदितये स्याम।1।

सपत्नी-नाशन सूक्त 35

1816. प्र अन्यान् सपत्नान् सहसा सहस्व,
प्रति अजातान् जातवेदो नुदस्व।
इदम् राष्ट्रम् पिपृहि सौभगाय,
विश्वे एनम् अनु मदन्तु देवाः।।1।।

1817. इमा याः ते शतम् हिराः, सहस्रम् धमनीः उत।
तासाम् ते सर्वासाम् अहम्,
अश्मना बिलम् अपि अधाम्।।2।।
1818. परम् योनेः अवरम्, ते कृणोमि मा त्वा प्रजा।
अभि भूत मा उत सूनुः।
अस्वम् त्वा अप्रजसम् कृणोमि,
अश्मानम् ते अपिधानम् कृणोमि।।3।।

अञ्जन सूक्त 36

1819. अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे,
अनीकम् नौ सम् अञ्जनम्।
अन्तः कृणुष्व माम् हृदि, मन इत् नौ सह असति।।1।।

वास सूक्त 37

1820. अभि त्वा मनुजातेन, दधामि मम वाससा।
यथा असो मम केवलो, न अन्यासाम् कीर्तयाः चन।।1।।

केवल सूक्त 38

1821. इदम् खनामि भेषजम्, माम्पश्यम् अभिरोरुदम्।
परायतो निवर्तनम्, आयतः प्रतिनन्दनम्।।1।।
1822. येना निचक्रे आसुरी, इन्द्रम् देवेभ्यः परि।
तेन आ नि कुर्वे त्वाम्,
अहम् यथा ते असानि सुप्रिया।।2।।
1823. प्रतीची सोमम् असि, प्रतीची उत सूर्यम्।
प्रतीची विश्वान् देवान् ताम्, त्वा अच्छावदामसि।।3।।
1824. अहम् वदामि न इत्,
त्वम् सभायाम् अह त्वम् वद।
मम इत् असः त्वम् केवलो,
न अन्यासाम् कीर्तयाः चन।।4।।
1825. यदि वासि तिरोजनम्, यदि वा नद्यः तिरः।
इयम् ह मह्यम् त्वाम् ओषधिः, बद्ध्वेव नि आनयत्।।5।।

चतुर्थो अनुवाकः

आपः सूक्त 39

1826. दिव्यम् सुपर्णम् पयसम् बृहन्तम्,
अपाम् गर्भम् वृषभम् ओषधीनाम्।
अभीपतो वृष्ट्या तर्पयन्तम्,
आ नो गोष्ठे रयिष्ठाम् स्थापयाति।।1।।

सरस्वान् सूक्त 40

1827. यस्य व्रतम् पशवो यन्ति,
सर्वे यस्य व्रत उपतिष्ठन्त आपः।
यस्य व्रते पुष्टपतिः निविष्टः,
तम् सरस्वन्तम् अवसे हवामहे।।1।।
1828. आ प्रत्यञ्चम् दाशुषे दाश्वंसम्,
सरस्वन्तम् पुष्टपतिम् रयिष्ठाम्।
रायः पोषम् श्रवस्युम् वसाना,
इह हुवेम सदनम् रयीणाम्।।2।।

सुपर्ण सूक्त 41

1829. अति धन्वानि अति अपः,
ततर्द श्येनो नृचक्षा अवसानदर्शः।
तरन् विश्वानि अवरा रजांसि,
इन्द्रेण सख्या शिव आ जगम्यात्।।1।।
1830. श्येनो नृचक्षा दिव्यः सुपर्णः,
सहस्रपात् शतयोनिः वयोधाः।
स नो वि यच्छात् वसु यत् पराभृतम्,
अस्माकम् अस्तु पितृषु स्वधावत्।2।

पापमोचन सूक्त 42

1831. सोमारुद्रा वि वृहतम् वषूचीम्,
अमीवा या नो गयम् आविवेश।
बाधेथाम् दूरम् निर्ऋतिम् पराचैः,
कृतम् चित् एनः प्र मुमुक्तम् अस्मत् ।।1।।
1832. सोमरुद्रा युवम् एतानि अस्मत्,
विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम्।
अव स्यतम् मुञ्चतम् यत् नो असत्,
तनूषु बद्धम् कृतम् एनो अस्मत्।।2।।

वाक् सूक्त 43

1833. शिवाः त एका अशिवाः एकाः,
सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः।
तिस्रो वाचो निहिता अन्तः अस्मिन्,
तासाम् एका वि पपात अनु घोषम्।।1।।

इन्द्राविष्णू सूक्त 44

1834. उभा उभा जिग्यथुः न परा जयेथे,
न परा जिग्ये कतरः चन एनयोः।
इन्द्रः च विष्णो यत् अपस्पृधेथाम्,
त्रेधा सहस्रम् वि तत् ऐरयेथाम्।।1।।

ईर्ष्यानिवारण सूक्त 45

1835. जनात् विश्वजनीनात्, सिन्धुतः परि आभृतम्।
दूरात् त्वा मन्ये उत्-भृतम्, ईर्ष्याया नाम भेषजम्।।1।।
1836. अग्नेरिव अस्य दहतो, दावस्य दहतः पृथक्।
एताम् एतस्य ईर्ष्याम् उद्ना, अग्निमिव शमय।।2।।

सिनीवाली सूक्त 46

1837. सिनीवाली पृथुष्टुके, या देवानाम् असि स्वसा।
जुषस्व हव्यम् आहुतम्, प्रजाम् देवि दिदिड्ढि नः।।1।।
1838. या सुबाहुः स्वङ्गुरिः, सुषूमा बहुसूवरी।
तस्यै विश्पत्न्यै हविः, सिनीवाल्यै जुहोतन।।2।।
1839. या विश्पत्नी इन्द्रम् असि प्रतीची,
सहस्रस्तुका अभियन्ती देवी।
विष्णोः पत्नि तुभ्यम् राता हवींषि,
पतिम् देवि राधसे चोदयस्व।।3।।

कुहू सूक्त 47

1840. कुहुम् देवीम् सुकृतम् विद्मनापसम्,
अस्मिन् यज्ञे सुहवा जोहवीमि।
सा नो रयिम् विश्ववारम् नि यच्छात्,
ददातु वीरम् शतदायम् उक्थ्यम।।1।।
1841. कुहूः देवानाम् अमृतस्य पत्नी,
हव्या नो अस्य हविषो जुषेत।

शृणोत यज्ञम् उशती नो अद्य,
रायः पोषम् चिकितुषी दधातु।।2।।

राका सूक्त 48

1842.राकाम् अहम् सुहवा सुष्टुती हवे,
शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना।
सीव्यतु अपः सूच्या अच्छिद्यमानया,
ददातु वीरम् शतदायम् उक्थ्यम्।1
1843. याः के राके सुमतयः सुपेशसो,
याभिः ददासि दाशुषे वसूनि।
ताभिः नो अद्य सुमना उपागहि,
सहस्रपोषम् सुभगे रराणा।।2।।

देवपत्नी सूक्त 49

1844. देवानाम् पत्नी उशतीः अवन्तु नः,
प्र अवन्तु नः तुजये वाज-सातये।
याः पार्थिवासो या अपाम् अपि व्रते,
ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु।।1।।
1845. उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नी,
इन्द्राणी अग्नायी अश्विनी राट्।
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु,
व्यन्तु देवीः य ऋतुः जनीनाम्।।2।।

विजय सूक्त 50

1846. यथा वृक्षम् अशनिः, विश्वाहा हन्ति अप्रति।
एव अहम् अद्य कितवान्, अक्षैः बध्यासम् अप्रति।।1।।
1847. तुराणाम् अतुराणाम्, विशाम् अवर्जुषीणाम्।
सम् ऐतु विश्वतो भगो, अन्तर्हस्तम् कृतम् मम।।2।।
1848.ईडे अग्निम् स्ववसुम् नमोभिः,
इह प्रसक्तो वि चयत् कृतम् नः।
रथैरिव प्र भरे वाजयद्.भिः,
प्रदक्षिणम् मरुताम् स्तोमम् ऋध्याम्।।3।।
1849. वयम जयेम त्वया युजा वृतम्,
अस्माकम् अंशम् उत् अव भरेभरे।
अस्मभ्यम् इन्द्र वरीयः सुगम् कृधि,
प्र शत्रूणाम् मघवन् वृष्ण्या रुज।।4।।
1850. अजैषम् त्वा सम्लिखितम्, अजैषम् उत संरुधम्।
अविम् वृको यथा मथत्, एव मथ्नामि ते कृतम्।।5।।
1851. उत प्रहाम् अतिदीवा जयति,
कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले।
यो देवकामो न धनम् रुणद्धि,
सम् इत् तम् रायः सृजति स्वधाभिः।6।
1852. गोभिः तरेम अमतिम् दुरेवाम्,
यवेन वा क्षुधम् पुरुहूत विश्वे।
वयम् राजसु प्रथमा धनानि,
अरिष्टासो वृजनीभिः जयेम।।7।।
1853. कृतम् मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।
गोजित् भूयासम् अश्वजित्, धनम्जयो हिरण्यजित्।।8।।
1854. अक्षाः फलवतीम् द्युवम्, दत्त गाम् क्षीरिणीमिव।
सम् मा कृतस्य धारया, धनुः स्नाव्नेव नह्यत्।।9।।

परिपाण सूक्त 51

1855. बृहस्पतिः नः परि पातु पश्चात्,
उत उत्तरस्मात् अधरात् अघयोः।
इन्द्रः पुरस्तात् उत मध्यतो नः,
सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु।।1।।

पञ्चमो अनुवाकः

सांमनस्य सूक्त 52

1856. संज्ञानम् नः स्वेभिः, संज्ञानम् अरणेभिः।
संज्ञानम् अश्विना युवम्, इह अस्मासु नि यच्छतम्।।1।।
1857. सम् जानामहै मनसा सम् चिकित्वा,
मा युष्महि मनसा दैव्येन।
मा घोषा उत् स्थुः बहुले विनिर्हते,
मा इषुः पप्तत् इन्द्रस्य अहनि आगते ।।2।।

दीर्घायु सूक्त 53

1858. अमुत्रभूयात् अधि यत् यमस्य,
बृहस्पतेः अभिशस्तेः अमुञ्चः।
प्रति औहताम् अश्विना मृत्युम्,
अस्मत् देवानाम् अग्ने भिषजा शचीभिः।।1।।
1859. सम् क्रामतम् मा जहीतम् शरीरम्,
प्राणापानौ ते सयुजौ इह स्ताम्।
शतम् जीव शरदो वर्धमानो,
अग्निः ते गोपा अधिपा वसिष्ठः।।2।।
1860. आयुः यत् ते अतिहितम् पराचैः,
अपानः प्राणः पुनः आ तौ इताम्।
अग्निः तत् आ अहाः निर्ऋतेः, उपस्थात् तत् आत्मनि,
पुनः आ वेशयामि ते।।3।।
1861. मा इमम् प्राणो हासीत्,
मो अपानो अवहाय परा गात्।
सप्तर्षिभ्यः एनम् परि ददामि,
ते एनम् स्वस्ति जरसे वहन्तु।।4।।
1862. प्र विशतम् प्राणापानौ, अनड्वाहाविव व्रजम्।
अयम् जरिम्णः शेवधिः, अरिष्ट इह वर्धताम्।।5।।
1863. आ ते प्राणम् सुवामसि, परा यक्ष्मम् सुवामि ते।
आयुः नो विश्वतो दधत्, अयम् अग्निः वरेण्यः।।6।।
1864. उत् वयम् तमसः परि, रोहन्तो नाकम् उत्तमम्।
देवम् देवत्रा सूर्यम् अगन्म, ज्योतिः उत्तमम्।।7।।

विघ्नशमन सूक्त 54

1865. ऋचम् साम यजामहे, याभ्याम् कर्माणि कुर्वते।
एते सदसि राजतो, यज्ञम् देवेषु यच्छतः।।1।।

मार्गस्वस्त्य अयन सूक्त 55

1866. ऋचम् साम यत् अप्राक्षम्,
हविः ओजो यजुः बलम्।
एष मा तस्मात् मा, हिंसीत् वेदः पृष्टः शचीपते।।1।।
1867. ये ते पन्थानो अव दिवो, येभिः विश्वम् ऐरयः।
तेभिः सुम्नया, आ धेहि नो वसो।।2।।

विषभेषज्य सूक्त 56

1868. तिरश्चिराजेः असितात्, पृदाकोः परि सम्भृतम्।
तत् कङ्कपर्वणो विषम्, इयम् वीरुत् अनीनशत्।।1।।
1869. इयम् वीरुत् मधुजाता, मधुश्चुत् मधुला मधूः।
सा विह्रुतस्य भेषजी, अथो मशक जम्भनी।।2।।
1870. यतो दष्टम् यतो धीतम्, ततः ते निः ह्वामसि।
अर्भस्य तृप्रदंशिनो, मशकस्य अरसम् विषम्।।3।।
1871. अयम् यो वक्रो विपरुः व्यङ्गो,
मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि।
तानि त्वम् ब्रह्मणाः पते, इषीकामिव सम् नमः।।4।।
1872. अरसस्य शर्कोटस्य, नीचीनस्य उपसर्पतः।
विषम् हि अस्य आदिषि, अथो एनम् अजीजभम्।।5।।
1873. न ते बाह्वो बलम् अस्ति, न शीर्षे न उत मध्यतः।
अथ किम् पापया अमुया, पुच्छे बिभर्षि अर्भकम्।।6।।
1874. अदन्ति त्वा पिपीलिका, वि वृश्चन्ति मयूर्यः।
सर्वे भल ब्रवाथ, शार्कोटम् अरसम् विषम्।।7।।
1875. य उभाभ्याम् प्रहरसि, पुच्छेन आस्येन च।
आस्ये न ते विषम् किम्, ते पुच्छधौ असत्।।8।।

सरस्वती सूक्त 57

1876. यत् आशसा वदतो मे विचुक्षुभे,
यत् याचमानस्य चरतो जनान् अनु।
यत् आत्मनि तन्वो मे विरिष्टम्,
सरस्वती तत् आ पृणत् घृतेन।।1।।
1877. सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे,
पुत्रासे अपि अवीवृतन् ऋतानि।
उभ इत् अस्य उभे अस्य राजत,
उभे यतते उभे अस्य पुष्यतः।।2।।

अन्न सूक्त 58

1878. इन्द्रावरुणा सुतपौ इमम् सुतम्,
सोमम् पिबतम् मद्यम् घृतव्रतौ।
युवो रथो अध्वरो देववीतये,
प्रति स्वसरम् उप यातु पीतये।।1।।
1879. इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य,
वृष्णः सोमस्य वृषणा आ वृषेथाम्।
इदम् वाम् अन्धः परिषिक्तम्,
आसद्य अस्मिन् बर्हिषि मादथेयाम्।।2।।

अन्न सूक्त 59

1880. यो नः शपात् अशपतः, शपतो यः च नः शपात्।
वृक्ष इव विद्युता हत, आ मूलात् अनु शुष्यतु।।1।।

षष्ठो अनुवाकः

अन्न सूक्त 60

1881. ऊर्जम् बिभ्रत वसुवनिः सुमेधा,
अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
गृहान् आ एमि सुमना वन्दमानो,
रमध्वम् मा बिभीत मत्।।1।।
1882. इमे गृहा मयोभुव, ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः।
पूर्णा वामेन तिष्ठन्तः, ते नो जानन्तु आयतः।।2।।
1883. येषाम् अध्येति प्रवसन्, येषु सौमनसो बहुः।
गृहान् उप ह्वयामहे, ते नो जानन्तु आयतः।।3।।
1884. उपहूता भूरिधनाः, सखायः स्वादुसंमुदः।
अक्षुध्या अतृष्या स्त, गृहा मा अस्मत् बिभीतन।।4।।
1885. उपहूता इह गाव, उपहूता अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलाल, उपहूतो गृहेषु नः।।5।।
1886. सूनृतावन्तः सुभगा, इरावन्तो हसामुदाः।
अतृष्या अक्षुध्या स्त, गृहा मा अस्मत् बिभीतन।।6।।
1887. इह एव स्त मा अनु गात, विश्वा रूपाणि पुष्यत।
आ एष्यामि भद्रेणा, सह भूयांसो भवत मया।।7।।

तपः सूक्त 61

1888. यत् अग्ने तपसा, तप उपतप्यामहे तपः।
प्रियाः श्रुतस्य भूयास्म, आयुष्मन्तः सुमेधसः।।1।।
1889. अग्ने तपः तप्यामहे, उप तप्यामहे तपः।
श्रुतानि शृण्वन्तो वयम्, आयुष्मन्तः सुमेधसः।।2।।

शत्रुनाशन सूक्त 62

1890.अयम् अग्निः सत्पतिः वृद्धवृष्णो,
रथीव पत्तीन् अजयत् पुरोहितः।
नाभा पृथिव्याम् निहितो दविद्युतत्,
अधस्पदम् कृणुताम् ये पृतन्यवः।1।

दुरितनाशन सूक्त 63

1891. पृतनाजितम् सहमानम् अग्निम्,
उक्थैः हवामहे परमात् सधस्थात्।
स नः पर्षत् अति दुर्गाणि विश्वा क्षामत्,
देवो अति दुरितानि अग्निः।।1।।

पापमोचन सूक्त 64

1892. इदम् यत् कृष्णः शकुनिः, अभिनिष्पतन् अपीपतत्।
आपो मा तस्मात् सर्वस्मात्, दुरितात् पान्तु अंहसः।।1।।
1893. इदम् यत् कृष्णः शकुनिः,

अवामृक्षत् निर्ऋते ते मुखेन।
अग्निः मा तस्मात् एनसो, गार्हपत्यः प्र मुञ्चतु।।2।।

दुरितनाशन सूक्त 65

1894. प्रतीचीनफलो हि त्वम्, अपामार्ग रुरोहिथ।
सर्वान् मत् शपथान्, अधि वरीयो यावया इतः।।1।।
1895. यत् दुष्कृतम् यत् शमलम्, यत् वा चेरिम पापया।
त्वया तत् विश्वतो मुख, अपामार्ग अप मृज्महे।।2।।
1896. श्यावदता कुनखिना, बण्डेन यत् सह आसिम।
अपामार्ग त्वया वयम्, सर्वम् तत् अप मृज्महे।।3।।

ब्रह्म सूक्त 66

1897. यदि अन्तरिक्षे यदि वात आस,
यदि वृक्षेषु यदि वा उलपेषु।
यत् अश्रवन् पशव उद्यमानम् तत्,
ब्राह्मणम् पुनः अस्मान् उपैतु।।1।।

आत्मा सूक्त 67

1898. पुनः मा आ एतु इन्द्रियम्,
पुनः आत्मा द्रविणम् ब्राह्मणम् च।
पुनः अग्नयो धिष्ण्या,
यथास्थाम कल्पयन्ताम् इह एव।।1।।

सरस्वती सूक्त 68

1899. सरस्वति व्रतेषु ते, दिव्येषु देवि धामसु।
जुषस्व हव्यम् आहुतम्, प्रजाम् देवि ररास्व नः।।1।।
1900. इदम् ते हव्यम् घृतवत् सरस्वति,
इदम् पितृणाम् हविः आस्यम् यत्।
इमानि ते उदिता शंतमानि,
तेभिः वयम् मधुमन्तः स्याम।।2।।
1901. शिवा नः शंतमा, भव सुमृडीका सरस्वति।
मा ते युयोम संदृशः।।1।।

सुख सूक्त 69

1902. शम् नो वातो वातु, शम् नः तपतु सूर्यः।
अहानि शम् भवन्तु नः शम् रात्री,
प्रति धीयताम् शम् उषा नो वि उच्छतु।।1।।

शत्रुदमन सूक्त 70

1903. यत् किम् च असौ मनसा यत् च वाचा,
यज्ञैः जुहोति हविषा यजुषा।
तत् मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना,
पुरा सत्यात् आहुतिम् हन्तु अस्य।1।
1904. यातुधाना निर्ऋतिः आत् उ रक्षः,
ते अस्य घ्नन्तु अनृतेन सत्यम्।
इन्द्रेषिता देवा आज्यम् अस्य मथ्नन्तु,
मा तत् सम् पादि यत् असौ जुहोति।।2।।
1905. अजिराधिराजौ, श्येनौ संपातिनाविव।
आज्यम् पृतन्यतः हताम्, यो नः कः च अभ्यघायति।।3।।
1906. अपाञ्चौ ते उभौ बाहू, अपि नह्यामि आस्यम्।
अग्नेः देवस्य मन्युना, तेन ते अवधिषम् हविः।।4।।
1907. अपि नह्यामि ते बाहू, अपि नह्यामि आस्यम्।
अग्नेः घोरस्य मन्युना, तेन ते अवधिषम् हविः।।5।।

अग्नि सूक्त 71

1908. परि त्वा अग्ने पुरम्, वयम् विप्रम् सहस्य धीमहि।
धृषद्वर्णम् दिवेदिवे, हन्तारम् भंगुरावतः।।1।।

शत्रुदमन सूक्त 72

1909. उत् तिष्ठत अव पश्यथ,
इन्द्रस्य भागम् ऋत्वियम्।
यदि श्रातम् जुहोतन, यदि अश्रताम् ममत्तन।।1।।
1910. श्रातम् हविः ओ षु इन्द्र प्र याहि,
जगाम सूरो अध्वनो वि मध्यम्।
परि त्वा आसते निधिभिः सखायः,
कुलपा न व्राजपतिम् चरन्तम्।।2।।
1911. श्रान्तम् मन्य ऊधनि श्रातम् अग्नौ,
सुशृतम् मन्ये तत् ऋतम् नवीयः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य दध्नः,
पिब इन्द्र वज्रिन पुरुकृत जुषाणः।।3।।

घर्म सूक्त 73

1912. समिद्धो अग्निः वृषणा रथी दिवः,
तप्तो घर्मो दुह्यते वाम् इषे मधु।
वयम् हि वाम् पुरुदमासो,
अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः।।1।।
1913. समिद्धो अग्निः अश्विना,
तप्तो वाम् घर्म आ गतम्।
दुह्यन्ते नूनम् वृषणा इह,
धेनवो दस्रा मदन्ति वेधसः।।2।।
1914. स्वाहाकृत शुचिः देवेषु यज्ञः,
यो अश्विनोः चमसो देवपानः।
तम् उ विश्वे अमृतासो जुषाणा,
गन्धर्वस्य प्रति आस्ना रिहन्ति।।3।।
1915. यत् उस्रियासु आहुतम् घृतम् पयो,
अयम् स वाम् अश्विना भाग आ गतम्।
माध्वी धर्तारा विदथस्य सत्पती,
तप्तम् घर्मम् पिबतम् रोचने दिवः।4।
1916. तप्तो वाम् घर्मो नक्षतु स्वहोता,
प्र वाम् अध्वर्युः चरतु पयस्वान्।
मधोः दुग्धस्य अश्विना तनाया,
वीतम् पातम् पयस उस्रियायाः।।5।।
1917. उप द्रव पयसा गोधुक् ओषम्,

आ घर्मे सिञ्च पय उस्रियायाः।
वि नाकम् अख्यत् सविता वरेण्यः,
अनुप्रयानम् उषसः वि राजति।6।
1918. उप ह्वये सुदुघाम् धेनुम् एताम्,
सुहस्तो गोधुक् उत दोहात् एनाम्।
श्रेष्ठम् सवम् सविता साविषत् नो,
अभिइद्धो घर्मः तत् उ सु प्र वोचत्।।7।।
1919. हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनाम्,
वत्सम् इच्छन्ती मनसा न्यागन्।
दुहाम् अश्विभ्याम् पयो अघ्नया,
इयम् सा वर्धताम् महते सौभगाय।8।
1920. जुष्टो दमूना अतिथिः दुरोणे,
इमम् नो यज्ञम् उप याहि विद्वान्।
विश्वा अग्ने अभियुजः विहत्य,
शत्रुयताम् आ भर भोजनानि।।9।।
1921. अग्ने शर्ध महते सौभगाय,
तव द्युम्नानि उत्तमानि सन्तु।
सम् जास्पत्यम् सुयमम् आ कृणुष्व,
शत्रुयताम् अभि तिष्ठ महांसि।10।
1922. सूयवसात् भगवती हि भूया,
अधा वयम् भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणम् अघ्नयै विश्वदानीम्,
पिब शुद्धम् उदकम् आचरन्ती।।11।।

सप्तमो अनुवाकः

गण्डमालचिकित्सा सूक्त 74

1923. अपचिताम् लोहिनीनाम्, कृष्ण माता इति शुश्रुम।
मुनेः देवस्य मूलेन सर्वा, विध्यामि ता अहम्।।1।।
1924. विध्यामि आसाम् प्रथमाम्,
विध्यामि उत मध्यमाम्।
इदम् जघन्या आसाम्, आ छिनद्मि स्तुकामिव।।2।।
1925. त्वाष्ट्रेण अहम् वचसा, वि ते ईर्ष्याम् अमीमदम्।
अथो यो मन्युः ते पते, तम् उ ते शमयामसि।।3।।
1926. व्रतेन त्वम् व्रतपते समक्तो,
विश्वाहा सुमनाः दीदिहि इह।
तम् त्वा वयम् जातवदो समिद्धम्,
प्रजावन्तः उप सदेम सर्वे।।4।।

अघ्नया सूक्त 75

1927. प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः,
शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा वे स्तेन ईशत मा अघशंसः,
परि वो रुद्रस्य हेतिः वृणक्तु।।1।।
1928. पदज्ञा स्थ रमतयः, संहिता विश्वनाम्नीः।
उप मा देवीः देवेभिः आ इत।
इमम् गोष्ठम् इदम् सदो, घृतेन अस्मान् सम् उक्षत।।2।।

गण्डमालाचिकित्सा सूक्त 76

1929. आ सुस्रसः सुस्रसो, असतीभ्यो असत्तराः।
सेहोः अरसतरा, लवणात् विक्लेदीयसीः।।1।।
1930. या ग्रैव्या अपचितो, अथो या उपपक्ष्याः।
विजाम्नि या अपचितः, स्वयम्स्रसः।।2।।
1931. यः कीकसाः प्रशृणाति, तलीद्याम् अवतिष्ठति।
निः हाः तम् सर्वम् जायान्यम्,
यः कः च ककुदि श्रितः।।3।।
1932. पक्षी जायान्यः पतति, स आ विशति पूरुषम्।
तत् अक्षितस्य भेषजम्, उभयोः सुक्षतस्य च।।4।।
1933. विद्म वै ते जायान्य जानम्,
यतो जायान्य जायसे।
कथम् ह तत्र त्वम् हनो, यस्य कृण्मो हविः गृहे।।5।।
1934. घृषत् पिब कलशे सोमम्,
इन्द्र वृत्रहा शूर सम् अरे वसूनाम्।
माध्यन्दिने सवन आ वृषस्व,
रयिष्ठानो रयिम् अस्मासु धेहि।।6।।

शत्रुनाशन सूक्त 77

1935. साम् तपना इदम्, हविः मरुतः तत् जुजुष्टन।
अस्माक ऊती रिशादसः।।1।।
1936. यो नो मर्तो मरुतो दुहृर्यणायुः,
तिरः चित्तानि वसवो जिघांसति।
द्रुहः पाशान् प्रति मुञ्चताम्,
सः तपिष्ठेन तपसा हन्तना तम्।।2।।
1937. सम्वत्सरीणा मरुतः स्वर्का,
उरुक्षयाः सगणा मानुषासः।
ते अस्मत् पाशान् प्र मुञ्चन्तु,
एनसः साम्तपना मत्सरा मादयिष्णवः।।3।।

बन्धमोचन सूक्त 78

1938. वि ते मुञ्चामि रशनाम्,
वि योक्त्रम् वि नियोजनम्।
इह एव त्वम् अजस्रः एधि अग्ने।।1।।
1939. अस्मै क्षत्राणि धारयन्तम्,
अग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन।
दीदिहि अस्मभ्यम् द्रविणा इह भद्रम्,
प्र इमम् वोचो हविर्दाम देवतासु।।2।।

अमावास्या सूक्त 79

1940. यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयम्,
अमावास्ये सम्वसन्तो महित्वा।
तेना नो यज्ञम् पिपृहि विश्ववारे,

रयिम् नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।1।।
1941. अहम् एव अस्मि अमावास्या,
माम् आ वसन्ति सुकृतो मयि इमे।
मयि देवा उभये साध्याः च,
इन्द्रज्येष्ठाः सम् अगच्छन्त सर्वे।।2।।
1942. आ अगन् रात्री संगमनी वसूनाम्,
ऊर्जम् पुष्टम् वसु आवेशयन्ती।
अमावास्यायै हविषा विधेम,
ऊर्जम् दुहाना पयसा न आ अगन्।।3।।
1943. अमावास्ये न त्वत् एतानि अन्यो,
विश्वा रूपाणि परिभूः जजान।
यत्कामाः ते जुहुमः तत् नो,
अस्तु वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।।4।।

पूर्णिमा सूक्त 80

1944.पूर्णा पश्चात् उत पूर्णा पुरस्तात्,
उत् मध्यतः पौर्णमासी जिगाय।
तस्याम् देवैः संवसन्तो महित्वा,
नाकस्य पृष्ठे सम् इषा मदेम।।1।।
1945. वृषभम् वाजिनम् वयम्, पौर्णमासम् यजामहे।
स नो ददातु अक्षिताम्, रयिम् अनुपदस्वतीम्।।2।।
1946. प्रजापते न त्वत् एतानि अन्यो,
विश्वा रूपाणि परिभूः जजान।
यत्कामाः ते जुहुमः तत् नो,
अस्तु वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।।3।।
1947.पौर्णमासी प्रथमा यज्ञिया आसीत्,
अह्नाम् रात्रीणाम् अतिशर्वरेषु।
ये त्वाम् यज्ञैः यज्ञिये अर्धयन्ति,
अमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः।।4।।

सूर्य-चन्द्र सूक्त 81

1948. पूर्व अपरम् चरतो मायय एतौ,
शिशू क्रीडन्तौ परि यातो अर्णवम्।
विश्वा अन्यो भुवना विचष्टे ऋतून्,
अन्यो विदधत् जायसे नवः।।1।।
1949. नवोनवो भवसि जायमानो,
अह्नाम् केतु उषसाम् एषि अग्रम्।
भागम् देवेभ्यो वि दधासि आयन्,
प्र चन्द्रमः तिरसे दीर्घम् आयुः।।2।।
1950. सोमस्य अंशो युधाम्, पते अनूनो नाम् वा असि।
अनूनम् दर्श मा कृधि, प्रजया च धनेन च।।3।।
1951. दर्शो असि दर्शतो असि, समग्रो असि समन्तः।
समग्रः समन्तो भूयासम् गोभिः,
अश्वैः प्रजया पशुभिः गृहैः धनेन।।4।
1952. यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तस्य त्वम् प्राणेन प्यायस्व।
आ वयम् प्याशिषीमहि गोभिः,
अश्वैः प्रजया पशुभिः गृहैः धनेन।।5।।
1953. यम् देवा अंशुम् आप्याययन्ति,
यम् अक्षितम् अक्षिताः भक्षयन्ति।
तेन अस्मान् इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः,
आ प्याययन्तु भुवनस्य गोपाः।।6।।

अष्टमो अनुवाकः

अग्नि सूक्त 82

1954. अभि अर्चत सुष्टुतिम् गव्यम्,
आजिम् अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमम् यज्ञम् नयत देवता,
नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ताम्।।9।।
1955. मयि अग्रे अग्निम् गृह्णामि,
सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन।
मयि प्रजाम् मयि आयुः,
दधामि स्वाहा मयि अग्निम्।।2।।
1956. इह एव अग्ने अधि धारय रयिम्,
मा त्वा नि क्रन् पूर्वचिताः निकारिणः।
क्षत्रेण अग्ने सुयमम् अस्तु तुभ्यम्,
उपसत्ता वर्धताम् ते अनिष्टृतः।।3।।
1957. अनु अग्निः उषसाम् अग्रम अख्यत्,
अनु अहानि प्रथमो जातवेदाः।
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीन्,
अनु द्यावापृथिवी आ विवेश।।4।।
1958. प्रति अग्निः उषसाम् अग्रम् अख्यत्,
प्रति अहानि प्रथमो जातवेदाः।
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन्,
प्रति द्यावापृथिवी आ ततान।।5।।
1959. घृतम् ते अग्ने दिव्ये सधस्थे,
घृतेन त्वाम् मनुः अद्य आ सम् इन्धे।
घृतम् ते देवीः नप्त्य आ वहन्तु,
घृतम् तुभ्यम् दुह्वताम् गावो अग्ने।6।

पाशमोचन सूक्त 83

1960. अप्सु ते राजन् वरुण, गृहो हिरण्ययो मिथः।
ततो घृतव्रतो राजा, सर्वा धामानि मुञ्चतु।।1।।
1961. धाम्नोधाम्नो राजन्, इतो वरुण मुञ्च नः।
यत् आपो अघ्न्या इति वरुण इति,
यत् ऊचुम ततो वरुण मुञ्च नः।।2।।
1962. उत् उत्तमम् वरुण पाशम् अस्म,
अव अधमम् वि मध्यमम् श्रथय।

अध आ वयम् आदित्य व्रते,
तव अनागसो अदितये स्मया।।3।।
1963. प्र अस्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान्,
य उत्तमा उधमा वारुणा ये।
दुष्वप्न्यम् दुरितम् निः ष्वा अस्मत्,
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्।4।

क्षत्रभृदग्नि सूक्त 84

1964. अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो,
विराट् अग्ने क्षत्रभृत् दीदिह इह।
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः,
शिवाभिः अद्य परि पाहि नो गयम्।।1।।
1965. इन्द्र क्षत्रम् अभि वामम्,
ओजो अजायथा वृषभ चर्षणीनाम्।
अप अनुदो जनम् अमित्रयन्तम्,
उरुम् देवेभ्यो अकृणोः उ लोकम्।।2।।
1966. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः,
परावत आ जगम्यात् परस्याः।
सृकम् सम्शाय पविम् इन्द्र तिग्मम्,
वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व।।3।।

अरिष्टनेमि सूक्त 85

1967. त्यम् उ षु वाजिनम् देवजूतम्,
सहोवानम् तरुतारम् रथानाम्।
अरिष्टनेमिम् पृतनाजिम् आशुम्,
स्वस्तये तार्क्ष्यम् इह आ हुवेम।।1।।

त्राता सूक्त 86

1968. त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रम्,
हवेहवे सुहवम् शूरम् इन्द्रम्।
हुवे नु शक्रम् पुर हूतम् इन्द्रम्,
स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु।।1।।

व्यापक-देव सूक्त 87

1969. यो अग्नौ रुद्रो यो अप्सु अन्तः,
य ओषधीः वीरुध आविवेश।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे,
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु अग्नये।।1।।

सर्प-विष-नाशन सूक्त 88

1970. अप इहि अरिः असि, अरिः वा असि।
विषे विषम् अपृक्था, विषम् इत् वा अपृक्थाः।
अहिम् एव अभि, अपेहि तम् जहि।।1।।।

दिव्य-आपः सूक्त 89

1971. अपो दिव्या अचायिषम्, रसेन सम् अपृक्ष्महि।
पयस्वान् अग्न आ अगमम्,
तम् मा सम् सृज वर्चसा।।1।।
1972. सम् मा अग्ने वर्चसा,
सृज सम् प्रजया सम् आयुषा।
विद्युः मे अस्य देवा इन्द्रो, विद्यात् सह ऋषिभिः।।2।।
1973. इदम् आपः प्र वहत, अवद्यम् च मलम् च यत्।
यत् च् अभिदुद्रोह अनृतम् च, यत् शेपे अभीरुणम्।।3।।
1974. एधो असि एधिषीय, समित् असि सम् एधिषीय।
तेजो असि तेजो मयि धेहि।।4।।

शत्रु-बल-नाशन सूक्त 90

1975. अपि वृक्ष पुराणवत्, व्रततेव गुष्पितम्।
ओजो दासस्य दम्भय।।1।।
1976. वयम् तत् अस्य सम्भृतम्,
वसु इन्द्रेण वि भजामहै।
म्लापयामि भ्रजः, शिभ्रम् वरुणस्य व्रतेन ते।।2।।
1977. यथा शेपो अपायातै, स्रीषु च असत् अनावयाः।
अवस्थस्य क्नदिवतः, शाङ्कुरस्य नितोदिनः।
यत् आततम् अव तत् तनु,
यत् उत्ततम् नि तत् तनु।।3।।

नवमो अनुवाकः

सुत्रामा इन्द्र सूक्त 91

1978. इन्द्रः सुत्रामा स्ववान् अवोभिः,
सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधताम् द्वेषो अभयम् नः कृणोतु,
सुवीर्यस्य पतयः स्याम।।1।।

सुत्रामा इन्द्र सूक्त 92

1979. स सुत्रामा स्ववान् इन्द्रो अस्मत्,
आरात् चित् द्वेषः सनुतः युयोतु।
तस्य वयम् सुमतौ यज्ञियस्य,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 93

1980. इन्द्रेण मन्युना वयम्, अभि स्याम पृतन्यतः।
घ्नन्तो वृत्राणि अप्रति।।1।।

सांमनस्य सूक्त 94

1981. ध्रुवम् ध्रुवेण हविषा, अव सोमम् नयामसि।
यथा न इन्द्रः केवलीः, विशः सम्मनसः करत्।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 95

1982. उत् अस्य श्यावौ विथुरौ, गृध्रौ द्यामिव पेततुः।
उच्छोचन प्रशोचनौ अस्य, उत्शौचनौ हृदः।।1।।
1983. अहम् एनौ उत् अतिष्ठिपम्, गावौ श्रान्तसदाविव।
कुर्कुराविव कूजन्तौ, उदवन्तौ वृकाविव।।2।।
1984. आतोदिनौ नितोदिनौ, अथो संतोदिनौ उत।
अपि नह्यामि अस्य मेढ्रम्,
य इतः स्त्री पुमान् जभार।।3।।

शत्रुनाशन सूक्त 96

1985. असदन् गावः सदने, अपप्तत् वसतिम् वयः।
आस्थाने पर्वता अस्थुः, स्थाम्नि वृकौ अतिष्ठिपम्।।1।।

यज्ञ सूक्त 97

1986. यत् अद्य प्रयति यज्ञे अस्मिन्,
होतः चिकित्वन् अवृणीमहि इह।
ध्रुवम् अयो ध्रुवम् उत आ शविष्ठ,
प्रविद्वान् यज्ञम् उप याहि सोमम्।1।
1987. सम् इन्द्र नो मनसा नेष गोभिः,
सम् सूरिभिः हरिवन् सम् स्वस्त्या।
सम् ब्रह्मणा देवहितम् यत् अस्ति,
सम् देवानाम् सुमतौ यज्ञियानाम्।।2।।
1988. यान् आवह उशतो देव देवान्,
तान् प्र ईरय स्वे अग्ने सधस्थे।
जक्षिवांसः पपिवांसो मधूनि,
अस्मै धत्त वसवो वसूनि।।3।।
1989. सुगा वो देवाः सदना अकर्म,
य आजग्म सवने मा जुषाणाः।
बहमाना भरमाणाः स्वा वसूनि,
वसुम् घर्मम् दिवम् आ रोहतु अनु।4।
1990. यज्ञ यज्ञम् गच्छ, यज्ञपतिम् गच्छ।
स्वाम् योनिम् गच्छ स्वाहा।।5।।
1991. एष ते यज्ञो यज्ञपते, सह सूक्तवाकः।
सुवीर्यः स्वाहा।।6।।
1992. वषट् हुतेभ्यो, वषट् अहुतेभ्यः।
देवा गातुविदो गातुम्, वित्त्वा गातुम् इत।।7।।
1993. मनसः पते इमम्, नो दिवि देवेषु यज्ञम्।
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्याम् स्वाहा,
अन्तरिक्षे स्वाहा वाते धाम् स्वाहा।।8।।

हवि सूक्त 98

1994. सम् बर्हिः अक्तम् हविषा घृतेन,
सम् इन्द्रेण वसुना सम् मरुद्भिः।
सम् देवैः विश्वदेवेभिः अक्तम्,
इन्द्रम् गच्छतु हविः स्वाहा।।1।।

वेदी सूक्त 99

1995. परि स्तृणीहि परि धेहि वेदिम्,
मा जामिम् मोषीः अमुया शयानाम्।
होतृसदनम् हरितम् हिरण्ययम्,
निष्का एते यजमानस्य लोके।।1।।

दुःष्वप्ननाशन सूक्त 100

1996. पर्यावर्ते दुस्वप्न्यात्, पापात् स्वनप्न्यात् अभूत्याः।
ब्रह्म अहम् अन्तरम् कृण्वे, पर स्वप्नमुखाः शुचः।।1।।

दुःष्वप्ननाशन सूक्त 101

1997. यत् स्वप्ने अन्नम्, अश्नामि न प्रातः अधिगम्यते।
सर्वम् तत् अस्तु मे शिवम्, नहि तत् दृश्यते दिवा।।1।।

आत्मन-अहिंसन सूक्त 102

1998. नमःकृत्य द्यावापृथिवीभ्याम्, अन्तरिक्षाय मृत्यवे।
मेक्षामि ऊर्ध्वः तिष्ठन्, मा मा हिंसिषुः ईश्वराः।।1।।

दशमो अनुवाकः

क्षत्रिय सूक्त 103

1999. को अस्या नो द्रुहो अवद्यवत्या,
उत् नेष्यति क्षत्रियो वस्य इच्छन्।
को यज्ञकामः क उ पूर्तिकामः,
को देवेषु वनुते दीर्घम् आयुः।।1।।

गौ सूक्त 104

2000. कः पृश्निम् धेनुम् वरुणेन दत्ताम्,
अथर्वणे सुदुघाम् नित्यवत्साम्।
बृहस्पतिना सख्यम् जुषाणो,
यथावशम् तन्वः कल्पयाति।।21।।

दिव्य-वचन सूक्त 105

2001. अपक्रामन् पौरुषेयात्, वृणानो दैव्यम् वचः।
प्रणीतीः अभिवर्तस्व, विश्वेभिः सखिभिः सह।।1।।

अमृतत्व सूक्त 106

2002. यत् अस्मृति चकृम् किम् चित् अग्ने,
उपारिम चरणे जातवेदः।
ततः पाहि त्वम् नः प्रचेतः शुभे,
सखिभ्यो अमृतत्वम् अस्तु नः।।1।।

संतरण सूक्त 107

2003. अव दिवः तरायन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः।
आपः समुद्रिया धाराः ताः ते शल्यम् असिस्रसन्।।1।।

शत्रुनाशन सूक्त 108

2004. यो नः तायत् दिप्सति यो न आविः,
स्वो विद्वान् अरणो वा नो अग्ने।
प्रतीचीः एतु अरणी दत्वती तान्,
मा एषाम् अग्ने वास्तु भूत् मो अपत्यम् ।।1।।
2005. यो नः सुप्तान् जाग्रतो वा अभिदासात्,
तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः।
वैश्वानरेण सयुजा सजोषाः,
तान् प्रतीचो निः दह जातवेदः।।2।।

राष्ट्रभृत सूक्त 109

2006. इदम् उग्राय बभ्रवे, नमो यो अक्षेषु तनूवशी।
घृतेन कलिम् शिक्षामि, स नो मृडानि ईदृशे।।1।।
2007. घृतम् अप्सराभ्यो वह त्वम अग्ने,

पांसून् अक्षेभ्यः सिकता अपः च।
यथाभागम् हव्यदातिम् जुषाणाः,
मदन्ति देवा उभयानि हव्या।।2।।
2008. अप्सरसः सधमादम् मदन्ति,
हविर्धानम् अन्तरा सूर्यम् च।
ता मे हस्तौ सम् सृजन्तु घृतेन,
सपत्नम् मे कितवम् रन्धयन्तु।।3।।
2009. आदिनवम् प्रतिदीव्ने, घृतेन अस्मान् अभि क्षर।
वृक्षमिव अशन्या जहि, यो अस्मान् प्रतिदीव्यति।।4।।
2010. यो नो द्युवे धनम् इदम् चकार,
यो अक्षाणाम् ग्लहनम् शेषणम् च।
स नो देवो हविः इदम् जुषाणो,
गन्धर्वेभिः सधमादम् मदेम।।5।।
2011. सम्वसव इति वो नामधेयम्,
उग्रमपश्या राष्ट्रभृतो हि अक्षाः।
तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।।6।।
2012. देवान् यत् नाथितो हुवे, ब्रह्मचर्यम् यत् ऊषिम।
अक्षान् यत् बभ्रून आलभे, ते नो मृडन्तु ईदृशे।।7।।

शत्रुनाशन सूक्त 110

2013. अग्न इन्द्रः च दाशुषे, हतो वृत्राणि अप्रति।
उभा हि वृत्रहन्तमा।।1।।
2014. याभ्याम् अजयन् स्वः अग्रे एव,
यौ आतस्थतुः भुवानानि विश्वा।
प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू,
अग्निम् इन्द्रम् वृत्रहणा हुवे अहम्।।2।।
2015. उप त्वा देवो अग्रभीत्, चमसेन बृहस्पतिः।
इन्द्र गीर्भिः न आ विश, यजमानाय सुन्वते।।3।।

आत्मा सूक्त 111

2016. इन्द्रस्य कुक्षिः असि सोमधान,
आत्मा देवानाम् उत मानुषाणाम्।
इह प्रजा जनय याः त आसु,
या अन्यत्र इह ताः ते रमन्ताम्।।1।।

पापनाशन सूक्त 112

2017. शुम्भनी द्यावापृथिवी, अन्तिसुम्ने महिव्रते।
आपः सप्त सुस्रुवुः देवीः, ता नो मुञ्चन्तु अंहसः।।1।।
2018. मुञ्चन्तु मा शपथ्यात्, अथो वरुण्यात् उत।
अथो यमस्य पड्वीशात्, विश्वस्मात् देवकिल्बिषात्।।2।।

शत्रुनाशन सूक्त 113

2019. तृष्टिके तृष्टवन्दन, उत् अमूम् छिन्धि तृष्टिके।
यथा कृतद्विष्टा असो, अमुष्मै शेप्यावते।।1।।
2020. तृष्टा असि तृष्टिका, विषा विषातकी असि।
परिवृक्ता यथा असति, ऋषभस्य वशेव।।2।।

शत्रुनाशन सूक्त 114

2021. आ ते ददे वक्षणायभ्य, आ ते अहम् हृदयात् ददे।
आ ते मुखस्य सम्काशात्, सर्वम् ते वर्च आ ददे।।1।।
2022. प्र इतो यन्तु व्याध्यः, प्र अनुध्याः प्रो अशस्तयः।
अग्नी रक्षस्विनीः हन्तु, सोमो हन्तु दुरस्यतीः।।2।।

पाप-लक्षण-नाशन सूक्त 115

2023. प्र पत इतः पापि लक्ष्मि,
नश्य इतः प्र अमुतः पत।
अयस्मयेन अङ्केन द्विषते, त्वा आ सजामसि।।1।।
2024. या मा लक्ष्मीः पतयालूः अजुष्टा,
अभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यत्र अस्मत् सवितः ताम् इतो धा,
हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः।2।
2025. एकशतम् लक्ष्म्यो मर्त्यस्य,
साकम् तन्वा जनुषो अधि जाताः।
तासाम् पापिष्ठा निः इताः प्र हिण्मः,
शिवा अस्मभ्यम् जातवेदो नि यच्छ।।3।।
2026. एता एना व्याकरम्, खिले गा विष्ठिता इव।
रमन्ताम् पुण्या लक्ष्मीः, याः पापीः ता अनीनशम्।।4।।

ज्वर-नाशन सूक्त 116

2027. नमो रूराय च्यवनाय, नोदनाय धृष्णवे।
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने।।1।।
2028. यो अन्येद्युः उभयेद्युः अभ्येति,
इमम् मण्डूकम् अभि एतु अव्रतः।।2।।

शत्रुनिवारण सूक्त 117

2029. आ मन्द्रैः इन्द्र हरिभिः, याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चित् वि यमन् विम्,
न पाशिनो अति धन्व इव तान् इहि।।1।।

वर्मधारण सूक्त 118

2030. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमः,
त्वा राजा अमृतेन अनु वस्ताम्।
उरोः वरीयो वरुणः ते कृणोतु,
जयन्तम् त्वा अनु देवा मदन्तु।।1।।

सप्तमो काण्डः समाप्तः

ॐ

अष्टमम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

दीर्घायु-प्राप्ति सूक्त 1

2031. अन्तकाय मृत्यवे नमः,
प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम्।
इह अयम् अस्तु पुरुषः सह,
असुना सूर्यस्य भगे अतस्य लोके।।1।।
2032. उत् एनम् भगो अग्रभीत्,
उत् एनम् सोमो अंशुमान्।
उत् एनम् मरुतो देवा, उत् इन्द्राग्नी स्वस्तये।।2।।
2033. इह ते असुः इह प्राण, इह आयुः इह ते मनः।
उत् त्वा निर्ऋत्याः पाशेभ्यः, दैव्या वाचा भरामसि।।3।।
2034. उत् क्राम अतः पुरुष मा अव पत्थाः,
मृत्योः षडवीशम् अवमुञ्चमानाः।
मा छित्था अस्मामत् लोकात्, अग्नेः सूर्यस्य संदृशः।।4।।
2035. तुभ्यम् वातः पवताम् मातरिश्वा,
तुभ्यम् वर्षन्तु अमृतानि आपः।
सूर्यः ते तन्वे शम् तपाति,
त्वाम् मृत्युः दयताम् मा प्र मेष्ठाः।।5।।
2036. उद्यानम् ते पुरुष न अवयानम्,
जीवातुम् ते दक्षतातिम् कृणोमि।
आ हि रोह इमम् अमृतम् सुखम्,
रथम् अथ जिर्वि विदथम् आ वदासि।।6।।
2037. मा ते मनः तत्र गात् मा तिरो भूत्,
मा जीवेभ्यः प्र मदो मा अनु गाः पितृन्।
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वा इह।।7।।
2038. मा गतानाम् आ दीधीथाः, ये नयन्ति परावतम्।
आ रोह तमसो ज्योतिः,
आ इहि आ ते हस्तौ रभामहे।।8।।
2039. श्यामः च त्व मा शबलः च प्रेषितौ,
यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ।
अर्वाङ् आ इहि मा वि दीध्यो,
मा अत्र तिष्ठः पराङ्.मनाः।।9।।
2040. मा एतम् पन्थाम् अनु गा भीम,
एष येन पूर्वम् न इयथ तम् ब्रवीमि।
तम एतत् पुरुष मा प्र पत्था,
भयम् परस्तात् अभयम् ते अर्वाक।।10।।
2041. रक्षन्तु त्वा अग्नयो ये अप्सु अन्ता,
रक्षन्तु त्वा मनुष्या यम् इन्धते।
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यः,
त्वा मा प्र धाक् विद्युता सह।।11।।
2042. मा त्वा क्रव्यात् अभि मंस्त,
आरात् संकसुकात् चर।
रक्षतु त्वा द्यौः रक्षतु पृथिवी,
सूर्यः च त्वा रक्षताम् चन्द्रमाः च।।12।।
2043. बोधः च त्वा प्रतिबोधः च रक्षतामा,
अस्वप्नः च त्वा अनव-द्राणः च रक्षताम्।
गोपायन् च त्वा जागृविः च रक्षताम्।।13।।
2044. ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपयन्तु,
तेभ्यो नमः तेभ्यः स्वाहा।।14।।
2045. जीवेभ्यः त्वा समुद्रे वायुः इन्द्रो,
धाता दधातु सविता त्रायमाणः।
मा त्वा प्राणः बलम् हासीत्,
असुम् ते अनु ह्वयामसि।।15।।
2046. मा त्वा जम्भः संहनुः मा तमो विदत्
2047.मा जिह्वा आ बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः।
उत् त्वा आदित्या वसवो,
भरन्तु उत् इन्द्राग्नी स्वस्तये।।16
2047. उत् त्वा द्यौः उत् पृथिवा, उत् प्रजापतिः अग्रभीत्।
उत् त्वा मृत्योः ओषधयः, सोमराज्ञीः अपीपरन्।।17।।
2048. अय़म् देवा इह एव अस्तु,
अयम् मा अमुत्र गात् इथः।
इमम् सहस्रवीर्येण, मृत्योः उत् पारयामसि।।18।।
2049. उत् त्वा मृत्तयोः अपीपरम्, सम् धमन्तु वयोधसः।
मा त्वा व्यस्तकेश्यो, मा त्वा अघरुदो रुदन्।।19।।
2050. आ अहार्षम् अविदम्, त्वा पुनः आ अगा पुनर्णवाः।
सर्वाङ्ग सर्वम् ते चक्षु, सर्वम् आयुः च ते अविदम्।।20।।
2051. वि अवात् ते ज्योतिः अभूत्,
अप त्वत् तमो अक्रमीत्।
अप त्वत् मृत्युम् निर्ऋतिम्,
अप यक्ष्मम् नि दध्मसि।।21।।

दीर्घायु-प्राप्ति सूक्त 2

2052. आ रभस्व इमाम् अमृतस्य श्नुष्टिम्,
अच्छिद्यमाना जरदष्टिः अस्तु ते।
असुम् त आयु पुनः आ भरामि,
रजः तमो मा उप गाः मा प्र मेष्ठाः।1।
2053. जीवताम् ज्योतिः अभ्येहि,
अर्वाङ् आ त्वा हरामि शतशारदाय।
अवमुञ्चन् मृत्युपाशान् अशस्तिम्,
द्राघीय आयुः प्रतरम् ते दधामि।2।
2054. वातात् ते प्राणम् अविदम्,

सूर्यात् चक्षुः अहम् तव।
यत् ते मनः त्वयि तत् धारयामि,
सम् वित्स्व अङ्गैः वद जिह्वया अलपन्।।3।।
2055. प्राणेन त्वा द्विपदाम् चतुष्पदाम्,
अग्निमिव जातम् अभि सम् धमामि।
नमः ते मृत्यो चक्षुषे, नमः प्राणाय ते अकरम्।।4।।
2056. अयम् जीवतु मा मृत, इमम् सम् ईरयामसि।।
कृणोमि अस्मै भेषजम्, मृत्यो मा पुरुषम् वधीः।।5।।
2057. जीवलाम् नघरिषाम्, जीवन्तीम् ओषधीम् अहम्।
त्रायमाणाम् सहमानाम् सहस्वतीम्,
इह हुवे अस्मै अरिष्ट तातये।।6।।
2058. अधि ब्रूहि मा आ रभथाः सृज,
इमम् तव एव सन् सर्वहाया इह अस्तु।
भवाशर्वौ मृजतम् शर्म यच्छतम्,
अपसिध्य दुरितम् धत्तम् आयुः।।7।।
2059. अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहि इमम्,
दयस्व उत् इतो अयम् एतु।
अरिष्टः सर्वाङ्ग सुश्रुत् जरसा,
शतहायन आत्मना भुजम् अश्नुताम्।8।
2060. देवानाम् हेतिः परि त्वा वृणक्तु,
पारयामि त्वा रजस उत् त्वा मृत्योः अपीपरम्।
आरात् अग्निम् क्रव्यादम् निरुहन्,
जीवातवे ते परिधिम् दधामि।।9।।
2061. यत् ते नियानम् रजसम्, मृत्यो अनवधर्ष्यम्।
पथ इमम् तस्मात् रक्षन्तो,
ब्रह्म अस्मै वर्म कृण्मसि।।10।।
2062. कृणोमि ते प्राणापानौ जराम्,
मृत्युम् दीर्घम् आयुः स्वस्ति।
वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतान्,
चरतो अप सेधामि सर्वान्।।11।।
2063. आरात् अरातिम् निर्ऋतिम्,
परो ग्राहिम् क्रव्यादः पिशाचान्।
रक्षो यत् सर्वम् दुर्भूतम्, तत् तम इव अप हन्मसि।।12।।
2064. अग्नेः ते प्राणम् अमृतात्,
आयुष्मतो वन्वे जातवेदसः।
यथा न रिष्या अमृतः सजूः असः,
तत् ते कृणोमि तत् उ ते सम् ऋध्यताम्।।13।।
2065. शिवे ते स्ताम् द्यावापृथिवी, असंतापे अभिश्रियौ।
शम् ते सूर्य आ तपतु, शम् वातो वातु ते हृदे।
शिवा अभि क्षरन्तु त्वा, आपो दिव्याः पयस्वतीः।।14।।
2066. शिवाः ते सन्तु ओषधय उत् त्वा,
अहार्षम् अधरस्या उत्तराम् पृथिवीम् अभि।
तत्र त्वा आदित्यौ रक्षताम् सूर्याचन्द्रमसौ उभा।।15।।
2067. यत् ते वासः परिधानम्, याम् नीविम् कृणुषे त्वम्।
शिवम् ते तन्वे तत् कृण्मः,
सम् स्पर्शे अद्रूक्ष्णम् अस्तु ते।।16।।
2068. यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा,
वप्ता वपसि केशश्मश्रु।
शुभम् मुखम् मा न आयुः प्र मोषीः।।17।।
2069. शिवौ ते स्ताम् व्रीहियवौ, अबलासौ अदोमधौ।
एतौ यक्ष्मम् वि बाधेते, एतौ मुञ्चतो अंहसः।।18।।
2070. यत् अश्नासि यत् पिबसि, धान्यम् कृष्याः पयः।
यत् आद्यम् यत् अनाद्यम् सर्वम्,
ते अन्नम् अविषम् कृणोमि।।19।।
2071. अह्ने च त्वा रात्रये च, उभाभ्याम् परि दद्मसि।
अरायेभ्यो जिघत्सुभ्य, इमम् मे परि रक्षत।।20।।
2072. शतम् ते अयुतम् हायनान्,
द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नी विश्वे देवाः ते,
अनु मन्यन्ताम् अहृणीयमानाः।।21।।
2073. शरदे त्वा हेमन्ताय,
वसन्ताय ग्रीष्माय परि दद्मसि।
वर्षाणि तुभ्यम् स्योनानि, येषु वर्धन्ते ओषधीः।।22।।
2074. मृत्युः ईशे द्विपदाम्, मृत्युः ईशे चतुष्पदाम्।
तस्मात् त्वाम् मृत्योः गोपतेः,
उत् भरामि स मा बिभेः।।23।।
2075. सो अरिष्ट न मरिष्यसि, न मरिष्यसि मा बिभेः।
न वै तत्र म्रियन्ते, नो यन्ति अधमम् तमः।।24।।
2076. सर्वो वै तत्र जीवति, गौः अश्वः पुरुषः पशुः।
यत्र इदम् ब्रह्म क्रियते, परिधिः जीवनाय कम्।।25।।
2077. परि त्वा पातु समानेभ्यो, अभिचारात् सबन्धुभ्यः।
अममिः भव अमृतो अतिजीवो,
मा ते हासिषुः असवः शरीरम्।।26।।
2078. ये मृत्यवः एकशतम्, या नाष्ट्रा अतितार्याः।
मुञ्चन्तु तस्मात् त्वाम् देवा,
अग्नेः वैश्चवानरात् अधि।।27।।
2079. अग्नेः शरीरम् असि पारयिष्णु,
रक्षोहा असि सपत्नहा।
अथो अमीवचातनः, पृतुद्रुः नाम भेषजम्।।28।।

द्वितीयो अनुवाकः

शत्रुनाशन सूक्त 3

2080. रक्षोहणम् वाजिनम् आ जिघर्मि,
मित्रम प्रथिष्ठम् उप यामि शर्म।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः,
स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्।1।

2081. अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानान्,
उप स्पृश जातवेदः समिद्धः।
आ जिह्वया मूरदेवान् रभस्व,
क्रव्यादो वृष्ट्वा अपि धत्स्व आसन्।2।
2082. उभा उभयाविन् उप धेहि,
दंष्ट्रौ हिंस्रः शिशानो अवरम् परम् च।
उत अन्तरिक्षे परि याहि अग्ने जम्भैः,
सम् धेहि अभि यातुधानान्।3।
2083. अग्ने त्वचम् यातुधानस्य भिन्धि,
हिंस्रा अशनिः हरसा हन्तु एनम्।
प्र पर्वणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात्,
क्रविष्णुः वि चिनोतु एनम्।।4।।
2084. यत्र इदानीम् पश्यसि जातवेदः,
तिष्टन्तम् अगने उत वा चरन्ताम्।
उत अन्तरिक्षे पतन्तम् यातुधानम्,
तम् अस्ता विध्य शर्वा शिशानः।।5।।
2085. यज्ञैः इषूः संनममानो अग्ने,
वाचा शल्यान् अशनिभिः दिहानः।
ताभिः विध्य हृदये यातुधानान्,
प्रतीचो बाहून् प्रति भङ्ग्धि एषाम्।।6।।
2086. उत आरब्धान् स्पृणुहि जातवेद,
उत आरेभाणान् ऋष्टिभिः यातुधानान्।
अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान,
आमादः क्ष्विङ्काः तम् अदन्तु एनीः।7।
2087. इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने,
यातुधानो य इदम् कृणोति।
तम् आ रभस्व समिधा यविष्ठ,
नृचक्षसः चक्षुषे रन्धय एनम्।।8।।
2088. तीक्ष्णेन अग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञम्,
प्राञ्चम् वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः।
हिंस्रम् रक्षांसि अभि शोशुचानम्,
मा त्वा दभन् यातुधाना नृचक्षः।।9।।
2089. नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु,
तस्य त्रीणि प्रति शृणीहि अग्रा।
तस्य अग्ने पृष्टीः हरसा शृणहि,
त्रेधा मूलम् यातुधानस्य वृश्च।।10।।
2090. त्रिः यातुधानः प्रसितिम् त एतु,
ऋतम् यो अग्ने अनृतेन हन्ति।
तम् अर्चिषा स्फूर्जयन् जातवेदः,
समक्षम् एनम् गृणते नि युङ्ग्धि।11।
2091.यत् अग्ने अद्य मिथुना शपातो,
यत् वाचः तृष्टम् जनयन्त रेभाः।
मन्योः मनसः शरव्या जायते,
या त्य विध्य हृदये यातुधानान्।।12।।
2092. परा शृणहि तपसा यातुधानान्,
परा अग्ने रक्षो हरसा शृणिहि।
परा अर्चिषा मूरदेवान् शृणीहि,
परा असुतृपः शोशुचतः शृणीहि।।13।।
2093. परा अद्य देवा वृजिनम् शृणन्तु,
प्रत्यक् एनम् शपथा यन्तु सृष्टाः।
वाचास्तेनम् शरव ऋच्छन्तु मर्मन्,
विश्वस्य एतु प्रसितिम् यातुधानः।।14।।
2094. यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते,
यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरम अग्ने,
तेषाम् शीर्षाणि हरसा अपि वृश्च।15
2095. विषम् गवाम् यातुधाना भरन्ताम्,
आ वृश्चन्ताम् अदितये दुरेवाः।
परा एनान् देवः सविता ददातु,
परा भागम् ओषधीनाम् जयन्ताम्।16।
2096. संवत्सरीणम् पय उस्रियायाः,
तस्य मा आशीत् यातुधानो नृचक्षः।
पीयूषम् अग्ने यतमः तितृप्सात्,
प्रत्यञ्चम् अर्चिषा विध्य मर्मणि।17।
2097. सनात् अग्ने मृडसि यातुधानान्,
न त्वा रजांसि पृतनासु जिग्युः।
सहमूरान् अनु दह क्रव्यादो,
मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः।।18।।
2098. त्वम् नो अग्ने अधरात् उदक्तः,
त्वम् पश्चात् उत रक्षा पुरस्तात्।
प्रति त्ये ते अजरासः तपिष्ठा,
अघशंसम् शाशुचतो दहन्तु।।19।।
2099. पश्चात् पुरस्तात् अधरात् उत उत्तरात्,
कविः काव्येन परि पाहि अग्ने।
सखा सखायम् अजरो जरिम्णे,
अग्ने मर्तान् अमर्त्यः त्वम् नः।।20।।
2100. तत् अग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे,
शफारुजो येन पश्यसि यातुधानान्।
अथर्ववत् ज्योतिषा दैव्येन सत्यम्,
धूर्वन्तम् अचितम् नि ओष।।21।।
2101. परि त्वा अग्ने पुरम्, वयम् विप्रम् सहस्य धीमहि।
धृषद्वर्णम् दिवेदिवे, हन्तारम् भङ्गुरावतः।।22।।
2102. विषेण भङ्गुरावतः, प्रति स्म रक्षसो जहि।
अग्ने तिग्मेन शोचिषा, तपुरग्राभिः अर्चिभिः।।23।।
2103. वि ज्योतिषा बृहता भाति अग्निः,
आविः विश्वानि कृणुते महित्वा।

प्र अदेवीः मायाः सहते दुरेवाः,
शिशीते शृङ्गे रक्षोभ्यो विनिक्ष्वे।।24।।
2104. ये ते शृंगे अजरे जातवेदः, तिग्महेती ब्रह्मसंशिते।
ताभ्याम् दुर्हार्दम् अभिदासन्तम् किमीदिनम्,
प्रत्यञ्चम् अर्चिषा जातवेदः वि निक्ष्व।।25।।
2105. अग्नी रक्षांसि सेधति, शुक्रशोचिः अमर्त्यः।
शुचिः पावक ईड्यः।।26।।

शत्रुदमन सूक्त 4

2106. इन्द्रासोमा तपतम् रक्ष उब्जतम्,
नि अर्पयतम् वृषणा तमोवृधः।
परा शृणीतम् अचितो नि ओषतम्,
हतम् नुदेथाम् नि शिशीतम् अत्त्रिणः।।1।।
2107. इन्द्रासोमा सम् अघशंसम् अभि अघम्,
तपुः ययस्तु चरुः अग्निमान् इव।
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे,
द्वेषो धत्तम् अनवायम् किमीदिने।।2।।
2108. इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे अन्तः,
अनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम्।
यतो न एषाम् पुनः एकः चन उतयत्,
तत् वाम् अस्तु सहसे मन्युमत् शवः।।3।।
2109. इन्द्रासोमा वर्तयतम् दिवो वधम्,
सम् पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम्।
उत् तक्षतम् स्वर्यम् पर्वतेभ्यो,
येन रक्षो वावृधानम् निजूर्वथः।।4।।
2110. इन्द्रासोमा वर्तयतम् दिवः,
परि अग्नितप्तेभिः युवम् अश्महन्मभिः।
तपुर्वधेभिः अजरेभिः अत्त्रिणो,
नि पर्शाने विध्यतम् यन्तु निस्वरम्।5।
111. इन्द्रसोमा परि वाम् भूत विश्वतः,
इयम् मतिः कक्ष्या अश्वेव वाजिना।
याम् वाम् होत्राम् परिहिनोमि मेधया,
इमा ब्रह्माणि नृपती इव जिन्वतम्।।6।।
2112. प्रति स्मरेथाम् तत् तुजयत्भिः,
एवैः हतम् द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः।
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगम् भूत्,
यो मा कदा चित् अभिदासति द्रुहुः।।7।।
2113. यो मा पाकेन मनसा चन्तम्,
अभिचष्टे अनृतेभिः वचोभिः।
आप इव काशिना संगृभीता,
असन् अस्तु असत इन्द्र वक्ता।।8।।
2114. ये पाकशंसम् विहरन्ते एवैः,
ये वा भद्रम् दूषयन्ति स्वधाभिः।
अहये वा तान् प्रददातु सोम,
आ वा दधातु निर्ऋतेः उपस्थे।।9।।
2115. यो नो रसम् दिप्सति पित्वो,
अग्ने अश्वानाम् गवाम् यः तनूनाम्।
रिपु स्तेन स्तेयकृत् दभ्रम् एतु,
नि ष हीयताम् तन्वा तना च।।10।।
2116. परः सो अस्तु तन्वा तना च,
तिस्रः पृथिवीः अधो अस्तु विश्वाः।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य अस्य देवा,
यो मा दिवा दिप्सति यः च नक्तम्।।11।।
2117. सुविज्ञानम् चिकितुषे जनाय सत्,
च असत् च वचसी पस्पृधाते।
तयोः यते सत्यम् यतरत् ऋजीयः,
तत् इत् सोमो अवति हन्ति असत्।।12।।
2118.न वा उ सोमो वृजिनम् हिनोति,
न क्षत्रियम् मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्ति असत् वदन्तम्,
उभौ इन्द्रस्य प्रसितौ शयाते।।13।।
2119. यदि वा अहम् अनृतदेवो अस्मि,
मोघम् वा देवान् अप्यूहे अग्ने।
किम् अस्मभ्यम् जातवेदो हृणीषे,
द्रोघवाचः ते निः ऋथम् सचन्ताम्।14
2120. अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि,
यदि वा आयुः ततप पुरुषस्य।
अधा स वीरैः दशभिः वि यूया,
यो मा मोघम् यातुधान इति आह।15।
2121. यो मा अयातुम् यातुधान इति आह,
यो वा रक्षाः शुचिः अस्मि इति आह।
इन्द्रः तम् हन्तु महता वधेन,
विश्वस्य जन्तोः अधमः पदीष्ट।।16।।
2122. प्र या जिगाति खर्गलेव,
नक्तम् अप द्रुहः तन्वम् गूहमाना।
वव्रम् अनन्तम् अव सा पदीष्ट,
ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः।।17।।
2123. वि तिष्ठध्वम् मरुतो विक्षु,
इच्छत् गृभायत रक्षसः सम् पिनष्टन।
वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभिः,
ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे।।18।।
2124.प्र वर्तय दिवो अश्मानम् इन्द्र,
सोमशितम् मघवन् सम् शिशाधि।
प्राक्तो अपाक्तो अधरात् उदक्तो,
अभि जहि रक्षसः पर्वतेन।।19।।
2125. एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव,

इन्द्रम् दिप्सन्ति दिप्सवो अदाभ्यम्।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधम् नूनम्,
सृजत् अशनिम् यातुमत्भ्यः।।20।।
2126. इन्द्रो यातूनाम् अभवत् पराशरो,
हविर्मथीनाम् अभि आविवासताम्।
अभि इत् उ शक्रो परशुः यथा वनम्,
पात्रेव भिन्दन् सत एतु रक्षसः।।21।।
2127. उलूकयातुम् शुशुलूकयातुम्,
जहि श्वयातुम् उत कोकयातुम्।
सुपर्णायातुम् उत गृधयातुम्,
दृषदा इव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।22।।
2128. मा नो रक्षो अभि नड् यातुमावत,
अप उच्छन्तु मिथुनाः ये किमीदिनः।
पृथिवी नः पार्थिवात् पातु अंहसो,
अन्तरिक्षम् दिव्यात् पातु अस्मान्।।23।।
2129. इन्द्र जहि पुमांसम् यातुधानम्,
उत् स्त्रियम् मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासः मूरदेवा ऋदन्तु,
मा ते दृशन् सूर्यम् उत् चरन्तम्।।24।।
2130. प्रति चक्ष्व वि चक्ष्व, इन्द्रः च सोम जागृतम्।
रक्षोभ्यो वधम् अस्यतम्, अशनिम् यातु मद्भ्यः।।25।।

तृतीयो अनुवाकः

प्रतिसरमणि सूक्त 5

2131. अयम् प्रतिसरो मणिः, वीरो वीराय बध्यते।
वीर्यवान् सपत्नहा शूरवीरः, परिपाणः सुमङ्गलः।।1।।
2132. अयम् मणिः सपत्नहा सुवीरः,
सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
प्रत्यक् कृत्या दूषयन् एति वीरः।।2।।
2133. अनेन इन्द्रो मणिना वृत्रम् अहन्,
अनेन असुरान् परा अभावयत् मनीषी।
अनेन अजयत् द्यावापृथिवी उभे इमे,
अनेन अजयत् प्रदिशोः चतस्रः।3।
2134. अयम् स्राक्त्यो मणिः, प्रतीवर्तः प्रतिसरो।
ओजस्वान् विमृधो वशी सो, अस्मान् पातु सर्वतः।।4।।
2135. तत् अग्निः आह तत् उ सोम आह,
बृहस्पतिः सविता तत् इन्द्रः।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः,
कृत्याः प्रतिसरैः अजन्तु।।5।।
2136. अन्तः दधे द्यावापृथिवी, उत अहः उत सूर्यम्।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः, कृत्या प्रतिसरैः अजन्तु।।6।।
2137. ये स्राक्त्यम् मणिम्, जना वर्माणि कृण्वते।
सूर्य इव दिवम् आरुह्य, वि कृत्या बाधते वशी।।7।।
2138. स्राक्त्येन मणिना, ऋषिणेव मनीषिणा।
अजैषम् सर्वाः पृतना, वि मृधो हन्म रक्षसः।।8।।
2139. याः कृत्याः आङ्गिरसीः, याः कृत्याः आसुरीः,
याः कृत्याः स्वयंकृता, या उ च अन्येभिः आभृताः।
उभयीः ताः परा यन्तु परावतो, नवतिम् नाव्या अति।।9।।
2140. अस्मै मणिम् वर्म बध्नन्तु देवा,
इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः।
प्रजापतिः परमेष्ठी विराड्, वैश्वानरः ऋषयः च सर्वे।।10।।
2141. उत्तमो असि ओषधीनाम् अनड्वान्,
जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव।
यम् ऐच्छाम् अविदाम, तम् प्रतिस्पाशनम् अन्तितम्।।11।।
2142. स इत् व्याघ्रो भवति, अथो सिंहो अथो वृषा।
अथो सपत्नकर्शनो, यो बिभर्ति इमम् मणिम्।।12।।
2143. न एनम् घ्नन्ति अप्सरसो, न गन्धर्वा न मर्त्याः।
सर्वा दिशो वि राजति, यो बिभर्ति इमम् मणिम्।।13।।
2144. कश्यपः त्वाम् असृजत, कश्यपः त्वा सम् ऐरयत्।
अबिभः त्वा इन्द्रो मानुषे, बिभ्रत् संश्रेषिणे अजयत्।
मणिम् सहस्र वीर्यम्, वर्म देवा अकृण्वत।।14।।
2145. यः त्वा कृत्याभिः यः त्वा दीक्षाभिः,
यज्ञैः यः त्वा जिघांसति।
प्रत्यक् त्वम इन्द्र तम्, जहि वज्रेण शतपर्वणा।।15।।
2146. अयम् इत् वै प्रतिवर्तः, ओजस्वान् संजयोः मणिः।
प्रजाम् धनम् च रक्षतुः, परिपाणः सुमङ्गलः।।16।।
2147. असपत्नम् नो अधरात्, असपत्नम् न उत्तरात्।
इन्द्र असपत्नम् नः पश्चात्, ज्योतिः शूर पुरः कृधि।।17।।
2148. वर्म मे द्यावापृथिवी, वर्म अहः वर्म सूर्यः।
वर्म म इन्द्रः च अग्निः च, वर्म धाता दधातु मे।।18।।
2149. ऐन्द्राग्नम् वर्म बहुलम् यत् उग्रम्,
विश्वे देवा न अतिविध्यन्ति सर्वे।
तत् मे तन्वम् त्रायताम् सर्वतो बृहत्,
आयुष्मान् जरदष्टिः यथा असानि।।19।।
2150. आ मा अरुक्षत् देवमणिः, मह्यै अरिष्टतातये।
इमम् मेथिम् अभिसंविशध्वम्,
तनूपानम् त्रिवरूथम् ओजसे।।20।।
2151. अस्मिन् इन्द्रो नि दधातु नृम्णम्,
इमम् देवासो अभिसंविशध्वम्।
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय,
आयुष्मान् जरदष्टिः यथा असत्।।21।।
2152. स्वस्तिदा विशाम् पतिः, वृत्रहा विमृधः वशी।
इन्द्रो बध्नातु ते मणिम् जिगीवान् अपराजितः,
सोमपा अभयम् करो वृषा।
स त्वा रक्षतु सर्वतो, दिवा नक्तम् च विश्वतः।।22।।

गर्भदोषनिवारण सूक्त 6

2153. यौ ते माता उत्ममार्ज, जाताया पतिवेदनौ।
दुर्णामा तत्र मा गृधत्, अलिंश उत वत्सपः।।1।।
2154. पलालानुपलालौ शर्कुम्,
कोकम् मलिम्लुचम् पलीजकम्।
आश्रेषम् वव्रिवाससम्, ऋक्ष ग्रीवम् प्रमीलिनम्।।2।।
2155. मा सम् वृतो मा उप सृप,
ऊरू मा अव सृपो अन्तरा।
कृणोमि अस्यै भेषजम्, बजम् दुर्णामचातनम्।।3।।
2156. दुर्णामा च सुनामा, उभा सम्वृतम् इच्छतः।
अरायान् अप हन्मः सुनामा, स्त्रैणम् इच्छताम्।।4।।
2157. यः कृष्णः केशी असुर, स्तम्बज उत तुण्डिकः।
अरायान् अस्या मुष्काभ्याम्, भंससो अप हन्मसि।।5।।
2158. अनुजिघ्रमम् प्रमृशन्तम्, क्रव्यादम् उत रेरिहम्।
अरायान् श्वकिष्किणो, बजः पिङ्गो अनीनशत्।।6।।
2159. यः त्वा स्वप्ने निपद्यते, भ्राता भूत्वा पितेव च।
बजः तान् सहताम् इतः, क्लीब रूपान् तिरीटिनः।।7।।
2160. यः त्वा स्वपन्तीम् त्सरति,
यः त्वा दिप्सति जाग्रतीम्।
छायामिव प्र तान् सूर्यः, परिक्रामन् अनीनशत्।।8।।
2161. यः कृणोति मृतवत्साम्,
अवतोकाम् इमाम् स्त्रियम्।
तम् ओषधे त्वम् नाशय, अस्याः कमलम् अञ्जिवम्।।9।।
2162. ये शालाः परिनृत्यन्ति, सायम् गर्दभनादिनः।
कुसूला ये च कुक्षिलाः, ककुभाः करुमाः स्रिमाः।
तान् ओषधे त्वम् गन्धेन, विषूचीनान् वि नाशय।।10।।
2163. ये कुकुन्धाः कुकूरभाः, कृत्तीः दूर्शानि बिभ्रति।
क्लीबा इव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते,
घोषम् तान् इतो नाशयामसि।11।
2164. ये सूर्यम् न तितिक्षन्त, आतपन्तम् अमुम् दिवः।
अरायान् बस्तवासिनो दुर्गन्धीन्,
लोहित आस्यान् मककान् नाशयामसि।।12।।
2165. ये आत्मानम् अतिमात्रम्, अंस आधाय बिभ्रति।
स्त्राणाम् श्रोणिप्रतोदिन, इन्द्र रक्षांसि नाशय।।13।।
2166. ये पूर्वे वध्वो यन्ति, हस्ते शृङ्गाणि बिभ्रतः।
आपाकेष्ठाः प्रहासिन स्तम्भे ये कुर्वते,
ज्योतिः तान् इतो नाशयामसि।14
2167. येषाम् पश्चात् प्रपदानि, पुरः पार्ष्णीः पुरो मुखा।
खलजाः शकदूमजा उरुण्डा ये च,
मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः।
तान् अस्या ब्रह्मणः, पते प्रति बोधेन नाशय।।15।।
2168. पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा, अस्त्रैणाः सन्तु पण्डगाः।
अव भेषज पादय य इमाम्,
सम्विवृत्सति अपतिः स्वपतिम् स्त्रियम्।16
2169. उत्हर्षिणम् मुनिकेशम्, जम्भयन्तम् मरीमृशम्।
उपेषन्तम् उदुम्बलम्, तुण्डेलम् उत शालुडम्।
पदा प्र विध्य पार्ष्ण्या, स्थालीम् गौरिव स्पन्दना।।17।।
2170. यः ते गर्भम् प्रतिमृशात्, जातम् वा मारयाति ते।
पिङ्गः तम् उग्रधन्वा, कृणोतु हृदयाविधम्।।18।।
2171. ये अम्नो जातान् मारयन्ति, सूतिका अनुशेरते।
स्त्रीभागान् पिङ्गो गन्धर्वान्, वातो अभ्रमिव अजतु।।19।।
2172. परिसृष्टम् धारयतु, यत् हितम् मा अव पादि तत्।
गर्भम् त उग्रौ रक्षताम्, भेषजौ नीविभार्यौ।।20।।
2173. पवीनसात् तङ्गल्वात्, छायकात् उत नग्नकात्।
प्रजायै पत्ये त्वा पिङ्गः, परि पातु किमीदिनः।।21।।
2174. द्वि आस्यात् चतुरक्षात्, पञ्च पादात् अनङ्गुरेः।
वृन्तात् अभि प्रसर्पतः, परि पाहि वरीवृतात्।।22।।
2175. य आमम् मांसम् अदन्ति, पौरुषेयम् च ये क्रविः।
गर्भान् खादन्ति केशवाः, तान् इतो नाशयामसि।।23।।
2176. ये सूर्यात् परिसर्पन्ति, स्नुषेव श्वशुरात् अधि।
बजः च तेषाम् पिङ्गः च, हृदये अधि नि विध्यताम्।।24।।
2177. पिङ्ग रक्ष जायमानम्, मा पुमांसम् स्त्रियम् क्रन्।
आण्डादो गर्भान् मा दभन्, बाधस्व इतः किमीदिनः।।25।।
2178. अप्रजास्त्वम् मार्तवत्सम्,
आत् रोदम् अघम् आवयम्।
वृक्षादिव स्रजम् कृत्वा, अप्रिये प्रति मुञ्च तत्।।26।।

चतुर्थो अनुवाकः

ओषधि समूह सूक्त 7

2179. या बभ्रवो याः च, शुक्रा रोहिणीः उत पृश्नयः।
आसिक्नीः कृष्णा ओषधीः, सर्वा अच्छावदामसि।।1।।
2180. त्रायन्ताम् इमम् पुरुषम्, यक्ष्मात् देवेषितात् अधि।
यासाम् द्यौः पिता पृथिवी माता,
समुद्रो मूलम् वीरुधाम् बभूव।।2।।
2181. आपो अग्रम्, दिव्या ओषधयः।
ताः ते यक्ष्मम् एनस्यम्, अङ्गात्ङ्गात् अनीनशन्।।3।।
2182. प्रस्तृणती स्तम्बिनीः एकशुङ्गाः,
प्रतन्वतीः ओषधीः आ वदामि।
अंशुमतीः काण्डिनीः या विशाखा ह्वयामि,
ते वीरुधो वैश्वदेवीः उग्राः पुरुषजीवनीः।।4।।
2183. यत् वः सहः सहमाना, वीर्यम् यत् च वो बलम्।
तेन इमम् अस्मात् यक्ष्मात् पुरुषम्,
मुञ्चत ओषधीः अथो कृणोमि भेषजम्।।5।।
2184. जीवलाम् नघरिषाम्, जीवन्तीम् ओषधीम् अहम्।

अरुन्धतीम् उत्नयन्तीम् पुष्पाम्,
मधुमतीम् इह हुवे अस्मै अरिष्टतातये।।6।।
2185. इह आ यन्तु प्रचेतसो, मेदिनीः वर्चसो मम।
यथा इमम् पारयामसि, पुरुषम् दुरितात् अधि।।7।।
2186. अग्नेः घासो अपाम् गर्भो, या रोहन्ति पुनर्णवाः।
ध्रुवाः सहस्रनाम्नीः, भेषजीः सन्तु आभृताः।।8।।
2187. अवकोल्बा उदकात्मन ओषधयः।
वि ऋषन्तु दुरितम्, तीक्ष्ण शृङ्ग्यः।।9।।
2188. उत्मुञ्चन्तीः विवरुणा, उग्रा या विषदूषणीः।
अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीः च,
याः ता इह आ यन्तु ओषधीः।10।
2189. अपक्रीताः सहीयसीः, वीरुधो या अभिष्टुताः।
त्रायन्ताम् अस्मिन् ग्रामे, गाम् अश्वम् पुरुषम् पशुम्।।11।।
2190. मधुमत् मूलम् मधुमत् अग्रम् आसाम्,
मधुमत् मध्यम् वीरुधाम् बभूव।
मधुमत् पर्णम् मधुमत् पुष्पम् आसाम्,
मधोः सम्भक्ता अमृतस्य भक्षो घृतम्,
अन्नम् दुह्रताम् गोपुरोगवम्।।12।।
2191. यावतीः कियतीः च इमाः,
पृथिव्याम् अधि ओषधीः।
ता मा सहस्रपर्ण्यो, मृत्योः मुञ्चन्तु अंहसः।।13।।
2192. वैयाघ्रो मणिः वीरुधाम, त्रायमाणो अभिशस्तिपाः।
अमीवाः सर्वा रक्षांसि, अप हन्तु अधि दूरम् अस्मत्।।14।।
2193. सिंहस्येव स्तनथोः सम् विजन्ते,
अग्नेरिव विजन्त आभृताभ्यः।
गवाम् यक्ष्मः पुरुषाणाम् वीरुत्भिः,
अतिनुत्तो नाव्या एतु स्रोत्याः।।15।।
2194. मुमुचानाः ओषधयो, अग्नेः वैश्वानरात् अधि।
भूमिम् सम्तन्वतीः, इत यासाम् राजा वनस्पतिः।।16।।
2195. या रोहन्ति आङ्गिरसीः, पर्वतेषु समेषु च।
ता नः पयस्वतीः शिवा, ओषधीः सन्तु शम् हृदे।।17।।
2196. याः च अहम् वेद वीरुधो, याः च पश्यामि चक्षुषा।
अज्ञाता जानीमः च या यासु, विद्म च सम्भृतम्।।18।।
2197. सर्वा समग्रा ओषधीः, बोधन्तु वचसो मम।
यथा इमम् पारयामसि, पुरुषम् दुरितात् अधि।।19।।
2198. अश्वत्थो दर्भो वीरुधाम्, सोमो राजा अमृतम् हवि।
व्रीहिः यवः च भेषजौ, दिवः पुत्रौ अमर्त्यौ।।20।।
2199. उत् जिहीध्वे स्तनयति, अभिक्रन्दति ओषधीः।
यदा वः पृश्निमातरः, पर्जन्यो रेतसा अवति।।21।।
2200. तस्य अमृतस्य इमम् बलम्, पुरुषम् पाययामसि।
अथो कृणोमि भेषजम्, यथा असत् शतहायनः।।22।।
2201. वराहो वेद वीरुधम्, नकुलः वेद भेषजीम्।
सर्पा गन्धर्वा या विदुः, ता अस्मा अवसे हुवे।।23।।
2202. याः सुपर्णा आङ्गिरसीः, दिव्या या रघटो विदुः।
वयांसि हंसा या विदुः, या च सर्वे पतत्रिणः।
मृगा या विदुः ओषधीः, ता अस्मा अवसे हुवे।।24।।
2203. यावतीनाम् ओषधीनाम् गावः,
प्र अश्नन्ति अघ्नया यावतीनाम् अजावयः।
तावतीः तुभ्यम् ओषधीः, शर्म यच्छन्तु आभृताः।।25।।
2204. यावतीषु मनुष्या, भेषजम् भिषजो विदुः।
तावतीः विश्वभेषजीः, आ भरामि त्वाम् अभि।।26।।
2205. पुष्पवतीः प्रसूमतीः, फलिनीः अफला उत।
संमातर इव दुह्राम, अस्मा अरिष्टतातये।।27।।
2206. उत त्वा अहार्षम् पञ्चशलात्, अथो दशशलात् उत।
अथो यमस्य पड्वीशात्, विश्वस्मात् देव किल्बिषात्।।28।।

शत्रु-पराजय सूक्त 8

2207. इन्द्रो मन्थतु मन्थिता, शक्रः शूरः पुरंदरः।
यथा हनाम सेना, अमित्राणाम् सहस्रशः।।1।।
2208. पूतिरज्जुः उपध्मानी, पूतिम् सेनाम् कृणोतु अमूम्।
धूमम् अग्निम् परादृश्य अमित्रा,
हृत्सु आ दधताम् भयम्।।2।।
2209. अमून् अश्वत्थ निः शृणीहि,
खाद अमूम् खदिर अजिरम्।
ताजभ्दङ्ग इव भज्यन्ताम्, हन्तु एनान् वधको वधैः।।3।।
2210. पुरषान् अमून् परुषाह्वः,
कृणोतु हन्तु एनान् वधको वधैः।
क्षिप्रम् शर इव भज्यन्ताम्, बृहत्जालेन संदिताः।।4।।
2211. अन्तरिक्षम् जालम् आसीत्, जालदण्डा दिशो महीः।
तेन अभिधाय दस्यूनाम्, शक्रः सेनाम् अप अवपत्।।5।।
2212. बृहत् हि जालम्, बृहतः शक्रस्य वाजिनीवतः।
तेन शत्रून् अभि सर्वान् नि उब्ज यथा,
न मुच्यातै कतमः चन एषाम्।।6।।
2213. बृहत् ते जालम् बृहत इन्द्र,
शूर सहस्रार्घस्य शतवीर्यस्य।
तेन शतम् सहस्रम् अयुतम् न्यर्बुदम्,
जघान शक्रो दस्यूनाम् अभिधाय सेनया।।7।।
2214. अयम् लोको जालम् आसीत्, शक्रस्य महतो महान्।
तेन अयम् इन्द्रजालेन अमून्,
तमसा अभि दधामि सर्वान्।।8।।
2215. सेदिः उग्रा व्यृद्धिः, आर्तिः च अनपवाचना।
श्रमः तन्द्रीः च मोहः च,
तैः अमूम् अभि दधामि सर्वान्।।9।।
2216. मृत्यवे अमून् प्र यच्छामि, मृत्युपाशैः अमी सिताः।
मृत्योः ये अघला दूताः,
तेभ्य एनान् प्रति नयामि बद्ध्वा।।10।।

2217. नयत अमून् मृत्युदूता, यमदूता अप उम्भत।
परः-सहस्रा हन्यन्ताम् तृणेढु, एनान् मत्यम् भवस्य।।11।।
2218. साध्या एकम् जालदण्डम्, उत्यत्य यन्ति ओजसा।
रुद्रा एकम् वस एकम्, आदित्यैः एक उत् यतः।।12।।
2219. विश्वे देवा उपरिष्टात्, उब्जन्तो यन्तु ओजसा।
मध्येन घ्नन्तो यन्तु, सेनाम् अङ्गिरसो महीम्।।13।।
2220. वनस्पतीन् वानस्पत्यान्, ओषधीः उत वीरुधः।
द्विपात् चतुष्पात् इष्णामि,
यथा सेनाम् अमूम् हनन्।।14।।
2221. गन्धर्वाप्सरसः सर्पान्, देवान् पुण्यजजान् पितृन्।
दृष्टान् अदृष्टान् इष्णामि, यथा सेनाम् अमूम् हनन्।।15।।
2222. इम उप्ता मृत्युपाशा, यान् आक्रम्य न मुच्यसे।
अमुष्या हन्तु सेनाया, इदम् कूटम् सहस्रशः।।16।।
2223. घर्मः समिद्धो अग्निना, अयम् होमः सहस्रहः।
भवः च पृश्निबाहुः च, शर्व सेनाम् अमूम् हतम्।।17।।
2224. मृत्योः आषम् आ पद्यन्ताम्,
क्षुधम् सेदिम् वधम् भयम्।
इन्द्रः च अक्षु जालाभ्याम्, शर्व सेनाम् अमूम् हतम्।।18।।
2225. पराजिताः प्र त्रसत अमित्रा, नुत्ता धावत ब्रह्मणा।
बृहस्पतिप्रनुत्तानाम्, मा अमीषाम् मोचि कः चन।।19।।
2226. अव पद्यन्ताम् एषाम्,
आयुधानि मा शकन् प्रतिधाम् इषुम्।
अथ एषाम् बहु बिभ्यताम्, इषवो घ्नन्तु मर्मणि।।20।।
2227. सम् क्रोशताम् एनान् द्यावापृथिवी,
सम् अन्तरिक्षम् सह देवताभिः।
मा ज्ञातारम् मा प्रतिष्ठाम् विदन्त मिथो,
विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम्।।21।।
2228. दिशः चतस्रः अश्वतर्यो देव रथस्य,
पुरोडाशाः शफा अन्तरिक्षम् उद्धिः।
द्यावापृथिवी पक्षसी ऋतवो अभीशवो,
अन्तः देशाः किम् करा वाक् परि रथ्यम्।।22।।
2229. सम्वत्सरो रथः परिवत्सरो,
रथोपस्थो विराड् ईषा अग्नी रथमुखम्।
इन्द्रः सव्यष्ठाः चन्द्रमाः सारथिः।।23।।
2230. इतो जय इतो वि जय, सम् जय जय स्वाहा।
इमे जयन्तु परा अमी जयन्ताम्,
स्वाहा एभ्यो दुराहा अमीभ्यः।
नीललोहितेन अमून् अभि अवतनोमि।।24।।

पञ्चमो अनुवाकः

विराट् सूक्त 9

2231. कुतः तौ जातौ कतमः सो अर्धः,
कस्मात् लोकात् कतमस्याः पृथिव्याः।
वत्सौ विराजः सलिलात् उत् ऐताम्,
तौ त्वा पृच्छामि कतरेण दुग्धा।1।
2232. यो अक्रन्दयत् सलिलम् महित्वा,
योनिम् कृत्वा त्रिभुजम् शयानः।
वत्सः कामदुघो विराजः, स गुहा चक्रे तन्वः पराचैः।।2।।
2233. यानि त्रीणि बृहन्ति येषाम्,
चतुर्थम् वियुनक्ति वाचम्।
ब्रह्मा एनत् विद्यात् तपसा विपश्चित्,
यस्मिन् एकम् युज्यते यस्मिन् एकम्।।3।।
2234. बृहतः परिसामानि, पष्ठात् पञ्च अधि निर्मिता।
बृहत् बृहत्या निर्मितम्, कुतो अधि बृहती मिता।।4।।
2235. बृहती परि मात्राया, मातुः मात्रा अधि निर्मिता।
माया ह जज्ञे मायाया, मायाया मातली परि।।5।।
2236. वैश्वानरस्य प्रतिमा उपरि द्यौः,
यावत् रोदसी विबबाधे अग्निः।
ततः षष्टात् आ अमुतो यन्ति स्तोमा,
उत् इतो यन्ति अभि षष्ठम् अह्नः।।6।।
2237. षट् त्वा पृच्छाम ऋषयः कश्यप इमे,
त्वम् हि युक्चम् युयुक्षे योग्यम् च।
विराजम् आहुः ब्रह्मणः पितरम् ताम्,
नो वि धेहि यतिधा सखिभ्यः।।7।।
2238. याम् प्रच्युताम् अनु यज्ञाः प्रच्यवन्ते,
उपतिष्ठन्त उपतिष्ठमानाम्।
यस्या व्रते प्रसवे यक्षम् एजति,
सा विराट् ऋषयः परमे व्योमन्।।8।।
2239. अप्राणा एति प्राणेन प्राणतीनाम्,
विराट् स्वराजम् अभि एति पश्चात्।
विश्वम् मृशन्तीम् अभिरूपाम् विराजम्,
पश्यन्ति त्वे न त्वे पश्यन्ति एनाम्।।9।।
2240. को विराजो मिथुनत्वम् प्र वेद,
क ऋतून् क उ कल्पम् अस्याः।
क्रमान् को अस्याः कतिधा विदुग्धान्,
को अस्या धाम कतिधा व्युष्टीः ।।10।।
2241. इयम् एव सा या प्रथमा व्यौच्छत्,
आसु इतरासु चरति प्रविष्टा।
महान्तो अस्याम् महिमानो अन्तः,
वधूः जिगाय नवगत् जनित्री।।11।।
2242. छन्दःपक्षे उषसा पेपिशाने,
समानम् योनिम् अनु सम् चरेते।
सूर्यपत्नी सम् चरतः प्रजानतीः,
केतुमती अजरे भूरिरेतसा।।12।।
2243. ऋतस्य पन्थाम् अनु तिस्र आ अगुः,
त्रयो घर्मा अनु रेत आ अगुः।

प्रजाम् एका जिन्वति ऊर्जम् एका,
राष्ट्रम् एका रक्षति देवयूनाम्।।13।।
2244. अग्नीषोमौ अदधुः या तुरीया आसीत्,
यज्ञस्य पक्षौ ऋषयः कल्पयन्तः।
गायत्रीम् त्रिष्टुभम् जगतीम् अनुष्टुभम्,
बृहदर्कीम् यजमानाय स्वः आभरन्तीम्।।14।।
2245. पञ्च व्युष्टीः अनु पञ्च दोहा गाम्,
पञ्चनाम्नीम् ऋतवो अनु पञ्च।
पञ्च दिशः पञ्चदशेन क्लृप्ताः,
ता एकमूर्ध्नीः अभि लोकम् एकम्।15।
2246. षड् जाता भूता प्रथमज,
ऋतस्य षट् सामानि षडहम् वहन्ति।
षड्योगम् सीरम् अनु सामसाम,
षड् आहुः द्यावा पृथिवीः षट् उर्वीः।16।
2247. षड् आहुः शीतान् षड् उ मास उष्णान्,
ऋतम् नो ब्रूत यतमो अतिरिक्तः।
सप्त सुपर्णाः कवयो नि षेदुः,
सप्त छन्दांसि अनु सप्त दीक्षाः।।17।।
2248. सप्त होमाः समिधो ह सप्त,
मधूनि सप्त ऋतवो ह सप्त।
सप्त आज्यानि परि भूतम् आयन्,
ताः सप्तगृध्रा इति शुश्रुम् आ वयम्।18।
2249. सप्त छन्दांसि चतुरुत्तराणि,
अन्यो अन्यस्मिन् अधि अर्पितानि।
कथम् स्तोमाः प्रति तिष्ठन्ति तेषु,
तानि स्तोमेषु कथम् अर्पितानि।19।
2250.कथम् गायत्री त्रिवृतम् वि आप,
कथम् त्रिष्टुप् पञ्चदशेन कल्पते।
त्रयस्त्रिंशेन जगती कथम्, अनुष्टुप् कथम् एकविंशः।।20।।
2251. अष्ट जाता भूता प्रथमज ऋतस्य,
अष्ट इन्द्र ऋत्विजो दैव्या ये।
अष्टयोनिः अदितिः अष्टपुत्रा,
अष्टमीम् रात्रिम् अभि हव्यम् एति।।21।।
2252. इत्थम् श्रेयो मन्यमाना इदम् आ अगमम्,
युष्माकम् सख्ये अहम् अस्मि शेवा।
समानजन्मा क्रतुः अस्ति वः शिवः,
स वः सर्वा सम् चरति प्रजानन् ।।22।।
2253. अष्ट इन्द्रस्य षड् यमस्य,
ऋषीणाम् सप्त सप्त-धा।
अपो मनुष्यान् ओषधीः, तान् उ पञ्च अनु सेचिरे।।23।।
2254. केवली इन्द्राय दुदुहे हि गृष्टिः,
वशम् पीयूषम् प्रथमम् दुहाना।
अथ अतर्पयत् चतुरः चतुर्धा,
देवान् मनुष्यान् असुरान् उत ऋषीन्।24।
2255. को नु गौः क एकऋषिः,
किम् उ धाम का आशिषः।
यक्षम् पृथिव्याम् एकवृत्, एकऋतुः कतमो नु सः।।25।।
2256. एको गौः एक एकऋषिः,
एकम् धाम् एकधा आशिषः।
यक्षम् पृथिव्याम् एकवृत्, एकर्तु न अति रिच्यते।।26।।

विराट् सूक्त 10

2257. विराड् वा इदम् अग्र आसीत्,
तस्या जाताय सर्वम् अबिभेत्,
इयम् एव इदम् भविष्यति इति।।1।।
2258. सा उत् अक्रामत्, सा गार्हपत्ये नि अक्रामत्।।2।।
2259. गृहमेधी गृहपतिः, भवति य एवम् वेद।।3।।
2260. सा उत् अक्रामत्,
सा आ हवनीये नि अक्रामत्।।4।।
2261. यन्ति अस्य देवा देहहूतिम्,
प्रियो देवानाम् भवति य एवम् वेद।।5।।
2262. सा उत् अक्रामत्,
सा दक्षिण अग्नौ नि अक्रामत्।।6।।
2263. यज्ञर्तो दक्षिणीयो, वासतेयो भवति।।7।।
2264. सा उत् अक्रामत्, सा सभायाम् नि अक्रामत्।।8।।
2265. यन्ति अस्य सभाम् सभ्यो,
भवति य एवम् वेद।।9।।
2266. सा उत् अक्रामत्, सा समितौ नि अक्रामत्।।10।।
2267. यन्ति अस्य समितिम् सामित्यो,
भवति य एव एवम् वेद।11।
2268. सा उत् अक्रामत्,
सा आ मन्त्रणे नि अक्रामत्।।12।।
2269. यन्ति अस्य आमन्त्रणम् आमन्त्रणीयो,
भवति य एवम् वेद।।13।।

विराट् सूक्त 11

2270. सा उत् अक्रामत् सा अन्तरिक्षे,
चतुर्धा विक्रान्ता अतिष्ठत्।।1।।
2271. ताम् देवमनुष्या अब्रुवन् इयम् एव,
तत् वेद यत् उभय उपजीवेम,
इमाम् उप ह्वयामहा इति।।2।।
2272. ताम् उप अह्वयन्त।।3।।
2273. ऊर्ज आ इहि स्वध इहि सूनृत,
आ इहि इरावति आ इहि इति।।4।।
2274. तस्या इन्द्रो वत्स आसीत्,
गायत्री अभिधानी अभ्रम् ऊधः।।5।।
2275. बृहत् च रथम्तरम् च द्वौ स्तनौ आस्ताम्,

यज्ञाययज्ञियम् च वाम्देव्यम् च द्वौ।।6।।
2276. ओषधीः एव रथम्तरेण,
देवा अदुह्रन् व्यचो बृहता।।7।।
2277. अपो वामदेव्येन, यज्ञम् यज्ञायज्ञियेन।।8।।
2278. ओषधीः एव अस्मै, रथम्तरम् दुहे व्यचो बृहत्।।9।।
2279. अपो वामदेव्यम् यज्ञम्,
यज्ञायज्ञियम् य एवम् वेद।।10।।

विराट् सूक्त 12

2280. सा उत् अक्रामत्, सा वनस्पतीन् आ अगच्छत्,
ताम् वनस्पतयो अघ्नत, सा सम् वत्सरे सम् अभवत्।।1।।
2281. तस्मात् वनस्पतीनाम् सम्वत्सरे,
वृक्णम् अपि रोहति वृश्चते अस्य,
अप्रियो भ्रातृव्यो य एवम् वेद।।2।।
2282. सा उत् अक्रामत् सा पितृन् आ अगच्छत्,
ताम् पितरो अघ्नत सा मासि सम् अभवत्।।3।।
2283. तस्मात् पितृभ्यो मासि उपमास्यम् ददति,
प्र पितृयाणम् पन्थाम् जानाति य एवम् वेद।।4।।
2284. सा उत् अक्रामत सा देवान् आ अगच्छत्,
ताम् देवा अघ्नत सा अर्धमासे सम्।।5।।
2285. तस्मात् देवेभ्यो अर्धमासे वषट् कुर्वन्ति,
प्र देवयानम् पन्थाम् जानाति य एवम् वेद।।6।।
2286. सा उत् अक्रामत् सा मनुष्यान् आ अगच्छत्,
ताम् मनुष्या अघ्नत सा सद्यः सम् अभवत्।।7।।
2287. तस्मात् मनुष्येभ्य उभयद्युः उप हरन्ति,
उप अस्य गृहे हरन्ति य एवम् वेद।।8।।

विराट् सूक्त 13

2288. सा उत् अक्रामत् सा असुरान् आ अगच्छत्,
ताम् असुरा उप अह्वयन्त माय आ इहि इति।।1।।
2289. तस्या विरोचनः प्राह्रदिः वत्स आसीत्,
अयस्पात्रम् पात्रम्।।2।।
2290. ताम् द्विमूर्धा अत्व्यों अधोक्,
ताम् मायाम् एव अधोक्।।3।।
2291. ताम् मायाम् असुरा उप जीवन्ति,
उपजीवनीयो भवति य एवम् वेद।।4।।
2292. सा उत् अक्रामत् सा पितृन् आ अगच्छत्,
ताम् पितर उप अह्वयन्त स्वधे आ इहि।।5।।
2293. तस्या यमो राजा वत्स आसीत्,
रजतपात्रम् पात्रम्।।6।।
2294. ताम् अन्तको मार्त्यवो अधोक्,
ताम् स्वधाम् एव अधोक्।।7।।
2295. ताम् स्वधाम् पितर उप जीवन्ति,
उपजीवनीयो भवति य एवम् वेद।।8।।
2296. सा उत् अक्रामत्, सा मनुष्यान् आ अगच्छत्,
ताम् मनुष्या उप अह्वयन्त, इरावती आ इहि इति।।9।।
2297. तस्या मनुः वैवस्वतो,
वत्स आसीत् पृथिवी पात्रम्।।10।।
2298. ताम् पृथी वैन्यो अधोक्,
ताम् कृषिम् च सस्यम् च अधोक्।।11।।
2299. ते कृषिम् च सस्यम् च, मनुष्या उप जीवन्ति,
कृष्टराधिः उपजीवनीयो, भवति य एवम् वेद।।12।।
2300. सा उत अक्रामत्, सा सप्तऋषीन् आ अगच्छत्,
ताम् सप्तऋषय उप अह्वयन्त,
ब्रह्मण्वति आ इहि इति।।13।।
2301. तस्याः सोमो राजा,
वत्स आसीत् छन्दः पात्रम्।।14।।
2302. ताम् बृहस्पतिः आङ्गिरसो अधोक्,
ताम् ब्रह्म च तपः च अधोक् ।।15।।
2303. तत् ब्रह्म च तपः च,
सप्तऋषय उप जीवन्ति ब्रह्मवर्चसी,
उप जीवनीयो भवति य एवम् वेद।।16।।

विराट् सूक्त 14

2304. सा उत् अक्रामत्, सा देवान् आ अगच्छत्,
ताम् देवा उप अह्वयन्त, ऊर्ज आ इहि इति।।1।।
2305. तस्या इन्द्रो वत्स आसीत्, चमसः पात्रम्।।2।।
2306. ताम् देवः सविता अधोक्,
ताम् ऊर्जाम् एव अधोक्।।3।।
2307. ताम् ऊर्जाम् देवा उप जीवन्ति,
उपजीवनीयो भवति य एवम् वेद ।।4।।
2308. सा उत् अक्रामत्, सा गन्धर्वाप्सरस आ अगच्छत्,
ताम् गन्धर्व अप्सरस उप अह्वयन्त,
पुण्यगन्धे आ इहि।।5।।
2309. तास्याः चित्ररथः सौर्यवर्चसो,
वत्स आसीत् पुष्कर पर्मम् पात्रम्।।6।।
2310. ताम् वसुरुचिः सौर्यवर्चसो अधोक्,
ताम् पुण्यम् एव गन्धम् अधोक्।।7।।
2311. तम् पुण्यम् गन्धम् गन्धर्वाप्सरस,
उप जीवन्ति पुण्यगन्धि,
उपजीवनीयो भवति य एवम् वेद।।8।।
2312. सा उत् अक्राम्त सा इतर जनान् आ अगच्छत्,
ताम् इतरजना उप अह्वयन्त तिरोध आ इहि इति।।9।।
2313. तस्याः कुबेरो वैश्रवणो,
वत्स आसीत् आमपात्रम् पात्रम्।।10।।
2314. ताम् रजतनाभिः काबेरको अधोक्,
ताम् तिरोधाम् एव अधोक्।।11।।

2315. ताम् तिरोधाम् इतरजना उप जीवन्ति तिरो धत्ते,
सर्वम् पाप्मानम् उपजीवनीयो भवति य एवम् वेद।।12।।
2316. सा उत् अक्रामत् सा सर्पान् आ अगच्छत्,
ताम् सर्पा उप अह्वयन्त विषवति आ इहि इति।।13।।
2317. तस्याः तक्षको वैशालेयो वत्स आसीत्,
अलाबुपात्रम् पात्रम्।14।
2318. ताम् धृतराष्ट्र ऐरावतो अधोक्,
ताम् विषम् एव अधोक्।।15।।
2319. तत् विषम् सर्पा उप जीवन्ति,
उपजीवनीयो भवति एवम् वेद।।16।।

विराट् सूक्त 15

2320. तत् यस्मा एवम् विदुषे अलाबुना,
अभिसिञ्चेत् प्रत्याहन्यात्।।1।।
2321. न च प्रत्याहन्यात् मनसा,
त्वा प्रत्याहन्मि इति प्रत्याहन्यात्।।2।।
2322. यत् प्रत्याहन्ति विषम्, एव तत् प्रत्याहन्ति।।3।।
2323. विषम् एव अस्य अप्रियम्,
भ्रातृव्यम् अनुविसिच्यते,
य एवम् वेद।।4।।

अष्टमो काण्डः समाप्तः

ॐ

अथर्ववेद

एकादशम् काण्डम्

1- ब्रह्मौदन सूक्त

प्रथमो अनुवाकः

2987. अग्ने जायस्व अदितिः,
नाथिता इयम् ब्रह्मोदनम् पचति पुत्रकामा।
सप्तऋषयो भूतकृतः ते त्वा, मन्थन्तु प्रजया सह इह।1।
2988. कृणुत धूमम् वृषणः सखायो,
अद्रोघाविता वाचम् अच्छ।
अयम् अग्निः पृतनाषाट् सुवीरो,
येन देवा असहन्त दस्यून्।2।
2989. अग्ने अजनिष्ठा महते वीर्याय,
ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः।
सप्तऋषयो भूतकृतः त्वा अजीजनन्,
अस्यै रयिम् सर्ववीरम् नि यच्छ।3।
2990. समिद्धो अग्ने समिधा सम् इध्यस्व,
विद्वान् देवान् यज्ञियान् आ इह वक्षः।
तेभ्यो हविः श्रपयन् जातवेद,
उत्तम् नाकम् अधि रोहय इमम्।4।
2991. त्रेधा भागो निहितो यः पुरा,
वो देवानाम् पितृणाम् मर्त्यानाम्।
अंशान् जानीध्वम् वि भजामि तान्,
वो यो देवानाम् स इमाम् पारयति।5।
2992. अग्ने सहस्वान् अभिभूः अभी असि,
नीचो नि उब्ज द्विषतः सप्तनान्।
इयम् मात्रा मीयमाना मिता च,
सजातान् ते बलिहृतः कृणोतु।6।
2993. साकम् सजातैः पयसा सह एधि,
उत उब्ज एनाम् महते वीर्याय। ऊर्ध्वो।
नाकस्य अधि रोह विष्टपम्,
स्वर्गो लोक इति यम् वदन्ति।7।
2994. इयम् मही प्रति गृह्णातु चर्म,
पृथिवी देवी सुमनस्यमाना।
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्।8।
2995. एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि,
निः भिन्धि अंशून यजमानाय साधु।
अवघ्नती नि जहि य इमाम् पृतन्यव,
ऊर्ध्वम् प्रजाम् उद्भरन्ती उत् ऊह।9।
2996. गृहाण ग्रावाणौ सकृतौ वीर हस्त,
आ ते देवा यज्ञिया यज्ञम् अगुः।
त्रयो वराः यतमान् त्वम् वृणीषे,
ताः ते समृद्धीः इह राधयामि।10।
2997. इयम् ते धीतिः इदम् उ ते जनित्रम्,
गृह्णातु त्वाम् अदितिः शूरपुत्रा।
परा पुनीहि य इमाम् पृतन्यवो,
अस्यै रयिम् सर्ववीरम् नि यच्छ।11।
2998. उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयम्,
वि विच्यध्वम् यज्ञियासः तुषैः।
श्रिया समानान् अति सर्वान् स्याम,
अधस्पदम् द्विषतः पादयामि।12।
2999. परा इहि नारि पुनः आ इहि क्षिप्रम्,
अपाम् त्वा गोष्ठः अधि अरुक्षत् भराय।
तासाम् गृह्णीतात् यतमा यज्ञिया,
असन् विभाज्य धीरी इतरा जहीतात्।13।
3000. आ इमा अगुः योषितः शुम्भमाना,
उत् तिष्ठ नारि तवसम् रभस्व।

सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावती,
आ त्वा अगन् यज्ञः प्रति कुम्भम् गृभाय।14
3001. ऊर्जो भागो निहतो यः पुरा,
व ऋषिप्रशिष्टा अप आ भर एताः।
अयम् यज्ञो गातुवित् नाथवित् प्रजावित्,
उग्रः पशुवित् वीरवित् वो अस्तु।15
3002. अग्ने चरुः यज्ञियः त्वा अधि अरुक्षत्,
शुचिः तपिष्ठः तपसा तप एनम्।
आर्षेया दैवा अभिसंगत्य भागम्,
इमम् तपिष्ठा ऋतुभिः तपन्तु।16।
3003. शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया,
इमा आपः चरुम् अव सर्पन्तु शुभ्राः।
अदुः प्रजाम् बहुलान् पशून् नः पक्ता,
ओदनस्य सुकृताम् एतु लोकम्।17।
3004. ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन,
सोमस्य अंशवः तण्डुला यज्ञिया इमे।
अपः प्र विशत प्रति गृह्णातु वः,
चरु इमम् पक्त्वा सुकृताम् लोकम्।.18।
3005. उरु प्रथस्व महता महिम्ना,
सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोको।
पितामहाः पितरः प्रजा उपजा,
अहम् पक्ता पञ्चदशः ते अस्मि।19।
3006. सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो,
ब्रह्मौदनो देवयानः स्वर्गः।
अमून् त आ दधामि प्रजया रेषय एनान्,
बलिहाराय मृडतात् मह्यम् एव।20
3007. उदेहि वेदिम् प्रजया वर्धय एनाम्,
नुदस्व रक्षः प्रतरम् धेहि एनाम्,
श्रिया समानान् अति सर्वान्,
स्याम् अधस्पदम् द्विषतः पादयामि।21।
3008. अभ्यावर्तस्व पशुभिः सह एनाम्,
प्रत्यङ् एनाम् देवताभिः सह एधि।
मा त्वा प्र अपात् शपथो मा अभिचारः,
स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज।22।
3009. ऋतेन तष्टा मनसा हिता एषा,
ब्रह्मौदनस्य विहिता वेदिः अग्रे,
अंसद्रीम् शुद्धाम् उप धेहि नारि,
तत्र ओदनम् सादय दैवानम्।23।
3010. अदितेः हस्ताम् स्रुचम् एताम्,
द्वितायाम् सप्तऋषयो भूतकृतो याम् अकृण्वन्,
सा गात्राणि विदुषी ओदनस्य,
दर्विः वेद्याम् अधि एनम् चिनोतु।24।
3011. शृतम् त्वा हव्यम् उप सीदन्तु दैवा,
निःसृप्य अग्नेः पुनः एनान् प्र सीद।
सोमेन पूतो जठरे सीद ब्रह्मणाम्,
आर्षेयाः ते मा रिषन् प्राशितारः।25।
3012. सोम राजन् संज्ञानाम् आ वप एभ्यः,
सुब्राह्मणा यतमे त्वा उपसीदान्,
ऋषीन् आर्षेयान् तपसो अधि जातान्,
ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि।26।
3013. शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा,
ब्रह्मणाम् हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि,
यत्काम इदम् अभिषिञ्चामि वो अहम्,
इन्द्रो मरुत्वान् स ददात् इदम् में27
3014. इदम् मे ज्योतिः अमृतम् हिरण्यम्,
पक्वम् क्षेत्रात् कामदुधा म एषा।
इदम् धनम् नि दधे ब्राह्मणेषु,
कृण्वे पन्थाम् पितृषु यः स्वर्गः।28।
3015. अग्नौ तुषान् आ वप जातवेदसि,
परः कम्बूकान् अप मृड्ढि दूरम्।
एतम् शुश्रुम गृहराजस्य भागम्,
अथो विद्म निर्ऋतेः भागधेयम्।29।
3016. श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः,
पन्थाम् स्वर्गम् अधि रोहय एनम्।
येन रोहात् परम् आपद्य यद् वय,
उत्तमम् नाकम् परमम् व्योम।30।
3017. बभ्रेः अध्वर्यो मुखम् एतत् वि मृड्ढि,
आज्याज्याय लोकम् कृणुहि प्रविद्वान्।
घृतेन गात्रा अनु सर्वा वि मृड्ढि,
कृण्वे पन्थाम् पितृषु यः स्वर्गः।31।
3018. बभ्रे रक्षः समदम् आ वप एभ्यो,
अब्राह्मणा यतमे त्वा उपसीदान्।
पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तात्,
आर्षेयाः ते मा रिषन् प्राशितारः।32।
3019. आर्षेयेषु नि दध ओदन त्वा,
न अनार्षेयाणाम् अपि अस्ति अत्र।
अग्निः मे गोप्ता मरुतः च सर्वे,
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम्।33।
3020. यज्ञम् दुहानम् सदम् इत् प्रपीनम्,
पुमांसम् धेनुम् सदनम् रयीणाम्।
प्रजामृतत्वम् उत दीर्घम् आयु,
रायः च पोषैः उप त्वा सदेम।34।
3021. वृषभो असि स्वर्ग, ऋषीन् आर्षेयान् गच्छ।
सुकृताम् लोके सीद, तत्र नौ संस्कृतम्।35।
3022. समाचिनुष्व अनुसम्प्रयाहि,
अग्ने पथः कल्पय देवयानान्।

एतैः सुकृतैः अनु गच्छेम यज्ञम्,
नाके तिष्ठन्तम् अधि सप्तरश्मौ।36।
3023. येन देवा ज्योतिषा द्याम् उदायन्,
ब्रह्मौदनम् पक्त्वा सुकृतस्य लोकम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकम् स्वः,
आरोहन्तो अभि नाकम् उत्तमम्।37।

रुद्र सूक्त (सूक्तम् 2)

3024. भवाशर्वौ मृडतम् मा अभि यातम्,
भूतपति पशुपती नमो वाम्,
प्रतिहिताम् आयताम् मा वि स्राष्टम्,
मा नो हिसिष्टम् द्विपदो मा चतुष्पदः।1।
3025. शुने कोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तम्,
अलिक्लवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः।
मक्षिकाः ते पशुपते वयांसि, ते विधसे मा विदन्त।2।
3026. क्रन्दाय ते प्राणाय, याः च ते भव रोपयः।
नमस्ते रुद्र कृष्मः, सहस्राक्षाय अमर्त्य।3।
3027. पुरस्तात् ते नमः, उत्तरात् अधरात् उत।
अभिविर्गात् दिवः, परि अन्तरिक्षाय ते नमः।4।
3028. मुखाय ते पशुपते, यानि चक्षूंषि ते भव।
त्वचे रूपाय संदृशे, प्रतीचीनाय ते नमः।5।
3029. अङ्गेभ्यः त उदराय, जिह्वाया आस्याय ते।
दद्भ्यो गन्धाय ते नमः।6।
3030. अस्रा नीलशिखण्डेन, सहस्राक्षेण वाजिना।
रुद्रेण अर्धकघातिना, तेन मा सम् अरामहि।7।
3031.स नो भवः परि वृणक्तु विश्वत,
आप इव अग्निः परि वृणक्तु नो भवः।
मा नो अभि मांस्त, नमो अस्तु अस्मै।8।
3032. चतुः नमो अष्टकृत्वो भवाय,
दश कृत्वः पशुपते नमस्ते।
तव इमे पञ्च पशवो विभक्ता,
गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः।9।
3033. तव चतस्रः प्रदिशः द्यौः तव,
पृथिवी तव इदम् उग्र उरु अन्तरिक्षम्।
तवेदम् सर्वम् आत्मन्वत्, यत् प्राणत् पृथिवीम् अनु।10।
3034. उरु कोशो वसुधानः तव अयम् यस्मिन्,
इमा विश्वा भुवनानि अन्तः।
स नो मृड पशुपते नमः ते परः क्रोष्टारो,
अभिभाः श्वानः परो यन्तु अघरुदो विकेश्यः।11।
3035. धनुः बिभर्षि हरितम् हिरण्ययम्,
सहस्रधि शतवधम् शिखण्डिनम्।
रुद्रस्य इषुः चरति देवहेतिः,
अस्यै नमो यतमस्याम् दिशि इतः।12।
3036. यो अभियातो निलयते, त्वाम् रुद्र निचिकीर्षति।
पश्चात् अनु प्रयुङ्क्षे, तम् विद्धस्य पदनीरिव।13।
3037. भवारुद्रौ सयुजा संविदानौ, उग्रौ चरतो वीर्याय।
ताभ्याम् नमो, यतमस्याम् दिशि इतः।14।
3038. नमः ते अस्तु आयते, नमो अस्तु परायते।
नमः ते रुद्र तिष्ठत, आसीनाय उत ते नमः।15।
3039. नमः सायम् नमः प्रतः, नमो रात्र्या नमो दिवा।
भवाय च शर्वाय च, उभाभ्याम् अकरम् नमः।16।
3040. सहस्राक्षम् अतिपश्यम् पुरस्तात्
रुद्रम्, अस्यन्तम् बहुधा विपश्चितम्।
मा उप अराम जिह्वया ईयमानम्।17।
3041. श्यावाश्वम् कृष्णम् असितम् मृणन्तम्,
भीमम् रथम् केशिनः पादयन्तम्।
पूर्वे प्रति इमो नमो अस्तु अस्मै।18।
3042. मा नो अभि स्रा मत्यम् देवहेतिम्,
मा नः क्रुधः पशुपते नमः ते।
अन्यत्र अस्मत् दिव्याम्, शाखाम् वि धूनु।19।
3043. मा नो हिंसीः अधि नो ब्रूहि,
परि णो वृङ्ग्धि मा क्रुधः।
मा त्वया समरामहि।20।
3044. मा नो गोषु पुरुषेषु, मा गृधो नो अजाविषु।
अन्यत्र उग्र वि वर्तय, पियारूणाम् प्रजाम् जहि।21।
3045. यस्य तक्मा कासिका हेतिः एकम्,
अश्वस्येव वृषणः क्रन्द एति।
अभिपूर्वम् निर्णयते, नमो अस्तु अस्मै।22।
3046. यो अन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितो,
अयज्वनः प्रमृणन् देवपीयून्।
तस्मै नमो दशभिः शक्वरीभिः ।23।
3047.तुभ्यम् आरण्याः पशवो मृगा वने,
हिता हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि।
तव यक्षम् पशुपते अप्सु अन्तः,
तुभ्यम् क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे।24।
3048. शिशुमारा अजगराः पुरीकया जषा,
मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि।
न ते दूरम् न परिष्ठा अस्ति,
ते भव सद्यः सर्वान परि पश्यासि,
भूमिम् पूर्वस्मात् हंसि उत्तरस्मिन् समुद्रे।25।
3049. मा नो रुद्र तक्मना मा विषेण,
मा नः सम् स्रा दिव्येन अग्निना।
अन्यत्र अस्मत् विद्युतम् पातय एताम्।26।
3050. भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या,
भव आ पप्र उरु अन्तरिक्षम् ।
तस्मै नमो यतमस्याम् दिशि इतः।27।

3051. भव राजन् यजनमानाय,
मृड पशूनाम् हि पशुपतिः बभूथ।
यः श्रद्दघाति सन्ति देवा इत,
चतुष्पदे द्विपदे अस्य मृड।28।
3052. मा नो महान्तम् उत मा नो अर्भकम्,
मा नो वहन्तम् उत मा नो वक्ष्यतः।
मा नो हिंसीः पितरम् मातरम् च,
स्वाम् तन्वम् रूद्र मा रीरिषो नः।29।
3053.रुद्रस्य ऐलबकारेभ्यो, असंसूक्तगिलेभ्यः।
इदम् महास्येभ्यः, श्वभ्यो अकरम् नमः।।30।।
3054. नमः ते घोषिणीभ्यो, नमस्ते केशिनीभ्यः।
नमो नमस्कृताभ्यो, नमः सम्भुञ्जतीभ्यः ।
नमः ते देव सेनाभ्यः, स्वस्ति नो अभयम् च नः।31।

अथ द्वितीयो अनुवाकः

ओदन सूक्त (सूक्तम् 3 (पर्यायः 1)

3055. तस्य ओदनस्य बृहस्पतिः, शिरो ब्रह्म मुखम्।1।
3056. द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्या चन्द्रमसौ,
अक्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः.।2।
3057. चक्षुः मुसलम्, काम उलूखलम्।3।
3058. दितिः शूर्पम् अदितिः शूर्पग्राही,
वातो अप अविनक्।4।
3059. अश्वा कणा गावः, तण्डुला मशकाः तुषाः।5।
3060. कब्रुम् फलीकरणाः, शरो अभ्रम्।6।
3061. श्यामम् अयो अस्य मांसानि,
लोहितम् अस्य लोहितम्।7।
3062. त्रपु भस्म हिरतम्, वर्ण पुष्करम् अस्य गन्धः।8।
3063. खलः पात्रम् स्फ्यौ, अंसौ ईषे अनूक्ये।9।
3064. आन्त्राणि जत्रवो, गुदा वरत्राः।10।
3065. इयम् एव पृथिवी कुम्भी भवति,
राध्यमानस्य ओदनस्य द्यौः अपिधानम्।11।
3066. सीताः पर्शवः, सिकता ऊबध्यम्।12।
3067. ऋतम् हस्तावजेनम्, कुल्या उपसेचनम्।13।
3068. ऋचा कुम्भ्य अधिहिता, आर्त्वज्येन प्रेषिता।14।
3069. ब्रह्मणा परिगृहीता, साम्ना पर्यूढा।15।
3070. बृहत् आयवनम्, रथन्तरम् दर्विः।16।
3071. ऋतवः पक्तार, आर्तवाः समिन्धते।17।
3072. चरुम् पञ्चबिलम् उखम्, घर्मो अभि इन्धे।18।
3073. ओदनेन यज्ञवचः, सर्वे लोकाः समाप्याः।19।
3074. यस्मिन् समुद्रो द्यौः भूमिः,
त्रयो अवरपरम् श्रिताः।20।
3075. यस्य देवा अकल्पन्तो, उच्छिष्ठे षट् अशीतयः।21।
3076. तम् त्वा ओदनस्य पृच्छामि,
यो अस्य महिमा महान्।22।
3077. स य ओदनस्य, महिमानम् विद्यात्।23।
3078. न अल्प इति ब्रूयात् न अनुपसेचन,
इति नेदम् च कि च इति।24।
3079. यावत् दाता अभिमनस्येत, तत् न अति वदेत्।25।
3080. ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराञ्चम्,
ओदनम् प्र आशी प्रत्यञ्चाम् इति।26।
3081. त्वम् ओदनम् प्र आशीः, त्वाम् ओदना इति।27।
3082. पराञ्चम् च एनम् प्राशीः प्राणाः,
त्वा हास्यन्ति इति एनम् आह।28।
3083. प्रत्यञ्चम् च एनम् प्राशीः अपानाः,
त्वा हास्यन्ति इति एनम् आह।29।
3084. न एव अहम् ओदनम्, न माम् ओदनः।30।
3085. ओदन एव ओदनम्, प्र आशीत्।31।

ओदन सूक्त -4 (सूक्तम् -3 (पर्यायः 2))

3086. ततः च एनम् अन्येन शीर्ष्णा प्राशीः,
येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
ज्येष्ठतः ते प्रजा, मरिष्यति एनम् आह
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। बृहस्पतिना शीर्ष्णा।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।32।
3087. ततः च एनम् अन्याभ्याम् श्रोत्राभ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
बधिरो भविष्यसि, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्।
द्यावापृथिवीभ्याम् श्रोत्राभ्याम्।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।33।
3088.ततः च एनम् अन्याभ्याम् अक्षीभ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
अन्धो भविष्यसि, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्।
सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् अक्षीभ्याम्।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।34।

3089. ततः च एनम् अन्येन मुखेन,
प्राशीः येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
मुखतः ते प्रजा मरिष्याति, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। ब्राह्मणा मुखेन।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।35।
3090. ततः च एनम् अन्यया जिह्वया,
प्राशीः यया च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
जिह्वा ते मरिष्याति, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। अग्नेः जिह्वया।
तया एनम् प्र आशिषम्, तया एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।36।
3091.ततः च एनम् अन्यैः दन्तैः,
प्राशीः यै च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
दन्ताः ते शत्स्यन्ति, इत एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। ऋतुभिः दन्तैः.।
तैः एनम् प्र आशिषम्, तैः एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।37।
3092. ततः च एनम् अन्यैः प्राणपानैः,
प्राशीः यैः च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
प्राणापानाः त्वा हास्यन्ति, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्।
सप्तऋषिभिः प्राणापानैः।
तैः एनम् प्र आशिषम्, तैः एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।38।
3093. ततः च एनम् अन्येन व्यचसा,
प्राशीः येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
राजयक्ष्मः त्वा हनिष्यति, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। अन्तरिक्षेण व्यचसा।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।39।
3094.ततः च एनम् अन्येन पृष्ठेन,
प्राशीः येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
विद्युत् त्वा हनिष्यति, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। दिवा पृष्ठेन।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।40।
3095. ततः च एनम् अन्येन उरसा,
प्राशीः येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
कृष्या न रात्स्यसि इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। पृथिव्या उरसा।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।41।
3096. ततः च एनम् अन्येन उदरेण,
प्राशीः येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
उदरदारः त्वा हनिष्यती, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। सत्येन उदरेण।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।42।
3097. ततः च एनम् अन्येन वस्तिना,
प्राशीः येन च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
अप्सु मरिष्यसि, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। समुद्रेण वस्तिना।
तेन एनम् प्र आशिषम्, तेन एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।43।
3098. ततः च एनम् अन्याभ्याम् ऊरुभ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
ऊरू ते मरिष्यत, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम्

न प्रत्यञ्चम्। मित्रावरुणयोः ऊरुभ्याम् ।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।44।
3099. ततः च एनम् अन्याभ्याम् अष्ठीवद्भ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
स्रामो भविष्यसि, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्,
न पराञ्चम् न प्रत्यञ्चम्। त्वष्टुः अष्ठीवद्भ्याम्।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।45।
3100. ततः च एनम् अन्याभ्याम् पादाभ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
बहुचारी भविष्यसि, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम्
न प्रत्यञ्चम् अश्विनोः पादाभ्याम्।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।46।
3101. ततः च एनम् अन्याभ्याम् प्रपदाभ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
सर्पः त्वा हनिष्यति, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम्
न प्रत्यञ्चम् सवितुः प्रपदाभ्याम्।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।47।
3102. ततः च एनम् अन्याभ्याम् हस्ताभ्याम्,
प्राशीः याभ्याम् च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
ब्राह्मणम् हनिष्यसि, इति एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम्
न प्रत्यञ्चम्। ऋतस्य हस्ताभ्याम्।
ताभ्याम् एनम् प्र आशिषम्, ताभ्याम् एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।48।
3103. ततः च एनम् अन्यया प्रतिष्ठया,
प्राशीः यया च एतम् पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
अप्रतिष्ठानो अनायतनो, मरिष्यसि एनम् आह।
तम् वा अहम् न अर्वाञ्चम्, न पराञ्चम्
न प्रत्यञ्चम्। सत्ये प्रतिष्ठाय।
तया एनम् प्र आशिषम्, तया एनम् अजीगमम्।
एष वा ओदनः, सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः।
सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः,
सम् भवति य एवम् वेद।49।

5-ओदन सूक्त (सूक्तम् 3 (पर्यायः 3))

3104. एतत् वै ब्रध्नस्य, विष्टपम् यत् ओदनः।50।
3105. ब्रध्नलोको भवति ब्रध्नस्य,
विष्टपि श्रयते य एवम् वेद।51।
3106. एतस्मात् वा ओदनात् त्रयस्त्रिंशतम्,
लोकान् निः अमिमीत प्रजापतिः।52।
3107. तेषाम् प्रज्ञानाय, यज्ञम् असृजत।53।
3108. स य एवम् विदुष उपद्रष्टा,
भवति प्राणम् रुणद्धि।54।
3109. न च प्राणम रुणद्धि, सर्वज्यानिम् जीयते।55।
3110. न च सर्वज्यानिम् जीयते,
पुरा एनम् जरसः प्राणो जहाति।56

6- प्राण सूक्त (सूक्तम्।4।)

3111. प्राणाय नमो यस्य, सर्वम् इदम् वशे।
यो भूतः सर्वस्य ईश्वरो, यस्मिन् सर्वम् प्रतिष्ठितम्।1।
3112. नमः ते प्राण क्रन्दाय, नमः ते स्तनयित्नवे।
नमः ते प्राण विद्युते, नमः ते प्राण वर्षते।2।
3113. यत् प्राण स्तनयित्नुना, अभिक्रन्दति ओषधीः।
प्र वीयन्ते गर्भान् दधते, अथो बह्वीः वि जायन्ते।3।
3114. यत् प्राण ऋतौ आगते, अभिक्रन्दति ओषधीः।
सर्वम् तदा प्र मोदते, यत् किम् च भूम्याम् अधि।4।
3115. यदा प्राणो अभ्यवर्षीत्, वर्षेण पृथिवीम् महीम्।
पशवः तत् प्र मोदन्ते, महो वै नो भविष्यति।5।
3116. अभिवृष्टा ओषधयः, प्राणेन सम् अवादिरन्।
आयुः वै नः प्र अतीतरः, सर्वा नः सुरभीः अकः।6।
3117. नमः ते अस्तु आयते, नमो अस्तु परायते।
नमः ते प्राण तिष्ठत, आसीनाय उत ते नमः।7।
3118. नमः ते प्राण प्राणते, नमो अस्तु अपानते।
पराचीनाय ते नमः, प्रतीचीनाय ते नमः,
सर्वस्मै त इदम् नमः।8।
3119. या ते प्राण प्रिया, तनूः यो ते प्राण प्रेयसी।
अथो यत् भेषजम् तव, तस्य नो धेहि जीवसे।9।
3120. प्राणः प्रजा अनु वस्ते, पिता पुत्रमिव प्रियम्।
प्राणो ह सर्वस्य ईश्वरो, यत् च प्राणति यत् च न।10।
3121. प्राणो मृत्युः प्राणः तक्मा, प्राणम् देवा उप आसते।

प्राणो ह सत्यवादिनम्, उत्तमे लोक आ दधत्।11।
3122. प्राणो विराट् प्राणो देष्ट्री, प्राणम् सर्व उपासते।
प्राणो ह सूर्यः चन्द्रमाः, प्राणम् आहुः प्रजापतिम्।12।
3123. प्राणपानौ व्रीहियवौ, अनड्वान् प्राण उच्यते।
यवे ह प्राण आहितो, अपानो व्रीहिः उच्यते।13।
3124. अप अनति प्राणति, पुरुषो गर्भे अन्तर।
यदा त्वम् प्राण जिन्वसि, अथ स जायते पुनः।14।
3125. प्राणम् आहुः मातरिश्वानम्, वातो ह प्राण उच्यते।
प्राणे ह भूतम् भव्यम् च, प्राणे सर्वम् प्रतिष्ठितम्।15।
3126. आथर्वणीः आङ्गिरसीः, दैवीः मनुष्यजाः उत।
ओषधयः प्र जायन्ते, यदा त्वम् प्राण जिन्वसि।16।
3127. यदा प्राणो अभ्यवर्षीत्, वर्षेण पृथिवी महीम्।
ओषधयः प्र जायन्ते अथो, याः काः च वीरुधः।17।
3128. यः ते प्राण इदम् वेद,
यस्मिन् च असि प्रतिष्ठितः।
सर्वे तस्मै बलिम् हरान्, अमुष्मिन् लोके उत्तमे।18।
3129. यथा प्राण बलिहृतः, तुभ्यम् सर्वाः प्रजा इमाः।
एवा तस्मै बलिम् हरान्, यः त्वा शृणवत् सुश्रवः।19।
3130.अन्तः गर्भः चरति देवतासु,
3131.आभूतो भूतो स उ जायते पुनः।
स भूतो भव्यम् भविष्यत्,
पिता पुत्रम् प्र विवेशा शचीभिः।20।
3131. एकम् पादम् न उत खिदति,
सलिलात् हंस उच्चरन्।
यत् अङ्ग स तम् उत्खिदेत्, न एव अद्य न श्वः स्यात्,
न रात्री न अहः स्यात्, न वि उच्छेत् कदा चन।21।
3132. अष्टाचक्रम् वर्तते एकनेमि,
सहस्राक्षरम् प्र पुरो नि पश्चा।
अर्धेन विश्वम् भुवनम् जजान,
यत् अस्य अर्धम् कतमः स केतुः।22।
3133. यो अस्य विश्वजन्मन, ईशे विश्वस्य चेष्टतः।
अन्येषु क्षिप्रधन्वने, तस्मै प्राण नमो अस्तु ते।23।
3134. यो अस्य सर्वजन्मन, ईशे सर्वस्य चेष्टतः।
अतन्द्रो ब्रह्मणा, धीर प्राणो मानु तिष्ठतु।24।
3135. ऊर्ध्वः सुप्तेषु जागार, ननु तिर्यङ् नि पद्यते।
न सुप्तम् अस्य सुप्तेषु, अनु शुश्राव कः चन।25।
3136. प्राण मा मत् पर्यावृतो, न मत् अन्यो भविष्यसि।
अपाम् गर्भमिव जीवसे, प्राण बध्नामि त्वा मयि।26।

अथ तृतीयो अनुवाकः

7- ब्रह्मचर्य सूक्त

3137. ब्रह्मचारी इष्णन् चरति रोदसी उभे,
तस्मिन् देवाः समनसो भवन्ति।
स दाधार पृथिवीम् दिवम् च,
स आचार्यम् तपसा पिपर्ति।1।
3138. ब्रह्मचारिणम् पितरो देवजनाः,
पृथक् देवा अनुसंयन्ति सर्वे।
गन्धर्वा एनम् अनु आयन् त्रयस्त्रिंशत् त्रिशताः,
षट्सहस्राः सर्वान् स देवान् तपसा पिपर्ति।2।
3139.आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणम्,
कृणुते गर्भम् अन्तः।
तम् रात्री तिस्र उदरे बिभर्ति,
तम् जातम् द्रष्टुम् अभिसंयन्ति देवाः।3।
3140. इयम् समित् पृथिवी द्यौः द्वितीया,
अन्तरिक्षम् समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया,
श्रमेण लोकान् तपसा पिपर्ति।4।
3141. पूर्वो जातो ब्रह्मणो ब्रह्मचारी,
धर्मम् वसानः तपसा उत् अतिष्ठत्।
तस्मात् जातम् ब्राह्मणम् ब्रह्म ज्येष्ठम्,
देवाः च सर्वे अमृतेन साकम्।5।
3142. ब्रह्मचारी एति समिधा समिद्धः.,
कार्ष्णम् वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।
स सद्य एति पूर्वस्मात् उत्तरम् समुद्रम्,
लोकान् संगृभ्य महुः आचरिक्रत्।6।
3143.ब्रह्मचारी जनयन् ब्रह्म अपो लोकम्,
प्रजापतिम् परमेष्ठिनम् विराजम्।
गर्भो भूत्वा अमृतस्य योनौ,
इन्द्रो ह भूत्वा असुरान् ततर्ह।7।
3144. आचार्य ततक्ष नभसी उभे इमे,
उर्वी गम्भीरे पृथीवीम् दिवम् च।
ते रक्षति तपसा ब्रह्मचारी,
तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति।8।
3145.इमाम् भूमिम् पृथिवीम् ब्रह्मचारी,
भिक्षाम् आ जभार प्रथमो दिवम् च
ते कृत्वा समिधौ उप आस्ते,
तयोः आर्पिताः भुवनानि विश्वा।9।
3146.अर्वाक् अन्यः परा अन्यो दिवः,
पृष्ठात् गुहा निधी निहितौ ब्राह्मणस्य।
तौ रक्षति तपसा ब्रह्मचारी,
तत् केवलम् कृणुते ब्रह्म विद्वान्।10।
3147. अर्वाक् अन्य इतो अन्यः पृथिव्या,
अग्नी समेतो नभसी अन्तरा इमे।
तयो श्रयन्ते रश्मयो अधि दृढाः,
तान् आ तिष्ठति तपसा ब्रह्मचारी।11।
3148. अभिक्रन्दन् स्तनयन् अरुणः,

शितिङ्गो बृहत् शेपो अनु भूमौ जभार।
ब्रह्मचारी सिञ्चति सानौ रेतः,
पृथियाम् तेन जीवन्ति प्रदिशः चतस्रः।12।
3149. अग्नौ सूर्ये चन्द्रमसि मातरिश्वन्,
ब्रह्मचारी अप्सु समिधम् आ दधाति।
तासाम् अर्चीषि पृथक् अभ्रे चरन्ति,
तासाम् आज्यम् पुरुषो वर्षमापः।13।
3150. आचार्यो मृत्युः वरुणः, सोम ओषधयः पयः।
जीमूता आसन् सत्वानः, तैः इदम् स्वः आभृतम्।14।
3151. अमा घृतम् कृणुते केवलम् आचार्यो,
भूत्वा वरुणो यद्यत् ऐच्छत् प्रजापतौ।
तत् ब्रह्मचारी प्र अयच्छत्, स्वान् मित्रो अध्यात्मनः।15।
3152. आचार्यो ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी प्रजापतिः।
प्रजापतिः वि राजति, विराट् इन्द्रो अभवत् वशी।16।
3153. ब्रह्मचर्येण तपसा, राजा राष्ट्रम् वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण, ब्रह्मचारिणम् इच्छते।17।
3154. ब्रह्मचर्येणकन्या, युवानम् विन्दते पतिम्।
अनड्वान् ब्रह्मचर्येण, अश्वो घासम् जिगीर्षति।18।
3155. ब्रह्मचर्येण तपसा, देवा मृत्युम् अप अघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः, स्वः आ अभरत्।19।
3156. ओषधयो भूतभव्यम्, अहोरात्रे वनस्पतिः।
संवत्सरः सह ऋतुभिः, ते जाता ब्रह्मचारिणः।20।
3157. पार्थिवा दिव्याः पशव, आरण्या ग्राम्याः च ये।
अपक्षाः पक्षिणः च, ये ते जाता ब्रह्मचारिणः।21।
3158. पृथक् सर्वे प्राजापत्याः, प्राणान् आत्मसु बिभ्रति।
तान् सर्वान् ब्रह्म रक्षति, ब्रह्मचारिण्या भृतम्।22।
3159. देवानाम् एतत् परिषूतम्,
अनभ्यारूढम् चरति रोचमानम्।
तस्मात् जातम् ब्राह्मणम् ब्रह्म ज्येष्ठम्,
देवाः च सर्वे अमृतेन साकम्।23।
3160. ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजत् बिभर्ति,
तस्मिन् देवा अधि विश्वे समोताः।
प्राणपानौ जनयत् आत् व्यानम्,
वाचम् मनो हृदयम् ब्रह्म मेधाम्।24।
3161. चक्षु श्रोत्रम् यशो अस्मासु धेहि,
अन्नम् रेतो लोहितम् उदरम् ।25।
3162. तानि कल्पत् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे,
तपो अतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे।
स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः, पृथिव्याम् बहु रोचते।26।

8- पापमोचन सूक्त (सूक्तम 6)

3163. अग्निम् ब्रूमो वनस्पतीन्, ओषधीः उत वीरुधः।
इन्द्रम् बृहस्पतिम् सूर्यम्, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।1।
3164.ब्रूमो राजानम् वरुणम्, मित्रम् विष्णुम् अथो भागम्।
अंशम् विवस्वन्तम्, ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।2।
3165. ब्रूमो देवम् सवितारम्, धातारम् उत पूषणम्।
त्वष्टारम् अग्रियम् ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।3।
3166. गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो, अश्विना ब्रह्मणः पतिम्।
अर्यमा नाम यो देवः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।4।
3167. अहोरात्रे इदम् ब्रूमः, सूर्याचन्द्रमसौ उभा।
विश्वान् आदित्यान् ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।5।
3168. वातम् ब्रूमः पर्जन्यम्, अन्तरिक्षम् अथो दिशः।
आशाश्च सर्वा ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।6।
3169. मुञ्चन्तु मा शपथ्यात्, अहोरात्रे अथो उषाः।
सोमो मा देवो मुञ्चन्तु, यम् आहुः चन्द्रमा इति।7।
3170. पार्थिवा दिव्याः पशव, आरण्या उत ये मृगाः।
शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।8।
3171. भवाशर्वौ इदम् ब्रूमो रुद्रम्, पशुपतिः च यः।
इषूः या एषा संविद्म, ता नः सन्तु सदा शिवाः।9।
3172. दिवम् ब्रूमो, नक्षत्राणि भूमिम् यक्षाणि पर्वतान्।
समुद्रा नद्यो वेशन्ताः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः ।10।
3173. सप्तर्षीन् वा इदम् ब्रूमो, अपो देवीः प्रजापतिम्।
पितृन् यमश्रेष्ठान् ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।11।
3174. ये देवा दिविषदो, अन्तरिक्षसदः च ये।
पृथिव्याम् शका ये श्रिताः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।12।
3175. आदित्या रुद्रा वसवो, दिवि देवा अथर्वाणः।
अङ्गिरसो मनीषिणः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।13।
3176. यज्ञम् ब्रूमो यजमानम्, ऋचः सामानि भेषजा।
यजूंषि होत्रा ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।14।
3177. पञ्च राज्यानि वीरुधाम्, सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः।
दर्भो भङ्गो यवः सहः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।15।
3178. अरायान् ब्रूमो रक्षांसि, सर्पान् पुण्यजनान् पितृन्।
मृत्यून् एकशतम् ब्रूमः, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।16।
3179. ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीन्, आर्तवान् उत हायनान्।
समाः संवत्सरान् मासान्, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।17।
3180. आ इत देवा दक्षिणतः, पश्चात् प्राञ्च उदेत।
पुरस्तात् उत्तरात् शक्रा विश्वे देवाः,
समेत्य ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।18।
3181. विश्वान् देवान् इदम् ब्रूमः, सत्यसंधान् ऋतवृधः।
विश्वाभिः पत्नीभिः सह, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।19।
3182. सर्वान् देवान् इदम् ब्रूमः, सत्यसंधान् ऋतावृधः।
सर्वाभः पत्नीभिः सह, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।20।
3183. भूतम् ब्रूमो भूतपतिम्, भूतानाम् उत यो वशी।
भूतानि सर्वा संगत्य, ते नो मुञ्चन्तु अंहसः।21।
3184. या देवीः पञ्च प्रदिशो, ये देवा द्वादश ऋतवः।
संवत्सरस्य ये दंष्ट्राः, ते नः सन्तु सदा शिवाः।22।

3185.यत् मातली रथक्रीतम्, अमृतम् वेद भेषजम्।
तत् इन्द्रो अप्सु प्र अवेशयत्, तत् आपो भेषजम्।23।

अथ चतुर्थो अनुवाकः

सूक्तम।7। (9- उच्छिष्ट- ब्रह्म- सूक्त)

3186. उच्छिष्टे नाम रूपम् च, उच्छिष्टे लोक आहितः।
उच्छिष्ट इन्द्रः अग्निः च, विश्वम् अन्तः समाहितम्।1।
3187. उच्छिष्टे द्यावापृथिवी, विश्वम् भूतम् समाहितम्।
आपः समुद्र उच्छिष्टे, चन्द्रमा वात आहितः।2।
3188. सन् उच्छिष्टे असन् च,
उभो मृत्युः वाजः प्रजापतिः।
लौक्या उच्छिष्ट आयत्ता, व्रः च द्रः च अपि श्रीः मयि।3।
3189. दृढो दृंहस्थिरो न्यो, ब्रह्म विश्वसृजो दश।
नाभिमिव सर्वतः चक्रम्, उच्छिष्टे देवताः श्रितः।4।
3190. ऋक् साम यजुः उच्छिष्ट,
उद्गीथः प्रस्तुतम् स्तुतम्।
हिङ्कार उच्छिष्टे स्वरः, साम्नो मेडिः च तत् मयि।5।
3191. ऐन्द्राग्नम् पावमानम्, महानाम्नीः महाव्रतम्।
उच्छिष्टे यज्ञस्य अङ्गानि, अन्तः गर्भ इव मातरि।6।
3192. राजसूयम् वाजपेयम्, अग्निष्टोमः तत् अध्वरः।
अर्काश्वमेधौ उच्छिष्टे, जीवबर्हिः मदिन्तमः।7।
3193. अग्नयाधेयम् अथो दीक्षा, कामप्रः छन्दसा सह।
उत्सन्ना यज्ञाः सत्राणि, उच्छिष्टे अधि समाहिताः।8।
3194. अग्निहोत्रम् च श्रद्धा च, वषट्कारो व्रतम् तपः।
दक्षिणेष्टम् पूर्तम्, च उच्छिष्टेधि समाहिताः।9।
3195. एकरात्रो द्विरात्रः, सद्यः-क्रीः प्रक्रीः उक्थ्यः।
ओतम् निहितम् उच्छिष्टे, यज्ञस्य अणूनि विद्यया।10।
3196. चतूरात्रः पञ्चरात्रः, षड्रात्रः च उभयः सह।
षोडशी सप्तरात्रः च उच्छिष्टात्,
जज्ञिरे सर्वे ये यज्ञा अमृते हिताः।11।
3197. प्रतीहारो निधनम्, विश्वजित् च अभिजित् च यः।
साह्नतिरात्रौ उच्छिष्टे, द्वादशाहो अपि तत् मयि।12।
3198. सूनृता संनतिः क्षेमः, स्वधा ऊर्जा अमृतम् सहः।
उच्छिष्टे सर्वे प्रत्यञ्चः, कामाः कामेन तातृपुः।13।
3199. नव भूमीः समुद्रा, उच्छिष्टे अधि श्रिता दिवः।
आ सूर्यो भाति उच्छिष्टे, अहो रात्रे अपि तत् मयि।14।
3200. उपहव्यम् विषुवन्तम्, ये च यज्ञा गुहा हिताः।
बिभर्ति भर्ता विश्वस्य, उच्छिष्टो जनितुः पिता।15।
3201. पिता जनितुः उच्छिष्टो, असोः पौत्र पितामहः।
स क्षियति विश्वस्य ईशानो, वृषा भूम्याम् अतिघ्न्यः।16।
3202. ऋतम् सत्यम् तपो राष्ट्रम्, श्रमो धर्मः च कर्म च।
भूतम् भविष्यत् उच्छिष्टे, वीर्य लक्ष्मीः बलम बले।17।
3203. समृद्धिः ओज आकूतिः, क्षत्रम् राष्ट्रम् षडुर्व्यः।
संवत्सरो अधि उच्छिष्ट, इडा प्रैषा ग्रहा हविः।18।
3204. चतुर्होतार आप्रियः, चातुर्मास्यानि नीविदः।
उच्छिष्टे यज्ञा होत्राः, पशुबन्धाः तत् इष्टयः।19।
3205. अर्धमासाः च मासाः च, आर्तवा ऋतुभिः सह।
उच्छिष्टे घोषिणीः अपः, स्तनयित्नुः श्रुतिः मही।20।
3206. शर्कराः सिकता अश्मान, ओषधयो वीरुधः तृणा।
अभ्राणि विद्युतो वर्षम्, उच्छिष्टे संश्रिता श्रिता।21।
3207. राद्धिः प्राप्तिः समाप्तिः, व्याप्तिः मह एधतुः।
अत्याप्तिः उच्छिष्टे भूतिः च, हिता निहिता हिता।22।
3208. यत् च प्राणति प्राणेन, यत् च पश्यति चक्षुषा।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः।23।
3209. ऋचः सामानि छन्दांसि, पुराणम् यजुषा सह।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः।24।
3210. प्राणपानौ चक्षुः श्रोत्रम्, अक्षितिः च क्षितिः च या।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः।25।
3211. आनन्दा मोदाः प्रमुदो, अभिमोदमुदः च ये।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः।26।
3212. देवाः पितरो मनुष्या, गन्धर्वाप्सरः च ये।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः।27।

10 अध्यात्म सूक्त (सूक्तम् 8)

3213. यत् मन्युः जायाम् आवहत्,
संकल्पस्य गृहात् अधि।
क आसन् जन्याः के वराः,
क उ ज्येष्ठवरो अभवत्।1।
3214. तपः च एव आस्ताम्,
कर्म च अन्तः महति अर्णवे।
त आसन् जन्याः ते वरा, ब्रह्म ज्येष्ठवरो अभवत्।2।
3215. दश साकम् अजायन्त, देवा देवेभ्यः पुरा।
यो वै तान् विद्यात् प्रत्यक्षम्, स वा अद्य महद् वदेत्।3।
3216. प्राणपानौ चक्षुः श्रोत्रम्, अक्षितिः च क्षिति या।
व्यानोदानौ वाङ् मनः, ते वा आकूतिम् आ अवहन।4।
3217. अजाता आसन् ऋतवो, अथो धाता बृहस्पतिः।
इन्द्राग्नी अश्विना तर्हि कम्, ते ज्येष्ठम् उपासत।5।
3218. तपः च एव आस्ताम्,
कर्म च अन्तः महति अर्णवे।
तपो ह जज्ञे कर्मणः, तत् ते ज्येष्ठम् उपासत।6।
3219. या इत आसीत् भूमिः,
पूर्वा याम् अद्धातय इत् विदुः।
यो वै ताम् विद्यात् नामथा, स मन्येत पुराणवित्।7।
3220. कुत इन्द्रः कुतः सोमः, कुतो अग्निः अजायत।
कुतः त्वष्टा सम् अभवत्, कुतो धाता अजायत।8।
3221. इन्द्रात् इन्द्रः सोमात् सोमो,

अग्नेः अग्निः अजायत।
त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुः, धातुः धाता अजायत।9।
3222. ये त आसन् दश जाता, देवा देवेभ्यः पुरा।
पुत्रेभ्यो लोकम् दत्वा, कस्मिन् ते लोक आसते।10।
3223. यदा केशान् अस्थि स्नाव,
मांसम् मज्जानम् आभरत्।
शरीरम् कृत्वा पादवत् कृत्वा,
पादवत् कम् लोकम् अनु प्र अविशत्।11।
3224. कुतः केशान् कुतः स्नाव,
कुतो अस्थीनि आ अभरत्।
अङ्गा पर्वाणि मज्जानम्,
को मांसम् कुत आ अभरत्। 12।
3225. संसिचो नाम ते देवा, ये संभारान् समभरन्।
सर्वम् संसिच्य मर्त्यम् देवाः, पुरुषम् आ अविशन्।13।
3226. ऊरू पाद अष्ठीवन्तौ, शिरो हस्तौ अथो मुखम्।
पृष्टी बर्जह्यो पार्श्वे कः तत्, सम् अदधात् ऋषिः।14।
3227. शिरो हस्तौ अथो मुखम्,
जिह्वाम् ग्रीवाः च कीकसा।
त्वचा प्रावृत्य सर्वम् तत्, संधा सम् अधात् मही।15
3228. यत् शरीरम् अशयत्, संधया संहितम् महत्।
येन इदम् अद्य रोचते, को अस्मिन् वर्णम् अभरत्।16।
3229. सर्वे देवा उप अशिक्षन्, तत् अजानात् वधूः सती।
ईशा वशस्य या जाया, सा अस्मिन् वर्णम् आ अभरत्।17।
3230. यदा त्वष्टा व्यतृणत्, पिता त्वष्टुः उत्तरः।
गृहम् कृत्वा मर्त्य देवाः, पुरुषम् आ अविशन्।18।
3231. स्वपनो वै तन्द्रीः निर्ऋतिः पाप्मानो नाम देवताः।
जरा खालत्यम् पालित्यम्, शरीरम् अनु प्र अविशन्।19।
3232. स्तेयम् दुष्कृतम् वृजिनम्,
सत्यम् यज्ञो यशो बृहत्।
बलम् च क्षत्रम् ओजः च, शरीरम् अनु प्र अविशन् ।20।
3233. भूतिः च वा अभूतिः च, रातयोः अरातयः च याः।
क्षुधः च सर्वाः तृष्णाः च, शरीरम् अनु प्र अविशन्।21।
3234. निन्दाः च वा अनिन्दाः च,
यत् च हन्त इति न इति च।
शरीरम् श्रद्धा दक्षिणा अश्रद्धा, च अनु प्र अविशन्।22।
3235. विद्याः च वा अविद्याः च, यत् अन्यत् उपदेश्यम्।
शरीरम् ब्रह्म प्र अविशत्, ऋचः साम अथो यजुः।23।
3236. आनन्दा मोदाः प्रमुदो, अभीमोदमुदः च ये।
हसो नरिष्टा नृत्तानि, शरीरम् अनु प्र अविशन्।24।
3237. आलापाः च प्रलापाः च, अभीलापलपः च ये।
शरीरम् सर्वे प्र अविशन्, आयुजः प्रयुजो युजः।25।
3238. प्राणपानौ चक्षुः श्रोत्रम्, अक्षितिः च क्षितिः च या।
व्यानोदानौ वाक् मनः, शरीरेण त ईयन्ते।26।
3239. आशिषः च प्रशिषः च, संशिषो विशिषः च याः।
चित्तानि सर्वे सङ्कल्पाः, शरीरम् अनु प्र अविशन्।27।
3240. आस्तेयीः च वास्तेयीः च, त्वरणाः कृपणाः च याः।
गुह्या शुक्रा स्थूला अपः, ता बीभत्सौ असादयन्।28।
3241.अस्थि कृत्वा समिधम्, तत् अष्ट आपो असादयन्।
रेतः कृत्वा आज्यम् देवाः, पुरुषम् आ अविशन्।29।
3242.या आपो याः च देवता, या विराड् ब्रह्मणा सह।
शरीरम् ब्रह्म प्र अविशत्, शरीरे अधि प्रजापतिः।30।
3243. सूर्यः पुरुषस्य चक्षुः वातः,
प्राणम् पुरुषस्य वि भेजिरे।
अथ अस्य इतरम् आत्मानम्,
देवाः प्र अयच्छन् अग्नये।31।
3244. तस्मात् वै विद्वान् पुरुषम्,
इदम् ब्रह्म इति मन्यते।
सर्वा हि अस्मिन् देवता, गावो गोष्ठ इव आसते।32।
3245. प्रथमेन प्रमारेण त्रेधा, विष्वङ् वि गच्छति।
अद एकेन गच्छति अद एकेन गच्छति,
इह एकेन नि षेवते।33।
3246. अप्सु स्तीमासु वृद्धासु, शरीरम् अन्तरा हितम्।
तस्मिन् शवो अधि अन्तरा,
तस्मात् शवो अधि उच्यते।34।

अथ पञ्चमो अनुवाकः

11- शत्रुनिवारण सूक्त (सूक्तम्।9।)

3247.ये बाहवो या इषवो, धन्वनाम् वीर्याणि च।
असीन् परशून् आयुधम्, चित्ताकूतम् च यत् हृदि।1।
सर्वम् तत् अर्बुदे त्वम् अमित्रभ्यो,
दृशे कुरु उदारान् च प्र दर्शय।
3248. उत् तिष्ठत सम् नह्यध्वम्, मित्रा देवजना यूयम्।
संदृष्टा गुप्ता वः सन्तु, या नो मित्राणि अर्बुदे।2।
3249. उत् तिष्ठतम् आ रमेथाम्, आदानसन्दानाभ्याम्।
अमित्राणाम् सेना, अभि धत्तम् अर्बुदे।3।
3250. अर्बुदिः नाम यो देव, ईशानः च न्यर्बुदिः।
याभ्याम् अन्तरिक्षम् आवृतम्, इयम् च पृथिवी मही।
ताभ्याम् इन्द्रमेदिभ्याम् अहम्, जितम् अनु एमि सेनया।4।
3251. उत्तिष्ठ त्वम् देवजन, अर्बुदे सेनया सह।
भञ्जन् अमित्राणाम्, सेनाम् भोगेभिः परि वारय।5।
3252. सप्त जातान् न्यर्बुद, उदाराणाम् समीक्षयन्।
तेभि त्वम् आज्ये हुते, सर्वैः उत् तिष्ठ सेनया।6।
3253. प्रतिघ्नाना अश्रुमुखी, कृधुकर्णी च क्रोशतु।
विकेशी पुरुषे हते, रदिते अर्बुदे तव।7।
3254. संकर्षन्ती करूकरम्, मनसा पुत्रम् इच्छन्ती।
पतिम् भ्रातरम् आत् स्वान्, रदिते अर्बुदे तव।8।

3255. अलिक्लवा जाष्कमदा, गृध्राः श्येनाः पतत्रिणः।
ध्वाङ्क्षाः शकुनयः तृप्यन्तु अमित्रेषु,
समीक्षयन् रदिते अर्बुदे तव।9।
3256. अथो सर्वम् श्वापदम्, मक्षिका तृप्यतु क्रिमिः।
पौरुषे ये अधि कुणपे, रदिते अर्बुदे तव।10।
3257. आ गृह्णीतम् सम् बृहतम्, प्राणापानान् न्यर्बुदे।
निवाशा घोषाः सम् यन्तु, अमित्रेषु समीक्षयन्।
रदिते अर्बुदे तव।11।
3258. उद् वेपय सम् विजन्ताम्,
भिया अमित्रान् सम् सृज।
उरुग्राहैः बाह्वङ्कैः, विध्य अमित्रान् न्यर्बुदे।12।
3259. मुह्यन्तु एषाम् बाहवः, चित्ताकूतम् च यत् हृदि।
मा एषाम् उत् शेषि, किम् चन रदिते अर्बुदे तव।13।
3260. प्रतिघ्नानाः सम् धावन्तु, उरु पटूरौ आघ्नानाः।
अघारिणी विकेभ्यो रुदत्यः, पुरुषे हते रदिते अर्बुदे तव।14।
3261. श्वन्वतीः अप्सरसो, रूपका उत अर्बुदे।
अन्तः पात्रे रेरिहतीम्, रिशाम् दुर्णिहितैषिणीम्।
सर्वाः अर्बुदे त्वम् अमित्रभ्यो,
दृशे कुरु उदारान् च प्र दर्शय।15।
3262. खडूरे अधिचङ्क्रमाम्, खर्विकाम् सर्ववासिनीम्।
य उदारा अन्तर्हिता, गन्धर्वाप्सरसः च ये।
सर्पा इतरजना रक्षांसि।16।
3263. चतुर्दष्ट्रान् श्यावदतः, कुम्भमुष्कान्
असृङ्मुखान्। स्वभ्यसा ये च उत्भ्यसाः।17।
3264. उद् वेपय त्वम् अर्बुदे, अमित्राणाम् अमूः सिच।
जयान् च जिष्णुः च अमित्रान्, जयताम् इन्द्रमेदिनौ।18।
3265. प्रब्लीनो मृदितः शयाम्, हतो मित्रो न्यर्बुदे।
अग्नि जिह्वा धूमशिखा, जयन्तीः यन्तु सेनया।19।
3266. तया अर्बुदे प्रणुत्तानाम्, इन्द्रो हन्तु वरंवरम्।
अमित्राणाम् शचीपतिः, मा अमीषाम् मोचि कः चन।20।
3267. उत् कसन्तु हृदयानि, ऊर्ध्वः प्राण उत् ईषतु।
शौष्कास्यम् अनु वर्तताम्, अमित्रान् मा उत मित्रिणः।21।
3268. ये च धीरा ये च अधीराः, पराञ्चो बधिराः च ये।
तमसा ये च तूपरा, अथो बस्ताभिवासिनः।
सर्वान् तान् अर्बुदे त्वम् अमित्रेभ्यो,
दृशे कुरु उदारान् च प्र दर्शय।22।
3269. अर्बुदिः च त्रिषन्धिः च,
अमित्रान् नो वि विध्यताम्।
यथा एषाम् इन्द्र वृत्रहन् हनाम,
शचीपते अमित्राणाम् सहस्रशः।23।
3270. वनस्पतीन् वानस्पत्यान्, ओषधीः उत वीरुधः।
गन्धर्वाप्सरसः सर्पान्, देवान् पुण्यजनान् पितृन्।
सर्वान् तान् अर्बुदे त्वम् अमित्रेभ्यो,
दृशे कुरूदारश्च प्र दर्शय।24।
3271. ईशाम् वो मरुतो देव, आदित्यो ब्रह्मणस्पतिः।
ईशाम् व इन्द्रः च अग्निः च, धाता मित्रः प्रजापतिः।
ईशाम् व ऋष्यः च क्रुः अमित्रेषु,
समीक्षीयन् रदिते अर्बुदे तव।25।
3272. तेषाम् सर्वेषाम् ईशाना उत् तिष्ठत,
सम् नह्यध्वम् मित्रा देवजना यूयम्।
इमम् संग्रामम् संजित्य, यथालोकम् वि तिष्ठध्वम्।26।

12- शत्रुनाशक सूक्त (सूक्तम-10)

3273. उत तिष्ठत सम् नह्यध्वम्, उदाराः केतुभिः सह।
सर्पा इतरजना रक्षांसि, अमित्रान् अनु धावत।1।
3274. ईशाम् वो वेद राज्यम्,
त्रिषन्धे अरुणैः केतुभिः सह।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि, पृथिव्याम् ये च मानवाः।
त्रिषन्धेः ते चेतसि, दुर्णामानः उप आसताम्।2।
3275. अयोमुखाः सूचीमुखाः, अथो विकङ्कतीमुखाः।
क्रव्यादो वातरंहस आ सजन्तु,
अमित्रान् वज्रेण त्रिषन्धिना।3।
3276. अन्तः धेहि जातवेद, आदित्य कुणपम् बहु।
त्रिषन्धे इयम् सेना, सुहिता अस्तु मे वशे।4।
3277. उत् तिष्ठ त्वम् देवजन, अर्बुदे सेनया सह।
अयम् बलिः व आहुतः, त्रिषन्धेः आहुतिः प्रिया।5।
3278. शितिपदी सम् द्यतु, शरव्ये यम् चतुष्पदी।
कृत्ये अमित्रेभ्यो भव, त्रिषन्धेः सह सेनया।6।
3279. धूमाक्षी सम् पततु, कृधुकर्णी च क्रोशतु।
त्रिषन्धेः सेनया जिते, अरुणाः सन्तु केतवः।7।
3280.अव अयन्ताम् पक्षिणो ये वयांसि,
अन्तरिक्षे दिवि ये चरन्ति।
श्वापदो मक्षिकाः सम् रभन्ताम्,
आमादो गृध्रा कुणपे रदन्ताम्।8।
3281. याम् इन्द्रेण सन्धाम्,
समधत्था ब्रह्मणा च बृहस्पते।
तया अहम् इन्द्रसंधया सर्वान् देवान्,
इह हुव इतो जयत मा अमुतः।9।
3282. बृहस्पतिः आङ्गिरसः, ऋषयो ब्रह्मसंशिताः।
असुरक्षयणम् वधम्, त्रिषन्धिम् दिवि आ अश्रयन्।10।
3283. येन असौ गुप्त आदित्य, उभौ इन्द्रः च तिष्ठतः।
त्रिषन्धि देवा अभजन्त, ओजसे च बलाय च।11।
3284. सर्वान् लोकान् सम् अजयन्, देवा आहुत्या अनया।
बृहस्पतिः आङ्गिरसो वज्रम्,
यम् असिञ्चत असुरक्षयणम् वधम्।12।
3285. बृहस्पतिः आङ्गिरसो वज्रम्,

यम् असिञ्चत असुरक्षयणम् वधम्।
तेन अहम् अमूम् सेना नि लिम्पामि,
बृहस्पते अमित्रान् हन्मि ओजसा।13।
3286. सर्वे देवा अत्यायन्ति, ये अश्नन्ति वषट्कृतम् ।
इमाम् जुषध्वम् आहुतिम्, इतो जयत मा अमुतः।14।
3287. सर्वे देवा अत्यायन्तु, त्रिषन्धेः अहुतिः प्रिया।
संधाम् महतीम् रक्षत, यया अग्रे असुरा जिताः।15।
3288. वायुः अमित्राणाम्, इष्वग्राणि अञ्चतु।
इन्द्र एषाम् बाहून् प्रति भनक्तु, मा शकन् प्रतिधाम् इषुम्।
आदित्य एषाम् अस्त्रम् वि नाशयतु,
चन्द्रमा युताम् अगतस्य पन्थाम् ।16।
3289. यदि प्रेयुः देवपुरा, ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे।
तनूपानम् परिपाणम् कृण्वाना यत् उपोचिरे,
सर्वम् तत् अरसम् कृधि।17।
3290. क्रव्यादा अनुवर्तयन्, मृत्युना च पुरोहितम्।
त्रिषन्धे प्रेहि सेनया, जय अमित्रान् प्र पद्यस्व।18।
3291. त्रिषन्धे तमसा त्वम्, अमित्रान् परि वारय।
पृषदाज्य-प्रणुत्तानाम्, मा अमीषाम् मोचि कः चन।19।
3292. शितिपदी सम् पततु, अमित्राणाम् अमूः सिचः।
मुह्यन्तु अद्य अमूः, सेना अमित्राणाम् न्यर्बुदे।20।
3293. मढा अमित्रा न्यर्बुदे, जहि एषाम् वरंवरम्।
अनया जहि सेनया।21।
3294. यः च कवची यः च अकवचो,
मित्रो यः च अज्मनि।
ज्यापाशै कवचपाशैः, अज्मन अभिहतः शयाम्।22।
3295. ये वर्मिणो ये अवर्माणो, अमित्रा ये च वर्मिणः।
सर्वान् तान् अर्बुदे हतान्, श्वानो अदन्तु भूम्याम्।23।
3296. ये रथिनो ये अरथा, असादा ये च सादिनः।
सर्वान् अदन्तु तान् हतान्, गृध्राः श्येनाः पतत्रिणः।24।
3297. सहस्रकुणपा शेताम् आमित्री, सेना समरे।
वधानाम् विविद्धा ककजाकृता।।25।।
3298 मर्माविधम् रोरुवतम् सुपर्णैः,
अदन्तु दुश्चितम् मिदतम् शयानम्।
य इमाम् प्रतीचीम् आहुतिम्, अमित्रो नो युयुत्सति।29।
3299. याम् देवाः अनुतिष्ठन्ति,
यस्याः न अस्ति विराधनम्।
तया इन्द्रो हन्तु, वृत्रहा वज्रेण त्रिषन्धिना।27।

इति एकादशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

द्वादशम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

1- भूमि सूक्त

3300. सत्यम् बृहत् ऋतम् उग्रम् दीक्षा तपो,
ब्रह्म यज्ञः पृथिवीम् धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी,
उरुम् लोकम् पृथिवी नः कृणोतु।1।
3301. असंबाधम् बध्यतो मानवानाम्,
यस्या उद्वतः प्रवतः समम् बहु।
नानावीर्या ओषधीः या बिभर्ति,
पृथिवी नः प्रथताम् राध्यताम् नः।2।
3303. यस्याम् समुद्र उत सिन्धुः आपो,
यस्याम् अन्नम् कृष्टयः संबभूवुः।
यस्याम् इदम् जिन्वति प्राणत् एजत्,
सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।3।
3304. यस्याः चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या,
यस्याम् अन्नम् कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राण एजत्,
सा नो भूमिः गोषु अपि अन्ने दधातु।4।
3305.यस्याम् पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे,
यस्याम् देवा असुरान् अभ्यवर्तयन्।
गवाम् अश्वानाम् वयसः च विष्ठा,
भगम् वर्चः पृथिवी नो दधातु।5।
3305. विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा,
हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरम् बिभ्रती भूमिः अग्निम्,
इन्द्र ऋषभा द्रविणे नो दधातु।6।
3306. याम् रक्षन्ति अस्वप्ना विश्वदानीम्,
देवा भूमिम् पृथिवीम् अप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियम् दुहाम्, अथो उक्षतु वर्चसा।7।
3307. या अर्णवे अधि सलिलम् अग्रे आसीत्,
याम् मायाभिः अन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयम् परमे व्योमन्,
सत्येन आवृतम् अमृतम् पृथिव्याः।
सा नो भूमिः त्विषिम्, बलम् राष्ट्रे दधातु उत्तमे।8।
3308. यस्याम् आपः परिचराः समानीः,
अहोरात्रे अप्रमादम् क्षरन्ति।
सा नो भूमिः भूरिधारा, पयो दुहाम् अथो उक्षतु वर्चसा।9।
3309. याम् अश्वनौ अमिमाताम्,

विष्णुः यस्याम् विचक्रमे।
इन्द्रो याम् चक्र आत्मने, अनमित्राम् शचीपतिः।
सा नो भूमिः वि सृजाताम् माता पुत्राय मे पयः।10।
3310. गिरयः ते पर्वता हिमवन्तो,
अरण्यम् ते पृथिवि स्योनम् अस्तु।
बभ्रुम् कृष्णाम् रोहिणीम् विश्वरूपाम्,
ध्रुवाम् भूमिम् पृथिवीम् इन्द्र गुप्ताम्।
अजीतो अहतो अक्षतो, अधि अष्ठाम् पृथिवीम् अहम्।11।
3311. यत् ते मध्यम् पृथिवी,
यत् च नभ्यम् याः ऊर्जः तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेहि अभि नः पवस्व,
माता भूमिः पुत्रो अहम् पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।12।
3312. यस्याम् वेदिम् परिगृहणन्ति भूभ्याम्,
यस्याम् यज्ञम् तन्वते विश्वकर्माणः।
यस्याम् मीयन्ते स्वरवः पृथिव्याम्,
ऊर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्।
सा नो भूमिः वर्धयत् वर्धमाना।13।
3313. यो नो द्वेषत् पृथिवि यः पृतन्यात्,
यो अभिदासात् मनसा यो वधेन।
तम् नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि।14।
3314. त्वत् जाताः त्वयि चरन्ति मर्त्याः,
त्वम् बिभर्ति द्विपदः त्वम् चतुष्पदः।
तव इमे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिः,
अमृतम् मर्त्येभ्य उद्यन् सूर्यो रश्मिभिः आतनोति।15।
3315. ता नः प्रजाः सम् दुह्रताम् समग्रा,
वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम्।16।
3316. विश्वस्वम् मातरम् ओषधीनाम्,
ध्रुवाम् भूमि पृथिवीम् धर्मणा धृताम्।
शिवाम् स्योनाम् अनु चरेम विश्वहा।17।
3317. महत् सधस्थम् महती बभूविथ,
महान् वेग एजथुः वेपथुः ते।
महान् त्वा इन्द्रो रक्षत अप्रमादम्।
सा नो भूमे प्र रोचय हिरण्यस्येव
संदृशि मा नो द्वक्षत कश्चन।18।
3318. अग्निः भूम्याम् ओषधीषु अग्निम्,
आपो बिभ्रति अग्निः अश्मसु।
अग्निः अन्तः पुरुषेषु, गोषु अश्वेषु अग्नयः।19।
3319.अग्निः दिव आ तपति,
अग्नेः देवस्य उरु अन्तरिक्षम्।
अग्निम् मर्तास इन्धते, हव्यवाहम् घृतप्रियम्।20।
3320. अग्निवासाः पृथिवी असितज्ञूः,
त्विषिमन्तम् संशितम् मा कृणोतु।21।
3321. भूम्याम् देवेभ्यो ददति, यज्ञम् हव्यम् अरंकृतम्।
भूम्याम् मनुष्या जीवन्ति, स्वधया अन्नेन मर्त्याः।
सा नो भूमिः प्राणम् आयुः दधातु,
जरदष्टिम् मा पृथिवी कृणोतु।22।
3322. यः ते गन्धः पृथिवि संबभूव,
यम् बिभ्रति ओषधयो यम् आपः।
यम् गन्धर्वा अप्सरसः भेजिरे तेन,
मा सुरभिम् कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन।23।
3323. यः ते गन्धः पुष्करम् आविवेश,
यम् संजभ्रुः सूर्याया विवाहे।
अमर्त्याः पृथिवि गन्धम् अग्रे तेन,
मा सुरभिम् कृणु मा नो द्विक्षत कः चन।24।
3324. यः ते गन्धः पुरुषेषु, स्त्रीषु पुंसु भगो रुचिः।
यो अश्वेषु वीरेषु, यो मृगेषु हस्तिषु।
कन्यायाम् वर्चो यत् भूमे तेन अस्मान्,
अपि सम् सृज मा नो द्विक्षत कः चन।25।
3325. शिला भूमिः अश्मा पांसुः, सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे, पृथिव्या अकरम् नमः।26।
3326. यस्याम् वृक्षा वानस्पत्याः, ध्रुवाः तिष्ठन्ति विश्वहा।
पृथिवीम् विश्वधायसम्, धृताम् अच्छावदामसि।27।
3327. उदीराणा उत आसीनाः, तिष्ठन्तः प्रकामन्तः।
पद्भ्याम् दक्षिणसव्याभ्याम्, मा व्यथिष्महि भूभ्याम्।28।
3328. विमृग्वरीम् पृथिवीम् आ वदामि,
क्षमाम् भूमिम् ब्रह्मणा वावृधानाम्।
ऊर्जम् पुष्टम् बिभ्रतीम् अन्नभागम्,
घृतम् त्वामभि नि षीदेम भूमे।29।
3329. शुद्धा न आपः तन्वे क्षरन्तु,
यो नः सेदुः अप्रिये तम् नि दध्मः।
पवित्रेण पृथिवि मा उत् पुनामि।30।
3330. याः ते प्राचीः प्रदिशो या उदीचीः,
या ते भूमे अधरात् याः च पश्चात्।
स्योनाः ता मह्यम् चरते भवन्तु,
मा नि पप्तम् भुवने शिश्रियाणः।31।
3331. मा नः पश्चात् मा पुरस्तात्,
नुदिष्ठा मो उत्तरात् अधरात् उत।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन्,
परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम्।32।
3332. यावत् ते अभि विपश्यामि, भूमे सूर्येण मेदिना।
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्ट, उत्तरामुत्तराम् समाम्।33।
3333. यत् शयानः पर्यावर्ते दक्षिणम्,
सव्यम् अभि भूमे पार्श्वम्।
उत्तानाः त्वा प्रतीचीम्, यत् पृष्टीभिः अधिशेमहे।
मा हिंसीः तत्र नो भूमे, सर्वस्य प्रतिशीवरि।34।

3334. यत् ते भूमे विखनामि, क्षिप्रम् तत् अपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि, मा ते हृदयम् अर्पिपम्।35।
3335. ग्रीष्मः ते भूमे वर्षाणि,
शरत् हेमन्तः शिखरो वसन्तः।
ऋतवः ते विहिता हायनीः,
अहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम्।36।
3336. या अप सर्पम् विजमाना विमृग्वरी,
यस्याम् आसन् अग्नयो ये अप्सु अन्तः।
परा दस्यून् ददती देवपीयून्,
इन्द्रम् वृणाना पृथवी न वृत्रम्।
शक्राय दध्रे वृषभाय वृष्णे।37।
3337. यस्याम् सदोहविर्धाने, यूपो यस्याम् निमीयते।
ब्रह्माणो यस्याम् अर्चन्ति, ऋग्भिः साम्ना यजुर्विदः।
युज्यन्ते यस्याम् ऋत्विजः, सोम इन्द्राय पातवे।38।
3338. यस्याम् पूर्वे भूतकृत, ऋषयो गा उत् आनृचुः।
सप्त सत्त्रेण वेधसो, यज्ञेन तपसा सह।39।
3339. सा नो भूमिरा दिशतु, यत् आ धनम् कामयामहे।
भगो अनुप्रयुङ्क्ताम् इन्द्र एतु पुरोगवः।40।
3340. यस्याम् गायन्ति नृत्यन्ति,
भूम्याम् मर्त्या व्यैलबाः।
युध्यन्ते यस्याम् आ क्रन्दो, यस्याम् वदति दुन्दुभिः।
सा नो भूमिः प्र णुदताम् सपत्नान्,
असपत्नम् मा पृथिवी कृणोतु।41।
3341. यस्याम् अन्नम् व्रीहियवौ,
यस्या इमाः पञ्च कृष्टयः।
भूम्यै पर्जन्यपत्न्यै, नमो अस्तु वर्ष मेदसे।42।
3342. यस्याः पुरो देवकृताः, क्षेत्रे यस्या विकुर्वते।
प्रजापतिः पृथिवीम् विश्वगर्भाम्,
आशामाशाम् रण्याम् नः कृणोतु।43।
3343. निधिम् बिभ्रती बहुधा गुहा वसु,
मणिम् हिरण्यम् पृथिवी ददातु मे।
वसूनि नो वसुदा रासमाना, देवी दधातु सुमनस्यमाना।44।
3344. जनम् बिभ्रती बहुधा विवाचसम्,
नानाधर्माणम् पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रम् धारा द्रविणस्य मे दुहाम्,
ध्रुवेव धेनुः अनपस्फुरन्ती।45।
3345. यः सर्पोः वृश्चिकः तृष्टदंश्मा,
हेमन्तजब्धो भृमलो गुहा शये।
क्रिमिः जिन्वत् पृथिवि यद्यत् एजति प्रावृषि तत् नः,
सर्पत् मा उप सृपत् यत् शिवम् तेन नो मृड।46।
3346. ये ते पन्थानो बहवो जनायना,
रथस्य वर्त्म अनसः च यातवे।
यैः संचरन्ति उभये भद्रपापाः तम् पन्थाम् जयेम,
अनमित्रम् अतस्करम् यत् शिवम् तेन नो मृड।47।
3347. मल्वम् बिभ्रती गुरुभृत्,
भद्रपापस्य निधनम् तितिक्षुः।
वराहेण पृथिवी संविदाना,
सूकराय वि जिहीते मृगाय।48।
3348.ये ते आरण्याः पशवो मृगा वने हिताः,
सिंहा व्याघ्राः पुरुषादः चरन्ति।
उलम् वृकम् पृथिवि दुच्छुनाम् इत,
ऋक्षीकाम् रक्षो अप बाधय अस्मत्।49।
3349. ये गन्धर्वा अप्सरसो, ये च अरायाः किमीदिनः।
पिशाचान् सर्वा रक्षांसि, तान् अस्मत् भूमे यावय।50।
3350. याम् द्विपादः पक्षिणः संपतन्ति,
हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि।
यस्याम् वातो मातरिश्वा ईयते,
रजांसि कृण्वन् च्यावयन् च वृक्षान्।
वातस्य प्रवाम् उपवाम् अनु वाति अर्चिः।51।
3351. यस्याम् कृष्णम् अरुणम् च संहिते,
अहोरात्रे विहिते भूम्याम् अधि।
वर्षेण भूमिः पृथिवी वृता अवृता सा नो दधातु,
भद्रया प्रिये धामनिधामनि।52।
3352. द्यौः च म इदम् पृथिवी च,
अन्तरिक्षम् च मे व्यचः।
अग्निः सूर्य आपो मेधाम्, विश्वे देवाः च सम् ददुः।53।
3353. अहम् अस्मि सहमान, उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाट् अस्मि विश्वाषाट्, आशामाशाम् विषासहिः।54।
3354. अदो यत् देवि प्रथमाना पुरस्तात्,
देवैः उक्ता व्यसर्पो महित्वम्।
आ त्वाम् सुभूतम् अविशत् तदानीम्,
अकल्पयथाः प्रदिशः चतस्रः।55।
3355. ये ग्रामा यत् अरण्यम्,
याः सभा अधि भूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयः, तेषु चारु वदेम ते।56।
3356. अश्व इव रजो दुधुवे वि तान् जनान्,
य आक्षियन् पृथिवीम् यात् अजायत।
मन्द्रा अग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा,
वनस्पतीनाम् गृभिः ओषधीनाम्।57।
3357. यत् वदामि मधुमत् तत् वदामि,
यत् ईक्षे तत् वनन्ति मा।
त्विषिमान् अस्मि जूतिमान्,
अव अन्यान् हन्मि दोधतः।58।
3358. शन्तिवा सुरभिः स्योना, कीलालोध्नी पयस्वती।
भूमिः अधि ब्रवीतु मे, पृथिवी पयसा सह।59।
3359. याम् अन्वैच्छत् हविषा विश्वकर्मा,

अन्तः अर्णवे रजसि प्रविष्टाम्।
भुजिष्यम् पात्रम् निहितम् गुहा यत्,
आविः भोगे अभवत् मातृमद्भ्यः।60।
3360. त्वम् असि आवपनी जनानाम्,
अदितिः कामदुधा पप्रथाना।
यत् त ऊनम् तत् त आ पूरयाति,
प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य।61।
3361. उपस्थाः ते अनमीवा अयक्ष्मा,
अस्मभ्यम् सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घम् न आयुः प्रतिबुध्यमाना,
वयम् तुभ्यम् बलिहृतः स्याम।62।
3362. भूमे मातः नि धेहि, मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रियाम्, मा धेहि भूत्याम्।63।

अथ द्वितीयो अनुवाकः

सूक्तम् 2 (2- यक्ष्मारोगनाशन सूक्त)

3363.नडम् आ रोह न ते अत्र लोक,
इदम् सीसम् भागधेयम् त आ इहि।
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मः,
तेन त्वम् साकम् अधराङ् परा इहि।1।
3364. अघशंसदुः-शंसाभ्याम्, करेण अनुकरेण च।
यक्ष्मम् च सर्वम् तेन इतो, मृत्युम् च निः अजामसि।2।
3365. नि इतो मृत्युम् निर्ऋति, निः अरातिम् अजामसि।
यो नो द्वेष्टि तम् अद्धि अग्ने अक्रव्यात्,
यम् उ द्विष्मः तम् उ ते प्र सुवामसि।3।
3366.यदि अग्निः क्रव्यात् यदि वा व्याघ्र,
इमम् गोष्टम् प्रविवेश अन्योकाः।
तम् माषाज्यम् कृत्वा प्र हिणोमि दूरम्,
स गच्छतु अप्सुषदो अपि अग्नीन्।4
3367. यत् त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुः, मन्युना पुरुषए मृते।
सुकल्पम् अग्ने तत् त्वया, पुनः त्वा उत् दीपयामसि।5।
3368. पुनः त्वा आदित्या रुद्रा वसवः,
पुनः ब्रह्मा वसुनीतिः अग्ने।
पुनः त्वा ब्रह्मणस्पतिः, अधात् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।6।
3369. यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश नो गृहम्,
इमम् पश्यन् इतरम् जातवेदसम्।
तम् हरामि पितृयज्ञाय दूरम्, स घर्मम् परमे सधस्थे।7।
3370. क्रव्यादम् अग्निम् प्र हिणोमि,
दूरम् यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः।
इह अयम् इतरो जातवेदा,
देवो देवेभ्यो हव्यम् वहतु प्रजानन्।8।
3371. क्रव्याम् अग्निम् इषितो हरामि,
जनान् दृंहन्तम् वज्रेण मृत्युम्।
नि तम् शास्मि गार्हपत्येन विद्वान,
पितृणाम् लोके अपि भागो अस्तु।9।
3372.क्रव्यादम् अग्निम् शशमानम् उक्थ्यम्,
प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाणैः।
मा देवयानैः पुनरा गाः अत्र,
एव एधि पितृषु जागृहि त्वम्।10।
3373. सम् इन्धते संकसुकम् स्वस्तये,
शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
जहाति रिप्रम् अति एन एति,
समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाते।11।
3374. देवो अग्निः संकसुको, दिवः पृष्ठानि आ अरुहत्।
मुच्यमानो निः एनसो, अमोक् अस्मान् अशस्त्याः।12।
3375. अस्मिन् वयम् संकसुके, अग्नौ रिप्राणि मृज्महे।
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः, प्र ण आयूंषि तारिषत्।13।
3376. संकसुको विकसुको, निर्ऋथो यः च निस्वरः।
ते ते यक्ष्मम् सवेदसो, दूरात् दूरम् अनीनशन्।14।
3377.यो नो अश्वेषु वीरेषु, यो नो गोषु अजाविषु।
क्रव्यादम् निः नुदामसि, यो अग्निः जनयोपनः।15।
3378. अन्येभ्यः त्वा पुरुषेभ्यो, गोभ्यो अश्वेभ्यः त्वा।
निः कव्यादम् नुदामसि, यो अग्निः जीवितयोपनः।16।
3379. यस्मिन् देवा अमृजत, यस्मिन् मनुष्या उत।
तस्मिन् घृतस्तावो मृष्ट्वा, त्वम् अग्ने दिवम् रूह।17।
3380. सम् इद्धो अग्न आहुत, स नो मा अभ्यपक्रमीः।
अत्र एव दीदिहि द्यवि, ज्योक् च सूर्य दृशे।18।
3381. सीसे मृड्ढ्वम् नडे मृड्ढ्वम्,
अग्नौ संकसुके च यत्।
अथो अव्याम् रामायाम्, शीर्षक्तिम् उपबर्हणे।19।
3382. सीसे मलम् सादयित्वा, शीर्षक्तिम् उपबर्हणे।
अव्याम् असिक्न्याम् मृष्ट्वा, शुद्धा भवत यज्ञियाः।20।
3383. परम् मृत्यो परा इहि पन्थाम्,
यः त एष इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते श्रृण्वते ते ब्रवीमि,
इह इमे वीरा बहवो भवन्तु।21।
3384. इमे जीवा वि मृतैः आ अववृत्रन्,
अभूत भद्रा देवहूतिः नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय,
सुवीरासो विदथम् आ वदेम।22।
3385. इमम् जीवेभ्यः परिधिम् दधामि,
मा एषाम् नु गात् अपरो अर्थम् एतम्।
शतम् जीवन्तः शरदः पुरुचीः,
तिरो मृत्युम् दधताम् पर्वतेन।23।
3386. आ रोहत आयुः जरसम् वृणाना,
अनुपूर्वम् यतमाना यति स्थ।

तान वः त्वष्टा सुजनिमा सजोषाः,
सर्वम् आयुः नयतु जीवनाय।24।
3387. यथा अहानि अनुपूर्वम् भवन्ति,
यथा ऋतवः ऋतुभिः यन्ति साकम्।
यथा न पूर्वम् अपरो जहाति,
एवा धातः आयूंषि कल्पय एषाम्।25।
3388. अश्वमन्वती रीयते सम् रभध्वम्,
वीरयध्वम् प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीत ये असन् दुरेवाः,
अनमीवान् उत् तरेम अभि वाजान्।26।
3389.उत् तिष्ठता प्र तरता सखायो,
अश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम्।
अत्रा जहीत ये असन् अशिवाः शिवान्,
स्योनान् अनु उत् तरेम अभि वाजान्।27।
3390. वैश्वदेवीम् वर्चस आ रभध्वम्,
शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि,
शतम् हिमाः सर्ववीरा मदेम।28।
3391. उदीचीनैः पथिभिः वायुमद्भिः,
अतिक्रामन्तो अवरान् परेभिः।
त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परेता,
मृत्युम् प्रति औहन् पदयोपनेन।29।
3392. मृत्योः पदम् योपयन्त एत,
द्राघीय आयुः प्रतरम् दधानाः।
आसीना मृत्युम् नुदत आ सधस्थे,
अथ जीवासो विदथम् आ वदेम।30।
3393. इमा नारीः अविधवाः सुपत्नीः,
आञ्जेनन सर्पिषा सम् स्पृशन्ताम्।
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना,
आ रोहन्तु जनयो योनिम् अग्रे।31।
3394. व्याकरोमि हविषा अहम् एतौ,
तौ ब्रह्मणा वि अहम् कल्पयामि।
स्वधाम् पितृभ्यो अजराम् कृणोमि,
दीर्घेण आयुषा सम् इमान् सृजामि।32।
3395. यो नो अग्निः पितरो हृत्सु,
अन्तः आविवेश अमृतो मर्त्येषु।
मयि अहम् तम् परि गृह्णामि देवम्,
मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयम् तम्।33।
3396. अपावृत्य गार्हपत्यात्, क्रव्यादा प्रेत दक्षिणा।
प्रियम् पितृभ्यः आत्मने, ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम्।34।
3397. द्विभागधनम् आदाय, प्र क्षिणाति अवर्त्या।
अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य, यः क्रव्यात् अनिराहितः।35।
3398. यत् कृषते यत् वनुते, यत् वस्नेन् विन्दते।
सर्वम् मर्त्यस्य तत् ना अस्ति, क्रव्यात् अनिराहितः।36।
3399. अयज्ञियो हतवर्चा भवति, न एनेन हविः अत्तवे।
छिनत्ति कृष्या गोर्धनात्, यम् क्रव्यात् अनुवर्तते।37।
3400. मुहुः गृध्यैः प्र वदति, आर्तिम् मर्त्यो नीत्य।
क्रव्यात् यान् अग्निः,
अन्तिकात् अनुविद्वान् वितावति।38।
3401. ग्राह्या गृहाः सम् सृज्यन्ते,
स्त्रिया यत् म्रियते पतिः।
ब्रह्मा एव विद्वान् एष्यो, यः क्रव्यादम् निरादधत्।39।
3402. यत् रिप्रम् शमलम्, चकृम यत् च दुष्कृतम्।
आपो मा तस्मात् शुम्भन्तु,
अग्नेः संकसुकात् च यत्।।40।।
3403. ता अधरात् उदीचीः अरावृत्रन्,
प्रजानतीः पथिभिः देवयानैः।
पर्वतस्य वृषभस्य अधि पृष्ठे,
नवाः चरन्ति सरितः पुराणीः।41।
3404. अग्ने अक्रव्यात् निः क्रव्यादम्,
नुदा देवयजनम् वह।42।
3405. इमम् क्रव्यात् आ विवेश,
अयम् क्रव्यादम् अनु अगात्।
व्याघ्रौ कृत्वा नानानम्, तम् हरामि शिवापरम्।43।
3406. अन्तर्धिः देवानाम्, परिधिः मनुष्याणाम् अग्नि।
गार्हपत्य उभयान्, अन्तरा श्रितः।44।
3407. जीवानाम् आयुः प्र तिर त्वम् अग्ने पितृणाम्,
लोकम् अपि गच्छन्तु ये मृताः।
सुगार्हपत्यो वितपन् अरातिम्,
उषामुषाम् श्रेयसीम् धेहि अस्मै।45।
3408. सर्वान् अग्ने सहमानः सपत्नान्,
एषाम् ऊर्जम् रयिम् अस्मासु धेहि।46।
3409. इमम् इन्द्रम् वह्निम् पप्रिम् अन्वारभध्वम्,
स वो निः वक्षत् दुरितात् अवद्यात्।
तेन अप हत शरुम् आपतन्तम्,
तेन रूद्रस्य परि पात अस्ताम्।47।
3410. अनड्वाहम् प्लवम् अन्वारभध्वम्,
स वो निः वक्षत् दुरितात् अवद्यात्।
आ रोहत सवितुः नावम् एताम्,
षड्भिः उर्वीभिः अमतिम् तरेम।48।
3411. अहोरात्रे अनु एषि बिभ्रत्,
क्षेम्यः तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः।
अनातुरान् सुमनसः तल्प बिभ्रत्,
ज्योक् एव नः पुरुषगन्धिः एधि।49।
3412. ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते, पापम् जीवन्ति सर्वदा।
क्रव्यात् यान् अग्निः अन्तिकात्,

अश्व इव अनुवपते नडम्।50।
3413. ये श्रद्धा धनकाम्या, क्रव्यादा समासते।
ते वा अन्येषाम् कुम्भीम्, पर्यादधति सर्वदा।51।
3414. प्रेव पिपतिषति, मनसा मुहुः आ वर्तते पुनः।
क्रव्यात् यान् अग्निः अन्तिकात्,
अनुविद्वान् वितावति।52।
3415. अविः कृष्णा भागधेयम् पशूनाम् सीसम्,
क्रव्यात् अपि चन्द्रम् त आहुः।।
माषाः पिष्टा भागधेयम् ते हव्यम्,
अरण्यान्या गह्वरम् सचस्व।53।
3416. इषीकाम् जरतीम् इष्टवा,
तिल्पिञ्जम् दण्डनम् नडम्।
तम् इन्द्र इध्मम् कृत्वा, यमस्य अग्निम् निरादधौ।54।
3417. प्रत्यञ्चम् अर्कम् प्रत्यर्पयित्वा,
प्रविद्वान् पन्थाम् वि हि आविवेश।
परा अमीषाम् असून् दिदेश दीर्घेण,
आयुषा सम् इमान् सृजामि।55।

अथ तृतीयो अनुवाकः

सूक्तम् 3 (3- स्वर्गौदन सूक्त)

3418. पुमान् पुंसो अधि तिष्ठ चर्म इहि,
तत्र ह्वस्व यतमा प्रिया ते।
यावन्तौ अग्रे प्रथमम् समेयथुः,
तत् वाम् वयो यमराज्ये समानम्।1।
3419. तावत् वाम् चक्षुः तति वीर्याणि,
तावत् तेजः ततिधा वाजिनानि।
अग्निः शरीरम् सचते यत् एधो अधा,
पक्वात् मिथुना सम् भवाथः।2
3420. सम् अस्मिन् लोके सम् उ देवयाने,
सम् स्मा समेतम् यमराज्येषु।
पूतौ पवित्रैः उप तत् ह्वयेथाम्,
यद्यत् रेतो अधि वाम् संबभूव।3।
3421. आपः पुत्रासो अभि सम् विशध्वम्,
इमम् जीवम् जीवधन्याः समेत्य।
तासाम् भजध्वम् अमृतम् यम् आहुः,
यम् ओदनम् पचति वाम् जनित्री।4।
3422. यम् वा पिता पचति यम् च माता,
रिप्रात् निर्मुक्त्यैः शमलात् वाचः।
स ओदनः शतधारः स्वर्ग, उभे वि आप नभसी महित्वा।5।
3423. उभे नभसी उभयान् च लोकान्,
ये यज्वनाम् अभिजिताः स्वर्गाः।
तेषाम् ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्ने,
तस्मिन् पुत्रैः जरसि सम् श्रयेथाम्।6।
3424. प्राचींप्राचीम् प्रदिशम् आ रभेथाम्,
एतम् लोकम् अद्दधानाः सचन्ते।
यत् वाम् पक्वम् परिविष्टम् अग्नौ,
तस्य गुप्तये दंपती सम् श्रयेथाम्।7।
3425. दक्षिणाम् दिशम् अभि नक्षमाणौ,
पर्यावर्तेथाम् अभि पात्रम् एतत्।
तस्मिन् वाम् यमः पितृभिः संविदानः,
पक्वाय शर्म बहुलम् नि यच्छात्।8।
3426. प्रतीची दिशाम् इयम् इत् वरम्,
यस्याम् सोमो अधिपा मृडिता च।
तस्याम् श्रयेयाम् सुकृतः सचेथाम्,
अधा पक्वात् मिथुना सम् भवायः।9।
3427. उत्तरम् राष्ट्रम् प्रजया उत्तरावत्,
दिशाम् उदीची कृणवत् नो अग्रम्।
पाङ्क्तम् छन्दः पुरुषो बभूव,
विश्वैः विश्वाङ्गैः सह सम् भवेम।10।
3428. ध्रुवा इयम् विराट् नमो अस्तु,
अस्यै शिवा पुत्रेभ्य उत महयम् अस्तु।
सा नो देवि अदिते विश्ववार,
इर्य इव गोपा अभि रक्ष पक्वम्।11।
3429.पितेव पुत्रान् अभि सम् स्वजस्व,
नः शिवा नो वाता इह वान्तु भूमौ।
यम् ओदनम् पचतो देवते इह,
तम् नः तप उत सत्यम् च वेत्तु।12।
3430. यद्यत् कृष्णः शकुन आ इह गत्वा,
त्सरन् विषक्तम् बिल आससाद।
यत् वा दासी आर्द्रहस्ता समङ्क्त,
उलूखलम् मुसलम् शुम्भत आपः।13।
3431. अयम् ग्रावा पृथुबुध्नो वयोधाः,
पूतः पवित्रैः अप हन्तु रक्षः।
आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ,
मा दम्पती पौत्रम् अघम् नि गाताम्।14।
3432. वनस्पतिः सह देवैः न आगन्,
रक्षः पिशाचान् अपबाधमानः।
स उत् श्रयातै प्र वदाति वाचम्,
तेन लोकान् अभि सर्वान् जयेम।15।
3433. सप्त मेधान् पशवः परि अगृह्णन्,
य एषाम् ज्योतिष्मान् उत यः चकर्श।
त्रयस्त्रिंशत् देवता तान् सचन्ते,
स नः स्वर्गम् अभि नेष लोकम्।16।
3434. स्वर्गम् लोकम् अभि नो नयासि,
सम् जायया सह पुत्रैः स्याम।
गृह्णामि हस्तम् अनु मा एतु अत्र,

मा नः तारीत् निर्ऋतिः मो अरातिः17।
3435. ग्राहिम् पाप्मनाम् अति तान् अयाम,
तमो वि अस्य प्र वदासि वल्गु।
वानस्पत्य उद्यतो मा जिहिसीः,
मा तण्डुलम् वि शरीः देवयन्तम्।18।
3436. विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्,
सयोनिः लोकम् उप याहि एतम्।
वर्षवृद्धम् उप यच्छ शूर्पम् तुषम्,
पलावान् अप तत् विनक्तु।19।
3437. त्रयो लोकाः संमिता ब्राह्मणेन,
द्यौः एव असौ पृथिवी अन्तरिक्षम्।
अंशून गृभीत्वा अन्वारभेथाम्,
आ प्यायन्ताम् पुनः आ यन्तु शूर्पम्।20।
3438. पृथक् रूपाणि बहुधा पशूनाम्,
एकरूपो भवसि सम् समृद्ध्या।
एताम् त्वचम् लोहिनीम् ताम् नुदस्व,
ग्रावा शुम्भाति मलग इव वस्त्रा।21।
3439. पृथिवीम् त्वा पृथिव्याम् आ वेशयामि,
तनूः समानी विकृता त एषा।
यद्यद् द्युत्तम् लिखितम् अर्पणेन तेन,
मा सुस्रोः ब्रह्मणा अपि तत् वपामि।22
3440. जनित्रीव प्रति हर्यासि सूनुम्,
सम् त्वा दधामि पृथिवीम् पृथिव्या।
उखा कुम्भी वेद्याम् मा व्यथिष्ठा,
यज्ञायुधैः आज्येन अतिषक्ता।23।
3441. अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तात्,
इन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान्।
वरुणः त्वा दृंहात् धरुणे प्रतीच्या,
उत्तरात् त्वा सोमः सम् ददातै।24।
3442. पूताः पवित्रैः पवन्ते अभ्रात्,
दिवम् च यन्ति पृथिवीम् च लोकान्।
ता जीवला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः,
पात्र आसिक्ताः परि अग्निः इन्धाम्।25।
3443. आ यन्ति दिवः पृथिवीम् सचन्ते,
भूम्याः सचन्ते अधि अन्तरिक्षम्।
शुद्धाः सतीः ता उ शुम्भन्त एव ता,
नः स्वरर्गम् अभि लोकम् नयन्तु।26।
3444. उतेव प्रभ्वीः संमितास,
उत शुक्राः शुचयः अमृतासः।
ता ओदनम् दम्पतिभ्याम् प्रशिष्टा,
आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः।27।
3445. संख्याता स्तोकाः पृथिवीम् सचन्ते,
प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः।
असंख्याता ओप्यमानाः सुवर्णाः,
सर्वम् वि आपुः शुचयः शुचित्वम्।28।
3446. उत् योधन्ति वलगन्ति तप्ताः,
फेनम् अस्यन्ति बहुलान् च बिन्दून्।
योषेव दृष्ट्वा पतिम् ऋत्वियाय,
एतै तण्डुलैः भवता समापः।29।
3447. उत् स्थापय सीदतो बुध्ने एनान्,
अद्भिः आत्मानम् अभि सम् स्पृशन्ताम्।
अमांसि पात्रैः उदकम् यत् एतत्,
मिताः तण्डुलाः प्रतिशे यदि इमाः।30।
3448.प्र यच्छ पर्शुम् त्वरय आ हर,
ओषम् अहिंसन्त ओषधीः दान्तु पर्वन्।
यासाम् सोमः परि राज्यम् बभूव,
अमन्युता नो वीरुधो भवन्तु।31।
3449. नवम् बर्हिः ओदनाय स्तृणीत,
प्रियम् हृदः चक्षुषो वल्गु अस्तु।
तस्मिन् देवाः सह दैवीः विशन्तु,
इमम् प्र अश्नन्तु ऋतुभिः निषद्य।32।
3450. वनस्पते स्तीर्णम् आ सीद,
बर्हिः अग्निष्टोमैः संमितो देवताभिः।
त्वष्टेव रूपम् सुकृतम् स्वधित्या,
एना एहाः परि पात्रे ददृश्राम्य्र।33।
3451. षष्टयाम् शरत्सु निधिपा अभि,
इच्छात् स्वः पक्वेन अभि अश्नवातै।
उप एनम् जीवान् पितरः च पुत्रा,
एतम् स्वर्गम् गमय अन्तम् अग्नेः।34।
3452. धर्ता ध्रियस्व धरुणे पृथिव्या,
अच्युतम् त्वा देवताः च्यवयन्तु।
तम् त्वा दम्पती जीवन्तौ जीवपुत्रो,
उत् वासयातः परि अग्निधानात्।35।
3453. सर्वान् समागा अभिजित्य लोकान्,
यावन्तः कामाः सम् अतीतृप तान्।
वि गाहेथाम् आयवनम् च दर्विः,
एकस्मिन् पात्रे अधि उत् हर एनम्।36।
3454. उप स्तृणीहि प्रथय पुरस्तात्,
घृतेन पात्रम् अभि धारय एतत्।
वाश्रेव उस्रा तरुणम् स्तनस्युम्,
इमम् देवासो अभिहिङ्कृणोत।37।
3455. उप अस्तरीः अकरो लोकम्,
एतम् उरुः प्रथताम् असमः स्वर्गः।
तस्मिन् श्रयातै महिषो सुपर्णो,
देवा एनम् देवताभ्यः प्र यच्छान्।38।
3456. यद्यत् जाया पचति त्वत्,

परः-परः पतिः वा जाये त्वत् तिरः।
सम् तत् सृजेथाम् सह वाम् तत्,
अस्तु सम्पादयन्तौ सह लोम् एकम्।39।
3457. यावन्तो अस्याः पृथिवीम् सचन्ते,
अस्मत् पुत्राः परि ये संबभूवुः।
सर्वान् तान् उप पात्रे ह्वयेथाम्
नाभिम् जानानाः शिशवः समायान्।40।
3458. वसोः या धारा मधुना प्रपीना,
घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः।
सर्वाः ता अव रून्धे स्वर्गः षष्ट्याम्,
शरत्सु निधिपा अभि इच्छात्।41।
3459.निधिम् निधिपा अभि एनम् इच्छात्,
अनीश्वरा अभित सन्तु ये अन्ये।
अस्माभि दत्तो निहितः स्वर्गः त्रिभिः,
काण्डैः त्रीन् स्वर्गान् अरुक्षत्।42।
3460. अग्नी रक्षः तपतु यत् विदेवम्,
क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त।
नुदाम एनम् अप रुध्मो अस्मत्,
आदित्या एनम् अङ्गिरसः सचन्ताम्।43।
3461. आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो,
मधु इदम् घृतेन मिश्र प्रति वेदयामि।
शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्य अनिहत्य,
एतम् स्वर्गम् सुकृतौ अपि इतम्।44।
3462. इदम् प्र आपम् उत्तम् काण्डम् अस्य,
यस्मात् लोकात् परमेष्ठी समाप।
आ सिञ्च सर्पिः घृतवत् सम् अङ्ग्धि एष,
भागो अङ्गिरसो नो अत्र।45।
3463. सत्याय च तपसे देवताभ्यो,
निधि शेवधिम् परि दद्म एतम्।
मा नो द्यूते अव गात् मा समित्याम्,
मा स्म अन्यस्मा उत् सृजत पुरा मत्।46।
3464. अहम् पचामि अहम् ददामि,
मम इत् उ कर्मन् करुणे अधि जाया।
कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रो,
अन्वारमेथाम् वय उत्तरावत्।47।
3465. न किल्बषम् अत्र न आधारो अस्ति,
न यत् मित्रैः सममान एति।
अनूनम् पात्रम् निहितम् न एतत्,
पक्तारम् पक्वः पुनः आ विशाति।48।
3466. प्रियम् प्रियाणाम् कृणवाम,
तमः ते यन्तु यतमे द्विषन्ति।
धेनुः अनड्वान् वयोवय आयत् एव,
पौरुषेयम् अप मृत्युम् नुदन्तु।49।
3467. सम अग्नयो विदुः अन्यो अन्यम्,
य ओषधीः सचते यः च सिन्धून्।
यावन्तो देवा दिवि आतपन्ति,
हिरण्यम् ज्योतिः पचतो बभूव।50।
3468. एषा त्वचाम् पुरुषे सम् बभूव,
अनग्नाः सर्वे पशवो ये अन्ये।
क्षत्रेण आत्मानम् परि धापयाथो,
अमोतम् वासो मुखम् ओदनस्य।51।
3469. यत् अक्षेषु वदा यत् समित्याम्,
यत् वदा अनृतम् वित्तकाम्या।
समानम् तन्तुभि संवसानौ,
तस्मिन् सर्वम् शमलम् सादयाथः।52।
3470. वर्षम् वनुष्व अपि गच्छ देवान्,
त्वचो धमम् परि उत् पातयासि।
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यत्,
सयोनि लोकम् उप याहि एतम्।53।
3471. तन्वम् स्वर्गो बहुधा वि चक्रे,
यथा विद आत्मन् अन्यवर्णाम्।
अप अजैत् कृष्णाम् रुशतीम् पुनानो,
या लोहिनी ताम् ते अग्नौ जुहोमि।54।
3472. प्राच्यै त्वा दिशे अग्नये अधिपतये,
असिताय रक्षित्र आदित्याय इषुमते।
एतम् परि दद्मः तम्, नो गोपायत अस्माकम् ऐतोः।
दिष्टम् नो अत्र जरसे नि नेषत् जरा मृत्यवे,
परि णो ददातु अथ पक्वेन सह सम् भवेम।55।
3473. दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्राय अधिपतये,
तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमाय इषुमते।
एतम् परि दद्मः तम्, नो गोपायत अस्माकम् ऐतोः।
दिष्टम् नो अत्र जरसे नि नेषत् जरा मृत्यवे,
परि णो ददातु अथ पक्वेन सह सम् भवेम।56।
3474.प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणाय अधिपतये,
पृदाकवे रक्षित्रे अन्नाय इषुमते।
एतम् परि एतम् परि दद्मः,
तम् नो गोपायत अस्माकम् ऐतोः।
दिष्टम् नो अत्र जरसे नि नेषत् जरा मृत्यवे,
परि णो ददातु अथ पक्वेन सह सम् भवेम।57।
3475.उदीच्यै त्वा दिशे सोमाय अधिपतये,
स्वजाय रक्षित्रे अशन्या इषुमत्यै।
एतम् परि एतम् परि दद्मः,
तम् नो गोपायत अस्माकम् ऐतोः।
दिष्टम् नो अत्र जरसे नि नेषत् जरा मृत्यवे,
परि णो ददातु अथ पक्वेन सह सम् भवेम।58।
3476. ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवे अधिपतये,

कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः।
एतम् परि दद्मस्तम्, नो गोपायत अस्माकम् ऐतोः।
दिष्टम् नो अत्र जरसे नि नेषत् जरा मृत्यवे,
परि णो ददातु अथ पक्वेन सह सम् भवेम।59।
3477. ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतये अधिपतये,
श्वित्राय रक्षित्रे वर्षाय इषुमते।
एतम् परि दद्मस्तम्, नो गोपायत अस्माकम् ऐतोः।
दिष्टम् नो अत्र जरसे नि नेषत् जरा मृत्यवे,
परि णो ददातु अथ पक्वेन सह सम् भवेम।60।

अथ चतुर्थो अनुवाकः

सूक्तम्-4 (4- वशा गौ सूक्त)

3478.ददाम् इति एव ब्रूयात् अनु च एनाम् अभुत्सत।
वशाम् ब्रह्मभ्यो याचद्भ्यः, तत् प्रजावत् अपत्यवत्।1।
3479. प्रजया स वि क्रीणीते, पशुभिः च उप दस्यति।
य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो, देवानाम् गाम् न दित्सति।2।
3480. कूटया अस्य सम् शीर्यन्ते, श्लोणया काटम् अर्दति।
बण्डया दह्यन्ते गृहाः, काणया दीयते स्वम्।3।
3481. विलोहितो अधिष्ठानात्, शक्नो विन्दति गोपतिम्।
तथा वशायाः संविद्यम्, दुरदभ्ना हि उच्यसे।4।
3482. पदोः अस्या अधिष्ठानात्,
विक्लिन्दुः नाम विन्दति।
अनामनात् सम् शीर्यन्ते, या मुखेन उपजिघ्रति।5।
3483. यो अस्याः कर्णौ आस्कुनोति, आ स देवेषु वृश्चते।
लक्ष्म कुर्व इति मन्यते, कनीयः कृणुते स्वम्।6।
3484. यत् अस्याः कस्मै चित् भोगाय,
बालान् कश्चित् प्रकृन्तति।
ततः किशोरा म्रियन्ते, वत्सान् घातुको वृकः।7।
3485. यत् अस्या गोपतौ सत्या,
लोम ध्वाङ्क्षो अजीहिडत्।
ततः कुमारा म्रियन्ते, यक्ष्मो विन्दति अनामनात्।8।
3486. यत् अस्याः पल्पूलनम्, शकृत् दासी समस्यति।
ततो अपरूपम् जायते, तस्मात् अव्येष्यत् ऐनसः।9।
3487. जायमाना अभि जायते, देवान् सब्राह्मणान् वशा।
तस्मात् ब्रह्मभ्यो देया एषा,
तत् आहुः स्वस्य गोपनम्।10।
3488. य एनाम् वनिम् आयन्ति, तेषाम् देवकृता वशा।
ब्रह्मज्येम् तत् अब्रुवन्, य एनाम् निप्रियायते।19।
3489. य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो,
देवानाम् गाम् न दित्सति।
आ स देवेषु वृश्चते, ब्राह्मणानाम् च मन्यवे।12।
3490. यो अस्य स्यात् वशाभोगो,
अन्याम् इच्छेत तर्हि सः।
हिस्ते अदत्ता पुरुषम्, याचिताम् च न दित्सति।13।
3491. यथा शेवधिः निहितो, ब्राह्मणानाम् तथा वशा।
ताम् एतत् अच्छ आयन्ति,
यस्मिन् कस्मिन् च जायते।14।
3492. स्वम् एतत् अच्छायन्ति,
यत् वशाम् ब्राह्मणा अभि।
यथा एनान् अन्यस्मिन्,
जिनीयात् एव अस्या निरोधनम्।15।
3493. चरेत् एव आ त्रैहायणात्, अविज्ञागदा सती।
वशाम् च विद्यात् नारद, ब्राह्मणाः तर्हि एष्याः।16।
3494. य एनाम् अवशाम् आह,
देवानाम् निहितम् निधिम्।
उभौ तस्मै भवाशर्वौ, परिक्रम्य इषुम् अस्यतः।17।
3495. यो अस्या ऊधो न वेद, अथो अस्या स्तनान् उत।
उभयेन एव अस्मै दुहे दातुम्, च इत् अशकत् वशाम्।18।
3496. दुरदभ्ना एनम् आ शये, याचिताम् च न दित्सति।
न अस्मै कामाः सम् ऋध्यन्ते,
याम् अदत्त्वा चिकीर्षति।19।
3497. देवा वशाम् अयाचन्, मुखम् कृत्वा ब्राह्मणम्।
तेषाम् सर्वेषाम् अददत्, हेडम् नि एति मानुषः।20।
3498. हेडम् पशूनाम् नि एति,
ब्राह्मणेभ्यो अददत् वशाम्।
देवानाम् निहितम् भागम्, मर्त्यः च इत् निप्रियायते।21।
3499. यत् अन्ये शतम् याचेयुः,
ब्राह्मणा गोपतिम् वशाम्।
अथ एनाम् देवा अब्रुवन्, एवम् ह विदुषो वशा।22।
3500. य एवम् विदुषे अदत्त्वा,
अथ अन्येभ्यो ददत् वशाम्।
दुर्गा तस्मा अधिष्ठाने, पृथिवी सहदेवता।23।
3501. देवा वशाम् अयाचन्, यस्मिन् अग्रे अजायत।
ताम् एताम् विद्यात् नारदः, सह देवैः उत् आजत।24।
3502. अनपत्यम् अल्पपशुम्, वशा कृणोति पूरुषम्।
ब्राह्मणैः च याचिताम्, अथ एनाम् निप्रियायते।25।
3503. अग्नीषोमाभ्याम् कामाय, मित्राय वरुणाय च।
तेभ्यो याचन्ति ब्राह्मणाः, तेषु आ वृश्चते अददत्।26।
3504. यावत् अस्या गोपतिः,
न उपश्रृणुयात् ऋचः स्वयम्।
चरेत् अस्य तावत् गोषु, न अस्य श्रुत्वा गृहे वसेत्।27।
3505. यो अस्या ऋच उपश्रुत्य, अथ गोषु अचीचरत्।
आयुः च तस्य भूतिम्, च देवा वृश्चन्ति हीडिताः।28।
3506. वशा चरन्ती बहुधा, देवानाम् निहितो निधिः।
आविः कृणुष्व रूपाणि, यदा स्थाम जिघांसति।29।
3507. आविः आत्मानम् कृणुते, यदा स्थाम जिघांसति।

अथो ह ब्रह्मभ्यो वशा, याच्ञ्याय कृणुते मनः।30।
3508. मनसा सम् कल्पयति, तत् देवान् अपि गच्छति।
ततो ह ब्रह्माणो वशाम्, उपप्रयन्ति याचितुम्।31।
3509. स्वधाकारेण पितृभ्यो, यज्ञेन देवताभ्यः।
दानेन राजन्यो वशाया, मातुः हेडम् न गच्छति।32।
3510. वशा माता राजन्यस्य, तथा संभूतम् अग्रशः।
तस्या आहुः अनर्पणम्, यत् ब्रह्मभ्यो प्रदीयते।33।
3511. यथा आज्यम् प्रगृहीतम्, आलुम्पेत् स्रुचो अग्नये।
एवा ह ब्रह्मभ्यो वशाम्, अग्नय आ वृश्चते अददत्।34।
3512. पुरोडाशवत्सा सुदुघा, लोके अस्मा उप तिष्ठति।
सा अस्मै सर्वान् कामान्, वशा प्रददुषे दुहे।35।
3513. सर्वान् कामान् यमराज्ये, वशा प्रददुषे दुहे।
अथ आहुः नारकम् लोकम्, निरुन्धानस्य याचिताम्।36।
3514. प्रवीयमाना चरति, क्रुद्धा गोपतये वशा।
वेहतम् मा मन्यमानो, मृत्योः पाशेषु बध्यताम्।37।
3515. यो वेहतम् मन्यमानो, अमा च पचते वशाम्।
अपि अस्य पुत्रान् पौत्रान्, च याचयते बृहस्पतिः।38।
3516. महत् एषा अव तपति, चरन्ती गोषु गौः अपि।
अथो ह गोपतये वशा, अददुषे विषम् दुहे।39।
3517. प्रियम् पशूनाम् भवति, यत् ब्रह्मभ्यः प्रदीयते।
अथो वशायाः तत् प्रियम्, यत् देवत्रा हविः स्यात्।40।
3518. या वशा उदकल्पयन्, देवा यज्ञात् उदेत्य।
तासाम् विलिप्त्यम् भीमाम्, उदाकुरुत नारदः।41।
3519. ताम् देवा अमीमांसन्त, वशा इयाम् अवसा एति।
ताम् अब्रवीत् नारद एषा, वशानाम् वशतमा इति।42।
3520. कति नु वशा नारद, याः त्वम् वेत्थ मनुष्यजाः।
ताः त्वा पृच्छामि विद्वांसम्,
कस्या न अश्नीयात् ब्रह्मणः।43।
3521. विलिप्त्या बृहस्पते, या च सूतवशा वशा।
तस्या न अश्नीयात् अब्राह्मणो, य आशंसेत भूत्याम्।44।
3522. नमः ते अस्तु नारद, अनुष्ठु विदुषे वशा।
कतमा आसाम् भीमतमा, याम् अदत्त्वा पराभवेत्।45।
3523. विलिप्ती या बृहस्पते, अथो सूतवसा वशा।
तस्या न अश्नीयात् ब्राह्मणो, य आशंसेत भूत्याम्।46।
3524. त्रीणि वै वशाजातानि, विलिप्ती सूतवशा वशा।
ताः प्र यच्छेत् ब्रह्मभ्यः, सो अनाव्रस्कः प्रजापतौ।47।
3525. एतत् वो ब्राह्मणा हविः, इति मन्वीत याचितः।
वशांम् च इत् एनम् याचेयुः, या भीमा अददुषो गृहे।48।
3526. देवा वशाम् परि अवदन्,
न नो अदात् इति हीडिताः।
एताभिः ऋग्भिः भेदम्, तस्मात् वै स परा अभवत्।49।
3527. उत एनाम् भेदो न आददात्,
वशाम् इन्द्रेण याचितः।
तस्मात् तम् देवा आगसो, अवृश्चन् अहमुत्तरे।50।
3528. ये वशाया अदानाय, वदन्ति परिरापिणः।
इन्द्रस्य मन्यवे जाल्मा, आ वृश्चन्ते अचित्त्या।51।
3529. ये गोपतिम् पराणीय, अथ आहुः मा ददा इति।
रुद्रस्य अस्ताम् ते हेतिम्, परि यन्ति अचित्त्या।52।
3530. यदि हुताम् यदि अहुताम्, अमा च पचते वशाम् ।
देवान् सब्राह्मणान् ऋत्वा,
जिह्मो लोकात् निः ऋच्छति।53।

अथ पञ्चमो अनुवाकः

सूक्तम् 5, पर्यार्य 1 (5- ब्रह्मगवी सूक्त)

3531. श्रमेण तपसा सृष्टा, ब्रह्मणा वित्ता ऋते श्रिता।1।
3532. सत्येन आवृता श्रिया, प्रावृता यशसा परीवृता।2।
3533. स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया,
गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।3।
3534. ब्रह्म पदवायम्, ब्राह्मणो अधिपतिः।4।
3535. ताम् अततानस्य ब्रह्मगवीम्,
जिनतो ब्राह्मणम् क्षत्रियस्व।5।
3536. अप क्रामति सूनृता, वीर्यम् पुण्या लक्ष्मीः।6।

पर्याय 2 (6 ब्रह्मगवी सूक्त)

3537. ओजः च तेजः च सहः च बलम् च,
वाक् च इन्द्रियम् च श्रीः च धर्मः च।7।
3538. ब्रह्म च क्षत्रम् च राष्ट्रम् च विशः च,
त्विषिः च यशः च वर्चः च द्रविणम् च।8।
3539. आयुः च रूपम् च नाम च कीर्तिः च,
प्राणः च अपानः च चक्षुः च श्रोत्रम् च।9।
3540. पयः च रसः च अन्नम् च अन्नाद्यम् च,
ऋतम् च सत्यम् च इष्टम् च
पूर्तम् च प्रजा च पशवः च।10।
3541. तानि सर्वाणि अप क्रामन्ति ब्रह्मगवीम्,
आददानस्य जिनतो ब्राह्मणम् क्षत्रियस्य।11।

पर्याय 3 (7 ब्रह्मगवी सूक्त)

3542. सा एषा भीमा ब्रह्मगवी अघविषा,
साक्षात् कृत्या कूल्बजम् आवृता।12।
3543. सर्वाणि अस्याम् घोराणि, सर्वे च मृत्यवः।13।
3544. सर्वाणि अस्याम् क्रूराणि, सर्वे पुरुषवधाः।14।
3545. सा ब्रह्मज्यम् देवपीयुम्, ब्रह्मगवी आदीयमाना
मृत्योः पड्वीश आ द्यति।15।
3546. मे निः शतवधा हि सा,
ब्रह्मज्यस्य क्षितिः हि सा।16।
3547. तस्मात् वै ब्रह्मणानाम्,
गौः दुराधर्षा विजानता।17।
3548. वज्रो धावन्ती, वैश्वानर उद्वीता।18।

3549. हेतिः शफान् उत्खदन्ती, महादेवो अपेक्षमाणा।19।
3550. क्षुरपविः ईक्षमाणा, वाश्यमाना अभि स्फूर्जति।20।
3551. मृत्युः हिङ्कृण्वती उग्रो,
देवः पुच्छम् पर्यस्यन्ती।21।
3552. सर्वज्यानिः कर्णौ वरीवर्जयन्ती,
राजयक्ष्मो मेहन्ती।22।
3553. मेनिः दुह्यमाना, शीर्षक्तिः दुग्धा।23।
3554. सेदिः उपतिष्ठन्ती, मियोयोधः परामृष्टा।24।
3555. शरव्या मुखे अपिनह्यमान, ऋतिः हन्यमाना।25।
3556. अघविषा निपतन्ती, तमो निपतिता।26।
3557. अनुगच्छन्ती प्राणान् उप दासयति,
ब्रह्मगवी ब्रह्मज्यस्य।27।

पर्याय 4 (8- ब्रह्मगवी सूक्त)

3558. वैरम् विकृत्यमाना, पौत्राद्यम् विभाज्यमाना।28।
3559. देवहेतिः ह्रीयमाणा, व्यृद्धिः हृता।29।
3560. पाप्मा अधिधीयमाना, पारुष्यम् अवधीयमाना।30।
3561. विषम् प्रयस्यन्ती, तक्मा प्रयस्ता।31।
3562. अघम् पच्यमाना, दुःष्वप्न्यम् पक्वा।32।
3563. मूलबर्हणी पर्याक्रियमाणा, क्षितिः पर्याकृता।33।
3564. असंज्ञा गन्धेन शुक्,
उद्ध्रियमाणा आशीविष उद्धृता।34।
3565. अभूतिः उपह्रियमाणा, पराभूतिः उपहृता।35।
3566. शर्व क्रुद्धः पिश्यमाना, शिमिदा पिशिता।36।
3567. अवर्तिः अश्यमाना, निर्ऋतिः अशिता।37।
3568. अशिता लोकात् छिनत्ति ब्रह्मगवी,
ब्रह्मज्यम् अस्मात् च अमुष्मात् च।38।

पर्याय 5 (9 ब्रह्मगवी सूक्त)

3569. तस्या आहननम् कृत्या मेनिः,
आशसनम् वलग ऊबध्यम्।39।
3570. अस्वगता परिह्णुता।40।
3571. अग्निः क्रव्यात् भूत्वा ब्रह्मगवी,
ब्रह्मज्यम् प्रविश्य अत्ति।41।
3572. सर्वा अस्य अङ्गा, पर्वा मूलानि वृश्चति।42।
3573. छिनत्ति अस्य पितृबन्धु,
परा भावयति मातृबन्धु।43।
3574. विवाहान् ज्ञातीन् सर्वान् अपि क्षापयति,
ब्रह्मगवी ब्रह्मज्यस्य क्षत्रियेण अपुनर्दीयमाना।44।
3575. अवास्तुम् एनम् अस्वगम् अप्रजसम् करोति,
अपरापरणो भवति क्षीयते।45।
3576. य एवम् विदुषो ब्राह्मणस्य,
क्षित्रयो गाम् आदत्ते।46।

पर्यायः 6 (10 ब्रह्मगवी सूक्त)

3577. क्षिप्रम् वै तस्य आहनने, गृध्राः कुर्वत ऐलबम्।47।
3578. क्षिप्रम् वै तस्य आदहनम्,
परि नृत्यन्ति केशिनीः आघ्नानाः।
पाणिना उपसि कुर्वाणाः, पापम् ऐलबम्।48।
3579. क्षिप्रम् वै तस्य वास्तुषु,
वृकाः कुर्वत ऐलबम्।49।
3580. क्षिप्रम् वै तस्य पृच्छन्ति,
यत् तत् आसीत् इदम् नु तात् इति।50।
3581. छिन्धि आ च्छिन्धि प्र,
च्छिन्धि अपि क्षापय क्षापय।51।
3582. आददानम् अङ्गिरसि, ब्रह्मज्यम् उप दासय।52।
3583. वैश्वदेवी हि उच्यसे, कृत्या कूल्बजम् आवृता।53।
3584. ओषन्ती समोषन्ती, ब्रह्मणो वज्रः।54।
3585. क्षुरपविः मृत्युः भूत्वा, वि धाव त्वम्।55।
3586. आ दत्से जिनताम् वर्च,
इष्टम् पूर्तम् च आशिषः।56।
3587. आदाय जीतम् जीताय लोके,
अमुष्मिन् प्र यच्छसि।57।
3588. अघ्न्ये पदवीः, ब्राह्मणस्य अभिशस्त्या।58।
3589. मेनिः शरव्या भव, अघात् अघविषा भव।59।
3590. अघ्न्ये प्र शिरो जहि ब्रह्मज्यस्य,
कृतागसो देवपीयोः अराधसः।60।
3591. त्वया प्रमूर्णम् मृदितम्,
अग्निः दहतु दुश्चितम्।61।

पर्यायः 7 (11 ब्रह्मगवी सूक्त)

3592. वृश्च प्र वृश्च सम् वृश्च, दह प्र दह सम् दह।62।
3593. ब्रह्मज्यम् देवी अघन्य, मूलात् अनुसंदह।63।
3594. यथा अयात् यमसादनात्, पापलोकान् परावतः।64।
3595. एवा त्वम् देवी अघ्न्ये ब्रह्मज्यस्य,
कृतागसो देवपीयोः अराधसः।65
3596. वज्रेण शतपर्वणा, तीक्ष्णेन क्षुरभृष्टिना।66।
3597. प्र स्कन्धान्, प्र शिरो जहि।67।
3598. लोमानि अस्य सम् छिन्धि,
त्वचम् अस्य वि वेष्टय।68।
3599. मांसानि अस्य शातय,
स्नावानि अस्य सम् वृह।69।
3600. अस्थीनि अस्य पीडय,
मज्जानम् अस्य निर्जहि।70।
3601. सर्वा अस्य आङ्गा, पर्वाणि वि श्रथय।71।
3602. अग्निः एनम् क्रव्यात् पृथिव्या नुदताम्,
उत् ओषतु वायुः अन्तरिक्षात् महतो वरिम्णः।72।
3603. सूर्य एनम् दिवः, प्र णुदताम् न्योषतु।73।

इति द्वादश काण्ड समाप्त

ॐ

त्रयोदशम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

सूक्तम् 1 (1 अध्यात्म प्रकरण सूक्त)

3604. उदेहि वाजिन् यो अप्सु अन्तः,
इदम् राष्ट्रम् प्र विश सूनृतावत्।
यो रोहितो विश्वम् इदम् जजान,
स त्वा राष्ट्राय सुभृतम् बिभर्तु।1।
3605. उत् वाज आ गन् यो अप्सु अन्तः,
विश आ रोह त्वद्योनयो याः।
सोमम् दधानो अप ओषधीः गाः,
चतुष्पदो द्विपद आ वेशय इह।2।
3606. यूयम् उग्रा मरुतः पृश्निमातर,
इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून।
आ वो रोहितः श्रृणवत् सुदानव,
त्रिषप्तासो मरुतः स्वादुसंमुदः।3।
3607. रुहो रुरोह रोहित आ रुरोह,
गर्भो जनीनाम् जनुषाम् उपस्थम्।
ताभिः संरब्धम् अनु अविन्दन् षट् उर्वीः,
गातुम् प्रपश्यन् इह राष्ट्रम् अहाः।4।
3608. आ ते राष्ट्रम् इह रोहितो अहार्षीत्,
वि आस्थत् मृधो अभयम् ते अभूत्।
तस्मै ते द्यावापृथिवी रेवतीभिः,
कामम् दुहाथाम् इह शक्वरीभिः।5।
3609. रोहितो द्यावापृथिवी जजान,
तत्र तन्तुम् परमेष्टी ततान।
तत्र शिश्रिय अज एकपादो, अद्दंहत् द्यावापृथिवी बलेन।6।
3610. रोहितो द्यावापृथिवी अद्दंहत्,
तेन स्व स्तभितम् तेन नाकः।
तेन अन्तरिक्षम् विमिता रजांसि,
तेन देवा अमृतम् अनु अविन्दन्।7।
3611. वि रोहतो अमृशत् विश्वरूपम्,
समाकुर्वाणः प्ररुहो रुहः च।
दिवम् रूढ्वा महता महिम्ना,
सम ते राष्ट्रम् अनक्तु पयसा घृतेन।8।
3612.याः ते रुहः प्ररुहो याः त आरुहो,
याभि आपृणासि दिवम् अन्तरिक्षम्।
तासाम् ब्रह्मणा पयसा वावृधानो,
विशि राष्ट्रे जागृहि रोहितस्य।9।
3613. याः ते विशः तपसः संबभूवुः वत्सम्,
गायत्रीम् अनु ता इह आ अगुः।
ताः त्वा विशन्तु मनसा शिवेन,
संमाता वत्सो अभ्येतु रोहितः।10।
3614. ऊर्ध्वो रोहितो अधि नाके अस्थात्,
विश्वा रूपाणि जनयन् युवा कविः।
तिग्मेन अग्निः ज्योतिषा वि भाति,
तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि।11।
3615. सहस्रश्रृङ्गो वृषभो जातवेदा,
घृताहुतः सोमपृष्टः सुवीरः।
मा मा हासीत् नाथितो नेत् त्वा जहानि,
गोपोषम् च मे वीरपोषम् च धेहि।12।
3616. रोहितो यज्ञस्य जनिता मुखम् च,
रोहिताय वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
रोहितम् देवा यन्ति सुमनस्यमानाः,
स मा रोहैः सामित्यै रोहयतु।13।
3617. रोहितो यज्ञम् वि अदधात् विश्वकर्मणे,
तस्मात् तेजांसि उप मा इमानि आ अगुः।
वोचेयम् ते नाभि भुवनस्य अधि मज्मनि।14।
3618. आ त्वा रुरोह बृहती उत,
पङ्क्तिः आ ककुब् वर्चसा जातवेदः।
आ त्वा रुरोह उष्णिहाक्षरो वषट्कार,
आ त्वा रुरोह रोहितो रेतसा सह।15
3619. अयम् वस्ते गर्भम् पृथिव्या,
दिवम् वस्ते अयम् अन्तरिक्षम्।
अयम् ब्रध्नस्य विष्टपि, स्वः लोकान् वि आनशे।16।
3620. वाचः पते पृथिवी नः स्योना,
स्योना योनिः तल्पा नः सुशेवा।
इह एव प्राण सख्ये नो अस्तु तम् त्वा,
परमेष्ठिन् परि अग्निः आयुषा वर्चसा दधातु।17।
3621. वाचः पत ऋतवः पञ्च ये नौ,
वैश्वकर्मणाः परि ये संबभूवुः।
इह एव प्राणः सख्ये नो अस्तु तम् त्वा परमेष्ठिन्,
परि रोहित आयुषा वर्चसा दधातु।18।
3622. वाचः पते सौमनसम् मनः च,
गोष्ठे नो गा जनय योनिषु प्रजाः।
इह एव प्राणः सख्ये नो अस्तु तम् त्वा परमेष्ठिन्,
परि अहम् आयुषा वर्चसा दधामि।19।
3623. परि त्वा धात् सविता देवो,
अग्नि वर्चसा मित्रावरुणौ अभि त्वा।
सर्वा अरातीः अवक्रामन् आ इहि,
इदम् राष्ट्रम् अकरः सूनृतावत्।20।
3624. यम् त्वा पृषती रथे प्रष्टिः वहति रोहित।
शुभा यासि रिणन् अपः।21।

3625. अनुव्रता रोहिणी रोहितस्य,
सूरिः सुवर्णा बृहती सुवर्चाः।
तया वाजान् विश्वरूपाम् जयेम,
तया विश्वाः पृतना अभि ष्याम्।24।
3626. इदम् सदो रोहिणी रोहितस्य,
असौ पन्थाः पृषती येन याति।
ताम् गन्धर्वाः कश्यपा उत् नयन्ति,
ताम् रक्षन्ति कवयो अप्रमादम्।23।।
3627. सूर्यस्य अश्वा हरयः केतुमन्तः,
सदा वहन्ति अमृताः सुखम् रथम्।
घृतपावा रोहितो भ्राजमानो दिवम्,
देवः पृषतीम् आ विवेश।24।
3628. यो रोहितो वृषभः तिग्मशृङ्गः,
परि अग्निम् परि सूर्यम् बभूव।
यो विष्टभ्नाति पृथिवीम् दिवम् च,
तस्मात् देवा अधि सृष्टीः सृजन्ते।25।
3629. रोहितो दिवम् आ अरुहत् परि अर्णवात्।
सर्वा रुरोह रोहितो रुहः।26।
3630. वि मिमीष्व पयस्वतीम् घृताचीम्,
देवानाम् धेनुः अनपस्पृक् एषा।
इन्द्रः सोमम् पिबतु क्षेमो अस्तु,
अग्निः प्र स्तौतु वि मृधो नुदस्व।27।
3631. समिद्धो अग्निः समिधानो, घृतवृद्धो घृताहुतः।
अभीषाट् विश्वाषाट् अग्निः, सपत्नान् हन्तु ये मम।28।
3632. हन्तु एनान् प्र दहतु, अरिः यो नः पृतन्यति।
क्रव्यादा अग्निना वयम्, सपत्नान् प्र दहामसि।29।
3633. अवाचीनान् अव जहि, इन्द्र वज्रेण बाहुमान्।
अधा सपत्नान् मामकान्, अग्नेः तेजोभिः आ अदिषि।30।
3634. अग्ने सपत्नान् अधरान् पादय अस्मत्,
व्यथय आ सजातम् उत्पिपानम् बृहस्पते।
इन्द्राग्नी मित्रावरुणौ अधरे,
पद्यन्ताम् अप्रतिमन्यूयमानाः।31।
3635. उद्यन् त्वम् देव सूर्य, सपत्नान् अव मे जहि।
अव एनान् अश्मना जहि, ते यन्तु अधमम् तमः।32।
3636. वत्सो विराजो वृषभो मतीनाम्,
आ रुरोह शुक्रपृष्ठो अन्तरिक्षम्।
घृतेन अर्कम् अभि अर्चन्ति वत्सम्,
ब्रह्म सन्तम् ब्रह्मणा वर्धयन्ति।33।
3637. दिवम् च रोह पृथिवी च रोह,
राष्ट्रम् च रोह द्रविणम् च रोह।
प्रजाम् च रोह अमृतम् च रोह,
रोहितेन तन्वम् सम् स्पृशस्व।34।
3638. ये देवा राष्ट्रभृतो, अभितो यन्ति सूर्यम्।
तैः ते रोहितः संविदानो, राष्ट्रम् दधातु सुमनस्यमानः।35।
3639.उत् त्वा यज्ञा ब्रह्मपूता वहन्ति,
अध्वगतो हरयः त्वा वहन्ति।
तिरः समुद्रम् अति रोचते अर्णवम्।36।
3640. रोहिते द्यावापृथिवी अधि श्रिते,
वसुजिति गोजिति संधनजिति।
सहस्रम् यस्य जनिमानि सप्त च,
वोचेयम् ते नाभि भुवनस्य अधि भज्मनि।37।
3641. यशा यासि प्रदिशो दिशः च,
यशाः पशूनाम् उत चर्षणीनाम्।
यशाः पृथिव्या अदित्या उपस्थे,
अहम् भूयासम् सवितेव चारुः।38।
3642. अमुत्र सन् इह वेत्थ, इतः सन् तानि पश्यसि।
इतः पश्यन्ति रोचनम्, दिवि सूर्यम् विपश्चितम्।39।
3643. देवो देवान् मर्चयसि, अन्तः चरसि अर्णवे।
समानम् अग्निम् इन्धते, तम् विदुः कवयः परे।40।
3644. अवः परेण पर एना अवरेण पदा,
वत्सम् बिभ्रती गौः उत् अस्थात्।
सा कद्रीची कम् स्वित् अर्धम् परा अगात्,
क्व स्वित् सूते नहि यूथे अस्मिन्।41।
3645. एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी,
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी।
सहस्राक्षरा भुवनस्य पङ्क्तिः,
तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति।42।
3646. आरोहन् द्याम् अमृतः, प्र अव मे वचः।
उत त्वा यज्ञा ब्रह्मपूता वहन्ति,
अध्वगतो हरयः त्वा वहन्ति।43।
3647. वेद तत् ते अमर्त्य, यत् त आक्रमणम् दिवि।
यत् ते सधस्थम्, परमे व्योमन्।44।
3648. सूर्यो द्याम् सूर्यः पृथिवीम्,
सूर्य आपो अति पश्यति।
सूर्यो भूतस्य एकम् चक्षुरा, रुरोह दिवम् महीम्।45।
3649. उर्वीः आसन् परिधयो, वेदिः भूमिः अक्लपत।
तत्र एतौ अग्नी आ अधत्त, हिमम् घ्रंसम् च रोहितः।46।
3650. हिमम् घ्रंसम् च आधाय, यूपान् कृत्वा पर्वतान्।
वर्षाज्यौ अग्नी ईजाते, रोहितस्य स्वर्विदः।47।
3651. स्वर्विदो रोहितस्य, ब्रह्मणा अग्निः सम् इध्यते।
तस्मात् घ्रंसः तस्मात् हिमः, तस्मात् यज्ञो अजायत।48।
3652.ब्रह्मणा अग्नी वावृधानौ, ब्रह्मवृद्धौ ब्रह्माहुतौ।
ब्रह्मेद्धौ अग्नी ईजाते, रोहितस्य स्वर्विदः।49।
3653. सत्ये अन्यः समाहितो, अप्सु अन्यः सम् इध्यते।
ब्रह्मेद्धौ अग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः।50।
3654. यम् वातः परिशुम्भति,

यम् वा इन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः।
ब्रह्मेद्धौ अग्नी ईजाते, रोहितस्य स्वर्विदः।51।
3655. वेदिम् भूमिम् कल्पयित्वा, दिवम् कृत्वा दक्षिणाम्।
घ्रंसम् तत् अग्निम् कृत्वा चकार विश्वम्,
आत्मन्वत् वर्षेण आज्येन रोहितः।52।
3656. वर्षम् आज्यम् घ्रंसो, अग्निः वेदिः भूमिः अकल्पत।
तत्र एतान् पर्वतान् अग्निः, गीर्भि ऊर्ध्वान् अकल्पयत्।53।
3657. गीर्भिः ऊर्ध्वान् कल्पयित्वा,
रोहितो भूमिम् अब्रवीत्।
त्वयि इदम् सर्वम् जायताम्,
यत् भूतम् यत् च भाव्यम्।54।
3658. स यज्ञः प्रथमो, भूतो भव्यो अजायत।
तस्मात् ह जज्ञ इदम् सर्वम् यत् किम् च इदम्,
विरोचते रोहितेन ऋषिणा आभृतम्।55।
3659. यः च गाम् स्फुरति, प्रत्यङ् सूर्यम् च मेहति।
तस्य वृश्चामि ते मूलम्, न च छायाम् करवो अपरम्।56।
3660. यो मा अभिच्छायम् अत्येषि,
माम् च अग्निम् च अन्तरा।
तस्य वृश्चामि ते मूलम्, न च छायाम् करवो अपरम्।57।
3661. यो अद्य देव सूर्य त्वाम्,
च माम् च अन्तरा अयति।
दुष्वप्न्यम् तस्मिन् शमलम्, दुरितानि च मृज्महे।58।
3662. मा प्र गाम पथो वयम्, मा यज्ञात् इन्द्र सोमिनः।
मा अन्त स्थुः नो अरातयः।59।
3663.यो यज्ञस्य प्रसाधनः, तन्तुः देवेषु आततः।
तम् आहुतम् अशीमहि।60।

अथ द्वितीयो अनुवाकः

सूक्तम् 2 (2 अध्यात्म सूक्त)

3664. उत् अस्य केतवो दिवि, शुक्रा भ्राजन्त ईरते।
आदित्यस्य नृचक्षसो, महिव्रतस्य मीढुषः।1।
3665. दिशाम् प्रज्ञानाम् स्वरयन्तम् अर्चिषा,
सुपक्षम् आशुम् पतयन्तम् अर्णवे।
स्तवाम सूर्यम् भुवनस्य गोपाम्,
यो रश्मिभिः दिश आभाति सर्वाः।2।
3666. यत् प्राङ् प्रत्यङ् स्वधया यासि,
शीभम् नानारूपे अहनी कर्षि मायया।
तत् आदित्य महि तत् ते महि श्रवो,
यत् एको विश्वम् परि भूम जायसे।3।
3667. विपश्चितम् तरणिम् भ्राजमानम्,
वहन्ति यम् हरितः सप्त बह्वीः।
सुतात् यम् अत्रिः दिवम् उन्निनाय,
तम् त्वा पश्यन्ति परियान्तम् आजिम्।4।
3668. मा त्वा दभन् परियान्तम् आजिम्,
स्वस्ति दुर्गान् अति याहि शीभम्।
दिवम् च सूर्य पृथिवीम् च देवीम्,
अहोरात्रे विमिमानो यत् एषि।5।
3769. स्वस्ति ते सूर्य चरसे रथाय,
येन उभौ अन्तौ परियासि सद्यः।
यम् ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः,
शतम् अश्वा यदि वा सप्त बह्वीः।6।
3670.सुखम् सूर्य रथम् अशुमन्तम्,
स्योनम् सुवन्हिम् अधि तिष्ठ वाजिनम्।
यम् ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः,
शतम् अश्वा यदि वा सप्त बह्वीः।7।
3671. सप्त सूर्यो हरितो यातवे रथे,
हिरण्यत्वचसो बृहतीः युक्त।
अमोचि शुक्रो रजसः परस्तात्,
विधूय देवः तमो दिवम् अरुहत्।8।
3672. उत् केतुना बृहता देव आ अगन्,
अप अवृक् तमो अभि ज्योतिः अश्रैत्।
दिव्यः सुपर्णः स वीरो वि अख्यत्,
अदितेः पुत्रो भुवनानि विश्वा।9।
3673. उद्यन् रश्मीन् आ तनुषे, विश्वा रूपाणि पुष्यसि।
उभा समुद्रौ क्रतुना वि भासि,
सर्वान् लोकान् परिभूः भ्राजमानः।10।
3674. पूर्वापरम् चरतो मायया एतौ,
शिशू क्रीडन्तौ परि यातो अर्णवम्।
विश्वा अन्यो भुवना विचष्टे,
हैरण्यैः अन्यम् हरितो वहन्ति।11।
3675. दिवि त्वा अत्रिः अधारयत्, सूर्या मासाय कर्तवे।
स एषि सुघृतः तपन्, विश्वा भूता अवचाकशत्।12।
3676. उभौ अन्तौ सम् अर्षसि, वत्सः संमातरौ इव।
ननु एतत् इतः पुरा, ब्रह्म देवा अमी विदुः।13।
3677. यत् समुद्रम् अनु श्रितम्, तत् सिषासति सूर्यः।
अध्वा अस्य विततो महान्, पूर्वः च अपरः च यः।14।
3678. तम् सम् आपनोति जूतिभिः,
ततो न अप चिकित्सति।
तेन अमृतस्य भक्षम्, देवानाम् न अव रुन्धते।15।
3679. उत् उ त्यम् जातवेदसम्, देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।16।
3680. अप त्ये तायवो यथा, नक्षत्रा यन्ति अक्तुभिः।
सूराय विश्वचक्षसे।17।
3681. अदृश्रन् अस्य केतवो, वि रश्मयो जनाम् अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा।18।
3682. तरणिः विश्वदर्शतो, ज्योतिष्कृत् असि सूर्य।

विश्वम् आ भासि रोचन।19।
3683. प्रत्यङ् देवानाम् विशः, प्रत्यङ् उत् एषि मानुषीः।
प्रत्यङ् विश्वम् स्वः दृशे।20।
3684. येना पावक चक्षसा, भुरण्यन्तम् जनाम् अनु।
त्वम् वरुण पश्यसि।21।
3685. वि द्याम् एषि रजः, पृथु अहः मिमानो अक्तुभिः।
पश्यन् जन्मानि सूर्य।22।
3686. सप्त त्वा हरितो रथे, वहन्ति देव सूर्य।
शोचिष्केशम् विचक्षणम्।23।
3687. अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः, सूरो रथस्य नप्त्यः।
ताभिः याति स्वयुक्तिभिः।24।
3688. रोहितो दिवम् अरुहत्, तपसा तपस्वी।
स योनिम् आ एति स उ जायते पुनः,
स देवानाम् अधिपतिः बभूव।25।
3689. यो विश्वचर्षणिः उत विश्वतोमुखो,
यो विश्वतस्पाणिः विश्वतस्पृथः।
सम् बाहुभ्याम् भराति सम् पतत्रैः,
द्यावापृथिवी जनयन् देव एकः।26।
3690. एकपात् द्विपदो भूयो वि चक्रमे,
द्विपात् त्रिपादम् अभि एति पश्चात्।
द्विपात् ह षट्पदो भूयो वि चक्रमे,
त एकपदः तन्वम् सम् आसते।27।
3691. अतन्द्रो यास्यन् हरितो यत् अस्थात्,
द्वे रूपे कृणुते रोचमानः।
केतुमान् उद्यन् सहमानो रजांसि,
विश्वा आदित्य प्रवतो वि भासि।28।
3692. बट् महान् असि सूर्य, बट् आदित्य महान् असि।
महान् ते महतो महिमा, त्वम् आदित्य महान् असि।29।
3693.रोचसे दिवि रोचसे अन्तरिक्षे पतङ्ग,
पृथिव्याम् रोचसे रोचसे अप्सु अन्तः।
उभा समुद्रौ रुच्या वि आपिथ,
देवो देव असि महिषः स्वर्जित्।30।
3694. अर्वाङ् परस्तात् प्रयतो व्यध्व,
आशुः विपश्चित् पतयन् पतङ्गः।
विष्णुः विचित्तः शवसा अधितिष्ठन्,
प्र केतुना सहते विश्वम् एजत्।31।
3695. चित्रः चिकित्वान् महिषः सुपर्ण,
आरोचयन् रोदसी अन्तरिक्षम्।
अहोरात्रे परि सूर्य वसाने,
प्र अस्य विश्वा तिरतो वीर्याणि।32।
3696. तिग्मो विभ्राजन् तन्वम् शिशनो,
अरंगमासः प्रवतो रराणः।
ज्योतिष्मान् पक्षी महिषो वयोधा,
विश्वा आ अस्थात् प्रदिश कल्पमानः।33।
3697. चित्रम् देवानाम् केतुः अनीकम्,
ज्योतिष्मान् प्रदिशः सूर्य उद्यन्।
दिवाकरो अति द्युम्नैः तमांसि,
विश्वा अतारीत् दुरितानि शुक्रः।34।
3698. चित्रम् देवानाम् उत् अगात् अनीकम्,
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः।
आ अप्रात् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्,
सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषः च।35।
3699. उच्चा पतन्तम् अरुणम् सुपर्णम्,
मध्ये दिवः तरणिम् भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारम् यम् आहुः,
अजस्रम् ज्योतिः यत् अविन्दत् अत्रिः।36।
3700. दिवः पृष्ठे धावमानम् सुपर्णम् अदित्याः,
पुत्रम् नाथकाम उप यामि भीतः।
स नः सूर्य प्र तिर दीर्घम् आयुः,
मा रिषाम सुमतौ ते स्याम।37।
3701. सहस्राह्ण्यम् वियतौ अस्य,
पक्षौ हरेः हंसस्य पततः स्वर्गम्।
स देवान् सर्वान् उरसि उपदद्य,
सम्पश्यन् याति भुवनानि विश्वा।38।
3702. रोहितः कालो अभवद्, रोहितो अग्रे प्रजापतिः।
रोहितो यज्ञानाम् मुखम्, रोहितः स्वः आ अभरत्।39।
3703. रोहितो लोको अभवत्, रोहितो अति अतपत् दिवम्।
रोहितो रश्मिभिः भूमिम्, समुद्रम् अनु सम् चरत्।40।
3704. सर्वा दिशः सम् अचरत्, रोहितो अधिपतिः दिवः।
दिवम् समुद्रम् आत् भूमिम्, सर्वम् भूतम् वि रक्षति।41।
3705. आरोहन् शुक्रो बृहतीः,
अतन्द्रो द्वे रूपे कृणुते रोचमानः।
चित्रः चिकित्वान् महिषो वातमाया,
यावतो लोकान् अभि यत् विभाति।42।
3706. अभि अन्यत् एति परि अन्यते,
अहोरात्राभ्याम् महिषः कल्पमानः।
सूर्य वयम् रजसि क्षियन्तम्,
गातुविदम् हवामहे नाधमानाः।43।
3707. पृथिवीप्रो महिषो नाघमानस्य,
गातुः अदब्धचक्षुः परि विश्वम् बभूव।
विश्वम् सम्पश्यन् सुविदत्रो यजत्र,
इदम् शृणोतु यत् अहम् ब्रवीमि।44।
3708. परि अस्य महिमा पृथिवीम् समुद्रम्,
ज्योतिषा विभ्राजन् परि द्याम् अन्तरिक्षम्।
सर्वम् सम्पश्यन् सुविदत्रो यजत्र,
इदम् शृणोतु यत् अहम् ब्रवीमि।45।

3709. अबोधि अग्निः समिधा जनानाम्,
प्रति धेनुमिव आयतीम् उषासम्।
यह्वा इव प्र वयाम् उज्जिहानाः,
प्र भानवः सिस्रते नाकम् अच्छ।46।

अथ तृतीयो अनुवाकः

सूक्त 3

3710. य इमे द्यावापृथिवी जजान,
यो द्रापिम् कृत्वा भुवनानि वस्ते।
यस्मिन् क्षियन्ति प्रदिशः षट् उर्वीः,
याः पतङ्गो अनु विचाकशीति,
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।1।
3711. यस्मात् वाता ऋतुथा पवन्ते,
यस्मात् समुद्रा अधि विक्षरन्ति,
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।2।
3712. यो मारयति प्राणयति,
यस्मात् प्राणन्ति भुवनानि विश्वा।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।3।
3713. यः प्राणेन् द्यावापृथिवी तर्पयति,
अपानेन समुद्रस्य जठरम् य पिपर्ति।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।4।
3714.यस्मिन् विराट् परमेष्ठी प्रजापतिः,
अग्निः वैश्वानरः सह पङ्क्त्या श्रितः
यः परस्य प्राणम्, परमस्य तेज आददे।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।5।
3715. यस्मिन् षट् उर्वीः पञ्च दिशो अधि श्रिताः,
च तस्र आपो यज्ञस्य त्रयो अक्षराः।
यो अन्तरा रोदसी, क्रुद्धः चक्षुषा ऐक्षत।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।6।
3716. यो अन्नादो अन्नपतिः,
बभूव ब्रह्मण पतिः उत यः।
भूतो भविष्यत् भुवनस्य यः पतिः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।7।
3717. अहोरात्रैः विमितम् त्रिशदङ्गम्,
त्रयोदशम् मासम् यो निर्मिमीते।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।8।
3718. कृष्णम् नियानम् हरयः सुपर्णा,
अपो वसाना दिवम् उत पतन्ति।
त आ अववृत्रन् सदनात् तस्य।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।9।
3719. यत् ते चन्द्रम् कश्यप रोचनवत्,
यत् संहितम् पुष्कलम् चित्रभानु।
यस्मिन् सूर्या आर्पिताः सप्त साकम्।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।10।
3720. बृहत् एनम् अनु वस्ते पुरस्तात्,
रथन्तरम् प्रति गृह्णाति पश्चात्।
ज्योतिः वसाने सदम् अप्रमादम्।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।11।
3721. बृहत् अन्यतः पक्ष आसीत्,
रथन्तरम् अन्यतः सबले सध्रीची।
यत् रोहितम् अजनयन्त देवाः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।

उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।12।
3722. स वरुणः सायम् अग्निः भवति,
स मित्रो भवति प्रातः उद्यन्।
स सविता भूत्वा अन्तरिक्षेण याति,
स इन्द्रो भूत्वा तपति मध्यतो दिवम्।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।13।
3723. सहस्राह्ण्यम् वियतौ अस्य,
पक्षौ हरेः हंसस्य पततः स्वर्गम्।
स देवान् सर्वान् उरसि उपदद्य,
संपश्यन् याति भुवनानि विश्वा।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।14।
3724. अयम् स देवो अप्सु अन्तः,
सहस्रमूलः पुरुशाको अत्त्रिः।
य इदम् विश्वम् भुवनम् जजान।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।15।
3725. शुक्रम् वहन्ति हरयो रघुष्यदो,
देवम् दिवि वर्चसा भ्राजमानम्।
यस्य ऊर्ध्वा दिवम् तन्वः तपन्ति,
अर्वाङ् सुवर्णः पटरैः वि भाति।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।16।
3726. येन आदित्यान् हरितः संवहन्ति,
येन यज्ञेन बहवो यन्ति प्रजानन्तः।
यत् एकम् ज्योतिः बहुधा विभाति।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।17।
3727. सप्त युञ्जन्ति रथम् एकचक्रम्,
एको अश्वो वहति सप्तनामा।
त्रिनाभि चक्रम् अजरम् अनर्वम्,
यत्र इमा विश्वा भुवना अधि तस्थुः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।18।
3728. अष्टधा युक्तो वहति वह्निः उग्रः,
पिता देवानाम् जनिता मतीनाम्।
ऋतस्य तन्तुम् मनसा मिमानः,
सर्वा दिशः पवते मातरिश्वा।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।19।
3729.सम्यञ्चम् तन्तुम् प्रदिशो अनु सर्वा,
अन्तः गायत्र्याम् अमृतस्य गर्भे।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।20।
3730. निम्रुचः तिस्रो व्युषो ह तिस्रः,
त्रीणि रजांसि दिवो अङ्ग तिस्रः।
विद्मा ते अग्ने त्रेधा जनित्रम्,
त्रेधा देवानाम् जनिमानि विद्म।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।21।
3731. वि य और्णोत् पृथिवीम् जायमान,
आ समुद्रम् अदधात् अन्तरिक्षे।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।22।
3732. त्वम् अग्ने क्रतुभिः केतुभिः हितो,
अर्कः समिद्ध उत् अरोचथा दिवि।
किम् अभि आर्चन् मरुतः पृश्निमातरो,
यत् रोहितम् जनयन्त देवाः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।23।
3733. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।

यो अस्य ईशे द्विपदो यः चतुष्पदः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।24।
3734. एकपात् द्विपदो भूयो वि चक्रमे,
द्विपात् त्रिपादम् अभि एति पश्चात्।
चतुष्पात् चक्रे द्विपदाम् अभिस्वरे,
संपश्यन् पङ्क्तिम् उपतिष्ठमानः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान्।25।
3735. कृष्णायाः पुत्रो अर्जुनो, रात्र्या वत्सो अजायत।
स ह द्याम् अधि रोहति, रुहो रुरोह रोहितः।26।

अथ चतुर्थो अनुवाकः

सूक्तम् 4 (4 अध्यात्म सूक्त)

3736. स एति सविता, स्वः दिवः पृष्ठे अवचाकशत्।1।
3737. रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।2।
3738. स धाता स विधर्ता, स वायुः नभ उच्छ्रितम्।
रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।3।
3739. सो अर्यमा स वरुणः, स रुद्रः स महादेवः।
रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।4।
3740. सो अग्निः स उ सूर्यः, स उ एव महायमः।
रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।5।
3741. तम् वत्सा उप तिष्ठन्ति, एकशीर्षाणो युताः दश।
रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।6।
3742. पश्चात् प्राञ्च आ तन्वन्ति,
यत् उदेति वि भासति।
रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।7।
3743. तस्य एषः मारुतो गणः, स एति शिक्याकृतः।8।
3744. रश्मिभिः नभ आभृतम्, महेन्द्र एति आवृतः।9।
3745. तस्य इमे नव कोशा, विष्टम्भा नवधा हिताः।10।
3746. स प्रजाभ्यो वि पश्यति,
यत् च प्राणति यत् च न।11।
3747. तम् इदम् निगतम् सहः,
स एष एक एकवृत् एक एव।12।
3748. एते अस्मिन् देवा, एकवृतो भवन्ति।13।

पर्याय 2 (5 अध्यात्म सूक्त)

3749. कीर्तिः च यशः च, अम्भः च नभः च,
ब्राह्मणवर्चसम् च अन्नम् च, अन्नाद्यम् च।14।
3750. य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।15।
3751. न द्वितीयो न तृतीयः, चतुर्थो न अपि उच्यते।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।16।
3752. न पञ्चमो न षष्टः, सप्तमो न अपि उच्यते।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।17।
3753. न अष्टमो न नवमो, दशमो न अपि उच्यते।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।18।
3754. स सर्वस्मै वि पश्यति, यत् च प्राणति यत् च न।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।19।
3755. तम् इदम् निगतम् सहः,
स एष एक एकवृतः एक एव।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।20।
3756. सर्वे अस्मिन् देवा, एकवृतो भवन्ति।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।21।

पर्याय 3 (6 अध्यात्म सूक्त)

3757. ब्रह्म च तपः च, कीर्तिः च यशः च,
अम्भः च नभः च, ब्राह्मणवर्चसम् च अन्नाद्यम् च।
य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।22।
3758. भूतम् च भव्यम् च श्रद्धा च,
रुचिः च स्वर्गः च स्वधा च।23।
3759. य एतम् देवम्, एकवृतम् वेद।24।
3760. स एव मृत्युः सो अमृतम्,
सो अभ्वम् स रक्षः।25।
3761. स रुद्रो वसुवनिः वसुदेये नमो,
वाके वषट्कारो अनु संहित।26।
3762. तस्य इमे सर्वे यातव, उप प्रशिषम् आसते।27।
3763. तस्य अमू सर्वा नक्षत्रा, वशे चन्द्रमसा सह।28।

पर्याय 4 (7 अध्यात्म सूक्त)

3764. स वा अह्नो अजायत, तस्मात् अहः अजायत।29।
3765. स वै रात्र्या अजायत, तस्मात् रात्रिः अजायत।30।
3766. स वा अन्तरिक्षात् अजायत,
तस्मात् अन्तरिक्षम् अजायत।31।
3767. स वै वायोः अजायत,
तस्मात् वायुः अजायत।32।
3768. स वै दिवो अजायत,
तस्मात् द्यौः अधि अजायत।33।
3769. स वै दिग्भ्यो अजायत,
तस्मात् दिशो अजायन्त।34।
3770. स वै भूमेः अजायत, तस्मात् भूमिः अजायत।35।
3771. स वा अग्नेः अजायत,
तस्मात् अग्निः अजायत।36।
3772. स वा अद्भ्यो अजायत,
तस्मात् आपो अजायन्त।37।

3773. स वा ऋग्भ्यो अजायत,
तस्मात् ऋचो अजायन्त।38।
3774. स वै यज्ञात् अजायत, तस्मात् यज्ञो अजायत।39।
3775. स यज्ञः तस्य यज्ञः, स यज्ञस्य शिरः कृतम्।40।
3776. स स्तनयति स वि द्योतते,
स उ अश्मानम् अस्यति।41।
3777. पापाय वा भद्राय वा, पुरुषाय असुराय वा।42।
3778. यत् वा कृणोषि ओषधीः, यत् वा वर्षसि भद्रया,
यत् वा जन्यम् अवीवधः।43।
3779. तावान् ते मघवन् महिमा,
उपो ते तन्वः शतम्।44।
3780. उपो ते बध्वे बद्धानि, यदि वा असि न्यर्बुदम्।45।

पर्यायः 5 (8 अध्यात्म सूक्त)

3781. भूयान् इन्द्रो नमुरात्,
भूयान् इन्द्र असि मृत्युभ्यः।46।
3782. भूयान् अरात्या शच्याः पतिः त्वम् इन्द्रासि,
विभूः प्रभूः इति त्वा उप आस्महे वयम्।47।
3783. नमः ते अस्तु पश्यत, पश्य मा पश्यत।48।
3784. अन्नाद्येन यशसा तेजसा, ब्राह्मणवर्चसा एन।49।
3785. अम्भो अमो महः सह इति,
त्वा उप आस्महे वयम्।
नमः ते अस्तु पश्यत, पश्य मा पश्यत।
अन्नाद्येन यशसा तेजसा, ब्राह्मणवर्चसा एन।50।
3786. अम्भो अरुणम् रजतम् रजः,
सह इति त्वा उप आस्महे वयम्।
नमः ते अस्तु पश्यत, पश्य मा पश्यत।
अन्नाद्येन यशसा तेजसा, ब्राह्मणवर्चसा एन।51।

पर्याय 6 (9 अध्यात्म सूक्त)

3787. उरुः पृथुः सूभूः भुव इति, त्वा उप आस्महे वयम्।
नमः ते अस्तु पश्यत, पश्य मा पश्यत।
अन्नाद्येन यशसा तेजसा, ब्राह्मणवर्चसा एन।52।
3788. प्रथो वरो व्यचो लोक इति, त्वा उप आस्महे वयम्।
नमः ते अस्तु पश्यत, पश्य मा पश्यत।
अन्नाद्येन यशसा तेजसा, ब्राह्मणवर्चसा एन।53।
3789. भवद्वसुः इदद्वसुः सम्यद्वसुः आयद्वसुः इति,
त्वा उप आस्महे वयम्।54।
3790. नमः ते अस्तु पश्यत, पश्य मा पश्यत।55।
3791.अन्नाद्येन यशसा तेजसा, ब्राह्मणवर्चसेन।56।

इति त्रयोदशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

चतुर्दशम् काण्डम्

प्रथमो अनुवाकः

सूक्तम् 1 (1 - विवाह प्रकरण सूक्त)

3792. सत्येन उत्तभिता भूमिः, सूर्येण उत्तभिता द्यौः।
ऋतेना आदित्याः तिष्ठन्ति, दिवि सोमो अधि श्रितः।1।
3793. सोमेन आदित्या बलिनः, सोमेन पृथिवी मही।
अथो नक्षत्राणाम् एषाम्, उपस्थे सोम आहितः।2।
3794. सोमम् मन्यते पपिवान्, यत् संपिषन्ति ओषधिम्।
सोमम् यम् ब्रह्माणो विदुः, न तस्य आश्नाति पार्थिवः।3।
3795. यत् त्वा सोम प्रपिबन्ति, तत आ प्यायसे पुनः।
वायुः सोमस्य रक्षिता, समानाम् मास आकृतिः।4।
3796. आच्छद्विधानैः गुपितो, बार्हतै सोम रक्षितः।
ग्राव्णाम् इत् शृण्वन् तिष्ठसि, न ते अश्नाति पार्थिवः।5।
3797. चित्तिः आ उपबर्हणम्, चक्षुः आ अभ्यञ्जनम्।
द्यौः भूमिः कोश आसीत्, यत् अयात् सूर्या पतिम्।6।
3798. रैभी आसीत् अनुदेयी, नाराशंसी न्योचनी।
सूर्याया भद्रम् इत् वासो, गाथया एति परिष्कृता।7।
3799. स्तोमा आसन् प्रतिधयः, कुरीरम् छन्द ओपशः।
सूर्याया अश्विना वरा अग्निः, आसीत पुरोगवः।8।
3800. सोमो वधूयुः अभवत्, अश्विना आस्ताम् उभा वरा।
सूर्याम् यत् पत्ये शंसन्तीम्, मनसा सविता अददात्।9।
3801. मनो अस्या अन आसीत्, द्यौः आसीत् उत छदिः।
शुक्रौ अनड्वाहौ आस्ताम्, यत् अयात् सूर्या पतिम्।10।
3802. ऋक्सामाभ्याम् अभिहितौ, गावौ ते सामनौ ऐताम्।
श्रोत्रे ते चक्रे आस्ताम्, दिवि पन्थाः चराचरः।11।
3803. शुची ते चक्रे यात्या, व्यानो अक्ष आहतः।
अनो मनस्मयम् सूर्या, आ अरोहत् प्रयती पतिम्।12।
3804. सूर्याया वहतुः प्र अगात्, सविता यम् अवसृजत्।
मघासु हन्यन्ते गावः, फल्गुनीषु वि उह्यते।13।
3805. यत् अश्विना पृच्छमानौ अयातम्,
त्रिचक्रेण वहन्तु सूर्यायाः।
क्व एकम् चक्रम् वाम् असीत्, क्व देष्ट्राय तस्थयुः।14।
3806. यत् अयातम् शुभः पती, वरेयम् सूर्याम् उप।
विश्वे देवा अनु तत् वाम् अजानन्,
पुत्रः पितरम् अवृणीत पूषा।15।
3807. द्वे ते चक्रे सूर्ये, ब्रह्माण ऋतुथा विदुः।
अथ एकम् चक्रम् यत् गुहा, तत् अद्धातय इत् विदुः।16।
3808. अर्यमणम् यजामहे, सुबन्धुम् पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात्, प्र इतो मुञ्चामि न अमुतः।17।
3809. प्र इतो मुञ्चामि न अमुतः, सुबद्धाम् अमुतः करम्।

यथा इयम् इन्द्र मीढ्वः, सुपुत्रा सुभगा असति।18।
3810. प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्,
येन त्वा अबध्नात् सविता सुशेवाः।
ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोके,
स्योनम् ते अस्तु सहसम्भलायै।19।
3811. भगः त्वा एतो नयतु हस्तगृहय,
अश्विना त्वा प्र वहताम् रथेन।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथा असो,
वशिनी त्वम् विदथमा वदासि।20।
3812. इह प्रियम् प्रजायै ते सम् ऋध्यताम्,
अस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि।
एना पत्या तन्वम् सम् सपृशस्व,
अथ जिर्विः विदथम् आ वदासि।21।
3813. इह एव स्तम् मा वि योष्टम्,
विश्वम् आयुः वि अश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैः नप्तृभिः, मोदमानौ स्वस्तकौ।22।
3814. पूर्वापरम् चरतो मायया एतौ,
शिशू क्रीडन्तौ परि यातो अर्णवम्।
विश्वा अन्यो भुवना विचष्ट ऋतून्,
अन्यो विदधत् जायसे नवः।23।
3815. नवोनवो भवसि जायमानो,
अह्नाम् केतुः उषसाम् एषि अग्रम्।
भागम् देवेभ्यो वि दधासि आयन्,
प्र चन्द्रमः तिरसे दीर्घम् आयुः।24।
3816. परा देहि शामुल्यम्, ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु।
कृत्या एषा पद्वती भूत्वा, जाया विशते पतिम्।25।
3817. नीललोहितम् भवति, कृत्या आसक्तिः वि अज्यते।
एधन्ते अस्या ज्ञातयः, पतिः बन्धेषु बध्यते।26।
3818. अश्लीला तनूः भवति, रुशती पापया अमुया ।
पतिः यत् वध्वो वाससः, स्वम् अङ्गम् अभ्यूर्ण ते।27।
3819. आशसनम् विशसनमथो, अधिविकर्तनम्।
सूर्यायाः पश्य रूपाणि, तानि ब्रह्मा उत शुम्भति।28।
3820. तृष्टम् एतत् कटुकम्,
अपाष्ठवत् विषवत् न एतत् अत्तवे।
सूर्याम् यो ब्रह्मा वेद, स इद् वाधूयम् अर्हति।29।
3821. य इत् तत् स्योनम् हरति,
ब्रह्मा वासः सुमङ्गलम्।
प्रायश्चित्तिम् यो अध्येति, येन जाया न रिष्यति।30।
3822. युवम् भगम् सम् भरतम्,
समृद्धम् ऋतम् वदन्तौ ऋतोद्येषु।
ब्रह्मणः पते पतिम् अस्यै रोचय,
चारु संभलो वदतु वाचम् ऐताम्।31।
3823. इह इत् असाथ न परो गमाथ,
इमम् गावः प्रजया वर्धयाथ।
शुभम् यतीः उस्रियाः सोमवर्चसो,
विश्वे देवाः क्रन् इह वो मनांसि।32।
3824. इमम् गावः प्रजया सम् बिशाथ अयम्,
देवानाम् न मिनाति भागम्।
अस्मै वः पूषा मरुतः च सर्वे,
अस्मै वो धाता सविता सुवाति।33।
3825. अनृक्षरा ऋजवः सन्तु पन्थानो,
येभिः सखायो यन्ति नो वरेयम्।
सम् भगेन सम् अर्यम्णा, सम् धाता सृजतु वर्चसा।34।
3826. यत् च वर्चो अक्षेषु, सुरायाम् च यत् आहितम्।
यत् गोषु अश्विना वर्चः, तेन इमाम् वर्चसा अवतम्।35।
3827. येन महानघ्न्या जघनम्, अश्विना येन वा सुरा।
येन अक्षा अभ्यषिच्यन्त, तेन इमाम् वर्चसा अवतम्।36।
3828. यो अनिध्म् दीदयत् अप्सु,
अन्तः य विप्रास ईडते अध्वरेषु।
अपाम् नपात् मधुमतीः अपो दा,
याभिः इन्द्रो वावृधे वीर्यवान्।37।
3829. इदम् अहम् रुशन्तम्,
ग्राभम् तनूदूषिम् अप ऊहामि।
यो भद्रो रोचनः, तम् उत् अचामि।38।
3830. आ अस्यै ब्राह्मणाः स्नपनीः हरन्तु,
अवीरघ्नीः उत् अजन्तु आपः।
अर्यम्णो अग्निम् परि एतु पूषन्,
प्रति ईक्षन्ते श्वशुरो देवरः च।39।
3831. शम् ते हिरण्यम् शम् उ सन्तु आपः,
शम् मेथिः भवतु शम् युगस्य तर्द्म।
शम् त आपः शतपवित्रा भवन्तु,
शम् उ पत्या तन्वम् सम् स्पृशस्व।40।
3832. खे रथस्य खे अनसः, खे युगस्य शतक्रमो।
अपालाम् इन्द्र त्रिः पूत्वा, अकृणोः सूर्य त्वचम्।41।
3833. आशासाना सौमनसम्, प्रजाम् सौभाग्यम् रयिम्।
पत्युः अनुव्रता भूत्वा सम्, नह्यस्वा अमृताय कम्।42।
3834. यथा सिन्धुः नदीनाम्, साम्राज्यम् सुषुवे वृषा।
एवा त्वम् सम्राज्ञी एधि, पत्युः अस्तम् परेत्य।43।
3835. सम्राज्ञी एधि श्वशुरेषु, सम्राज्ञी उत देवृषु।
ननान्दुः सम्राज्ञी एधि, सम्राज्ञी उत श्वश्र्वाः।44।
3836. या अकृन्तन् अवयन् याः च तत्निरे,
या देवीः अन्तान् अभितो अददन्त।
ताः त्वा जरसे सम् व्ययन्तु,
आयुष्मती इदम् परि धत्स्व वासः।45।
3837. जीवम् रुदन्ति वि नयन्ति अध्वरम्,
दीर्घाम् अनु प्रसितिम् दीध्युः नरः।

वामम् पितृभ्यो य इदम् समीरिरे,
मयः पतिभ्यो जनये परिष्वजे।46।
3838.स्योनम् ध्रुवम् प्रजायै धारयामि,
ते अश्मानम् देव्याः पृथिव्या उपस्थे।
तम् आ तिष्ठ अनुमाद्या सुवर्चा,
दीर्घम् त आयुः सविता कृणोतु।47।
3839. येन अग्निः अस्या भूम्या,
हस्तम् जग्राह दक्षिणम्।
तेन गृह्णामि ते हस्तम् मा व्यथिष्ठा,
मया सह प्रजया च धनेन च।48।
3840. देवः ते सविता हस्तम् गृह्णातु,
सोमो राजा सुप्रजसम् कृणोतु।
अग्निः सुभगाम् जातवेदाः,
पत्ये पत्नीम् जरदष्टिम् कृणोतु।49।
3841. गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्,
मया पत्या जरदष्टिः यथा असः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिः,
मह्यम् त्वा अदुः गार्हपत्याय देवाः।50।
3842. भगः ते हस्तम् अग्रहीत्, सविता हस्तम् अग्रहीत्।
पत्नी त्वम् असि धर्मणा, अहम् गृहपतिः तव।51।
3843. मम इयम् अस्तु पोष्या,
मह्यम् त्वा अदात् बृहस्पतिः।
मया पत्या प्रजावति, सम् जीव शरदः शतम्।52।
3844. त्वष्टा वासो वि अदधात्,
शुभे कम् बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम्।
तेन इमाम् नारीम् सविता भगः,
च सूर्यामिव परि धत्ताम् प्रजया।53।
3845. इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा,
मित्रावरुणा भगो अश्वना उभा।
बृहस्पतिः मरुतो ब्रह्म सोम,
इमाम् नारीम् प्रजया वर्धयन्तु।54।
3846. बृहस्पतिः प्रथमः सूर्यायाः, शीर्षे केशान् अकल्पयत्।
तेन इमाम् अश्विना नारीम्, पत्ये सम् शोभयामसि।55।
3847.इदम् तत् रूपम् यत् अवस्त,
योषा जायाम् जिज्ञासे मनसा चरन्तीम्।
ताम् अनु अतिष्ये सखिभिः नवग्वैः,
क इमान् विद्वान् वि चचर्त पाशन्।56।
3848. अहम् वि ष्यामि मयि रूपम् अस्या,
वेदत् इत् पश्यन् मनसः कुलायम्।
न स्तेयम् अद्मि मनसा उत् अमुच्ये,
स्वयम् श्रथ्नानो वरुणस्य पाशान्।57।
3849.प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्,
येन त्वा अबध्नात् सविता सुशेवाः।
उरुम् लोकम् सुगम् अत्र पन्थाम्,
कृणोमि तुभ्यम् सहपत्न्यै वधु।58।
3850. उत् यच्छध्वम् अप रक्षो हनाथ,
इमाम् नारीम् सुकृते दधात।
धाता विपश्चित् पतिम् अस्यै विवेद,
भगो राजा पुर एतु प्रजानन्।59।
3851. भगः ततक्ष चतुरः पादान्,
भगः ततक्ष चत्वारि उष्पलानि।
त्वष्टा पिपेश मध्यतो अनु वर्ध्रान्,
सा नो अस्तु सुमङ्गली।60।
3852. सुकिम्शुकम् वहतुम् विश्वरूपम्,
हिरण्यवर्णम् सुवृतम् सुचक्रम्।
आ रोह सूर्ये अमृतस्य लोकम्,
स्योनम् पतिभ्यो वहतुम् कृणु त्वम्।61।
3853. अभ्रातृघ्नीम् वरुणा, पशुघ्नीम् बृहस्पते।
इन्द्र अपतिघ्नीम् पुत्रिणीम्,
आ अस्मभ्यम् सवितः वह।62।
3854. मा हिसिष्टम् कुमार्यम्, स्थूणे देवकृते पथि।
शालाया देव्या द्वारम् स्योनम्, कृण्मो वधूपथम्।63।
3855. ब्रह्म अपरम् युज्यताम् ब्रह्म पूर्वम्,
ब्रह्म अन्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वतः।
अनाव्याधाम् देवपुराम् प्रपद्य,
शिवा स्योना पतिलोके वि राज।64।

अथ द्वितीयो अनुवाकः

सूक्तम् 2 (2 विवाह प्रकरण सूक्त)

3856. तुभ्यम् अग्रे परि अवहन्, सूर्याम् वहतुना सह।
स नः पतिभ्यो जायाम्, दा अग्ने प्रजया सह।1।
3857. पुनः पत्नीम् अग्निः, अदात् आयुषा सह वर्चसा।
दीर्घायुः अस्या यः पतिः, जीवाति शरदः शतम्।2।
3858. सोमस्य जाया प्रथमम्, गन्धर्वः ते अपरः पतिः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिः, तुरीयः ते मनुष्यजाः।3।
3859. सोमो ददत् गन्धर्वाय, गन्धर्वो ददत् अग्नये।
रयिम् च पुत्रान् च अदात्, अग्निः मह्यम् अथो इमाम्।4।
3860. आ वाम् अगन् सुमतिः वाजिनीवसू,
नि अश्विना हृत्सु कामा अरंसत।
अभूतम् गोपा मिथुना शुभः पती,
प्रिया अर्यम्णो दुर्यान् अशीमहि।5।
3861. सा मन्दसाना मनसा शिवेन,
रयिम् धेहि सर्ववीरम् वचस्यम्।
सुगम् तीर्थम् सुप्रपाणम् शुभः पती,
स्थाणुम् पथिष्ठाम् अप दुर्मतिम् हतम्।6।
3862. या ओषधयो या नद्यो, यानि क्षेत्राणि या वना।

ताः त्वा वधु प्रजावतीम्, पत्ये रक्षन्तु रक्षसः।7।
3863. आ इमम् पन्थाम् अरुक्षाम, सुगम् स्वस्तिवाहनम्।
यस्मिन् वीरो न रिष्यति, अन्येषा विन्दते वसु।8।
3864. इदम् सु मे नरः शृणुत यया,
आशिषा दम्पती वामम् अश्नुतः।
ये गन्धर्वा अप्सरसः च देवीः,
एषु वानस्पत्येषु ये अधि तस्थुः।
स्योनाः ते अस्यै वध्वै भवन्तु,
मा हिंसिषुः वहतुम् उह्यमानम्।9।
3865. ये वध्वः चन्द्रम् वहतुम्,
यक्ष्मा यन्ति जजान् अनु।
पुनः तान् यज्ञिया देवा, नयन्तु यत आगताः।10।
3866. मा विदन् परिपन्थिनो, य आसीदन्ति दम्पती।
सुगेन दुर्गम् अति इताम्, अप द्रान्तु अरातयः।11।
3867. सम् काशयामि वहतुम् ब्रह्मणा,
गृहैः अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
पर्याणद्धम् विश्वरूपम् यत् अस्ति स्योनम्,
पतिभ्यः सविता तत् कृणोतु।12।
3868.शिवा नारी इयम् अस्तम् आ अगन्,
इमम् धाता लोकम् अस्यै दिदेश।
ताम् अर्यमा भगो अश्विना,
उभा प्रजापतिः प्रजया वर्धयन्तु।13।
3869. आत्मन्वती उर्वरा नारी इयम् अगन् तस्याम्,
नरो वपत बीजम् अस्याम्।
सा वः प्रजाम् जनयत् वक्षणाभ्यो,
बिभ्रती दुग्धम् ऋषभस्य रेतः।14।
3870. प्रति तिष्ठ विराट् असि, विष्णु इव इह सरस्वति।
सिनीवालि प्र जायताम्, भगस्य सुमतौ असत्।15।
3871. उत् व ऊर्मिः शम्या हन्तु, आपो योक्त्राणि मुञ्चत।
मा अदुष्कृतौ व्येनसौ, अघ्न्यो अशुनम् आ अरताम्।16।
3872. अघोरचक्षुः अपतिघ्नी स्योना,
शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः
वीरसूः देवृकामा सम् त्वया, एधिषीमहि सुमनस्यमाना।17।
3873. अदेवृघ्नी अपतिघ्नी इह एधि,
शिवा पशुभ्यः सुयमा सुवर्चाः।
प्रजावती वीरसूः देवृकामा स्योना,
इमम् अग्निम् गार्हपत्यम् सपर्य।18।
3874. उत् तिष्ठ इतः किम् इच्छन्ती इदम्,
आ अगा अहम् त्वा इडे अभिभूः स्वात् गृहात्।
शून्यैषी निर्ऋते या आजगन्धो उत् तिष्ठ,
अराते प्र पत मा इह रंस्थाः।19।
3875. यदा गार्हपत्यम् असपर्यैत्,
पूर्वम् अग्निम् वधू इयम्।
अधा सरस्वत्यै नारि, पितृभ्यः च नमः कुरु।20।
3876. शर्म वर्म एतत् आ हर, अस्यै नार्या उपस्तरे।
सिनीवालि प्र जायताम्, भगस्य सुमतौ असत्।21।
3877. यम् बल्बजम् न्यस्यथ, चर्म च उपस्तृणीथन।
तत् आ रोहतु सुप्रजा, या कन्या बिन्दते पतिम्।22।
3878. उप स्तृणीहि बल्बजम्, अधि चर्मणि रोहिते।
तत्र उपविश्य सुप्रजा, इमम् अग्निम् सपर्यतु।23।
3879. आ रोह चर्म उप सीद अग्निम्,
एष देवो हन्ति रक्षांसि सर्वा।
इह प्रजाम् जनय पत्ये अस्मै,
सुज्यैष्ठ्यो भवत् पुत्रस्त एषः।24।
3880. वि तिष्ठन्ताम् मातुः अस्या उपस्थात्,
नानारूपाः पशवो जायमानाः।
सुमङ्गली उप सीद इमम् अग्निम्,
सम्पत्नी प्रति भूष इह देवान्।25।
3881. सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणाम्,
सुशेवा पत्ये श्वशुराय शम्भूः।
स्योना श्वश्र्वै प्र गृहान् विश इमान्।26।
3882. स्योना भव श्वशुरेभ्यः, स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योना अस्यै सर्वस्यै विशे, स्योना पुष्टाय एषाम् भव।27।
3883. सुमङ्गलीः इयम् वधूः, इमाम् समेत पश्यत।
सौभाग्यम् अस्यै दत्त्वा, दौर्भाग्यैः विपरेतन।28।
3884. या दुहार्दो युवतयो, याः च इह जरती अपि।
वर्चो नु अस्यै सम् दत्त, अथ अस्तम् विपरेतन।29।
3885. रुक्मप्रस्तरणम् वह्यम्, विश्वा रूपाणि बिभ्रतम्।
आ अरोहत् सूर्या सावित्री, बृहते सौभगाय कम्।30।
3886. आ रोह तल्पम् सुमनस्यमाना,
इह प्रजाम् जनय पत्ये अस्मै।
इन्द्राणी इव सुबुधा बुध्यमाना,
ज्योतिरग्रा उषसः प्रति जागरासि।31।
3887. देवा अग्ने नि अपद्यन्त पत्नी,
सम् अस्पृशन्त तन्व तनूभिः।
सूर्येव नारि विश्व रूपा महित्वा,
प्रजावती पत्या सम् भव इह।32।
3888. उत् तिष्ठ इतः विश्ववसो नमसा ईडा महे त्वा।
जामिम् इच्छ पितृसदम् नि अक्ताम्,
सः ते भागः जनुषा तस्य विद्धि।33।
3889. अप्सरसः सधमादम् मदन्ति,
हविर्धानम् अन्तरा सूर्यम् च
ताः ते जनित्रम् अभि ताः परा इहि,
नमः ते गन्धर्वऋतुना कृणोमि।34।
3890. नमो गन्धर्वस्य नमसे नमो,
भामाय चक्षुसे च कृण्मः।

विश्ववसो इति विश्ववसो ब्रह्मणा ते नमः,
अभि जायाः अप्सरसः परा इहि ।35।
3891. राया वयम् सुमनसः स्याम,
उत् इतः गन्धर्वम् आ अवीवृताम।
अगन् सः देवः परमम् सधस्थम्,
अगन्म यत्र प्रतिरन्ते आयुः।36।
3892. सम् पितरौ ऋत्विये सृजेथाम्,
माता पिता च रेतसः भवाथः
मर्य इव योषाम् अधि रोहय एनाम्,
प्रजाम् कृण्वाथाम् इह पुष्यतम् रयिम् ।37।
3893. ताम् पूषन् शिवतमाम् आ ईरयस्व,
यस्याम् बीजम् मनुष्याः वपन्ति।
या नः उरू इति उशती विश्रयाति,
यस्याम् उशन्तः प्रहरेम शेपः।38।
3894. आ रोह ऊरुम् उप धत्स्व हस्तम्,
परि स्वजस्व जायाम् सुमनस्यमानः।
प्रजाम् कृण्वाथाम् इह मोदमानौ,
दीर्घम् वाम् आयुः सविता कृणोतु।39।
3895.आ वाम् प्रजाम् जनयतु प्रजापतिः,
अहोरात्राभ्याम् सम् अनक्तु अर्यमा।
अदुर्मङ्गली पतिलोकम् आ विश इमम्,
शम् नो भव द्विपदे शम् चतुष्पदे।40
3896. देवैः दत्तम् मनुना साकम् एतत्,
वाधूयम् वासो वध्वः च वस्त्रम्।
यः ब्रह्मणे चिकितुषे ददाति,
स इत् रक्षांसि तल्पानि हन्ति।41।
3897. यम् मे दत्तो ब्रह्मभागम् वधूयो,
वाधूयम् वासो वध्वः च वस्त्रम्।
युवम् ब्रह्मणे अनुमन्यमानौ,
बृहस्पते साकम् इन्द्रः च दत्तम्।42।
3898. स्योनात् योनेः अधि बुध्यमानौ,
हसामुदौ महसा मोद मानौ।
सुगू इति सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ,
तराथः जीवौ उषसो विभातीः।43।
3899. नवम् वसानः सुरभिः सुवासा,
उत् आगाम् जीव उषसो विभातीः।
आण्डात् पतत्रीव अमुक्षि, विश्वस्मात् एनसः परि।44।
3900. शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने,
महिव्रते इति महिव्रते।
आपः सप्त सुस्रवुः देवीः, ता नो मुञ्चन्तु अंहसः।45।
3901. सूर्यायै देवेभ्यो, मित्राय वरुणाय च।
ये भूतस्य प्रचेतसः, तेभ्य इदम् अकरम् नमः।46।
3902. य ऋते चित् अभिश्रिषः, पुरा जत्रुभ्य आ तृदः।
संधाता सन्धिम् मघवा पुरुवसुः,
निष्कर्ता विह्रुतम् पुनः।47।
3903. अप अस्मत् तम उच्छतु नीलम्,
पिशङ्गम् उत लोहितम् यत्।
निर्दहनी या पृषातकी अस्मिन्,
ताम् स्थाणौ अधि आ सजामि।48।
3904. यावतीः कृत्या उपवासने,
यावन्तो राज्ञो वरुणस्य पाशाः।
वि ऋद्धयो या असम् ऋद्धयो,
या अस्मिन् ता स्थाणौ अधि सादयामि।49।
3905. या मे प्रियतमा तनूः, सा मे बिभाय वाससः।
तस्य अग्रे त्वम् वनस्पते,
नीविम् कृणुष्व मा वयम् रिषाम्।50।
3906. ये अन्ता यावतीः सिचो, ये ओतवो ये च तन्तवः।
वासो यत् पत्नीभिः उतम्,
तत् नः स्योनम् उप स्पृशात्।51।
3907. उशतीः कन्यला इमाः, पितृलोकात् पतिम् यतीः।
अव दीक्षाम् असृक्षत स्वाहा।52।
3908. बृहस्पतिना अवसृष्टाम्, विश्वे देवा अधारयन्।
वर्चो गोषु प्रविष्टम् यत् तेन, इमाम् सम् सृजामसि।53।
3909. बृहस्पतिना अव सृष्टाम्, विश्वे देवा अधारयन्।
तेजो गोषु प्रविष्टम् यत् तेन, इमाम् सम् सृजामसि।।54।
3910. बृहस्पतिना अव सृष्टाम्, विश्वे देवा अधारयन्।
भगो गोषु प्रविष्टम् यः तेन, इमाम् सम् सृजामसि।।55।
3911. बृहस्पतिना अव सृष्टाम्, विश्वे देवा अधारयन्।
यशो गोषु प्रविष्टम् यत्, तेन इमाम् सम् सृजामसि।56।
3912. बृहस्पतिना अव सृष्टाम्, विश्वे देवा अधारयन्।
पयो गोषु प्रविष्टो यत्, तेन इमाम् सम् सृजामसि।57।
3913.बृहस्पतिना अव सृष्टाम्, विश्वे देवा अधारयन्।
रसो गोषु प्रविष्टो यः, तेन इमाम् सम् सृजामसि।58।
3914. यदि इमे केशिनो जना गृहे,
ते सम् अनर्तिषू रोदेन कृण्वन्तो अघम्।
अग्निः त्वा तस्मात् एनसः, सविता च प्र मुञ्चताम्।59।
3915. यदि इयम् दुहिता तव विकेशी,
अरुदत् गृहे रोदेन कृण्वती अघम्।
अग्निः त्वा तस्मात् एनसः, सविता च प्र मुञ्चताम्।60।
3916. यत् जामयः यत् युवतयो गृहे,
ते समनर्तिषु रोदेन कृण्वतीः अघम्।61
अग्निः त्वा तस्मात् एनसः, सविता च प्र मुञ्चताम्।61
3917. यत् ते प्रजायाम् पशुषु यत् वा गृहेषु,
निस्थितम् अघकृत्भिः अघम् कृतम्।
अग्निः त्वा तस्मात् एनसः, सविता च प्र मुञ्चताम्।62।
3918. इयम् नारी उप ब्रूते, पूल्यानि आवपन्तिका।

दीर्घायुः अस्तु मे पतिः, जीवाति शरदः शतम्।63।
3919. इह इमौ इन्द्र सम् नुद,
चक्रवाकेव दंपती इति दम्पती।
प्रजया एनौ स्वस्तकौ, विश्वम् आयुः वि अश्नुताम्।64।
3920. यत् आसन्द्याम् उपधाने, यत् वा उपवासने कृतम्।
विवाहे कृत्याम् याम् चक्रुः, आस्नाने ताम् नि दध्मसि।65।
3921. यत् दुष्कृतम् यत् शमलम्, विवाहे वहतौ च यत्।
तत् संभलस्य कम्बले, मृज्महे दुरितम् वयम्।66।
3922. सम् भले मलम् सादयित्वा, कम्बले दुरितम् वयम्।
अभूम यज्ञिया शुद्धाः, प्र ण आंयूषि तारिषत्।67।
3923. कृत्रिमः कण्टकः, शतदन् य एषः।
अप अस्या केश्यम् मलम्, अप शीर्षण्यम् लिखात्।68।
3924.अङ्गादङ्गात् वयम् अस्या,
अप यक्षमम् नि दध्मसि।
तत् मा प्र आपत् पृथिवीम् मा उत देवान्,
दिवम् मा प्र आपत् उरु अन्तरिक्षम्।
अपो मा प्र आपत् मलम् एतत् अग्ने,
यमम् मा प्र आपत् पितृन च सर्वान्।69।।
3925. सम् त्वा नह्यामि पयसा पृथिव्याः,
सम् त्वा नह्यामि पयसा औषधीनाम्।
सम् त्वा नह्यामि प्रजया धनेन,
सा संनद्धा सनुहि वाजम् आ इमम्।70।
3926. अमो अहम् अस्मि सा त्वम्,
साम अहम् अस्मि ऋक् त्वम्,
द्यौः अहम् पृथिवी त्वम्।
तौ इह सम् भवाव, प्रजाम् आ जनयावहै।71।
3927. जनियन्ति नौ अग्रवः, पुत्रियन्ति सुदानवः।
अरिष्टासू सचेवहि, बृहते वाजसातये।72।
3928. ये पितरो वधूदर्शा, इमम् वहतुम् अगमन्।
ते अस्यै वध्वै सम्पत्न्यै, प्रजावत् शर्म यच्छन्तु।73।
3929.या इदम् पूर्वा अगन् रशनायमाना,
प्रजाम् अस्यै द्रविणम् च इह दत्त्वा
ताम् वहन्तु अगतस्य अनु पन्थाम्,
विराट् इयम् सुप्रजा अति अजैषीत्।74।
3930. प्र बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना,
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथा असो,
दीर्घम् त आयुः सविता कृणोतु।75।

इति चतुर्दशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

पञ्चदशम् काण्डम्

1- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त (प्रथम पर्याय)

3931. व्रात्य आसीत् ईयमान एव,
स प्रजापतिम् सम् ऐरयत्।1।
3932. स प्रजापतिः सुवर्णम् आत्मन्,
अपश्यत् तत् प्र अजनयत्।2।
3933. तत् एकम् अभवत् तत् ललामम् अभवत्,
तत् महत् अभवत् तत् ज्येष्ठम् अभवत्।
तत् ब्रह्म अभवत् तत् तपो अभवत्,
तत् सत्यम् अभवत् तेन प्र अजायत।3
3934. सो अवर्धत सः महान् अभवत्,
स महादेवो अभवत्।4।
3935. स देवानाम् ईशाम् परि,
ऐत् सः ईशानो अभवत्।5।
3936. स एकव्रात्यो अभवत् स धनुः,
आ अदत्त तत् एव इन्द्र धनुः।6।
3937. नीलम् अस्य उदरम्, लोहितम् पृष्ठम्।7।
3938. नीलेन एव अप्रियम् भ्रातृव्यम् प्र ऊर्णोति लोहितेन।
द्विषन्तम् बिध्यति इति ब्रह्मवादिनो वदन्ति।8।

2- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त(द्वितीय पर्याय)

3939. स उदतिष्ठत् स प्राचीम्,
दिशम् अनु वि व्यचलत् ।1।
3940. तम् बृहत् च रथंतरम् च,
आदित्याः च विश्वे च, देवा अनुव्यचलन्।2
3941. बृहते च वै स रथंतराय च,
आदित्येभ्यः च विश्वेभ्यः च,
देवेभ्य आ वृश्चते य एवम्,
विद्वां सम् व्रात्यम् उपवदति।3।
3942. बृहतः च वै स रथंतरस्य च,
आदित्यानाम् च विश्वेषाम् च,
देवानाम् प्रियम् धाम भवति, तस्य प्राच्याम् दिशि।4।
3943. श्रद्धा पुंश्चली मित्रो मागधो विज्ञानम् वासो,
अहः उष्णीषम् रात्री केशा,
हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिः मणिः।5।
3944. भूतम् च भविष्य च, परिस्कन्दौ मनो विपथम्।6।
3945. मातरिश्वा च पवमानः च,
विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः।7।
3946. कीर्तिः च यशः च पुरः-सरौ आ एनम्,
कीर्तिः गच्छति आ यशो गच्छति य एवम् वेद।8।
3947. स उदतिष्ठत् स दक्षिणाम्,
दिशम् अनु व्यचलत्।9।

3948. तम् यज्ञायज्ञियम् च वामदेव्यम् च,
यज्ञः च यजमानः च पशवः च अनुव्यचलन्।10।
3949. यज्ञायज्ञियाय च वै स वामदेव्याय च,
यज्ञाय च यजमानाय च, पशुभ्यः च आ वृश्चते य एवम्,
विद्वांसम् व्रात्यम् उप वदति।11।
3950. यज्ञायज्ञियस्य च वै स वामदेव्यस्य च,
यज्ञस्य च यजमानस्य च, पशूनाम् च प्रियम् धाम भवति,
तस्य दक्षिणायाम् दिशि।12।
3951. उषाः पुंश्चली मन्त्रो, मागधो विज्ञानम् वासो,
अहः उष्णीषम् रात्री केशा,
हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिः मणिः।13।
3952. अमावास्या च पौर्णमासी च,
परिष्कन्दौ मनो विपथम्।
मातरिश्वा च पवमानः च,
विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः।
कीर्तिः च यशः च पुरः-सरौ, आ एनम् कीर्तिः गच्छत्या,
यशो गच्छति य एवम् वेद।14।
3953. स उदतिष्ठत् स प्रतीचीम्,
दिशम् अनु व्यचलत्।15।
3954. तम् वैरूपम् च वैराजम् च, आपः च
वरुणः च राजा अनुव्यचलन्।16।
3955. वैरूपाय च वै स वैराजाय च,
अत्भ्यः च वरुणाय च,
राज्ञे आ वृश्चते य एवम्,
विद्वान् सम् व्रात्यम् उप वदति।
3956. वैरूपस्य च वै स वैराजस्य च,
अपाम् च वरुणस्य च,
राज्ञः प्रियम् धाम भवति, तस्य प्रतीच्याम् दिशि।18।
3957. इरा पुंश्चली हसो, मागधो विज्ञानम् वासो,
अहः उष्णीषम् रात्री केशा,
हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिः मणिः।19।
3958. अहः च रात्री च, परिष्कन्दौ मनो विपथम्।
मातरिश्वा च पवमानः च,
विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः।
कीर्तिः च यशः च पुरः-सरौ, आ एनम् कीर्तिः गच्छत्या,
यशो गच्छति य एवम् वेद।।20।
3959. स उत अतिष्ठत् स उदीचीम्,
दिशम् अनु वि अचलत्।21।
3960. तम् श्यैतम् च नौधसम् च सप्तऋषयः च,
सोमः च राजा अनुव्यचलन्।22।।
3961. श्यैताय च वै स नौधसाय च,
सप्तर्षिभ्यः च सोमाय च,
राज्ञे आ वृश्चने य एवम्,
विद्वांसम् व्रात्यम् उप वदति।23।
3962. श्यैतस्य च वै स नौधसस्य च,
सप्तऋषीणाम् च सोमस्य च,
राज्ञः प्रियम् धाम भवति, तस्य उदीच्याम् दिशि।24।
3963. विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुः,
मागधो विज्ञानम् वासो,
अहः उष्णीषम् रात्री केशा,
हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिः मणिः।25।
3964. श्रुतम् च विश्रुतम् च,
परिष्कन्दौ मनो विपथम्।26।
3965. मातरिश्वा च पवमानः च,
विपथवाहौ वातः, सारथीः रेष्मा प्रतोदः।27।
3966. कीर्तिः च यशः च पुरः-सरौ,
आ एनम् कीर्तिः गच्छति,
आ यशः गच्छति य एवम् वेद।28।

3-अध्यात्म-प्रकरण सूक्त(तृतीय पर्याय)

3967. स सम्वत्सरम्, ऊर्ध्वो अतिष्ठत् तम्,
देवा अब्रुवन् व्रात्य, किम् नु तिष्ठसि इति।1।
3968. सो अब्रवीत् आसन्दीम्, मे सम् भरन्तु इति।2।
3969. तस्मै व्रात्याय आसन्दीम्, सम् अभरन्।3।
3970. तस्या ग्रीष्म च वसन्तः च द्वौ,
पादौ आस्ताम् शरत् च वर्षाः च द्वौ।4।
3971. बृहत् च रथम्तरम् च अनूच्ये आस्ताम्,
यज्ञायज्ञियम् च वामदेव्यम् च तिरश्चये।5।
3972. ऋचः प्राञ्चः तन्तवो, यजूंषि तिर्यञ्चः।6।
3973. वेद आस्तरणम्, ब्रह्म उपबर्हणम्।7।
3974. साम आसाद उद्गीथो उपश्रयः।8।
3975. ताम् आसन्दीम्, व्रात्य आ अरोहत्।9।
3976. तस्य देवजनाः परिष्कन्दा आसन् संकल्पाः,
प्रहाय्याः विश्वानि भूतानि उपसदः।10।
3977. विश्वानि एव अस्य भूतानि,
उप सदो भवन्ति य एवम् वेद।11।

4- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त(चतुर्थ पर्याय)

3978. तस्मै प्राच्या दिशः।1।
3979. वासन्तौ मासौ गोप्तारौ अकुर्वन्,
बृहत् च रथंतरम् च अनुष्ठातारौ।2।
3980. वासन्तौ एनम् मासौ प्राच्या दिशो गोपायतो,
बृहत् च रथम् तरम् च अनु तिष्ठतः।3।
3981. तस्मै दक्षिणाया दिशः।4।
3982. ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारौ अकुर्वन् यज्ञायज्ञियम्,
च वाम देव्यम् च अनु ष्ठातारौ।5।
3983. ग्रैष्मौ एनम् मासौ दक्षिणायाः दिशो गोपायतो,

यज्ञायज्ञियम् च वामदेव्यम् च
अनु तिष्ठतो य एवम् वेद।6।
3984. तस्मै प्रतीच्या दिशः।7।
3985. वार्षिकौ मासौ गोप्तारौ अकुर्वन्,
वैरूपम् च वैराजम् च अनु ष्ठातारौ।8।
3986. वार्षिकौ एनम् मासौ प्रतीच्या दिशो गोपायतो,
वैरूपम् च वैराजम् च अनु तिष्ठतो य एवम् वेद।9।
3987. तस्मा उदीच्या दिशः।10।
3988. शारदौ मासौ गोप्तारौ अकुर्वन्,
श्यैतम् च नौधसम् च अनुष्ठातारौ।11।
3989. शारदौ एनम् मासौ उदीच्या दिशो गोपायतः,
श्यैतम् च नौधसम् च अनु तिष्ठतो य एवं वेद।12।
3990. तस्मै ध्रुवाया दिशः।13।
3991. हैमनौ मासौ गोप्तारौ अकुर्वन्,
भूमिम् च अग्नम् च अनु-ष्ठातारौ।14।
3992. हैमनौ एनम् मासौ ध्रुवाया दिशो गोपायतो,
भूमिः च अग्निः च अनु तिष्ठतो य एवम् वेद।15।
3993. तस्मा ऊर्ध्वाया दिशः।16।
3994. शैशिरौ मासौ गोप्तारौ अकुर्वन्,
दिवम् च आदित्यम् च अनुस्थातारौ।17।
3995. शैशिरौ एनम् मासौ ऊर्ध्वाया दिशो गोपायतो,
द्यौः च आदित्यः च अनु तिष्ठतो य एवम् वेद।18।

5- अध्यात्म-प्रकरण सूक्त(पंचम पर्याय)

3996. तस्मै प्राच्या दिशो अन्तर्देशात् भवम्,
इष्वासम् अनुष्ठातारम् अर्कुवन्।1।
3997. भव एनम् इषु आसः प्राच्या दिशो अन्तः देशात्,
अनुष्ठाता अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो,
न भवो न ईशानः।2।
3998. न अस्य पशून् न समानान्,
हिनस्ति य एवम् वेद।3।
3999. तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशात्,
शर्वम् इष्वासम् अनुष्ठातारम् अर्कुवन्।4।
4000. शर्व एनम् इष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशात्,
अनुष्ठाता अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो न भवो न ईशानः।
न अस्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवम् वेद।।5।
4001. तस्मै प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात्,
पशु पतिम् इषु आसम् अनुष्ठातारम् अकुर्वन्।6।
4002. पशु पतिः एनम् इष्वासः,
प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात्,
अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो, न भवो न ईशानः।
न अस्य पशून् न समानान्, हिनस्ति य एवम् वेद।।7।
4003. तस्मै उदीच्या दिशो अन्तर्देशात्,
उग्रम् देवम् इषु आ सम् अनुष्ठातारम् अकुर्वन्।8।
4004. उग्र एनम् देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशात्,
अनुष्ठाता अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो न भवो न ईशानः।
न अस्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवम् वेद।9।
4005. तस्मै ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशात्,
रुद्रम् इष्वासम् अनुष्ठातारम अकुर्वन्।10।
4006.रुद्र एनम् इष्वासो ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशात्,
अनुष्ठाता अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो न भवो न ईशानः।
न अस्य पशून् न समानान्, हिनस्ति य एवम् वेद।11।
4007. तस्मा उर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशात्,
महादेवम् इष्वासम् अनुष्ठातारम् अकुर्वन्।12।
4008. महादेव एनम् इष्वास ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशात्,
अनुष्ठाता अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो न भवो न ईशानः।
न अस्य पशून् न समानान्, हिनस्ति य एवम् वेद।13।
4009. तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानम्,
इष्वासम् अनुष्ठातारम् अकुर्वन्।14।
4010. ईशान एनम् इष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्यो,
अनुष्ठाता अनु तिष्ठति न एनम् शर्वो न भवो ईशानः।15।
4011. न अस्य पशून् न समानान्,
हिनस्ति य एवम् वेद।16।

6- अध्यात्म -प्रकरण सूक्त(षष्ठ पर्याय)

4012. स ध्रुवाम् दिशम्, अनु वि अचलत्।1।
4013. तम् भूमिः च अग्निः औषधयः,
च वनस्पतयः च वानस्पत्याः,
च वीरुधः च अनुव्यचलन्।2।
4014. भूमेः च वै सो अग्नेः च ओषधीनाम्,
च वनस्पतीनाम् च वानस्पत्यानाम् च वीरुधाम्,
च प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।3।
4015. स ऊर्ध्वाम् दिशम्, अनु व्यचलन्।4।
4016. तम् ऋतम् च, सत्यम् च सूर्यः च,
चन्द्रः च नक्षत्राणि च अनु व्यचलन्।5।
4017. ऋतस्य च वै स सत्यस्य च,
सूर्यस्य च चन्द्रस्य च नक्षत्राणाम् च,
प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।6।
4018. स उत्तमाम् दिशम्, अनु व्यचलत्।7।
4019. तम् ऋचः च सामानि च,
यजूंषि च ब्रह्म च अनु व्यचलन्।8।
4020. ऋचाम् च वै स साम्नाम् च,
यजुषाम् च ब्रह्मणः च,
प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।9।
4021. स बृहतीम् दिशम्, अनु व्यचलत्।10।
4022. तम् इतिहासः च पुराणम् च,

गाथाः च नारा शंसीः च अनु व्यचलन्।11।
4023. इतिहासस्य च वै स पुराणस्य च, गाथानाम् च नाराशंसीनाम् च, प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।12।
4024. स परमाम् दिशम्, अनु व्यचलत्।13।
4025. तम् आहवनीयः च गार्ह पत्यः च,
दक्षिण अग्निः च यज्ञः च,
यजमानः च पशवः च अनु व्यचलन्।14।
4026. आहवनीयस्य च वै स गार्हपत्यस्य च,
दक्षिण अग्निः च यज्ञस्य च यजमानस्य च,
पशूनाम् च प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।15।
4027. सो अनादिष्टाम् दिशम्, अनु व्यचलत्।16।
4028. तम् ऋतवः च आर्तवाः च, लोकाः च लौक्याः च,
मासाः च अर्ध मासाः च, अहोरात्रे च अनु व्यचलन्।17।
4029. ऋतूनाम् च वै स आर्तवानाम् च,
लोकानाम् च लौक्यानाम् च,
मासानाम् च अर्ध मासानाम् च,
अहोरात्रयोः च प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।18।
4030. सो अनावृत्ताम् दिशम् अनु वि अचलत्,
ततो न आवर्त्स्यन् अमन्यत।19।
4031. तम् दितिः च अदितिः च,
इडा च इन्द्राणी च अनु व्यचलन्।20
4032. दितेः च वै सो अदितेः च,
इडायाः च इन्द्राण्याः च,
प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।21।
4033. स दिशो अनु वि अचलत्,
तम् विराट् अनु वि अचलत्,
सर्वे च देवाः सर्वाः च देवताः।22।
4034. विराजः च वै स सर्वेषाम् च देवानाम् सर्वासाम्,
च देवतानाम् प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।23।
4035. स सर्वान् अन्तर्देशान्, अनु वि अचलत् ।24।
4036. तम् प्रजापतिः च परमेस्ठी च,
पिता च पितामहः च अनु वि अचलन्।25।
4037. प्रजापतेः च वै स परमेस्ठिनः च,
पितुः च पितामहस्य च,
प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।26।

7- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त(सप्तम पर्याय)

4038. स महिमा सद्रुः भूत्वा अन्तम्,
पृथिव्या अगच्छत् स समुद्रो भवत्।1।
4039. तम् प्रजापतिः च परमेष्ठी च,
पिता च पितामहः च,
अपः च श्रद्धा च, वर्षम् भूत्वा अनु वि वर्तयन्त।2।
4040. आ एनम् आपो गच्छति आ एनम् श्रद्धा गच्छति,
आ एनम् वर्षम् गच्छति, य एवम् वेद।3।
4041. तम् श्रद्धा च यज्ञः च लोकः च,
अन्नम् च अन्न अद्यम् च,
भूत्वा अभि पर्यावर्तन्त।4।
4042. आ एनम् श्रद्धा गच्छति, आ एनम् यज्ञो गच्छति,
आ एनम् लोको गच्छति,
आ एनम् अन्नाद्यम् गच्छति, य एवम् वेद।5।

8- अध्यात्म-प्रकरण सूक्त (अष्टम पर्याय)

4043. सो अरज्यत ततो, राजन्यो अजायत।1।
4044. स विशः सबन्धून् अन्नम्,
अन्नाद्यम् अभ्युदतिष्ठत्।2।
4045. विशाम् च वै स सबन्धूनाम् च,
अन्नस्य च अन्न अद्यस्य च,
प्रियम् धाम भवति, य एवम् वेद।3।

9- अध्यात्म-प्रकरण सूक्त(नवम पर्याय)

4046. स विशो अनु वि अचलत्।1।
4047. तम् सभा च समितिः च,
सेना च सुरा च अनु वि अचलन्।2।
4048. सभायाः च वै स समितेः च, सेनायाः च,
सुरायाः च प्रियम् धाम भवति य एवम् वेद।3।

10- अध्यात्म-प्रकरण सूक्त (दशम पर्याय)

4049. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्यो,
राज्ञो अतिथिः गृहान् आगच्छेत्।1।
4050. श्रेयांसम् एनम् आत्मनो मानयेत् तथा क्षत्राय,
न आ वृश्चते तथा राष्ट्राय न आ वृश्चते।2।
4051. अतो वै ब्रह्म च क्षत्रम् च उत् अतिष्ठताम्,
ते अब्रूताम् कम् प्र विशाव इति।3।
4052. अतो वै बृहस्पतिम् एव ब्रह्म,
प्र विशतु इन्द्रम् क्षत्रम् तथा वा इति।4
4053. अतो वै बृहस्पतिम् एव ब्रह्म,
प्र अविशत् इन्द्रम् क्षत्रम्।5।
4054. इयम् वा उ पृथिवी, बृहस्पतिः द्यौः एव इन्द्रः।6।
4055. अयम् वा उ अग्निः,
ब्रह्म असौ आदित्यः क्षत्रम्।7।
4056. आ एनम् ब्रह्म गच्छति, ब्रह्मवर्चसी भवति।8।
4057. यः पृथिवीम् बृहस्पतिम्, अग्निम् ब्रह्म वेद।9।
4058. आ एनम् इन्द्रियम् गच्छति,
इन्द्रियवान् भवति।10।
4059. य आदित्यम् क्षत्रम्, दिवम् इन्द्रम् वेद।11।

11- अध्यात्म -प्रकरण सूक्त (एकादश पर्याय)

4060. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्यो,
अतिथिः गृहाना अगच्छेत्।1।

4061. स्वयम् एनम् अभ्युदेत्य ब्रूयात्,
व्रात्य क्व अवात्सीः व्रात्य उदकम्,
व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियम् तथा अस्तु,
व्रात्य यथा ते वशः तथा अस्तु,
व्रात्य यथा ते नि कामः तथा अस्तु इति।2
4062. यत् एनम् आह व्रात्य क्व अवात्सीः इति,
पथ एव तेन देवयानान् अव रुन्द्धे।3।
4063. यत् एनम् आह व्रात्य उदकम् इति,
अप एव तेन अव रुन्द्धे।4।
4064. यत् एनम् आह व्रात्य तर्पयन्तु इति,
प्राणम् एव तेन वर्षीयांसम् कुरुते।5।
4065. यत् एनम् ह व्रात्य यथा,
ते प्रियम् तथा अस्तु इति,
प्रियम् एव तेन अव रुन्द्धे।6।
4066. आ एनम् प्रियम् गच्छति,
प्रियः प्रियस्य भवति, य एवम् वेद।7।
4067. यत् एनम् आह व्रात्य यथा,
ते वशः तथा अस्तु इति वशम् एव।8।
4068. आ एनम् वशो गच्छति,
वशी वशिनाम् भवति, य एवम् वेद।9।
4069. यत् एनम् आह व्रात्य यथा,
ते निकामः तता अस्तु इति,
निकामम् एव तेन अव रुन्द्धे।10।
4070. आ एनम् निकामो गच्छति,
निकामे निकामस्य भवति, य एवम् वेद।11।

12- अध्यात्म -प्रकरण सूक्त (द्वादश पर्याय)

4071. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्य उद्धृतेषु अग्निषु,
अधिश्रिते अग्निहोत्रे अतिथिः गृहान् आगच्छेत्।1।
4072. स्वयम् एनम् अभ्युदेत्य ब्रूयात्,
ब्रात्य अति सृज होष्यामि इति।2।
4073. स च अतिसृजेत् जुहुयात्,
न च अतिसृजेत् न जुहुयात्।3।
4074. स य एवम् विदुषा, व्रात्येन अनतिसृष्टो जुहोति।4।
4075. प्र पितृयाणम् पन्थाम्, जानाति प्र देवयानम्।5।
4076. न देवेषु आ वृश्चते, हुतम् अस्य भवति।6।
4077. परि अस्य अस्मिन् लोके आयतनम् शिष्यते,
य एवम् विदुषा व्रात्येन अतिसृष्टो जुहोति।7।
4078. अथ य एवम् विदुषा,
व्रात्येन अनतिसृष्टो जुहोति।8।
4079. न पितृयानम् पन्थाम्, जानाति न देवयानम्।9।
4080. आ देवेषु वृश्चते, अहुतम् अस्य भवति।10।
4081. न अस्य अस्मिन् लोक आयतनम् शिष्यते,
य एवम् विदुषा व्रात्येन अनतिसृष्टो जुहोति।11।

13- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त (त्रयोदश पर्याय)

4082. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्य एकाम्,
रात्रिम् अतिथिः गृहे वसति।1।
4083. ये पृथिव्याम् पुण्या लोकाः,
सतान् एव तेन अव रुन्द्धे।2।
4084. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्यो द्वितीयाम्,
रात्रिम् अतिथिः गृहे वसति।3।
4085. ये अन्तरिक्षे पुण्या लोकाः,
तान् एव तेन अव रुन्द्धे।4।
4086. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्यः तृतीयाम्,
रात्रिम् अतिथिः गृहे वसति।5।
4087. ये दिवि पुण्या लोकाः, तान् एव तेन अव रुन्द्धे।6।
4088. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्यः चतुर्थीम्,
रात्रिम् अतिथिः गृहे वसति।7।
4089. ये पुण्यानाम् पुण्या लोकाः,
तान् एव तेन अव रुन्द्धे।8।
4090. तत् यस्य एवम् विद्वान् व्रात्यो अपरिमिता,
रात्रीः अतिथिः गृहे वसति।9।
4091. य एव अपरिमिताः पुण्या लोकाः,
तान् एव तेन अव रुन्द्धे।10।
4092. अथ यस्य अव्रात्यो व्रात्यब्रुवो नामबिभ्रती,
अतिथिः गृहान् आ गच्छेत्।11।
4093. कर्षेत् एनम् न च, एनम् कर्षेत्।12।
4094. अस्यै देवताया उदकम् याचामि इमाम्,
देवताम् वासय इमाम्,
इमाम् देवता परि वेवेष्मि, इति एनम् परि वेविष्यात्।13।
4095. तस्याम् एव अस्य तत् देवतायाम्,
हुतम् भवति य एवम् वेद।14।

14- अध्यात्म–प्रकरण सूक्त (चतुर्दश पर्याय)

4096. स यत् प्राचीम् दिशम्,
अनु व्यचलत् मारुतम् शर्धो भूत्वा,
अनुव्यचलत् मनः अन्नादम् कृत्वा।1।
4097. मनसा अन्नादेन, अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।2।
4098. स यत् दक्षिणाम् दिशम्, अनुव्यचलत् इन्द्रो भूत्वा,
अनुव्यचलत् बलम् अन्नादम् कृत्वा।3।
4099. बलेन अन्नादेन, अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।4।
4100. स यत् प्रतीचीम् दिशम् अनु
व्यचलत् वरुणो राजा भूत्वा,
अनुव्यचलत् अपो अन्नादीः कृत्वा।5।
4101. अत्भिः अन्नादीभिः, अन्नम् य एवम् वेद।6।
4102. स यत् उदीचीम् दिशम् अनु

व्यचलत् सोमो राजा भूत्वा,
अनुव्यचलत् सप्तर्षिभिः हुते आहुतिम् अन्नादीम् कृत्वा।7।
4103. आ हुत्या अन्नाद्या,
अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।8।
4104. स यत् ध्रुवाम् दिशम् अनु व्यचलत् विष्णुः भूत्वा,
अनुव्यचलत् विराजम् अन्नादीम् कृत्वा।9।
4105. विराजा अन्नाद्या अन्नम्,
अत्ति य एवम् वेद।10।
4106. स यत् पशून् अनु व्यचलत् रुद्रो भूत्वा,
अनुव्यचलत् ओषधीः अन्न अदीः कृत्वा।11।
4107. ओषधीभिः अन्नादीभिः,
अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।12।
4108. स यत् पितृन् अनु व्यचलत् यमो राजा भूत्वा,
अनुव्यचलत् स्वधाकारम् अन्न अदम् कृत्वा।13।
4109. स्वधाकारेण अन्नादेन,
अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।14।
4110. स यत् मनुष्यान् अनु व्यचलत् अग्निः भूत्वा,
अनुव्यचलत् स्वाहाकारम् अन्न अदम्।15।
4111. स्वाहा-कारेण अन्नादेन,
अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।16।
4112. स यत् ऊर्ध्वाम् दिशम्
अनु व्यचलत् बृहस्पतिः भूत्वा,
अनुव्यचलत् वषट्कारम् अन्नादम् कृत्वा।17।
4113. वषट्कारेण अन्नादेन,
अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।18।
4114. स यत् देवान् अनु व्यचलत् ईशानो भूत्वा,
अनुव्यचलत् मन्युम् अन्न-अदम्।19।
4115. मन्युना अन्नादेन्, अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।20।
4116. स यत् प्रजा अनु व्यचलत् प्रजापतिः भूत्वा,
अनुव्यचलत् प्राणम् अन्नादम्।21।
4117. प्राणेन अन्नादेन, अन्न अत्ति य एवम् वेद।22।
4118. स यत् सर्वान् अन्तर्देशान् अनु
व्यचलत् परमेष्ठी भूत्वा,
अनुव्यचलत् ब्रह्मा अन्नादम् कृत्वा।23।
4119. ब्रह्मणा अन्नादेन,
अन्नम् अत्ति य एवम् वेद।24।

15- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त (पंचदश पर्याय)

4120. तस्य व्रात्यस्य।1।
4121. सप्त प्राणाः सप्त अपानाः, सप्त व्यानाः।2।
4122. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य प्रथमः प्राण, ऊर्ध्वो नामायम् सो अग्निः।3।
4123. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य द्वितीयः प्राणः प्रौढो,
नाम असौ स आदित्यः।4।
4124. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य तृतीयः प्राणो अभ्यूढो,
नाम असौ स चन्द्रमाः।5।
4125. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य चतुर्थः प्राणो वि भूः,
नाम अयम् स पवमानः।6।
4126. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य पञ्चमः प्राणो,
योनिः नाम ताः इमाः आपः।7।
4127. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य षष्ठः प्राणः, प्रियो नाम त इमे पशवः।8।
4128. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य सप्तमः प्राणो,
अपरिमितो नाम ता इमाः प्रजा।9।

16- अध्यात्म -प्रकरण सूक्त (षोडश पर्याय)

4129. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य प्रथमो, अपानः सा पौर्णमासी।1।
4130. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य द्वितीयो, अपानः सा अष्टका।2।
4131. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य तृतीयो, अपानः सा अमावास्या।3।
4132. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य चतुर्थो, अपानः सा श्रद्धा।4।
4133.तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य पञ्चमो, अपानः सा दीक्षा।5।
4134.तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य षष्ठो, अपानः स यज्ञः।6।
4135. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य सप्तमो, अपानः ता इमा दक्षिणाः।7।

17- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त (सप्तदश पर्याय)

4136. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य प्रथमो, व्यानः सा इयम् भूमिः।1।
4137. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य द्वितीयो, व्यानः तत् अन्तरिक्षम्।2।
4138. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य तृतीयो, व्यानः सा द्यौः।3।
4139. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य चतुर्थो, व्यानः तानि नक्षत्राणि।4।
4140. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य पञ्चमो, व्यनः त ऋतवः।5।

4141. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य षष्ठो, व्यानः त आर्तवाः।6।
4142. तस्य व्रात्यस्य।
यो अस्य सप्तमो, व्यानः स सम् वत्सरः।7।
4143.तस्य व्रात्यस्य।
समानम् अर्थम् परि यन्ति देवा सम्वत्सरम्,
वा एतत् ऋतवो अनु परियन्ति व्रात्यम् च।8।
4144. तस्य व्रात्यस्य।
यत् आदित्यम् अभि संविशन्ति अमा वास्याम् च,
एव तत् पौर्ण मासीम् च।9।
4145. तस्य व्रात्यस्य।
एकम् तत् एषाम् अमृतत्वम्, इति आ हुतिः एव।10।

18- अध्यात्म- प्रकरण सूक्त (अष्टादश पर्याय)

4146. तस्य व्रात्यस्य।1।
4147. यत् अस्य दक्षिणम् अक्षि असौ स आदित्यो,
यत् अस्य सव्यम् अक्षि असौ स चन्द्रमाः।2।
4148. यो अस्य दक्षिणः कर्णो अयम् सो अग्निः,
यो अस्य सव्यः कर्णोः अयम् स पवमानः।3।
4149. अहोरात्रे नासिके दितिः च अदितिः च,
शीर्षकपाले सम्वत्सरः शिरः।4।
4150. अह्न प्रत्यङ् व्रात्यो, रात्र्या प्राङ् नमो व्रात्याय।5।

इति पञ्चदशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

षोडशम् काण्डम्

1-दुःखमोचन सूक्त

4151. अतिसृष्टो अपाम् वृषभो,
अतिसृष्टा अग्नयो दिव्याः।1।
4152. रुजन् परिरुजन्, मृणन् प्रमृणन्।2।
4153. म्रोको मनोहा खनो निर्दाह, आत्मदूषिः तनूदूषिः।3।
4154. इदम् तम् अति सृजामि, तम् मा अभ्यवनिक्षि।4।
4155. तेन तम् अभ्यतिसृजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।5।
4156. अपाम् अग्रम् असि समुद्रम्, वो अभ्यवसृजामि।6।
4157. यो अप्सु अग्निः अति तम् सृजामि,
म्रोकम् खनिम् तनूदूषिम्।7।
4158. यो व आपो अग्निः आ विवेश,
स एष यत् वो घोरम् तत् एतत्।8।
4159. इन्द्रस्य व इन्द्रियेण अभि सिञ्चेत्।9।
4160. अरिप्रा आपो अप, रिप्रम् अस्मत्।10।
4161. प्र अस्मत् एनो वहन्तु, प्र दुष्वप्न्यम् वहन्तु।11।
4162. शिवेन मा चक्षुषा पश्यत आपः शिवया,
तन्वा उप स्पृशत त्वचम् मे।12।
4163. शिवान् अग्नीन् अप्सुषुदो हवामहे,
मयि क्षत्रम् वर्च आ धत्त देवीः।13।

2-दुःखमोचन सूक्त

4164. निः दुरर्मण्य ऊर्जा, मधुमती वाक्।1।
4165. मधुमती स्थ, मधुमतीम् वाचम् उदेयम्।2।
4166. उपहूतो मे गोपा, उपहूतो गोपीथः।3।
4167. सुश्रुतौ कर्णौ भद्र श्रुतौ कर्णौ,
भद्रम् श्लोकम् श्रूयासम्।4।
4168. सुश्रुतिः च मा उपश्रुतिः च मा हासिष्टाम्,
सौपर्णम् चक्षुः अजस्रम् ज्योतिः।5।
4169.ऋषीणाम् प्रस्तरो असि,
नमो अस्तु दैवाय प्रस्तराय।6।

3- दुःखमोचन सूक्त

4170. मूर्धा अहम् रयीणाम्, मूर्धा समानानाम् भूयासम्।1।
4171. रुजः च मा वेनः च मा हासिष्टाम्,
मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम्।2।
4172. उर्वः च मा चमसः च मा हासिष्टाम्,
धर्ता च मा धरुणः च मा हासिष्टाम्।3।
4173. विमोकः च मा आर्द्रपविः च मा हासिष्टाम्,
आर्द्रदानुः च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम्।4।
4174. बृहस्पतिः म आत्मा, नृमणा नाम हृद्यः।5।
4175. असम्तापम् मे हृदयम् उर्वी,
गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा।6।

4- दुःखमोचन सूक्त

4176. नाभिः अहम् रयीणाम्,
नाभिः समानानाम् भूयासम्।1।
4177. स्वासत् असि सूषा, अमृतो सर्त्येषु आ ।2।
4178. मा मां प्राणो हासीन्मो,
अपानो अवहाय परा गात्।3।
4179. सूर्यो मा अह्नः पातु,
अग्निः पृथिव्या वायु अन्तरिक्षात्,
यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः।4।
4180. प्राणापानौ मा मा हासिष्टम्, मा जने प्र मेषि।5।
4181. स्वस्ति अद्य उषसो दोषसः च,
सर्व आपः सर्वगणो अशीय।6।
4182. शक्वरी स्थ पशवो मा उप स्थेषुः,

मित्रावरुणौ मे प्राणापानौ,
अग्निः मे दक्षम् दधातु।7।

5- दुःखमोचन सूक्त

4183. विद्म़ ते स्वप्न जनित्रम् ग्राह्य़ाः,
पुत्रो असि यमस्य करणः।1।
4184. अन्तको असि, मृत्युः असि।2।
4185. तम् त्वा स्वप्न तथा सम् विद्म़,
स नः स्वप्न दुः ष्वप्नयात् पाहि।3।
4186. विद्म़ ते स्वप्न जनित्रम् निर्ऋत्याः,
पुत्रो असि यमस्य करणः।
अन्तको असि मृत्युः असि।4।
4187. विद्म़ ते स्वप्न जनित्रम्, अभूत्याः पुत्रो असि।5।
4188. विद्म़ ते स्वप्न जनित्रम्,
निर्भूत्याः पुत्रो असि यमस्य करणः।
अन्तको असि मृत्युः असि।
तम् त्वा स्वप्न तथा सम् विद्म़,
स नः स्वप्न दुःष्वप्न्यात् पाहि।6।
4189. विद्म़ ते स्वप्न जनित्रम्,
पराभूत्याः पुत्रो असि यमस्य करणः।
अन्तको असि मृत्युः असि।
तम् त्वा स्वप्न तथा सम् विद्म़,
स नः स्वप्न दुःष्वप्न्यात् पाहि।।7।
4190. विद्म़ ते स्वप्न जनित्रम्,
देवजामीनाम् पुत्रो असि यमस्य करणः।8।
4191. अन्तकः असि, मृत्युः असि।9।
4192. तम् त्वा स्वप्न तथा सम् विद्म़,
स नः स्वप्न दुःष्वप्न्यात् पाहि।10

6- दुःखमोचन सूक्त

4193. अजैष्म अद्य असनाम अद्य,
अभूम अनागसो वयम्।1।
4194. उषो यस्मात् दुःष्वप्न्यात्,
अभैष्म अप तत् उच्छतु।2।
4195. द्विषते तत् परा वह, शपते तत् परा वह।3।
4196. यम् द्विष्मो यत् च नो द्वेष्टि,
तस्मा एनत् गमयामः।4।
4197. उषा देवी वाचा सम्विदाना,
वाक् देवी उषसा सम्विदाना।5।
4198. उषः पतिः वाचः पतिना सम्विदानो,
वाचः पतिः उषः पतिना सम्विदानः।6।
4199. ते अमुष्मै परा वहन्तु,
अरायान् दुर्णानाम्नः सदान्वाः।7।
4200. कुम्भीका दूषीकाः पीयकान्।8।
4201. जाग्रत्दुष्वप्न्यम्, स्वप्नेदुष्वप्न्यम्।9।
4202. अनागमिष्यतो वरान् अवित्तेः,
सम्कल्पान् अमुच्या द्रुहः पाशान्।10।
4203. तत् अमुष्मै अग्ने देवाः परा वहन्तु,
वध्रिः यथा असत् विथुरो न साधु।11।

7- दुःखमोचन सूक्त

4204. तेन एनम् विध्यामि अभूत्या एऩम्,
विध्यामि निर्भूत्या एनम्,
विध्यामि पराभूत्या एनम्, विध्यामि ग्राह्य़ा एनम्,
विध्यामि तमसा एनम् विध्यामि।1।
4205. देवानाम् एनम् घोरैः क्रूरैः, प्रैषैः अभिप्रेष्यामि।2।
4206. वैश्वानरस्य एनम्, दंष्ट्रयोः अपि दधामि।3।
4207. एव अनेव, अव सा गरत्।4।
4208. यो अस्मान् द्वेष्टि तम् आत्मा द्वेष्टु,
यम् वयम् स द्विष्मः स आत्मानम् द्वेष्टु।5।
4209. निः द्विषन्तम् दिवो निः पृथिव्या,
निः अन्तरिक्षात् भजाम।6।
4210. सुयामन् चाक्षुष।7।
4211. इदम् अहम् आमुष्यायणे,
अमुष्याः पुत्रे दुष्वप्न्यम् मृजे।8।
4212. यत् अदो-अदो अभिगच्छन्,
यत् दोषा यत् पूर्वाम् रात्रिम्।9।
4213. यत् जाग्रत् यत् सुप्तो, यत् दिवा यत् नक्तम्।10।
4214. यत् अहः-अहः अभिगच्छामि,
तस्मात् एऩम् अव दये।11।
4215. तम् जहि तेन मन्दस्व,
तस्य पृष्टीः अपि शृणीहि।12।
4216. स मा जीवीत्, तम् प्राणो जहातु।13।

8- दुःखमोचन सूक्त

4217. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।1।
4218. तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।2।
4219. स ग्राह्य़ा पाशात् मा मोचि।3।
4220. तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् आयुः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।4।
4221. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,

यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स निर्ऋत्याः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।।5।
4222. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
सो भूत्याः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।।6।
4223.जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स निर्भूत्याः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।7।
4224. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स पराभूत्याः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।8।
4225. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स देवजामीनाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।।9।
4226. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स बृहस्पतेः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।10।
4227. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स प्रजापतेः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।11।
4228. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स ऋषीणाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।12।
4229. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स आर्षेयाणाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,

इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।13।
4230. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
सो अङ्गिरसाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।14।
4231.जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स अङ्गिरसानाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।15।
4232.जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
सो अथर्वणाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।16।
4233. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स आथर्वणानाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।17।
4234. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स वानस्पतीनाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।18।
4235. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स वानस्पत्यानाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।19।
4236. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स ऋतूनाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।20।
4237. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स आर्तवानाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।21।
4238. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म़ अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।

तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स मासानाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।22।
4239.जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
सो अर्ध मासानाम् पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।23।
4240. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स अहोरात्रयोः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।24।
4241. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
सो अह्नोः संयतोः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।25।
4242. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स द्यावापृथिव्योः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।26।
4243. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स इन्द्राग्न्योः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।27।
4244. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स मित्रावरुणयोः पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।28।
4245. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।
तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।
स राज्ञो वरुणस्य पाशात् मा मोचि।
तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् युः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।29।
4246. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
ऋतम् अस्माकम् तेजो अस्माकम्,
ब्रह्म अस्माकम् स्वः अस्माकम्,
यज्ञो अस्माकम् पशवो अस्माकम्,
प्रजा अस्माकम् वीरा अस्माकम्।30।
4247. तस्मात् अमुम् निः भजामो अमुम्,
आमुष्यायणम् अमुष्याः पुत्रम् असौ यः।31।
4248. स मृत्योः पड्वीशात्, पाशात् मा मोचि।32।
4249. तस्य इदम् वर्चः तेजः प्राणम् आयुः नि वेष्टयामि,
इदम् एनम् अधराञ्चम् पादयामि।33।

9- दुःखमोचन सूक्त

4250. जितम् अस्माकम् उद्-भिन्नम् अस्माकम्,
अभि अष्ठाम् विश्वाः पृतना अरातीः।1।
4251. तत् अग्निः आह तत् ऊम् इति सोमः आह,
पूषा मा धात् सुकृतस्य लोके।2।
4252. अगन्म स्वः स्वः अगन्म,
सम् सूर्यस्य ज्योतिषा अगन्म।3।
4253. वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय,
वसुमान् भूयासम् वसु मयि धेहि।4।

इति षोडशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

सप्तदशम् काण्डम्

1- अभ्युदयार्थप्रार्थना सूक्त

4254. विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनजितम्।
ईड्यम् नाम ह्वे इन्द्रम्, आयुष्मान् भूयासम्।1।
4255. विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियो देवानाम् भूयासम् ।2।
4256.विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियः प्रजानाम् भूयासम्।3।
4257. विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियः पशूनाम् भूयासम्।4।
4258. विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्,
गो जितम् संधन जितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियः समानानाम् भूयासम्।5।
4259. उत् इहि उत् इहि, सूर्य वर्चसा मा अभ्युदिहि।
द्विषन् च मह्यम् रध्यतु, मा च अहम् द्विषते रधम्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धहि परमे व्योमन्।6।
4260. उत् इहि उत् इहि, सूर्य वर्चसा मा अभ्युदिहि।
यान् च पश्यामि यान् च न तेषु, मा सुमतिम् कृधि,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।7।
4261. मा त्वा दभन् सलिले अप्सु अन्तः,
ये पाशिन उपतिष्ठन्ति अत्र।
हित्वा अशस्तिम् दिवम् आ अरुक्ष एताम्,
स नो मृड सुमतौ ते स्याम,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।8।
4262. त्वम् न इन्द्र महते सौभगाय,
अदब्धेभिः परि पाहि अक्तुभिः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सु धायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।9।
4263. त्वम् नः इन्द्र ऊतिभिः, शिवाभिः शंतमो भव।
आरोहन् त्रिदिवम् दिवो गृणानः,
सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्व रूपैः,
सु धायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।10।
4264. त्वम् इन्द्र असि विश्वजित्,
सर्ववित् पुरुहूतः त्वम् इन्द्र।
त्वम् इन्द्र इमम् सुहवम् स्तोमम् आ ईरयस्व,
स नो मृड सुमतौ ते स्याम,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।11।
4265. अदब्धो दिवि पृथिव्याम् उत असि,
न ते आपुः महिमानम् अन्तरिक्षे।
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः,
स त्वम् न इन्द्र दिवि षन् शर्म यच्छ,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् न पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।12।
4266. या त इन्द्र तनूः अप्सु या पृथिव्याम्,
या अन्तः अग्नौ या त इन्द्र पवमाने स्वर्विदि।
यया इन्द्र तन्वा अन्तरिक्षम् व्यापिथ,
तया न इन्द्र तन्वा शर्म यच्छ,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सु धायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।13
4267. त्वाम् इन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः,
सत्त्रम् नि षेदुः ऋषयो नाधमानाः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।14।

4268. त्वम् तृतम् त्वम् परि एषि उत्सम्,
सहस्रधारम् विदथम् स्वर्विदम्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।15
4269. त्वम् रक्षसे प्रदिशः चतस्रः,
त्वम् शोचिषा नभसी वि भासि।
त्वम् इमा विश्वा भुवना अनु तिष्ठस,
ऋतस्य पन्थाम् अनु एषि विद्वान्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपै,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।16।
4270. पञ्चभिः पराङ् तपसि एकया अर्वाङ्,
अशस्तिम् एषि सुदिने वाधमानः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपै,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।17।
4271. त्वम् इन्द्रः त्वम् महेन्द्रः,
त्वम् लोकः त्वम् प्रजापतिः।
तुभ्यम् यज्ञो वि तायते, तुभ्यम् जुह्वति जुह्वतः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपै,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।18।
4272. असति सत् प्रतिष्ठितम् सति भूतम् प्रतिष्ठितम्,
भूतम् ह भव्य आ हितम् भव्यम् भूते प्रतिष्ठितम्,
तव इत विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपै,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।19।
4273. शुक्रो असि भ्राजो असि।
स यथा त्वम् भ्राजता भ्राजो असि,
एव अहम् भ्राजता भ्राज्यासम्।20।
4274. रुचिः असि रोचो असि।
स यथा त्वम् रुच्या रोचो असि एव अहम्,
पशुभिः च ब्राह्मण वर्चसेन च रुचिषीय।21।
4275. उद्यते नम उद्यायते, नम उदिताय नमः।
विराजे नमः स्वराजे, नमः सम्राजे नमः।22।
4276. अस्तम् अयते नमो, अस्तम् एष्यते नमो,
अस्तम् इताय नमः।
विराजे नमः, स्वराजे नमः, सम्राजे नमः।23।
4277. उत् अगात् अयम् आदित्यो, विश्वेन तपसा सह।
सपत्नान् मह्यम् रन्धयन्, मा च अहम् द्विषते रधम्,
तव इत् विष्णो वहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः विश्वरूपैः,
सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन्।24
4278. आदित्य नावम् आ अरुक्षः, शतारित्राम् स्वस्तये।
अहः मा अति अपीपरो, रात्रिम् सत्रा अति पारय।25।
4279. सूर्य नावम् आ अरुक्ष, शतारित्राम् स्वस्तये।
रात्रिम् मा अति अपीपरः, अहः सत्रा अति पारय।26।
4280. प्रजापतेः आ वृतो ब्रह्मणा वर्मणा अहम्,
कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः, सहस्रायुः सुकृतः चरेयम्।27।
4281. परिवृतो ब्रह्मणा वर्मणा अहम्,
कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्र आपन् इषवो दैव्या,
या मा मानुषीः अवसृष्टा वधाय।28।
4282. ऋतेन गुप्त ऋतुभिः च सर्वैः,
भूतेन गुप्तो भव्येन च अहम्।
मा मा प्र आपत् पाप्मा मा उत मृत्युः,
अन्तः दधे अहम् सलिलेन वाचः।29।
4283. अग्नि मा गोप्ता परि पातु विश्वत,
उद्यन् सूर्यो नुदताम् मृत्युपाशान्।
व्युच्छन्तीः उषसः पर्वता ध्रुवाः,
सहस्रम् प्राणा मयि आ यन्ताम्।30।

इति सप्तदशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

अष्टादशम् काण्डम्

1- पितृमेध सूक्त

4284. ओ चित् सखायम् सख्या ववृत्याम् तिरः,
पुरु चित् अर्णवम् जगन्वान्।
पितुः नपातम् आ दधीत वेधा,
अधि क्षमि प्रतरम् दीध्यानः।1।
4285. न ते सखा सख्यम् वष्टि एतत्,
सलक्ष्मा यत् विषुरूपा भवाति।
महः पुत्रासो असुरस्य वीरा,
दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन्।2।
4286. उशन्ति घ ते अमृतास एतत् एकस्य,
चित् त्यसम् मर्त्यस्य नि ते मनो मनसि धायि,
अस्मे जन्युः पतिः तन्वम् आ विविश्याः।3।
4287. न यत् पुरा चकृम आ कत् ह नूनम्,
ऋतम् वदन्तो अनृतम् रपेम।

गन्धर्वो अप्सु अप्या च योषा सा नौ,
नाभिः परमम् जामि तत् नौ।4।
4288. गर्भे नु नौ जनिता दम्पती,
कः देवः त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिः अस्य प्र मिनन्ति व्रतानि,
वेद नो अस्य पृथिवी उत द्यौः।5।
4289. को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य,
शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून्,
य एषाम् भृत्याम् ऋणधत् स जीवात्।6।
4290. को अस्य वेद प्रथमस्य अह्नः,
क ईम् ददर्श क इह प्र वोचत्।
बृहत् मित्रस्य वरुणस्य धाम,
कत् ऊ ब्रव आहनो वीच्या नॄन्।7।
4291. यमस्य मा यम्यम् काम आ अगन्,
समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वम् रिरिच्याम्,
वि चित् वृहेव रथ्येव चक्रा।8।
4292. न तिष्ठन्ति न नि मिषन्ति,
एते देवानाम् स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मत् आहन याहि तूयम्,
तेन वि वृह रथ्येव चक्रा।9।
4293. रात्रीभिः अस्मा अहभिः दशस्येत्,
सूर्यस्य चक्षुः मुहुः उत् मिमीयात्।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू,
यमीः यमस्य विवृहात् अजामि।10।
4294. आ घा ता गच्छान् उत्तरा युगानि,
यत्र जामयः कृणवन् अजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुम् अन्यम्,
इच्छस्व सुभगे पतिम् मत्।11।
4295. किम् भ्राता असत् यत् अनाथम् भवाति,
किम् ऊ स्वसा यत् निर्ऋतिः निगच्छात्।
काममूता बहु एतत् रपामि,
तन्वा से तन्वम् सम् पिपृग्धि।12।
4296. न ते नाथम् यमि अत्र अहम् अस्मि,
न ते तनूम् तन्वा सम् पपृच्याम्।
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व,
न ते भ्राता सुभगे वष्टि एतत्।13।
4297. न वा उ ते तनूम् तन्वा सम् पपृच्याम्,
पापम् आहुः यः स्वसारम् निगच्छात्।
असम्यत् एतत् मनसः हृदः,
मे भ्राता स्वसुः शयने यत् शयीय।14।
4298. बतो बत असि यम न एव,
ते मनो हृदयम् च अविदाम।
अन्या किल त्वाम् कक्ष्येव,
युक्तम् परि ष्वजातै लिबुजेव वृक्षम्।15।
4299. अन्यम् ऊ षु यमि अन्य ऊ त्वाम्,
परि ष्वजातै लिबुजेव वृक्षम्।
तस्य वा त्वम् मन इच्छा स वा तव,
अध कृणुष्व सम्विदम् सुभद्राम्।16।
4300. त्रीणि च्छन्दांसि कवयो वि येतिरे,
पुरुरूपम् दर्शतम् विश्वचक्षणम्।
आपो वाता ओषधयः तानि,
एकस्मिन् भुवने आर्पितानि।17।
4301. वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः,
पयांसि यह्वो अदितेः अदाभ्यः।
विश्वम् स वेद वरुणो यथा धिया,
स यज्ञियो यजाति यज्ञियान् ऋतून्।18।
4302. रपत् गन्धर्वीः अप्या च योषणा,
नदस्य नादे परि पातु नो मनः।
इष्टस्य मध्ये अदितिः नि धातु नो भ्राता,
नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति।19।
4303. सो चित् नु भद्रा क्षुमती यशस्वती,
उषा उवास मनवे स्वर्वती।
यत् ईम् उशन्तम् उशताम् अनु क्रतुम्,
अग्निम् होतारम् विदथाय जीजनन्।20।
4304. अध त्यम् द्रप्सम् विभ्वम् विचक्षणम्,
विः आ अभरत् इषिरः श्येनो अध्वरे।
यदि विशो वृणते दस्मम् आर्या,
अग्निम् होतारम् अध धीः अजायत।21।
4305. सदा असि रणवो यवसेव पुष्यते,
होत्राभिः अग्ने मनुषः स्वध्वरः।
विप्रस्य वा यत् शशमान उक्थयो वाजम्,
ससवान् उपयासि भूरिभिः।22।
4306. उत् ईरय पितरा जार आ भगम्,
इयक्षति हर्यतो हृत इष्यति।
विवक्ति वह्निः स्वपस्यते मखः,
तविष्यते असुरो वेपते मती।23।
4307. यः ते अग्ने सुमतिम् मर्तो अख्यत्,
सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे।
इषम् दधानो वहमानो अश्वैः,
आ स द्युमान् अमवान् भूषति द्यून्।24।
4308. श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे,
युक्ष्वा रथम् अमृतस्य द्रवित्नुम्।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिः,
देवानाम् अप भूः इह स्याः।25।

4309. यत् अग्न एषा समितिः भवाति,
देवी देवषु यजता यजत्र।
रत्ना च यत् विभजासि स्वधावो,
भागम् नो अत्र वसुमन्तम् वीतात्।26।
4310. अनु अग्निः उषसाम् अग्रम् अख्यत,
अनु अहानि प्रथमो जातवेदाः।
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीन्,
अनु द्यावापृथिवी आ विवेश।7।
4311. प्रति अग्निः उषसाम् अग्रम् अख्यत्,
प्रति अहानि प्रथमो जातवेदाः।
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन्,
प्रति द्यावापृथिवी आ ततान।28।
4312. द्यावा ह क्षामा प्रथमे ऋतेन,
अभिश्रावे भवत सत्यवाचा।
देव यत् मर्तान् यजथाय कृणवन् सीदत्,
होता प्रत्यङ् स्वम् असुम् यन्।29।
4313. देवो देवान् परिभूः ऋतेन,
वह नो हव्यम् प्रथमः चिकित्वान्।
धूमकेतुः समिधा भाऋजीको,
मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान्।30।
4314. अर्चामि वाम् वर्धाय अपो घृतस्नू,
द्यावाभूमी शृणुतम् रोदसी मे।
अहा यत् देवा असुनीतिम् आयन्,
मध्वा नो अत्र पितरा शिशीताम्।31।
4315. स्वावृक् देवस्य अमृतम् यदि,
गोः अतो जातासो धारयन्ते उर्वी।
विश्वे देवा अनु तत् ते यजुः गुः दुहे,
यत् एनी दिव्यम् घृतम् वाः।32।
4316. किम् स्वित् नो राजा जगृहे कत् अस्य,
अति व्रतम् चकृमा को वि वेद।
मित्रः चित् हि ष्म आ जुहुराणो,
देवान् श्लोको न याताम् अपि वाजो अस्ति।33।
4317. दुर्मन्तु अत्र अमृतस्य नाम,
सलक्ष्मा यत् विषुरूपा भवाति।
यमस्य यो मनवते सुमन्तु अग्ने,
तम् ऋष्व पाहि अप्रयुच्छन्।34।
4318. यस्मिन् देवा विदथे मादयन्ते,
विवस्वतः सदने धारयन्ते।
सूर्ये ज्योतिः अदधुः मांस अक्तुन्,
परि द्योतनिम् चरतो अजस्रा।35।
4319. यस्मिन् देवा मन्मनि सम्चरन्ति,
अपीच्ये न वयम् अस्य विद्म।
मित्रो नो अत्र अदितिः अनागान्,
सविता देवो वरुणाय वोचत्।36।
4320. सखाय आ शिषामहे, ब्रह्म इन्द्राय वज्रिणे।
स्तुष ऊ षु नृतमाय धृष्णवे।37।
4321. शवसा हि असि श्रुतो, वृत्रहत्येन वृत्रहा।
मघैः मघोनो अति शूर दाशसि।38।
4322. स्तेगो न क्षाम् अति एषि पृथिवीम्,
मही नो वाता इह वान्तु भूमौ।
मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो,
अग्निः वने न वि असृष्ट शोकम्।39।
4323. स्तुहि श्रुतम् गर्तसदम् जनानाम्,
राजानम् भीमम् उपहत्नुम् उग्रम्।
मृड जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यम्,
अस्मत् ते नि वपन्तु सेन्यम्।40।
4324. सरस्वतीम् देवयन्तो हवन्ते,
सरस्वतीम् अध्वरे तायमाने।
सरस्वतीम् सुकृतो हवन्ते,
सरस्वती दाशुषे वार्यम् दात्।41।
4325. सरस्वतीम् पितर हवन्ते,
दक्षिणा यज्ञम् अभिनक्षमाणाः।
आसद्य अस्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्,
अनमीवा इष आ धेहि अस्मे।42।
4326. सरस्वति या सरथम् ययाथ उक्थैः,
स्वधाभिः देवि पितृभिः मदन्ती।
सहस्रार्घम् इडो अत्र भागम्,
रायः पोषम् यजमानाय धेहि।43।
4327. उत् ईरताम् अवरे उत् परास,
उत् मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुम् य ईयुः अवृका ऋतज्ञाः,
ते नो अवन्तु पितरो हवेषु।44।
4328. आ अहम् पितृत् सुविदत्रान् अवित्सि,
नपातम् च विक्रमणम् च विष्णोः।
बर्हिसदो ये स्वधया सुतस्य,
भजन्त पित्वस्त इह आगमिष्ठाः।45।
4329. इदम् पितृभ्यो नमो अस्तु,
अद्य ये पूर्वासो ये अपरास ईयुः।
ये पार्थवे रजसि आ निसत्ता,
ये वा नूनम् सुवृजनासु दिक्षु।46।
4330. मातली कव्यैः यमो अङ्गिरोभिः,
बृहस्पतिः ऋक्वभिः ववृधानः।
यान् च देवा ववृधुः ये च देवान्,
ते नो अवन्तु पितरो हवेषु।47।
4331. स्वादुः किल अयम् मधुमान् उत अयम्,
तीव्रः किल अयम् रसवान् उत अयम्।

उतो नु अस्य पपिवांसम् इन्द्रम्,
न कः चन सहते आहवेषु।48।
4332. परेयिवांसम् प्रवतो महीः इति,
बहुभ्यः पन्थाम् अनुपस्पशानम्।
वैवस्वतम् संगमनम् जनानाम्,
यमम् राजानम् हविषा सपर्यत।49।
4333. यमो नो गातुम् प्रथमो विवेद,
न एषा गव्यूतिः अपभर्तवा उ।
यत्र न पूर्वे पितरः परेता,
एना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः।50।
4334. बर्हिषदः पितर ऊती अर्वाक्,
इमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।
त आ गत अवसा शम्तमेन,
अधा नः शम् योः अरपो दधात।51।
4335. आच्य जानु दक्षिणतो निसद्य इदम्,
नो हवि अभि गृणन्तु विश्वे।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चित्,
नो यत् व आगः पुरुषता कराम।52।
4336. त्वष्टा दुहित्रे वहतुम् कृणोति,
तेन इदम् विश्वम् भुवनम् सम् एति।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो, जाया विस्वतो ननाश।53।
4337. प्र इहि प्र इहि पथिभिः पूर्यानैः,
येन ते पूर्वे पितरः परेताः।
उभा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमम्,
पश्यासि वरुणम् च देवम्।54।
4338. अप इत वि इत वि च सर्पत अतो,
अस्मा एतम् पितरो लोकम् अक्रन्।
अहोभिः अद्भिः अक्तुभिः व्यक्तम्,
यमो ददाति अवसानम् अस्मै।55।
4339. उशन्तः त्वा इधीमहि, उशन्तः सम् इधीमहि।
उशन् उशत आ वह, पितृन् हविषे अत्तवे।56।
4340. द्युमन्तः त्वा इधीमहि, द्युमन्तः सम् इधीमहि।
द्युमान् द्युमत आ वह, पितृन् हविषे अत्तवे।57।
4341. अङ्गरसो नः पितरो नवग्वा,
अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषाम् वयम् सुमतौ यज्ञियानाम्,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम्।58।
4342. अङ्गिरोभिः यज्ञियैः आ गहि,
इह यम वैरूपैः इह मादयस्व।
विवस्वन्तम् हुवे यः पिता,
ते अस्मिन् बर्हिषि आ निसद्य।59।
4343. इमम् यम प्रस्तरम् आ हि रोह,
अङ्गिरोभिः पितृभिः सम्विदानः।
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्तु,
एना राजन् हविषो मादयस्व।60।
4344. इत एत उत् आ अरुहन्,
दिवः पृष्ठानि आ अरुहन्।
प्र भूर्जयो यथा पथा, द्याम् अङ्गिरसो ययुः।61।

2- पितृमेध सूक्त

4345. यमाय सोमः पवते, यमाय क्रियते हविः।
यमम् ह यज्ञो गच्छति, अग्निदूतो अरंकृतः।1।
4346.यमाय मधुमत्तमम् जुहोत प्र च तिष्ठत।
इदम् नम ऋषिभ्यः पूर्वेभ्यः, पूर्वेभ्यः पथिकृत्भ्यः।2।
4347. यमाय घृतवत् पयो, राज्ञे हविः जुहोतन।
स नो जीवेषु आ यमेत्, दीर्घम् आयुः प्र जीवसे।3।
4348. मा एनम् अग्ने वि दहो मा अभि शूशुचो,
मा अस्य त्वचम् चिक्षिपो मा शरीरम्।
शृतम् यदा करसि जातवेदो,
अथ ईम् एनम् प्र हिनुतात् पितृन् उप।4।
4349. यदा शृतम् कृणवो जातवेदो,
अथ इमम् एनम् परि दक्षात् पितृभ्यः।
यदो गच्छाति असुनीतिम् एताम्,
अथ देवानाम् वशनीः भवाति।5।
4350. त्रिकद्रुकेभिः पवते, षट् उर्वीः एकम् इत् बृहत्।
त्रिष्टुब् गायत्री छन्दांसि, सर्वा ता यम आर्पिता।6।
4351. सूर्यम् चक्षुषा गच्छ वातम् आत्मना,
दिवम् च गच्छ पृथिवीम् च धर्मभिः।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितम्,
ओषधीषु प्रति तिष्ठ शरीरैः।7।
4352. अजो भागः तपसः तम् तपस्व,
तम् ते शोचिः तपतु तम् ते अर्चिः।
याः ते शिवाः तन्वो जात-वेदः ताभिः,
वह एनम् सुकृताम् ऊ लोकम्।8।
4353. याः ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिः,
आपृणासि दिवम् अन्तरिक्षम्।
अजम् यन्तम् अनु ताः सम् ऋणवताम्,
अथ राभिः शिवतमाभिः शृतम् कृधि।9।
4354. अव सृज पुनः अग्ने पितृभ्यो,
यः त आहुतः चरति स्वधावान्।
आयुः वसान उप यातु शेषः,
सम् गच्छताम् तन्वा सुवर्चाः।10।
4355. अति द्रव श्वानौ सारमेयौ,
चतुर्क्षौ शबलौ साधुना पथा।
अध पितृन् सुविदत्रान् अपि इहि,
यमेन ये सधमादम् मदन्ति।11।

4356. यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ,
चतुर्क्षौ पथिषदी नृचक्षसा।
ताभ्याम् राजन् परि धेहि एनम्,
स्वस्ति अस्मै अनमीवम् च धेहि।12।
4357. उरूनसौ असुतृपौ उदुम्बलौ,
यमस्य दूतौ चरतो जनान् अनु।
तौ अस्मभ्यम् दृशये सूर्याय पुनः,
दाताम् असुम् अद्य इह भद्रम्।13।
4358. सोम एकेभ्यः पवते, घृतम् एके उप आसते।
येभ्यो मधु प्रधावति तान्, चित् एव अपि गच्छतात्।14।
4359. ये चित् पूर्वे ऋतसाता, ऋतजाता ऋतावृधः।
ऋषीन् तपस्वतो यम, तपोजान् अपि गच्छतात्।15।
4360. तपसा ये अनाधृष्याः, तपसा ये स्वः ययुः।
तपो ये चक्रिरे महः तान्, चित् एव अपि गच्छतात्।16।
4361. ये युध्यन्ते प्रधनेषु, शूरासो ये तनूत्यजः।
ये वा सहस्रदक्षिणाः तान्, चित् एव अपि गच्छतात्।17।
4362. सहस्रणीथाः कवयो, ये गोपायन्ति सूर्यम्।
ऋषीन् तपस्वतो यम, तपोजान् अपि गच्छतात्।18।
4363. स्योना अस्मै भव पृथिवि, अनृक्षरा निवेशनी।
यच्छ अस्मै शर्म सप्रथाः।19।
4364. असम्बाधे पृथिव्या, उरौ लोके नि धीयस्व।
स्वधा याः चकृषे जीवन्, ताः ते सन्तु मधुश्चुतः।20।
4365. ह्वयामि ते मनसा मनः इह,
इमान् गृहान् उप जुजुषाण एहि।
सम् गच्छस्व पितृभिः सम् यमेन,
स्योनाः त्वा वाता उप वान्तु शग्माः।21।
4366. उत् त्वा वहन्तु मरुत, उदवाहा उदप्रुतः।
अजेन कृणवन्तः शीतम्, वर्षेण उक्षन्तु बाल् इति।22।
4367. उत् अह्वम् आयुः, आयुषे क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
स्वान् गच्छतु ते मनो, अधा पितृन् उप द्रव।23।
4368. मा ते मनो मा असोः,
मा अङ्गानाम् मा रसस्य ते।
मा ते हास्त तन्वः, किम् चन इह।24।
4369. मा त्वा वृक्षः सम् बाधिष्ट, मा देवी पृथिवी मही।
लोकम् पितृषु वित्त्वा, एधस्व यमराजसु।25।
4370. यत् ते अङ्गम् अतिहितम् पराचैः अपानः,
प्राणो य उ वा ते परेतः।
तत् ते संगत्य पितरः सनीडा,
घासात् घासम् पुनः आ वेशयन्तु।26।
4371. अप इमम् जीवा अरुधन् गृहेभ्यः,
तम् निः वहत परि ग्रामात् इतः।
मृत्युः यमस्य आसीत् दूतः प्रचेता,
असून् पितृभ्यो गमयाम् चकार।27।
4372. ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा,
ज्ञातिमुखा अहुतादः चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्ति अग्निः,
तान् अस्मात् प्र धमाति यज्ञात्।28।
4373. सम् विशन्तु इह पितरः स्वाः नः,
स्योनम् कृणवन्तः प्रतिरन्तः आयुः।
तेभ्यः शकेम हविषा नक्षमाणा,
ज्योक् जीवन्तः शरदः पुरूचीः।29।
4374. याम् ते धेनुम् निपृणामि,यम् ऊ ते क्षीर ओदनम्।
तेना जनस्य असो भर्ता,यो अत्र असत् अजीवनः।30।
4375. अश्ववतीम् प्र तर या सुशेवा,
ऋक्षाकम् वा प्र-तरम् नवीयः।
यः त्वा जघान वध्यः सो अस्तु,
मा सो अन्यत् विदत भागधेयम्।31।
4376. यमः परो अवरो विवस्वान् ततः,
परम् न अति पश्यामि किम् चन।
यमे अध्वरो अधि मे निविष्टो,
भुवो विवस्वान् अन्वाततान।32।
4377. अप अगूहन् अमृताम् मर्त्येभ्यः,
कृत्वा सवर्णाम् अदधुः विवस्वते।
उत अश्वनौ अभरत् यत् तत् आसीत्,
अजहात् ऊ द्वा मिथुना सरण्यूः।33।
4378. ये नि-खाता ये परोप्ता, ये दग्धा ये च उद्धिताः।
सर्वान् तान् अग्न आ वह, पितृन् हविषे अत्तवे।34।
4379. ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा,
मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
त्वम् तान् वेत्थ यदि ते जातवेदः,
स्वधया यज्ञम् स्वधितिम् जुषन्ताम्।35।
4380. शम् तप मा अति तपो, अग्ने मा तन्वम् तपः।
वनेषु शुष्मो अस्तु ते, पृथिव्याम् अस्तु यत् हरः।36।
4381. ददामि अस्मै अवसानम् एतत्,
य एष आगन् मम च इत् अभूत् इह।
यमः चिकित्वान् प्रति एतत् आह,
मम एष राये उप तिष्ठताम् इह।37।
4382. इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।38।
4383. प्र इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।39।
4384. अप इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।40।

4385. वि इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।41।
4386. निः इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।42।
4387. उत् इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्-सु नो पुरा।43।
4388. सम् इमाम् मात्राम् मिमीमहे,
यथा अपरम् न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।44।
4389. अमासि मात्राम् स्वः अगाम्, आयुष्मान् भूयासम्।
यथा अपरम् न मासातै, शते शरत्-सु नो पुरा।45।
4390. प्राणो अपानो व्यान, आयुः चक्षुः दृशये सूर्याय।
अपरिपरेण पथा, यमराज्ञः पितृन् गच्छ।46।
4391. ये अग्रवः शशमानाः परेयुः,
हित्वा द्वेषांसि अनपत्यवन्तः।
ते द्याम् उदित्य अविदन्त लोकम्,
नाकस्य पृष्ठे अधि दीध्यानाः।47।
4392. उदन्वती द्यौः अवमा, पीलुमती इति मध्यमा।
तृतीया ह प्रद्यौः इति, यस्याम् पितर आसत्।48।
4393. ये नः पितुः पितरो ये पितामहा,
य आविविशुः उरु अन्तरिक्षम्।
य आक्षियन्ति पृथिवीम् उत द्याम्,
तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम।49।
4394. इदम् इत् वा उ न अपरम्, दिवि पश्यसि सूर्यम्।
माता पुत्रम् यथा सिचा अभि, एनम् भूम ऊर्णुहि।50।
4395. इदम् इत् वा उ न अपरम्,
जरसि अन्यत् इतो अपरम्।
जाया पतिमिव वाससा अभि, एनम् भूम ऊर्णुहि।51।
4396. अभि त्वा ऊर्णोमि पृथिव्या, मातुः वस्त्रेण भद्रया।
जीवेषु भद्रम् तत् मयि, स्वधा पितृषु सा त्वयि।52।
4397. अग्नीषोमा पथिकृता स्योनम्,
देवेभ्यो रत्नम् दधथुः वि लोकम्।
उप प्र ईष्यन्तम् पूषणम् यो वहाति,
अञ्जोयानैः पथिभिः तत्र गच्छतम्।53।
4398. पूषा त्वा इतः च्यावयतु प्र विद्वान्,
अनष्टपशुः भुवनस्य गोपाः।
स त्वा एतेभ्यः परि ददत् पितृभ्यो,
अग्निः देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः।54।
4399. आयुः विश्वायुः परि पातु,
त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्।
यत्र आसते सुकृतः यत्र त ईयुः,
तत्र त्वा देवः सविता दधातु।55।
4400. इमौ युनज्मि ते वह्नी, असुनीताय वोढवे।
ताभ्याम् यमस्य सदनम्, समितीः च अव गच्छतात्।56।
4401. एतत् त्वा वासः प्रथमम् नु आ अगन्,
अप एतत् ऊह यत् इह अबिभः पुरा।
इष्टापूर्तम् अनुसंक्राम विद्वान्,
यत्र ते दत्तम् बहुधा विबन्धुषु।57।
4402. अग्नेः वर्म परि गोभिः व्ययस्व,
सम् प्र ऊर्णुष्व मेदसा पीवसा च।
न इत् त्वा धृष्णुः हरसा जर्हृषाणो,
दधृक् विधक्षन् परीङ्खयातै।58।
4403. दण्डम् हस्ताद् आददानो गतासोः,
सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन।
अत्र एन त्वम् इह वयम् सुवीरा,
विश्वा मृधो अभिमातीः जयेम।59।
4404. धनुः हस्तात् आददानो मृतस्य,
सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन।
समागृभाय वसु भूरि पुष्टम् अर्वाङ्,
त्वम् आ इहि उप जीवलोकम्।60।

3- पितृमेध सूक्त

4405. इयम् नारी पतिलोकम् वृणाना,
नि पद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्।
धर्मम् पुराणम् अनुपालयन्ती,
तस्यै प्रजाम् द्रविणम् च इह धेहि।1।
4406. उत् ईर्ष्व नारि अभि जीवलोकम्,
गतासुम् एतम् उप शेष आ इहि।
हस्तग्राभस्य दधिषोः तव इदम्,
पत्युः जनित्वम् अभि सम् बभूथ।2।
4407. अपश्यम् युवतिम् नीयमानाम्,
जीवाम् मृतेभ्यः परिनीयमानाम्।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृता आसीत्,
प्राक्तो अपाचीम् अनयम् तत् एनाम्।3।
4408. प्रजानती अघ्न्ये जीवलोकम्,
देवानाम् पन्थाम् अनुसंचरन्ती।
अयम् ते गोपतिः तम् जुषस्व,
स्वर्गम् लोकम् अधि रोहय एनम्।4।
4409. उप द्याम् उप वेतसम्, अवत्तरो नदीनाम्।
अग्ने पित्तम् अपाम् असि।5।
4410. यम् त्वम् अग्ने समदहः, तम् ऊ निः वापया पुनः।
क्याम्बूः अत्र रोहतु, शाण्डदूर्वा वल्कशा।6।
4411. इदम् त एकम् पर ऊ त एकम्,

तृतीयेन ज्योतिषा सम् विशस्व।
सम्वेशने तन्वा चारु एधि, प्रियो देवानाम् परमे सधस्थे।7।
4412. उत् तिष्ठ प्र इहि प्र द्रव,
ओकः कृणुष्व सलिले सधस्थे।
तत्र त्वम् पितृभिः सम्विदानः सम् सोमेन,
मदस्व सम् सोमेन मदस्व सम् स्वधाभिः।8।
4413. प्र च्यवस्व त्नवम् सम् भरस्व,
मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम्।
मनो निविष्टम् अनुसंविशस्व,
यत्र भूमेः जुषसे तत्र गच्छ।9।
4414. वर्चसा माम् पितरः सोम्यासो,
अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन।
चक्षुषे मा प्रतरम् तारयन्तो जरसे,
मा जरदष्टिम् वर्धन्तु।10।
4415. वर्चसा माम् सम् अनक्तु अग्निः,
मेधाम् मे विष्णुः नि अनक्तु आसन्।
रयिम् मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः,
स्योना मा आपः पवनैः पुनन्तु।11।
4416. मित्रावरुणा परि माम् अधाताम्,
आदित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु।
वर्चो म इन्द्रो नि अनक्तु हस्तयो,
जरदष्टिम् मा सविता कृणोतु।12।
4417. यो ममार प्रथमो मर्त्यानाम्,
यः प्रेयाय प्रथमो लोकम् एतम्।
वैवस्वतम् संगमनम् जनानाम्,
यमम् राजानम् हविषा सपर्यत।13।
4418. परा यात पितर आ च यात,
अयम् वो यज्ञो मधुना समक्त।
दत्तो अस्मभ्यम् द्रविणेह भद्रम्,
रयिम् च नः सर्ववीरम् दधात।14।
4419. कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो अगस्त्यः,
श्यावाश्वः सोभरी अर्चनानाः।
विश्वामित्रो अयम् जमत्-अग्निः अत्रिः,
अवन्तु नः कश्यपो वामदेवः।15।
4420. विश्वामित्र जमत् अग्ने वसिष्ठ,
भरत्वाज गोतम वाम-देवा।
शर्दि-नो अत्रिः अग्रभीत् नमोभिः,
सुसंशासः पितरो मृडता नः।16।
4421. कस्ये मृजाना अति यन्ति,
रिप्रम् आयुः दधानाः प्रतरम् नवीयः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन, अध स्याम सुरभयो गृहेषु।17।
4422. अञ्जते वि अञ्जते सम् अञ्जते,
क्रतुम् रिहन्ति मधुना अभि अञ्जते।
सिन्धोः उच्छ्वासे पतयन्तम् उक्षणम्,
हिरण्यपावाः पशुम् आसु गृह्णते।18।
4423. यत् वो मुद्रम् पितरः सोम्यम् च,
तेनो सचध्वम् स्वयशसो हि भूत।
ते अर्वाणः कवय आ शृणोत, सुविदत्रा विदथे हूयमानाः।19।
4424. ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा,
इष्टवन्तो रातिषाचो दधानाः।
दक्षिणावन्तः सुकृतो य स्थ आसद्य,
अस्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्।20।
4425. अधा यथा नः पितरः परासः,
प्रत्नासो अग्न ऋतम् आशशानाः।
शुची इत् अयन् दीध्यत उक्थशासः,
क्षामा भिन्दन्तो अरुणीः अप व्रन्।21।
4426. सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो,
अयो न देवा जनिमा धमन्तः।
शुचन्तो अग्निम् ववृधन्त इन्द्रम्,
उर्वीम् गव्याम् परिसदम् नो अक्रन्।22।
4427. आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यत्,
देवानाम् जनिम अन्ति उग्रः।
मर्तासः चित् उर्वशीः अकृमन्,
वृधे चित् अर्यः उपरस्य आयोः।23।
4428. अकर्म ते स्वपसो अभूम,
ऋतम् अवस्रन् उषसो विभातीः।
विश्वम् तत् भद्रम् यत् अवन्ति,
देवा बृहत् वदेम विदथे सुवीराः।24।
4429. इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतः यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।25।
4430. धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामेव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।26।
4431. अदितिः मा आदित्यैः प्रतीच्या दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।27।
4432. सोमो मा विश्वैः देवैः उदीच्या दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।28।
4433. धर्ता ह त्वा धरुणः धारयातै ऊर्ध्वम्,
भानुम् सविता द्यामिव उपरि।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।29।
4434. प्राच्याम् त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायाम्,
दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोक-कृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुत-भागा इह स्थ।30।
4435. दक्षिणायाम् त्वा दिशि पुरा सम्-वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।31।
4436. प्रतीच्याम् त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागाः इह स्थ।32।
4437. उदीच्याम् आ दिशि पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।33।
4438. ध्रुवायाम् त्वा दिशि पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।34।
4439. ऊर्ध्वायाम् त्वा दिशि पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।35।
4440. धर्ता असि धरुणो असि, वंसगो असि।36।
4441. उदपूः असि मधुपूः असि, वातपूः असि।37।
4442. इतः च मा अमुतः च अवताम्,
यमेव यतमाने यत् ऐतम्।
प्र वाम् भरन् मानुषा देवयन्तो,
आ सीदताम् स्वम् उ लोकम् विदाने।38।
4443. स्वासस्थे भवतम् इन्दवे,
नो युजे वाम् ब्रह्म पूर्व्यम् नमाभिः।
वि श्लोकम् एति पथ्येव सूरिः,
शृणवन्तु विश्वे अमृतासः एतत्।39।
4444. त्रीणि पदानि रुपो अनु अरोहत्,
चतुष्पदीम् अनु एतत् व्रतेन।
अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कम्,
ऋतस्य नाभौ अभि सम् पुनाति40।
4445. देवेभ्यः कम् अवृणीत मृत्युम्,
प्रजायै किम् अमृतम् न अवृणीत।
बृहस्पतिः यज्ञम् अतनुत ऋषिः,
प्रियाम् यमः तन्वम् आ रिरेच।41।
4446. त्वम् अग्ने ईडितो जातवेदो,
अवाट् हव्यानि सुरभीणि कृत्वा।
प्र अदाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्,
अद्धि त्वम् देव प्रयता हवींषि।42।
4447. आसीनासो अरुणीनाम् उपस्थे,
रयिम् धत्त दाशुषे मर्त्याय।
पुत्रेभ्यः पितरः तस्य वस्वः,
प्र यच्छत ते इह ऊर्जम् दधात।43।
4448. अग्निष्वात्ताः पितर आ इह गच्छत,
सदः सदः सदत सुप्रनीतयः।
अत्तो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि,
रयिम् च नः सर्ववीरम् दधात।44।
4449. उपहूता नः पितरः सोम्यासो,
बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
ते आ गमन्तु ते इह श्रुवन्तु अधि,
ब्रुवन्तु ते अवन्तु अस्मान्।45।
4450. ये नः पितु पितरो ये पितामहा,
अनुजहिरे सोपीथम् वसिष्ठाः।
तेभिः यमः सम्रराणो हवींषि,
उशन् उशत्भिः प्रतिकामम् अत्तु।46।
4451. ये तातृषुः देवत्रा जेहमाना,
होत्राविद स्तोमतष्टासो अर्कैः।
आ अग्ने याहि सहस्रम् देववन्दैः,
सत्यैः कविभिः ऋषिभिः घर्मसद्.भिः।47।
4452. ये सत्यासो हविरदो हविष्पा,
इन्द्रेण देवैः सरथम् तुरेण।
आ अग्ने याहि सुविदत्रेभिः,
अर्वाङ् परैः पूर्वैः ऋषिभिः घर्मसद्-भिः।48।
4453. उप सर्प मातरम् भूमिम् एताम्,
उरुव्यचसम् पृथिवीम् सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदाः पृथिवी दक्षिणावते,
एषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्।49।
4454. उत्-श्वञ्चस्व पृथिवि आ नि बाधथाः,
सूपायना अस्मै भव सूपसर्पणा।
माता पुत्रम् यथा सिचा, अभि एनम् भूमे ऊर्णुहि।50।
4455. उत्-श्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु,
सहस्रम् मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतः स्योना,
विश्वाहा अस्मै शरणाः सन्तु अत्र।51।
4456. उत् ते स्तभ्नामि पृथिवीम् त्वत् परि इमम्,
लोगम् निदधत् मो अहम् रिषम् ।
एताम् स्थूणाम् पितरो धारयन्ति,

ते तत्र यमः सादना ते कृणोतु।52।
4457. इमम् अग्ने चमसम् मा वि जिह्वर,
प्रियो देवानाम् उत सोम्यानाम्।
अयम् यः चमसो देवपानः,
तस्मिन् देवा अमृता मादयन्ताम्।53।
4458. अथर्वा पूर्णम् चमसम्,
यम् इन्द्राय अबिभः वाजिनीवते।
तस्मिन् कृणोति सुकृतस्य भक्षम्,
तस्मिन् इन्दुः पवते विश्वदानीम्।54।
4459. यत् ते कृष्णः शकुन आतुतोद,
पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः।
अग्निः तत् विश्वात् अगदम् कृणोतु,
सोमः च यो ब्राह्मणान् आविवेश।55।
4460. पयस्वतीः ओषधयः, पयस्वत् मामकम् पयः।
अपाम् पयसो यत् पयः, तेन मा सह शुम्भतु।56।
4461. इमा नारीः अविधवाः सुपत्नीः,
आञ्जनेन सर्पिषा सम् स्पृशन्ताम्।
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना,
आ रोहन्तु जनयो योनिम् अग्रे।57।
4462. सम् गच्छस्व पितृभिः सम् यमेन,
इष्टापूर्तेन परमे व्योमन्।
हित्वा अवद्यम् पुनः अस्तम् आ इहि,
सम् गच्छताम् तन्वा सुवर्चाः।58।
4463. ये नः पितुः पितरो ये पितामहा,
य आविविशुः उरु अन्तरिक्षम्।
तेभ्यः स्वराट् असुनीतिः नो अद्य,
यथावशम् तन्वः कल्पयाति।59।
4464. शम् ते नीहारो भवतु, शम् ते प्रुष्वा अव शीयताम्।
शीतिके शीतिकावति, ह्लादिके ह्लादिकावति।
मण्डूकी अप्सु शम् भुव, इमम् सु अग्निम् शमय।60।
4465. विवस्वान् नो अभयम् कृणोतु,
यः सुत्रामा जीरदानुः सुदानुः।
इह इमे वीरा बहवो भवन्तु,
गोमत् अश्ववत् मयि अस्तु पुष्टम्।61।
4466. विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु,
परा एतु मृत्युः अमृतम् न आ एतु।
इमान् रक्षतु पुरुषान् आ जरिम्णो,
मो सु एषाम् असवो यमम् गुः।62।
4467. यो दध्रे अन्तरिक्षे न मह्ना,
पितृणाम् कविः प्रमतिः मतीनाम्।
तम् अर्चत विश्व-मित्रा हविर्भि,
स नो यमः प्रतरम् जीवसे धात्।63।
4468. आ रोहत दिवम् उत्तमाम्, ऋषयो मा बिभीतन।
सोमपाः सोमपायिन इदम् वः क्रियते,
हविः अगन्म ज्योतिः उत्तमम्।64।
4469. प्र केतुना बृहता भाति अग्निः,
आ रोदसी वृषभो रोदसी रोरवीति।
दिवः चित् अन्तात् उपमाम्,
उत् आनट् अपाम् उपस्थे महिषो ववर्ध।65।
4470. नाके सुपर्णम् उप यत् पतन्तम्,
हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षम् वरुणस्य दूतम्,
यमस्य योनौ शकुनम् भुरण्युम्।66।
4471. इन्द्र क्रतुम् न आ भर, पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत,
यामनि जीवा ज्योतिः अशीमहि।67।
4472. अपूपापिहितान् कुम्भान्, यान् ते देवा अधारयन्।
ते ते सन्तु स्वधा-वन्तो, मधुमन्तो घृतश्चुतः।68।
4473. याः ते धानाः अनुकिरामि, तिलमिश्राः स्वधावतीः।
ताः ते सन्तु विभ्वीः प्रभ्वीः,
ताः ते यमो राजा अनु मन्यताम्।69।
4474. पुनः देहि वनस्पते, य एष निहितः त्वयि।
यथा यमस्य सदने, आसातै विदथा वदन्।70।
4475. आ रभस्व जातवेदः, तेजस्वत् हरो अस्तु ते।
शरीरम् अस्य सम् दह अथ,
एनम् धेहि सुकृताम् उ लोके।71।
4476. ये ते पूर्वे परागता, अपरे पितरः च ये।
तेभ्यो घृतस्य कुल्या एतु, शतधारा व्युन्दती।72।
4477. एतत् आ रोह वय उन्मृजानः,
स्वा इह बृहत् उ दीदयन्ते।
अभि प्र इहि मध्यतो मा अप हास्थाः,
पितृणाम् लोकम् प्रथमो यो अत्र।73।

4-पितृमेध सूक्त

4478. आ रोहत जनित्रीम् जातवेदसः,
पितृयाणैः सम् व आ रोहयामि।
अवाट् हव्या इषितो हव्यवाह,
ईजानम् युक्ताः सुकृतो धत्त लोके।1।
4479. देवा यज्ञम् ऋतवः कल्पयन्ति,
हविः पुरोडाशम् स्रुचो यज्ञायुधानि।
तेभिः याहि पथिभिः देवयानैः,
यैः ईजाना स्वर्गम् यन्ति लोकम्।2।
4480. ऋतस्य पन्थाम् अनु पश्य,
साधु अङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति।
तेभिः याहि पथिभिः स्वर्गम्, यत्र आदित्या मधु भक्षयन्ति,
तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व।3।

4481. त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू,
नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः।
स्वर्गाः लोका अमृतेन विष्ठा,
इषम् ऊर्जम् यजमानाय दुह्वाम्।4।
4482. जुहूः दाधार द्याम् उपभृत् अन्तरिक्षम्,
ध्रुवा दाधार पृथिवीम् प्रतिष्ठाम्।
प्रति इमाम् लोका घृतपृष्ठाः स्वर्गाः,
कामम्कामम् यजमानाय दुह्वाम्।5।
4483. ध्रुवे आ रोह पृथिवीम् विश्वभोजसम्,
अन्तरिक्षम् उपभृत आ कमस्व।
जुहु द्याम् गच्छ यजमानेन साकम् स्रुवेण वत्सेन,
दिशः प्रपीनाः सर्वा धुक्ष्व अहणीयमानः।6।
4484. तीर्थैः तरन्ति प्रवतो महीः,
यज्ञकृतो सुकृतो येन यन्ति।
अत्र अदधुः यजमानाय लोकम्,
दिशो भूतानि यत् अकल्पयन्त।7।
4485. अङ्गिरसाम् अयनम् पूर्वो अग्निः आदित्यानाम्,
अयनम् गार्हपत्यो दक्षिणानाम् अयनम् दक्षिणाग्निः।
महिमानम् अग्नेः विहितस्य ब्रह्मणा,
समङ्गः सर्वः उप याहि शग्मः।8।
4486. पूर्वः अग्निः त्वा तपतु शम् पुरस्तात्,
शम् पश्चात् तपतु गार्हपत्यः।
दक्षिणाग्निः ते तपतु शर्म वर्म उत्तरतः मध्यतः,
अन्तरिक्षात् दिशोदिशः अग्ने परि पाहि घोरात्।9।
4487. यूयम् अग्ने शम्तमाभिः तनूभिः,
ईजानम् अभि लोकम् स्वर्गम्।
अश्वा भूत्वा पृष्टिवाहो वहाथ,
यत्र देवैः सधमादम् मदन्ति।10।
4488. शम् अग्ने पश्चात् तप शम् पुरस्तात्,
शम् उत्तरात् शम् अधरात् तप एनम्।
एकः त्रेधा विहितो जातवेदः,
सम्यक् एनम् धेहि सुकृताम् उ लोके।11।
4489. शम् अग्नयः समिद्धा आ रभन्ताम्,
प्राजापत्यम् मेध्यम् जातवेदसः।
शृतम् कृण्वन्त इह, मा अव चिक्षिपन्।12।
4490. यज्ञ एति विततः कल्पमान,
ईजानम् अभि लोकम् स्वर्गम्।
तम् अग्नयः सर्वहुतम् जुषन्ताम्,
प्राजापत्यम् मेध्यम् जातवेदसः।
शृतम् कृण्वन्त इह, मा अव चिक्षिपन्।13।
4491. ईजानः चितम् आ अरुक्षत् अग्निम्,
नाकस्य पृष्ठात् दिवम् उत्पतिष्यन्।
तस्मै प्र भाति नभसो ज्योतिषीमान्,
स्वर्गम् पन्थाः सुकृते देवयानः।14।
4492. अग्निः होता अध्वर्युः ते बृहस्पतिः,
इन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतः ते अस्तु।
हुतः अयम् सम्स्थितो यज्ञ एति,
यत्र पूर्वम् अयनम् हुतानाम्।15।
4493. अपूपवान् क्षीरवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।16।
4494. अपूपवान् दधिवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।17।
4495. अपूपवान् द्रप्सवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।18।
4496. अपूपवान् घृतवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।19।
4497. अपूप वान् मांसवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।20।
4498. अपूपवान् अन्नवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।21।
4499. अपूपवान् मधुमान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।22।
4500. अपूपवान् रसवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।23।
4501. अपूपवान् अपवान्, चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ।24।
4502. अपूपापिहितान् कुम्भान्, यान् ते देवा अधारयन्।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो, मधुमन्तो घृतश्चुतः।25।
4503. याः ते धाना अनुकिरामि, तिलमिश्राः स्वधावतीः।
ताः ते सन्तु उत्भ्वीः प्रभ्वीः,
ताः ते यमो राजा अनु मन्यताम्।26।
4504. अक्षितिम् भूयसीम्।27।
4505.द्रप्सः चस्कन्द पृथिवीम् अनु द्याम् इमम्,
च योनिम् अनु यः च पूर्वः।
समानम् योनिम् अनु सम्चरन्तम्,
द्रप्सम् जुहोमि अनु सप्त होत्राः।28।
4506. शतधारम् वायुम् अर्कम् स्वर्विदम्,

नृचक्षसः ते अभि चक्षते रयिम्।
ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा,
ते दुह्रते दक्षिणाम् सप्तमातरम्।29।
4507. कोशम् दुहन्ति कलशम् चतुबिलम्,
इडाम् धेनुम् मधुमतीम् स्वस्तये।
ऊर्जम् मदन्तीम् अदितिम् जनेषु,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्।30।
4508. एतत् ते देवः सविता, वासो ददाति भर्तवे।
तत् त्वम् यमस्य राज्ये, वसानः तार्प्यम् चर।31।
4509. धाना धेनुः अभवत्, वत्सो अस्याः तिलो अभवत्।
ताम् वै यमस्य राज्ये, अक्षिताम् उप जीवति।32।
4510. एताः ते असौ धेनवः, कामदुघा भवन्तु।
एनीः श्येनीः सरूपा विरूपाः,
तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वा अत्र।33।
4511. एनी धाना हरिणीः श्येनीः अस्य,
कृष्णा धाना रोहिणीः धेनवः ते।
तिलवत्सा ऊर्जम् अस्मै दुहाना,
विश्वाहा सन्तु अनपस्फुरन्तीः।34।
4512. वैश्वानरे हविः इदम् जुहोमि,
साहस्रम् शतधारम् उत्सम्।
सः बिभर्ति पितरम् पितामहान्,
प्रपितामहान् बिभर्ति पिन्वमानः।35।
4513.सहस्रधारम् शतधारम् उत्सम् अक्षितम्,
व्यच्यमा नम् सलिलस्य पृष्ठे।
ऊर्जम् दुहानम् अनपस्फुरन्तम्,
उप आसते पितरः स्वधाभिः।36।
4514. इदम् कसाम्बु चयनेन चितम्,
तत् सजाता अव पश्यत मा इत।
मर्त्यः अयम् अमृतत्वम् एति,
तस्मै गृहान् कृणुत यावत्सबन्धु।37।
4515. इह एव एधि धनसनिः, इहचित्त इहक्रतुः।
इह एधि वीर्य वत्तरो, वयोधा अपराहतः।38।
4516.पुत्रम् पौत्रम् अभितर्पयन्तीः, आपो मधुमतीः इमाः।
स्वधाम् पितृभ्यो अमृतम् दुहाना,
आपो देवीः उभयान् तर्पयन्तु।39।
4517.आपो अग्निम् प्र हिणुत पितृन्,
उप इमम् यज्ञम् पितरो मे जुषन्ताम्।
आसीनाम् ऊर्जम् उप ये सचन्ते,
ते नो रयिम् सर्ववीरम् नि यच्छान्।40।
4518. सम् इन्धते अमर्त्यम्, हव्यवाहम् घृतप्रियम्।
स वेद निहितान् निधीन्, पितृन् परावतो गतान्।41।
4519. यम् ते मन्थम् यम् ओदनम्,
यत् मांसम् निपृणामि ते।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो, मधुमन्तो घृतश्चुतः।42।
4520. याः ते धाना अनुकिरामि, तिलमिश्राः स्वधावतीः।
ताः ते सन्तु उत्भ्वीः प्रभ्वीः,
ताः ते यमो राजा अनु मन्यताम्।43।
4521. इदम् पूर्वम् अपरम् नियानम्,
येन ते पूर्वे पितरः परेताः।
पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य,
ते त्वा वहन्ति सुकृताम् उ लोकम्।44।
4522. सरस्वतीम् देवयन्तो हवन्ते,
सरस्वतीम् अध्वरे तायमाने।
सरस्वतीम् सुकृतो हवन्ते, सरस्वती दाशुषे वार्यम् दात्।45।
4523. सरस्वतीम् पितरो हवन्त,
दक्षिणा यज्ञम् अभिनक्षमाणाः।
आसद्य अस्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्,
अनमीवा इष आ धेहि अस्मे।46।
4524. सरस्वति या सरथम् ययाथ उक्थैः,
स्वधाभिः देवि पितृभिः मदन्ती।
सहस्रार्घम् इडो अत्र भागम्,
रायः पोषम् यजमानाय धेहि।47।
4525. पृथिवीम् त्वा पृथिव्याम् वेशयामि,
देवो नो धाता प्र तिराति आयुः।
परापरैता वसुवित् वो अस्तु,
अध मृताः पितृषु सम् भवन्तु।48।
4526.आ प्र च्यवेथाम् अप तत् मृजेथाम्,
यत् वाम् अभिभा अत्र ऊचुः।
अस्मात् आ इतम् अघ्न्यौ तत् वशीयो,
दातुः पितृषु इहभोजनौ मम।49
4527. आ इयम् अगन् दक्षिणा भद्रतो,
नो अनेन दत्ता सुदुघा वयोधाः।
यौवने जीवान् उपपृञ्चती जरा,
पितृभ्य उपसंपरान यात् इमान्।50।
4528. इदम् पितृभ्यः प्र भरामि बर्हिः,
जीवम् देवेभ्य उत्तरम् स्तृणामि।
तत् आ रोह पुरुष मेध्यो भवन्,
प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम्।51।
4529.आ इदम् बर्हिः असदो मेध्यो अभूः,
प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम्।
यथापरु तन्वम् सम् भरस्व,
गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि।52।
4530. पर्णो राजा अपिधानम् चरूणाम्,
ऊर्जो बलम् सह ओजो न आगन्।
आयुः जीवेभ्यो विदधत्, दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।53।
4531. ऊर्जो भागो य इमम् जजान अश्मा,

अन्नानाम् आधिपत्यम् जगाम।
तम् अर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः,
स नो यमः प्रतरम् जीवसे धात्।54।
4532. यथा यमाय हर्म्यम्, अवपन् पञ्च मानवाः।
एवा वपामि हर्म्यम्, यथा मे भूरयो असत।55।
4533. इदम् हिरण्यम् बिभृहि, यत् ते पिता अबिभः पुरा।
स्वर्गम् यतः पितुः हस्तम्, निः मृड्ढि दक्षिणम्।56।
4534. ये च जीवा ये च मृता, ये जाता ये च यज्ञियाः।
तेभ्यो घृतस्य कुल्या एतु, मधुधारा व्युन्दती।57।
4535. वृषा मतीनाम् पवते विचक्षणः,
सूरो अह्नाम् प्रतरीता उषसाम् दिव।
प्राणः सिन्धूनाम् कलशान् अचिक्रदत्,
इन्द्रस्य हार्दिम् आविशन् मनीषया।58
4536. त्वेषः ते धूम ऊर्णोतु, दिवि सन् शुक्र आततः।
सूरो न हि द्युता त्वम्, कृपा पावक रोचसे।59।
4537. प्र वा एति इन्दुः इन्द्रस्य निष्कृतिम्,
सखा सख्युः न प्र मिनाति संगिरः।
मर्य इव योषाः सम् अर्षसे,
सोमः कलशे शतयामना पथा।60।
4538. अक्षन् अमीमदन्त, हि अव प्रियान् अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो, विप्रा यविष्ठा ईमहे।61
4539. आ यात पितरः सोम्यासो,
गम्भीरैः पथिभिः पितृयाणैः।
आयुः अस्मभ्यम् दधतः प्रजाम् च,
रायः च पौषैः अभि नः सचध्वम्।62।
4540. परा यात पितरः सोम्यासो,
गम्भीरैः पथिभिः पूर्याणैः।
अधा मासि पुनरा आ यात नो गृहान्,
हविः अक्तुम् सुप्रजसः सुवीराः63
4541. यत् वो अग्निः अजहात् एकम् अङ्गम्,
पितृलोकम् गमयन् जातवेदाः।
तत् व एतत् पुनः आ प्याययामि,
साङ्गाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम्।64
4542. अभूत् दूतः प्रहितो जातवेदाः,
सायम् न्यह्न उपवन्द्यो नृभिः।
प्र अदाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्,
अद्धि त्वम् देव प्रयता हवींषि।65।
4543. असौ हा इह ते मनः, ककुत्सलमिव जामयः।
अभि एनम् भूमे ऊर्णुहि।66।
4544. शुम्भन्ताम् लोकाः पितृषदनाः,
पितृसदने त्वा लोक सादयामि।67।
4545. ये अस्माकम् पितरः, तेषाम् बर्हिः असि।68।
4546. उत् तमम् वरुण पाशम् अस्मत्,
अव अधमम् वि मध्यमम् श्रथाय।
अधा वयम् आदित्य व्रते,
तव अनागसो अदितये स्याम।69।
4547. प्र अस्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान्,
यैः समामे बध्यते यैः व्यामे।
अधा जीवेम शरदम् शतानि,
त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणाः।70।
4548. अग्नये कव्यवाहनाय, स्वधा नमः।71।
4549. सोमाय पितृमते, स्वधा नमः।72।
4550. पितृभ्यः सोमवत्भ्यः, स्वधा नमः।73।
4551. यमाय पितृमते, स्वधा नमः।74।
4552. एतत् ते प्रततामह, स्वधा ये च त्वाम् अनु।75।
4553. एतत् ते ततामह स्वधा, ये च त्वाम् अनु।76।
4554. एतत् ते तत स्वधा।77।
4555. स्वधा पितृभ्यः, पृथिविसद्भ्यः।78।
4556. स्वधा पितृभ्यो, अन्तरिक्षसद्भ्यः।79।
4557. स्वधा पितृभ्यो, दिविसद्भ्यः।80।
4558. नमो वः पितर ऊर्जे, नमो वः पितरो रसाय।81।
4559. नमो वः पितरो भामाय,
नमो वः पितरो मन्यवे।82।
4560. नमो वः पितरो यत् घोरम् तस्मै,
नमो वः पितरो यत् क्रूरम् तस्मै।83।
4561.नमो वः पितरो यत् शिवम् तस्मै,
नमो वः पितरो यत् स्योनम् तस्मै।84।
4562. नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः।85।
4563. ये अत्र पितरः पितरो ये अत्र यूयम् स्थ,
युष्मान् ते अनु यूयम् तेषाम् श्रेष्ठा भूयास्थ।86।
4564. य इह पितरो जीवा, इह वयम् स्मः।
अस्मान् ते अनु वयम्, तेषाम् श्रेष्ठा भूयास्म।87।
4565. आ त्वा अग्ने इधीमहि, द्युमन्तम् देव अजरम्।
यत् घ सा ते पनीयसी, समित् दीदयति द्यवि।
इषम् स्तोतृभ्य आ भर।88।
4566. चन्द्रमा अप्सु अन्तः, आ सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः पदम् विन्दन्ति,
विद्युतो वित्तम् मे अस्य रोदसी।89।

इति अष्टादशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

एकोनविशम् काण्डम्

1. यज्ञ सूक्त

4567. सम् सम् स्रवन्तु नद्यः, सम् वाताः सम् पतत्रिणः।
यज्ञम् इमम् वर्धयत गिरः, सम्स्राव्येण हविषा जुहोमि।1।
4568. इमम् होमा यज्ञम् अवत, इमम् सम्स्रावणा उत।
यज्ञम् इमम् वर्धयत गिरः, सम्स्राव्येण हविषा जुहोमि।2।
4569. रूपम्रूपम् वयोवयः, सम्रभ्य एनम् परि ष्वजे।
यज्ञम् इमम् चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु,
सम्स्राव्येण हविषा जुहोमि।3।

2-आपः सूक्त

4570. शम् त आपो हैमवती, शम् उ ते सन्तु उत्स्याः।
शम् ते सनिस्यदा आपः, शम् उ ते सन्तु वर्ष्याः।1।
4571.शम् त आपो धन्वन्या, शम् ते सन्तु अनूप्याः।
शम् ते खनित्रिमा आपः, शम् याः कुम्भेभिः आ भृताः।2।
4572. अनभ्रयः खनमाना, विप्रा गम्भीरे अपसः।
भिषक्भ्यो भिषक्तरा, आपो अच्छा वदामसि।3।
4573. अपाम् अह दिव्या नाम्, अपाम् स्रोतस्यानाम्।
अपाम् अह प्रनेजने, अश्वाः भवथ वाजिनः।4।
4574. ता अपः शिवा, अपो अयक्ष्मंकरणीः अपः।
यथा एव तृप्यते मयः, ताः ते आ दत्त भेषजीः।5।

3-जातवेदा सूक्त

4575. दिवः पृथिव्याः परि अन्तरिक्षात्,
वनस्पतिभ्यो अधि ओषधीभ्यः।
यत्रयत्र विभृतो जातवेदाः,
तत स्तुतो जुषमाणो न आ इहि।1।
4576. यः ते अप्सु महिमा यो वनेषु,
य ओषधीषु पशुषु अप्सु अन्तः।
अग्ने सर्वाः तन्वः सम् रभस्व,
ताभिः न आ इह द्रविणोदा अजस्रः।2।
4577. यः ते देवेषु महिमा सवर्गो,
या ते तनूः पितषु आविवेश।
पुष्टिः या ते मनुष्येषु पप्रथे,
अग्ने तया रयिम् अस्मासु धेहि।3।
4578. श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय,
वचोभिः वाकैः उप यामि रातिम्।
यतो भयम् अभयम् तत् नो अस्तु,
अव देवानाम् यज हेडो अग्ने।4।

4- आकूति सूक्त

4579. याम् आहुतिम् प्रथमाम् अथर्वा या जाता,
या हव्यम् अकृणोत् जावेदाः।
ताम् त एताम् प्रथमो जोहवीमि ताभि स्तुप्तो,
वहतु हव्यम् अग्निः अग्नये स्वाहा।1।
4580. आकूतिम् देवीम् सुभगाम् पुरो दधे,
चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु।
याम् आशाम् एभि केवली सा मे अस्तु,
विदेयम् एनाम् मनसि प्रविष्टाम्।2।
4581. आकूत्या नो बृहस्पते, आकूत्या न उप आ गहि।
अथो भगस्य नो धेहि, अथो नः सुहवो भव।3।
4582. बृहस्पतिः म आकूतिम् आङ्गिरसः,
प्रति जानातु वाचम् एताम्।
यस्य देवा देवताः सम्बभूवुः,
स सुप्रनीताः कामो अनु एतु अस्मान्।4।

5-जगद्-राजा सूक्त

4583. इन्द्रो राजा जगतः चर्षणीनाम्,
अधि क्षमि विषुरूपम् यत् अस्ति।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदत्,
राध उपस्तुतः चित् अर्वाक्।1।

6- जगद्बीजपुरुष सूक्त

4584. सहस्रबाहुः पुरुषः, सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिम् विश्वतो वृत्वा अति, अतिष्ठत् दशाङ्गलम्।1।
4585. त्रिभिः पत्भिः द्याम् अरोहत्,
पात् अस्य इह अभवत् पुनः।
तथा वि अक्रामत्, विष्वङ् अशनानशने अनु।2।
4586. तावन्तो अस्य महिमानः, ततो ज्यायान् च पूरुषः।
पादो अस्य विश्वा भूतानि, त्रिपात् अस्य अमृतम् दिवि।3।
4587. पुरुष एव इदम् सर्वम्, यत् भूतम् यत् च भाव्यम्।
उत् अमृतत्वस्य ईश्वरो, यत् अन्येन अभवत् सह।4।
4588. यत् पुरुषम् वि अदधुः, कतिधा वि अकल्पयन्।
मुखम् किम् अस्य किम् बाहू, किम् उरू पादा उच्येते।5।
4589. ब्राह्मणो अस्य मुखम्,
आसीत् बाहू राजन्यो अभवत्।
मध्यम् तत् अस्य यत् वैश्यः, पद्भ्याम् शूद्रो अजायत।6।
4590. चन्द्रमा मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखात् इन्द्रः च अग्नि च, प्राणात् वायुः अजायत।7।
4591. नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षम्,
शीर्ष्णो द्यौः सम् अवर्तत।
पद्भ्याम् भूमिः दिशः श्रोत्रात्, तथा लोकान् अकल्पयन्।8।
4592. विराट् अग्ने सम् अभवत्, विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अति अरिच्यत, पश्चात् भूमिम् अथो पुरः।9।
4593. यत् पुरुषेण हविषास, देवा यज्ञम् अतन्वत।
वसन्तो अस्य आसीत् आज्यम्,
ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः।10।

4594. तम् यज्ञम् प्रावृषा प्र औक्षन्,
पुरुषम् जातम् अग्रशः।
तेन देवा अयजन्त, साध्या वसवः च ये।11।
4595. तस्मात् अश्वा अजायन्त, ये च के च उभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्, तस्मात् जाता अजावय।12।
4596. तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत, ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दो ह जज्ञिरे तस्मात्, यजुः तस्मात् अजायत।13।
4597. तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, सम्भृतम् पृषताज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान्, आरण्या ग्राम्याः च ये।14।
4598. सप्त अस्य आसन् परिधयः,
त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यत् यज्ञम् तन्वाना, अबध्नन् परुषम् पशुम्।15।
4599. मूर्ध्नो देवस्य बृहतो, अंशवः सप्त सप्ततीः।
राज्ञः सोमस्य अजायन्त, जातस्य पुरुषात् अधि।16।

7- नक्षत्र सूक्त

4600. चित्राणि साकम् दिवि रोचनानि,
सरीसृपाणि भुवने जवानि।
तुर्मिशम् सुमतिम् इच्छमानो,
अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम्।1।
4601. सुहवम् अग्ने कृत्तिका रोहिणी च अस्तु,
भद्रम् मृगशिरः शम् आर्द्रा।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो,
भानुः आश्लेषा अयनम् मघा मे।2।
4602. पुण्यम् पूर्वा फल्गुन्यौ च अत्र हस्तः,
चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवा अनुराधा,
ज्येष्ठा सुनक्षत्रम् अरिष्ट मूलम्।3।
4603. अन्नम् पूर्वा रासताम् मे अषाढाः,
ऊर्जम् देवी उत्तरा आ वहन्तु।
अभिजित् मे रासताम् पुण्यम् एव,
श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वताम् सुपुष्टिम्।4।
4604. आ मे महत् शतभिषक् वरीय,
आ मे द्वया प्रोष्ठ-पदा सुशर्म।
आ रेवती च अश्वयुजौ भगम्,
म आ मे रयिम् भरण्य आ वहन्तु।5।

8- नक्षत्र सूक्त

4605. यानि नक्षत्राणि दिवि अन्तरिक्षे,
अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयन् चन्द्रमा यानि एति सर्वाणि,
मम एतानि शिवानि सन्तु।1।
4606. अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि,
सह योगम् भजन्तु मे।
योगम् प्र पद्ये क्षेमम् च क्षेमम् प्र पद्ये,
योगम् च नमो अहोरात्राभ्याम् अस्तु।2।
4607. स्वस्तितम् मे सुप्रातः सुसायम्,
सुदिवम् सुमृगम् सुशकुनम् मे अस्तु।
सुहवम् अग्ने स्वति अमर्त्यम्,
गत्वा पुनः य अभिनन्दन्।3।
4608. अनुहवम् परिहवम्, परिवादम् परिक्षत्रम्।
सर्वैः मे रिक्तकुम्भान्, परा तान् सवितः सुव।4।
4609. अपपापम् परिक्षत्रम्, पुण्यम् भक्षीमहि क्षत्रम्।
शिवा ते पाप नासिकाम्, पुण्यगः च अभि मेहताम्।5।
4610. इमा या ब्रह्मणः पते, विषूचीः वात ईरते।
सध्रीचीः इन्द्र ताः कृत्वा, मह्यम् शिवतमाः कृधि।6।
4611. स्वस्ति नो अस्तु अभयम् नो अस्तु,
नमो अहोरात्राभ्याम् अस्तु।7।

9- शान्ति सूक्त

4612. शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी,
शान्तम् इदम् उरु अन्तरिक्षम्।
शान्ता उदन्वतीः आपः, शान्ता नः सन्तु ओषधीः।1।
4613. शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तम्, नो अस्तु कृताकृतम्।
शान्तम् भूतम् च भव्यम् च, सर्वम् एव शम् अस्तु नः।2।
4614. इयम् या परमेष्ठिनी, वाक् देवी ब्रह्मसंशिता।
यया एव ससृजे घोरम्, तया एव शान्तिः अस्तु नः।3।
4615. इदम् यत् परमेष्ठिनम्, मनो वाम् ब्रह्मसंशितम्।
येन एव ससृजे घोरम्, तेन एव शान्तिः अस्तु नः।4।
4616. इमानि यानि पञ्च इन्द्रियाणि मनः,
षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा सम्शितानि।
यैः एव ससृजे घोरम्, तैः एव शान्तिः अस्तु नः।5।
4617. शम् नो मित्रः शम् वरुणः,
शम् विष्णुः शम् प्रजापतिः।
शम् न इन्द्रो बृहस्पतिः, शम् नो भवतु अर्यमा।6।
4618. शम् नो मित्रः शम् वरुणः,
शम् विवस्वान् शम् अन्तकः।
उत्पाताः पार्थिवः आन्तरिक्षाः, शम् नो दिविचरा ग्रहाः।7।
4619. शम् नो भूमिः वेप्यमाना,
शम् उल्का निर्हतम् च यत्।
शम् गावो लोहितक्षीरा, शम् भूमिः अव तीर्यतीः।8।
4620. नक्षत्रम् उल्का अभिहतम् शम् अस्तु नः,
शम् नो अभिचाराः शम् उ सन्तु कृत्याः।
शम् नो निखाता वल्गाः,
शम् उल्का देशोपसर्गाः शम् उ नो भवन्तु।9।
4621. शम् नो ग्रहाः चान्द्रमसाः, शम् आदित्यः च राहुणा।
शम् नो मृत्युः धूमकेतुः, शम् रुद्राः तिग्मतेजसः।10।

4622. शम् रुद्राः शम् वसवः,
शम् आदित्याः शम् अग्नयः।
शम् नो मह-ऋषयो देवाः, शम् देवाः शम् बृहस्पतिः।11।
4623. ब्रह्म प्रजापतिः धाता लोका,
वेदाः सप्तऋपयो अग्नयः।
तैः मे कृतम् स्वस्त्ययनम् इन्द्रो,
मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु।
विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु,
सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु।12।
4624. पृथिवी शान्तिः अन्तरिक्षम् शान्तिः,
द्यौः शान्तिः आपः शान्तिः,
ओषधयो शान्तिः वनस्पतयो शान्तिः,
विश्वे मे देवाः शान्तिः,
सर्वे मे देवाः शान्तिः, शान्तिः शान्तिः-भिः।
ताभिः शान्तिभिः, सर्व शान्तिभिः,
शम् अयामः अहम् यत् इह घोरम्,
यत् इह क्रूरम् यत् इह पापम्,
तत् शान्तम् तत् शिवम्, सर्वम् एव शम् अस्तु नः।14।

10- शान्ति सूक्त

4626. शम् न इन्द्राग्नी भवताम् अवःभिः,
शम् न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शम् इन्द्रासोमा सुविताय,
शम् योः शम् न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।1।
4627. शम् नो भगः शम् नः शंसो अस्तु,
शम् न पुरम्-धिः शम् उ सन्तु रायः।
शम् नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः,
शम् नो अर्यमा पुरुजातः अस्तु।2।
4628. शम् नो धाता शम् उ धर्ता नो अस्तु,
शम् नो उरुची भवतु स्वधाभिः।
शम् रोदसी बृहती शम् नो अद्रिः,
शम् नो देवानाम् सुहवानि सन्तु।3।
4629. शम् नो अग्निः ज्योतिरनीको अस्तु,
शम् नो मित्रावरुणा अश्विना शम्।
शम् नः सुकृताम् सुकृतानि सन्तु,
शम् न इषिरो अभि वातु वातः।4।
4630. शम् नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ,
शम् अन्तरिक्षम् दृशये नो अस्तु।
शम् न ओषधीः वनिनः भवन्तु,
शम् न रजसः पतिः अस्तु जिष्णुः।5।
4631. शम् न इन्द्रो वसुभिः देवो अस्तु,
शम् आदित्येभिः वरुणः सुशंसः।
शम् नो रुद्रो रुद्रेभिः जलाषः,
शम् नः त्वष्टा ग्नाभिः इह शृणोतु।6।
4632. शम् नः सोमो भवतु ब्रह्म,
शम् नः शम् नो ग्रावाणः शम् उ सन्तु यज्ञाः।
शम् नः स्वरूणाम् मितयो भवन्तु,
शम् नः प्रस्वः शम् उ अस्तु वेदिः।7।
4633. शम् नः सूर्य उरुचक्षा उत् एतु,
शम् नो भवन्तु प्रदिशः चतस्रः।
शम् नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु,
शम् नः सिन्धवः शम् उ सन्तु आपः।8।
4634. शम् नो अदितिः भवतु व्रतेभिः,
शम् नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शम् नो विष्णु शम् उ पूषा नो अस्तु,
शम् नो भवित्रम् शम् उ अस्तु वायुः।9।
4635. शम् नो देव सविता त्रायमाणः,
शम् नो भवन्तु उषसो विभातीः।
शम् नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः,
शम् नः क्षेत्रस्य पतिः अस्तु शम्-भुः।10।

11- शान्ति सूक्त

4636.शम् नः सत्यस्य पतयो भवन्तु,
शम् नो अर्वन्तः शम् उ सन्तु गावः।
शम् न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः,
शम् नो भवन्तु पितरो हवेषु।1।
4637. शम् नो देवा विश्वदेवा भवन्तु,
शम् सरस्वती सह धीभिः अस्तु।
शम् अभिषाचः शम् उ रातिषाचः,
शम् नो दिव्याः पार्थिवाः शम् नो अप्याः।2।
4638. शम् नो अज एकपात् देवो अस्तु,
शम् अहिः बुध्नयः शम् समुद्रः।
शम् नो अपाम् नपात् पेरुः अस्तु,
शम् नः पृश्निः भवतु देवगोपा।3।
4639. आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्ताम्,
इदम् ब्रह्म क्रियमाणम् नवीयः।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो,
गोजाता उत ये यज्ञियासः।4।
4640. ये देवानाम् ऋत्विजो यज्ञियासो,
मनोः यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्ताम् उरु-गायम् अद्य,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः।5।
4641. तत् अस्तु मित्रावरुणा तत् अग्ने,
शम् योः अस्म-भ्यम् इदम् अस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधम् उत प्रतिष्ठाम्,
नमो दिवे बृहते सदनाय।6।

12- सुवीर सूक्त

4642. उषा अप स्वसुः तमः,
सम् वर्तयति वर्तनिम् सुजातता।
अया वाजम् देवहितम्, सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः।1।

13- एकवीर सूक्त

4643. इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ वृषाणौ,
चित्रा इमा वृषभौ पारयिष्णू।
तौ योक्षे प्रथमो योगे आगते,
याभ्याम् जितम् असु राणाम् स्वः यत्।1।
4644. आशुः शिशानो वृषभो न भीमो,
घनाघनः क्षोभणः चर्षणीनाम्।
सम्-क्रन्दनो अनिमिष एकवीरः,
शतम् सेना अजयत् साकम् इन्द्रः।2।
4645. संक्रन्देन अनिमिषेण जिष्णुना,
अयोध्येन दुच्यवनेन धृष्णुना।
तत् इन्द्रेण जयत तत् सहध्वम्,
युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा।3।
4646. स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिः,
वशी सम्स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित् सोपाः बाहुशर्धी,
उग्रधन्वा प्रतिहिताभिः अस्ता।4।
4647. बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः,
सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजित्,
जैत्रम् इन्द्र रथम् आ तिष्ठ गोविदन्।5।
4648. इमम् वीरम् अनु हर्षध्वम् उग्रम् इन्द्रम्,
सखायो अनु सम् रभध्वम्।
ग्रामजितम् गोजितम् वज्रबाहुम्,
जयन्तम् अज्म प्रमृणन्तम् ओजसा।6।
4649. अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो,
अदाय उग्रः शतमन्युः इन्द्रः।
दुच्यवनः पृतनाषाट् अयोध्यो,
अस्माकम् सेना अवतु प्र युत्सु।7।
4650. बृहस्पते परि दीया रथेन,
रक्षोहा अमित्रान् अपबाधमानः।
प्रभञ्जन् शत्रून् प्रमृणन् अमित्रान्,
अस्माकम् एधि अविता तनूनाम्।8।
4651. इन्द्र एषाम् नेता बृहस्पतिः,
दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानाम् अभिभञ्जतीनाम्,
जयन्तीनाम् मरुतो यन्तु मध्ये।9।
4652. इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ,
आदित्यानाम् मरुताम् शर्ध उग्रम्।
महामनसाम् भुवनच्यवानाम् घोषो,
देवानाम् जयताम् उत् अस्थात्।10।
4653. अस्माकम् इन्द्रः समृतेषु ध्वदेषु,
अस्माकम् या इषवः ता जयन्तु।
अस्माकम् वीरा उत्तरे भवन्तु,
अस्मान् देवासो अवत्त हवेषु।11।

14- अभय सूक्त

4654. इदम् उत्-श्रयो अवसानम् आ अगाम्,
शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु,
न वै त्वा द्विष्मो अभयम् नो अस्तु।1।

15- अभय सूक्त

4655. यत इन्द्र भयामहे, ततो नो अभयम् कृधि।
मघ-वन् शग्धि तव त्वम् न ऊतिभिः,
वि द्विषो वि मृधो जहि।1।
4656. इन्द्रम् वयम् अनुराधम् हवामहे,
अनु राध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा।
मा नः सेना अररुषीः उप,
गुः विषूचीः इन्द्र द्रुहो वि नाशय।2।
4657. इन्द्रः त्राता उत वृत्रहा, परस्फानो वरेण्यः।
स रक्षिता चरमतः स मध्यतः,
स पश्चात् स पुरस्तात् नो अस्तु।3।
4658. उरुम् नो लोकम् अनु नेषि विद्वान्,
स्वः यत् ज्योतिः अभयम् स्वस्ति।
उग्रा ते इन्द्र स्थविरस्य बाहू, उप क्षयेम शरणा बृहन्ता।4।
4659. अभयम् नः करति अन्तरिक्षम्,
अभयम् द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयम् पश्चात् अभयम् पुरस्तात्,
उत्तरात् अधरात् अभयम् नो अस्तु।5।
4660. अभयम् मित्रात् अभयम् अमित्रात्,
अभयम् ज्ञातात् अभयम् पुरो यः।
अभयम् नक्तम् अभयम् दिवा नः,
सर्वा आशा मम मित्रम् भवन्तु।6।

16- अभय सूक्त

4661. असपत्नम् पुरस्तात्, पश्चात् नो अभयम् कृतम्।
सविता मा दक्षिणत, उत्तरात् मा शची-पतिः।1।
4662. दिवो मा आदित्या रक्षन्तु, भूम्या रक्षन्तु अग्नयः।
इन्द्राग्नी रक्षताम् मा पुरस्तात्,
अश्विनौ अभितः शर्म यच्छताम्।
तिरश्चीन् अघ्न्या रक्षतु जातवेदा,
भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म।2।

17- सुरक्षा सूक्त

4663. अग्निः मा पातु वसुभिः पुरस्तात्,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।1।
4664. वायुः मा अन्तरिक्षेण एतस्या दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।2।
4665. सोमो मा रुद्रैः दक्षिणाया दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।3।
4666. वरुणो मा आदित्यैः एतस्या दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।4।
4667. सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्याम् प्रतीच्या दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।5।
4668. आपो मा ओषधीमतीः एतस्या दिशः पान्तु,
तासु क्रमे तासु श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
ता मा रक्षन्तु ता मा गोपायन्तु,
ताभ्य आत्मानम् परि ददे स्वाहा।6।
4669. विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिः उदीच्या दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।7।
4670. इन्द्रो मा मरुत्वान् एतस्या दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।8।
4671. प्रजापतिः मा प्रजननवान् सह,
प्रतिष्ठाया ध्रुवाया दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।9।
4672. बृहस्पतिः मा विश्वैः देवैः ऊर्ध्वाया दिशः पातु,
तस्मिन् क्रमे तस्मिन् श्रये ताम् पुरम् प्र एमि।
स मा रक्षति स मा गोपायतु,
तस्मा आत्मानम् परि ददे स्वाहा।10।

18- सुरक्षा सूक्त

4673. अग्निम् ते वसुवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयवः प्राच्या दिशो अभिदासात्।1।
4674. वायुम् ते अन्तरिक्षवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव एतस्या दिशो अभिदासात्।2।
4675. सोमम् ते रुद्रवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयवो दक्षिणाया दिशो अभिदासात्।3।
4676. वरुणम् ते आदित्यवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव एतस्या दिशो अभिदासात्।4।
4677. सूर्यम् ते द्यावापृथिवीवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयवः प्रतीच्या दिशो अभिदासात्।5।
4678. अपः ते ओषधीमतीः ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव एतस्या दिशो अभिदासात्।6।
4679. विश्वकर्माणम् ते सप्तऋषिवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव उदीच्या दिशो अभिदासात्।7।
4680. इन्द्रम् ते मरुत्वन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव उदीच्या दिशो अभिदासात्।8।
4681. प्रजापतिम् ते प्रजननवन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव उदीच्या दिशो अभिदासात्।9।
4682. बृहस्पतिम् ते विश्वदेववन्तम् ऋच्छन्तु।
ये मा अघयव ऊर्ध्वायाः दिश अभिदासात्।10।

19- शर्म सूक्त

4683. मित्रः पृथिव्या उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशतसा,
वः शर्म च वर्म च यच्छतु।1।
4684. वायुः अन्तरिक्षेण उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।2।
4685. सूर्यो दिवा उत् अक्रामत्, ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।3।
4686. चन्द्रमा नक्षत्रैः उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।4।
4687. सोम ओषधीभिः उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।5।
4688. यज्ञो दक्षिणाभिः उत् अक्रामत्,

ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।6।
4689. समुद्रो नदीभिः उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।7।
4690. ब्रह्म ब्रह्मचारि-भिः उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।8।
4691. इन्द्रो वीर्येण उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।9।
4692. देवा अमृतेन उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।10।
4693. प्रजापतिः प्रजाभिः उत् अक्रामत्,
ताम् पुरम् प्र णयामि वः।
ताम् आ विशत ताम् प्र विशत,
सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु।11।

20- सुरक्षा सूक्त

4694. अप न्यधुः पौरुषेयम् वधम् यम्,
इन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः।
सोमो राजा वरुणो अश्विना,
यमः पूषा अस्मान् परि पातु मृत्योः।1।
4695. यानि चकार भुवनस्य यः पतिः,
प्रजापतिः मातरिश्वा प्रजाभ्यः।
प्रदिशो यानि वसते दिशः च,
तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु।2।
4696. यत् ते तनूपु अनह्यन्त, देवा द्युराजयो देहिनः।
इन्द्रो यत् चक्रे वर्म तत्, अस्मान् पातु विश्वतः।3।
4697. वर्म मे द्यावापृथिवी, वर्म अहः वर्म सूर्य।
वर्म मे विश्वे देवाः क्रन्, मा मा प्र आपत् प्रतीचिका।4।

21- छन्दांसि सूक्त

4698. गायत्री उष्णिक् अनुष्टुब्,
बृहती पङ्क्तिः त्रिःष्टुब् जगत्यै।1।

22- ब्रह्मा सूक्त

4699. आङ्गिरसानाम् आद्यैः, पञ्च अनुवाकैः स्वाहा।1।
4700. षष्ठाय स्वाहा।2।
4701. सप्तमाष्टमाभ्याम् स्वाहा।3।
4702. नीलनखेभ्यः स्वाहा।
4703. हरितेभ्यः स्वाहा।5।
4704. क्षुद्रेभ्यः स्वाहा।6।
4705. पर्यायिकेभ्यः स्वाहा।7।
4706. प्रथमेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा।8।
4707. द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा।9।
4708. तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा।10।
4709. उपोत्तमेभ्यः स्वाहा।11।
4710. उत्तमेभ्यः स्वाहा।12।
4711. उत्तरेभ्यः स्वाहा।13।
4712. ऋषिभ्यः स्वाहा।14।
4713. शिखिभ्यः स्वाहा।15।
4714. गणेभ्यः स्वाहा।16।
4715.महागणेभ्यः ।17।
4716. सर्वेभ्यो अङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा।18।
4717. पृथक्सहस्राभ्याम् स्वाहा।19।
4718. ब्रह्मणे स्वाहा।20।
4719. ब्रह्मज्येष्ठा सम्भृता वीर्याणि,
ब्रह्म अग्ने ज्येष्ठम् दिवम् आ ततान।
भूतानाम् ब्रह्मा प्रथम उत जज्ञे,
तेन अर्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुम् कः।21।

23- अथर्वाण सूक्त

4720. आथर्वणानाम् चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा।1।
4721. पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा।2।
4722. षट्-ऋचेभ्यः स्वाहा।3।
4723. सप्त-ऋचेभ्यः स्वाहा।4।
4724. अष्ट-ऋचेभ्यः स्वाहा।5।
4725. नव-ऋचेभ्यः स्वाहा।6।
4726. दश-ऋचेभ्यः स्वाहा।7।
4727. एकादश-ऋचेभ्यः स्वाहा।8।
4728. द्वादश-ऋचेभ्यः स्वाहा।9।
4729. त्रयोदश-ऋचेभ्यः स्वाहा।10।
4730. चतुर्दश-ऋचेभ्यः स्वाहा।11।
4731. पञ्चदश-ऋचेभ्यः स्वाहा।12।
4732. षोडश-ऋचेभ्यः स्वाहा।13।
4733. सप्तदश-ऋचेभ्यः स्वाहा।14।
4734. अष्टादश-ऋचेभ्यः स्वाहा।15।
4735. एकोनविंशतिः स्वाहा।16।
4736. विंशतिः स्वाहा।17।
4737. महत्काण्डाय स्वाहा।18।
4738. तृचेभ्यः स्वाहा।19।

4739. एकर्चेभ्यः स्वाहा।20।
4740. क्षुद्रेभ्यः स्वाहा।21।
4741. एकानृचेभ्यः स्वाहा।22।
4742. रोहितेभ्यः स्वाहा।23।
4743. सूर्याभ्याम् स्वाहा।24।
4744. व्रात्याभ्याम् स्वाहा।25।
4745. प्राजापत्याभ्याम् स्वाहा।26।
4746. विससहयै स्वाहा।27।
4747. मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा।28।
4748. ब्रह्मणे स्वाहा।29।
4749. ब्रह्मज्येष्ठा सम्भृता वीर्याणि,
ब्रह्म अग्रे ज्येष्ठम् दिवम् आ ततान।
भूतानाम् ब्रह्मा प्रथम उत जज्ञे,
तेन अर्हति ब्रह्मणा सपर्धितुम् कः।30।

24- राष्ट्रसूक्त

4750. येन देवम् सवितारम्, परि देवा अधारयन्।
तेन इमम् ब्रह्मणः पते, परि राष्ट्राय धत्तन।1।
4751. परि इमम् इन्द्रम्, आयुषे महे क्षत्राय धत्तन।
यथा एनम् जरसे नयाम्, ज्योक् क्षत्रे अधि जागरत्।2।
4752. परि इमम् सोमम्, आयुषे महे श्रोत्राय धत्तन।
यथा एनम् जरसे नयाम्, ज्योक् श्रोत्रे अधि जागरत्।3।
4753. परि धत्त धत्त नो वर्चसा इमम्,
जरामृत्युम् कृणुत दीर्घम् आयु।
बृहस्पतिः प्र अयच्छत् वास एतत्,
सोमाय राज्ञे परिधातवा उ।4।
4754. जराम् सु गच्छ परि धत्स्व वासो,
भवा गृष्टीनाम् अभिशस्तिपा उ।
शतम् च जीव शरदः पुरूचीः,
रायः च पोषम् उपसंव्ययस्व।5।
4755. परि इदम् वासो अधिथाः स्वस्तये,
अभूः वापीनाम् अभिशस्तिपा उ।
शतम् च जीव शरदः पुरूचीः,
वसूनि चारुः वि भजासि जीवन्।6।
4756. योगेयोगे तवस्तरम्, वाजेवाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये।7।
4757. हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो,
जरामृत्युः प्रजया सम् विशस्व।
तत् अग्निः आह तत् उ सोम आह,
बृहस्पतिः सविता तत् इन्द्र।8।

25-अश्व सूक्त

4758.अश्रान्तस्य त्वा मनसा, युनज्मि प्रथमस्य च।
उत्कूलम् उद्वहो भव, उदुह्य प्रति धावतात्।1।

26- हिरण्यधारण सूक्त

4759. अग्नेः प्रजातम् परि यत् हिरण्यम्,
अमृतम् दध्रे अधि मर्त्येषु।
य एनत् वेद स इत् एनम् अर्हति,
जरामृत्युः भवति यो बिभर्ति।1।
4760. यत् हिरण्यम् सूर्येण सुवर्णम्,
प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वा चन्द्रम् वर्चसा सम् सृजति,
आयुष्मान् भवति यो बिभर्ति।2।
4761. आयुषे त्वा वर्चसे त्वा, ओजसे च बलाय च।
यथा हिरण्यतेजसा, विभासासि जनान् अनु।3।
4762. यत् वेद राजा वरुणो, वेद देवो बृहस्पतिः।
इन्द्रो यत् वृत्रहा वेद, तत् ते आयुष्यम् भुवत्,
तत् ते वर्चस्यम् भुवत्।4।

27- सुरक्षा सूक्त

4763. गोभिः त्वा पातु ऋषभो, वृषा त्वा पातु वाजिभिः।
वायुः त्वा ब्रह्मणा पातु, इन्द्रः त्वा पातु इन्द्रियैः।1।
4764. सोमः त्वा पातु ओषधीभिः, नक्षत्रैः पातु सूर्यः।
माद्भ्यः त्वा चन्द्रो वृत्रहा, वातः प्राणेन रक्षतु।2।
4765. तिस्रो दिवः त्रिसः पृथिवीः त्रीणि,
अन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान्।
त्रिवृतम् स्तोम् त्रिवृत आप आहुः,
ता त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्-भिः।3।
4766. त्रीन् नाकान् त्रीन् समुद्रान्,
त्रीन् ब्रध्नान् त्रीन् वैष्ठपान्।
त्रीन् मातरिश्वनः त्रीन् सूर्यान्, गोप्तन् कल्पयामि ते।4।
4767.घृतेन त्वा सम् उक्षामि, अग्ने आज्येन वर्धयन्।
अग्नेः चन्द्रस्य सूर्यस्य, मा प्राणम् मायिनो दभन्।5।
4768. मा वः प्राणम् मा वो अपानम्,
मा हरो मायिनो दभन्।
भ्राजन्तो विश्ववेदसो, देवा दैव्येन धावत।6।
4769. प्राणेन अग्निम् सम् सृजति,
वातः प्राणेन समहितः।
प्राणेन विश्वतोमुखम्, सूर्य देवा अजनयन्।7।
4770. आयुषा आयुः कृताम् जीव,
आयुष्मान् जीव मा मृथाः।
प्राणेन आत्मन्वताम् जीव, मा मृत्योः उत् अगा वशम्।8।
4771. देवानाम् निहितम् निधिम् यम् इन्द्रो,
अन्वाविन्दत् पथिभिः देवयानैः।
आपो हिरण्यम् जुगुपुः त्रिवृद्-भिः,
ताः त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्-भिः।9।
4772. त्रयस्त्रिंशत् देवताः त्रीणि च वीर्याणि,

प्रियममाणा जुगुपुः अप्सु अन्तः।
अस्मिन् चन्द्रे अधि यत् हिरण्यम्,
तेन अयम् कृणवत् वीर्याणि।10।
4773. ये देवा दिवि एकादश स्थ,
ते देवासो हविः इदम् जुषध्वम्।11।
4774. ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ,
ते देवासो हविः इदम् जुषध्वम्।12।
4775. ये देवा पृथिव्याम् एकादश स्थ,
ते देवासो हविः इदम् जुषध्वम्।13।
4776. असपत्नम् पुरस्तात् पश्चात्, नो अभयम् कृतम्।
सविता मा दक्षिणत, उत्तरात् मा शचीपतिः।14।
4777. दिव मा आदित्या रक्षन्तु, भूम्या रक्षन्तु अग्नयः।
इन्द्रा अग्नी रक्षताम् मा पुरस्तात्,
अश्विनौ अभितः शर्म यच्छताम्।
तिरश्चीन् अघ्न्या रक्षतु जातवेदा,
भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म।15।

28-दर्भमणि सूक्त

4778. इमम् बध्नामि ते मणिम्, दीर्घायुत्वाय तेजसे।
दर्भम् सपत्नदम्भनम्, द्विपतः तपनम् हृदः।1।
4779. द्विषतः तापयन् हृदः, शत्रूणाम् तापयन् मनः।
दुर्हार्दः सर्वान् त्वम् दर्भ, घर्म इव अभीन् संतापयन्।2।
4780. घर्म इव अभितपन् दर्भ, द्विषतो नितपन् मणे।
हृदः सपत्नानाम् भिन्द्धि, इन्द्र इव विरुजन् बलम्।3।
4781. भिन्द्धि दर्भ सपत्नानाम्, हृदवम् द्विषताम् मणे।
उद्यन् त्वचमिव भूम्याः, शिर एषाम् वि पातय।4।
4782. भिन्द्धि दर्भ सपत्नान्, मे भिन्द्धि मे पृतनायतः।
भिन्द्धि मे सर्वान् दुहार्दो, भिन्द्धि मे द्विषतो मणे।5।
4783. छिन्दि दर्भ सपत्नान्, मे छिन्द्धि मे पृतनायतः।
छिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दान्, छिन्द्धि मे द्विषतो मणे।6।
4784. वृश्च दर्भ सपत्नान्, मे वश्च मे पृतनायतः।
वृश्च मे सर्वान् दुर्हार्दो, वृश्च मे द्विषतो मणे।7।
4785. कृन्त दर्भ सपत्नान्, मे कृन्त मे पृतनायतः।
कृन्त मे सर्वान् दुर्हार्दान्, कृन्त मे द्विषतो मणे।8।
4786. पिंश दर्भ सपत्नान्, मे पिंश मे पृतनायतः।
पिंश मे सर्वान् दुर्हार्दः, पिंश मे द्विषतो मणे।9।
4787. विध्य दर्भ सपत्नान्, मे विध्य मे पृतनायतः।
विध्य मे सर्वान् दुर्हार्दो, विध्य मे द्विषतो मणे।10।

29-दर्भमणि सूक्त

4788. निक्ष दर्भ सपत्नान्, मे निक्ष मे पृतनायतः।
निक्ष मे सर्वान् दुर्हार्दो, निक्ष मे द्विषतो मणे।1।
4789. तृन्द्धि दर्भ सपत्नान्, मे तृन्द्धि मे पृतनायतः।
तृन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दः, तृन्द्धि मे द्विषतो मणे।2।
4790. रुन्द्धि दर्भ सपत्नान्, मे रुन्द्धि मे पृतनायतः।
रुन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो, रुन्द्धि मे द्विषतो मणे।3।
4791. मृण दर्भ सपत्नान्, मे मृण मे पृतनायतः।
मृण मे सर्वान् दुर्हार्दो, मृण मे द्विषतो मणे।
4792. मन्थ दर्भ सपत्नान्, मे मन्थ मे पृतनायतः।
मन्थ मे सर्वान् दुर्हार्दो, मन्थ मे द्विषतो मणे।5।
4793. पिण्ड्ढि दर्भ सपत्नान्, मे पिण्ड्ढि मे पृतनायतः।
पिण्ड्ढि मे सर्वान् दुर्हार्दान्, पिण्ड्ढि मे द्विषतो मणे।6।
4794. ओष दर्भ सपत्नान्, मे ओष मे पृतनायतः।
ओष मे सर्वान् दुर्हार्द, ओष मे द्विषतो मणे।7।
4795. दह दर्भ सपत्नान्, मे दह मे पृतनायतः।
दह मे सर्वान् दुर्हार्दो, दह मे द्विषतो मणे।8।
4796. जहि दर्भ सपत्नान्, मे जहि मे पृतनायतः।
जहि मे सर्वान् दुर्हार्दो, जहि मे द्विषतो मणे।9।

30- दर्भमणि सूक्त

4797. यत् ते दर्भ जरामृत्युः, शतम् वर्मसु वर्म ते।
तेन इमम् वर्मिणम् कृत्वा, सपत्नान् जहि वीर्यैः।1।
4798. शतम् ते दर्भ वर्माणि, सहस्रम् वीर्याणि ते।
तम् अस्मै विश्वे त्वाम् देवा, जरसे भर्तवा अदुः।2।
4799. त्वाम् आहुः देववर्म, त्वाम् दर्भ ब्रह्मणः पतिम्।
त्वाम् इन्द्रस्य आहुः वर्म, त्वम् राष्ट्राणि रक्षसि।3।
4800. सपत्नक्षयणम् दर्भ, द्विषतः तपनम् हृदः।
मणिम् क्षत्रस्य वर्धनम्, तनूपानम् कृणोमि ते।4।
4801. यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत्, पर्जन्यो विद्युता सह।
ततो हिरण्ययो बिन्दुः, ततो दर्भो अजायत।5।

31- औदुम्बरमणि सूक्त

4802. औदुम्बरेण मणिना, पुष्टिकामाय वेधसा।
पशूनाम् सर्वेषाम् स्फातिम्, गोष्ठे मे सविता करत्।1।
4803. यो नो अग्निः गार्हपत्यः, पशूनाम् अधिपा असत्।
औदुम्बरो वृषा मणिः, स मा सृजतु पुष्ट्या।2।
4804. करीषिणीम् फलवतीम्, स्वधाम् इराम् च नो गृहे।
औदुम्बरस्य तेजसा, धाता पुष्टिम् दधातु मे।3।
4805. यत् द्विपात् च चतुः पात् च,
यानि अन्नानि ये रसाः।
गृह्णे अहम् तु एषाम् भूमानम्,
बिभ्रत् औदुम्बरम् मणिम्।4।
4806. पुष्टिम् पशूनाम् परि जग्रभ अहम्,
चतुष्पदाम् द्विपदाम् यत् च धान्यम्।
पयः पशूनान् रसम् ओषधीनाम्,
बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात्।5।
4807. अहम् पशूनाम् अधिपाः असानि,
मयि पुष्टम् पुष्टपतिः दधातु।

मह्यम् औदुम्बरः मणि, द्रविणानि नि यच्छतु।6।
4808. उप मा औदुम्बरो मणिः, प्रजया च धनेन च।
इन्द्रेण जिन्वतो मणिः, आ मा अगन् सह वर्चसा।7।
4809. देवो मणिः सपत्नहा, धनसा धनसातये।
पशोः अन्नस्य भूमानम्, गवाम् स्फातिम् नि यच्छतु।8।
4810. यथा अग्रे त्वम् वनस्पते, पुष्ट्या सह जज्ञिषे।
एवा धनस्य मे स्फातिम्, आ दधातु सरस्वती।9।
4811. आ मे धनम् सरस्वती, पयः-सफातिम् च धान्यम्।
सिनीवाली उप वहात्, अयम् च औदुम्बरो मणिः।10।
4812. त्वम् मणीनाम् अधिपा वृषा असि,
त्वयि पुष्टम् पुष्टपतिः जजान।
त्वयि इमे वाजा द्रविणानि सर्वा औदुम्बरः,
स त्वम् अस्मत् सहस्व आरात्,
अरातिम् अमतिम् क्षुधम् च।11।
4813. ग्रामणीः असि ग्रामणीः उत्थाय,
अभिसिक्तो अभि मा सिञ्च वर्चसा।
तेजो असि तेजो मयि धारय अधि,
रयिः असि रयिम् मे धेहि।12।
4814. पुष्टिः असि पुष्ट्या मा सम् अङ्ग्धि,
गृहमेधी गृहपतिम् मा कृणु।
औदुम्बरः स त्वम् अस्मासु धेहि,
रयिम् च नः सर्ववीरम् नि यच्छ,
रायः पोषाय प्रति मुञ्चे अहम् त्वाम्।13।
4815. अयम् औदुम्बरो मणिः, वीरो वीराय बध्यते।
स नः सनिम् मधुमतीम् कृणोतु,
रयिम् च नः सर्ववीरम् नि यच्छात्।14।

32- दर्भ सूक्त

4816. शतकाण्डो दुश्चयवनः, सहस्र-पर्ण उत्तिरः।
दर्भो य उग्र ओषधिः तम्, ते बध्नामि आयुषे।1।
4817. न अस्य केशान् प्र वपन्ति,
न उरसि ताडम् आ घ्नते।
यस्मा अच्छिन्नपर्णेन, दर्भेण शर्म यच्छति।2।
4818. दिवि ते तूलम् ओषधे, पृथिव्याम् असि निष्ठितः।
त्वया सहस्रकाण्डेन, आयुः प्र वर्धयामहे।3।
4819. तिस्रो दिवो अति अतृणन्, तिस्र इमाः पृथिवी उत।
त्वया अहम् दुर्हार्दो जिह्वाम्, नि तृणाद्मि वचांसि।4।
4820. त्वम् असि सहमानो, अहम् अस्मि सहस्वान्।
उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा, सपत्नान् सहिषीमहि।5।
4821. सहस्व नो अभिमातिम्, सहस्व पृतनायतः।
सहस्व सर्वान् दुर्हार्दः, सुहार्दो मे वहून् कृधि।6।
4822. दर्भेण देवजातेन, दिवि ष्टम्भेन शश्वत् इत्।
तेन अहम् शश्वतः जनान्, असनम् सनवानि।7।
4823. प्रियम् मा दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्याम्,
शूद्राय च आर्याय च।
यस्मै च कामयामहे, सर्वस्मै च विपश्यते।8।
4824. यो जायमानः पृथिवीम् अदृंहत्,
यो अस्तभ्नात् अन्तरिक्षम् दिवम् च।
यम् बिभ्रतम् ननु पाप्मा विवेद,
स नो अयम् दर्भो वरुणो दिवा कः।9।
4825. सपत्नहा शतकाण्ड सहस्वान्,
ओषधीनाम् प्रथमः सम् बभूव।
स नो अयम् दर्भः परि पातु विश्वतः,
तेन साक्षीय पृतना पृतन्यतः।10।

33- दर्भ सूक्त

4826. सहस्रार्घः शतकाण्डः पयस्वान्,
अपाम् अग्निः वीरुधाम् राजसूयम्।
स नो अयम् दर्भः परि पातु विश्वतो,
देवो मणिः आयुषा सम् सृजाति नः।1।
4827. घृतात् उत्-लुप्तो मधुमान् पयस्वान्,
भूमिदृंहो अच्युतः च्यायिष्णुः।
नुदन् सपत्नान् अधरान् च कृण्वन्,
दर्भ आ रोह महताम् इन्द्रियेण।2।
4828. त्वम् भूमिम् अति एषि ओजसा,
त्वम् वेद्याम् सीदसि चारुः अध्वरे।
त्वाम् पवित्रम् ऋषयो अभरन्त,
त्वम् पुनीहि दुरितानि अस्मत्।3।
4829. तीक्ष्णो राजा विससही, रक्षोहा विश्वचर्षणिः।
ओजो देवानाम् बलम् उग्रम् एतत्,
तम् ते बध्नामि जरसे स्वस्तये।4।
4830. दर्भेण त्वम् कृणवत् वीर्याणि,
दर्भम् बिभ्रत् आत्मना मा व्यथिष्ठाः।
अतिष्ठाय वर्चसा अध अन्यान् सूर्य,
इव आ भाहि प्रदिशः चतस्र मा व्यथिष्ठाः।5।

34- जङ्गिड़मणि सूक्त

4831. जङ्गिडो असि जङ्गिडो, रक्षिता असि जङ्गिडः।
द्विपात् चतुष्पात् अस्माकम्, सर्वम् रक्षतु जङ्गिडः।1।
4832. या गृत्स्यः त्रिपञ्चाशीः शतम् कृत्याकृतः च ये।
सर्वान् विनक्तु तेजसो, अरसान् जङ्गिडः करत्।2।
4833. अरसन् कृत्रिमम् नादम्, अरसाः सप्त विस्रसः।
अप इतो जङ्गिड अमतिम्, इषुम् अस्तेव शातय।3।
4834. कृत्यादूषण एव अयम्, अथो अरातिदूषणः।
अथो सहस्वान् जङ्गिडः, प्र ण आयूंषि तारिषत्।4।
4835. स जङ्गिडस्य महिमा, परि णः पातु विश्वतः।
विष्कन्धम् येन सासह, सम्स्कन्धम् ओज ओजसा।5।

4836. त्रिः त्वा देवा अजनयम्, निष्ठितम् भूम्याम् अधि।
तम् उ त्वा अङ्गिरा इति, ब्राह्मणाः पूर्व्या विदुः।6।
4837. न त्वा पूर्वा ओषधयो, न त्वा तरन्ति या नवाः।
विबाध उग्रो जङ्गिडः, परिपाणः सुमङ्गलः।7।
4838. अथ उपदान भगवो, जङ्गिड अमितवीर्य।
पुरा त उग्रा ग्रसत, उप इन्द्रो वीर्यम् ददौ।8।
4839. उग्र इत् ते वनस्पते, इन्द्र ओज्मानम् आ दधौ।
अमीवाः सर्वाः चातयन्, जहि रक्षासि ओषधे।9।
4840. आशरीकम् विशरीकम्, बलासम् पृष्ट्यामयम्।
तक्मानम् विश्वशारदम्, अरसान् जङ्गिडः करत्।10।

35- जङ्गिड़ सूक्त

4841. इन्दस्य नाम गृह्णन्त, ऋषयो जङ्गिडम् ददुः।
देवा यम् चक्रुः भेषजम्, अग्रे विष्कन्धदूषणम्।1।
4842. स नो रक्षतु जङ्गिडो, धनपालो धनेव।
देवा यम् चक्रुः ब्राह्मणाः, परिपानम् अरातिहम्।2।
4843. दुर्हार्दः समघोरम् चक्षुः, पापकृत्वानम् आ अगमम्।
तान् त्वम् सहस्रचक्षो प्रतिबोधेन,
नाशय परिपाणो असि जङिगडः।3।
4844. परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः,
परि अन्तरिक्षात् परि मा वीरुद्भ्यः।
भूतात् परि मा उत भव्यात्,
दिशोदिशो जङ्गिडः पातु अस्मान्।4।
4845. ये ऋष्णवो देवकृता, य उतो ववृतेन्यः।
सर्वान् तान् विश्वभेषजो, अरसान् जङ्गिडः करत्।5।

36- शतवारमणि सूक्त

4846. शत-वारो अनीनशत्, यक्ष्मान् रक्षांसि तेजसा।
आ-रोहन् वर्चसा सह, मणिः दुर्णामचातनः।1।
4847. शृङ्गाभ्याम् रक्षो नुदते, मूलेन यातुधान्यः।
मध्येन यक्ष्मम् बाधते न, एनम् पाप्मा अति तत्रति।2।
4848. ये यक्ष्मासो अर्भका, महान्तो ये च शब्दिनः।
सर्वान् दुर्णामहा मणिः, शतवारो अनीनशत्।3।
4849. शतम् वीरान् अजनयत्,
शतम् यक्ष्मान् अप अवपत्।
दुर्णाम्नः सर्वान् हत्वा, अव रक्षांसि धूनुते।4।
4850. हिरण्यशृङ्ग ऋषभः, शातवारो अयम् मणिः।
दुःणाम्नः सर्वान् तृड्ढवा, अव रक्षांसि अक्रमीत्।5।
4851. शतम् अहम् दुर्णाम्नीनाम्, गन्धर्वाप्सरसाम् शतम्।
शतम् शश्वन्वतीनाम्, शतवारेण वारये।6।

37- बलप्राप्ति सूक्त

4852. इदम् वर्चो अग्निना दत्तम् आ अगन्,
भर्ग यशः सह ओजो वयो बलम्।
त्रयस्त्रिंशत् यानि च वीर्याणि, तानि अग्निः प्र ददातु मे।1।
4853. वर्च आ धेहि मे तन्वाम्, सह ओजो वयो बलम्।
इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय,
प्रति गृह्णामि शतशारदाय।2।

4854. उर्जे त्वा बलाय त्वा, ओजसे सहसे त्वा।
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय, परि ऊहामि शतशारदाय।3।
4855. ऋतुभ्यः त्वा आर्तवेभ्यो, माद्भ्यः सम्वत्सरेभ्यः।
धात्रे विधात्रे समृधे, भूतस्य पतये यजे।4।

38- यक्ष्मनाशन सूक्त

4856. न तम् यक्ष्मा अरुन्धते, न एनम् शपथो अश्नुते।
यम् भेषजस्य गुल्गुलोः, सुरभिः गन्धो अश्नुते।1।
4857. विष्वञ्चः तस्मात् यक्ष्मा, मृगा अश्वा ईरते।
यत् गुल्गुलु सैन्धवम्, यत् वा अपि असि समुद्रियम्।2।
4858. उभयोः अग्रभम् नाम्, अस्मै अरिष्चतातये।3।

39- कुष्ठनाशन सूक्त

4859. आ एतु देवः त्रायमाणः, कुष्ठो हिमवतः परि।
तक्मानम् सर्वम् नाशय, सर्वाः च यातुधान्यः।1।
4860. त्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो,
नद्यरिषः नद्य अयम् पुरषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा, सायम्प्रातः अथो दिवा।2।
4861. जीवला नाम ते माता, जीवन्तो नाम ते पिता।
नद्य अयम् पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा, सायम्प्रातः अथो दिवा।3।
4862. उत्तमो असि ओषधीनाम्,
अनड्वान् जगतामेव् व्याघ्र श्वपदामेव।
नद्य अयम् पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा, सायम्प्रातः अथो दिवा।4।
4863. त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यः, त्रिः आदित्येभ्यः परि।
त्रिः जातो विश्वदेवेभ्यः।
स कुष्ठो विश्वभेषजः।
साकम् सोमेन तिष्ठति।
तक्मानम् सर्वम् नाशय, सर्वा च यातुधान्यः।5।
4864. अश्वत्थो देवसदनः, तृतीयस्याम् इतो दिवि।
तत्र अमृतस्य चक्षणम्, ततः कुष्ठो अजायत।
स कुष्ठो विश्वभेषजः, साकम् सोमेन तिष्ठति।
तक्मानम् सर्वम् नाशय, सर्वाः च यातुधान्यः।6।
4865. हिरण्ययी नौः अचरत्, हिरण्यबन्धना दिवि।
तत्र अमृतस्य चक्षणम्, ततः कुष्ठो अजायत।
स कुष्ठो विश्वभेषजः, साकम् सोमेन तिष्ठति।
तक्मानम् सर्वम् नाशय, सर्वाः च यातुधान्यः।7।
4866. यत्र न अवप्रभ्रंशनम्, यत्र हिमवतः शिरः।
तत्र अमृतस्य चक्षणम्, ततः कुष्ठो अजायत।

स कुष्ठो विश्वभेषजः, साकम् सोमेन तिष्ठति।
तक्मानम् सर्वम् नाशय, सर्वाः च यातुधान्यः।8।
4867. यम् त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको,
यम् वा त्वा कुष्ठ काम्यः।
यम् वा वसो यम् आत्स्यः, तेन असि विश्वभेषजः।9।
4868. शीर्षलोकम् तृतीयकम्, सदम्दिः यः च हायनः।
तक्मानम् विश्वधावीर्य, अधराञ्चम् परा सुव।10।

40- मेधा सूक्त

4869. यत् मे छिद्रम्र मनसो यत् च वाचः,
सरस्वती मन्युमन्तम् जगाम।
विश्वः तत् देवैः सह सम्विदानः, सम् दधातु बृहस्पतिः।1।
4870. मा न आपो मेधाम्, मा ब्रह्म प्र मथिष्टन।
सुष्यदा यूयम् स्यन्दध्वम्,
उपहूतो अहम् सुमेधा वर्चस्वी।2।
4871. मा नो मेधाम् मा नो दीक्षाम्,
मा नो हिंसिष्टम् यत् तपः।
शिवा नः शम् सन्तु आयुषे, शिवा भवन्तु मातरः।3।
4872. या नः पीपरत् अश्विना, ज्योतिष्मती तमः तिरः।
ताम् अस्मे रासताम् इषम्।4।

41- राष्ट्रबल सूक्त

4873. भद्रम् इच्छन्त ऋषयः स्वविदः,
तपो दीक्षाम् उपनिसेदुः अग्रे।
ततो राष्ट्रम् बलम् ओजः च जातम्,
तत् अस्मै देवा उपसंनमन्तु।1।

42- ब्रह्मयज्ञ सूक्त

4874. ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा, ब्रह्मणा स्वरवो मिताः।
अध्वर्युः ब्रह्मणो जातो, ब्रह्मणो अन्तर्हितम् हविः।1।
4875. ब्रह्म स्रुचो घृतवतीः, ब्रह्मणा वेदि उद्धिता।
ब्रह्म यज्ञस्य तत्त्वम् च ऋत्विजो,
ये हविष्कृतः शमिताय स्वाहा।2।
4876. अंहमुचे प्र भरे मनीषाम्,
आ सुत्राव्ने सुमतिम् आवृणानः।
इमम् इन्द्र प्रति हव्यम् गृभाय,
सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।3।
4877.अंहोमुचम् वृषभम् यज्ञियानाम्,
विराजन्तम् प्रथमम् अध्वराणाम्।
अपाम् नपातम् अश्विना हुवे धिय,
इन्द्रियेण त इन्द्रियम् दत्तम् ओजः4

43- ब्रह्मा सूक्त

4878. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
अग्निः मा तत्र नयतु, अग्निः
मेधा दधातु मे अग्नये स्वाहा।1।
4879. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
वायुः मा तत्र नयतु, वायुः
प्राणान् दधातु मे वायवे स्वाहा।2।
4880. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
सूर्यो मा तत्र नयतु, चक्षुः
सूर्यो दधातु मे सूर्याय स्वाहा।3।
4881. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
चन्द्रो मा तत्र नयतु, मनः
चन्द्रो दधातु मे चन्द्राय स्वाहा।4।
4882. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
सोमो मा तत्र नयतु, पयः
सोमो दधातु मे सोमाय स्वाहा।5।
4883. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
इन्द्रो मा तत्र नयतु, बलम् इन्द्रो
दधातु मे इन्द्राय स्वाहा।6।
4884. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
आपो मा तत्र नयतु, अमृतम् मा
उप तिष्टतु अद्भ्यः स्वाहा।7।
4885. यत्र ब्रह्मविदो यान्ति, दीक्षया तपसा सह।
ब्रह्मा मा तत्र नयतु, ब्रह्मा
ब्रह्म दधातु मे ब्रह्मणे स्वाहा।8।

44- भैषज्य सूक्त

4886. आयुषो असि प्रतरणम्, विप्रम् भेषजम् उच्यसे।
तत् आञ्जन त्वम् शम्ताते, शम् आपो अभयम् कृतम्।1।
4887. यो हरिमा जायान्यो, अङ्गभेदो विसल्पकः।
सर्वम् ते यक्ष्मम् अङ्गेभ्यो, बहिः निः हन्तु आञ्जनम्।2।
4888. आञ्जनम् पृथिव्याम्, जातम् भद्रम् पुरुषजीवनम्।
कृणोतु अप्रमायुकम्, रथजूतिम् अनागसम्।3।
4889. प्राण प्राणम् त्रायस्व, असो असवे मृड।
निर्ऋते निर्ऋत्या, नः पाशेभ्यो मुञ्च।4।
4890. सिन्धोः गर्भो असि, विद्युताम् पुष्यम्।
वातः प्राणः सूर्य, चक्षुः दिवः पयः।5।
4891. देवाञ्जन त्रैककुदम्, परि मा पाहि विश्वतः।
न त्वा तरन्ति ओषधयो, बाह्याः पर्वतीया उत।6।
4892. वि इदम् मध्यम् अव असृपत्,
रक्षोहा अमीवचातनः।
अमीवाः सर्वाः चातयत्, नाशयत् अभिभा इतः।7।
4893. बहु इदम् राजन् वरुण, अनृतम् आह पूरुषः।
तस्मात् सहस्रवीर्य, मुञ्च नः परि अंहसः।8।
4894. यत् आपो अघ्न्या इति, वरुण इति यत् ऊचिम।
तस्मात् सहस्रवीर्य, मुञ्च नः परि अंहसः।9।
4895. मित्रः च त्वा वरुणः च, अनुप्रेयतुः आञ्जन।

तौ त्वा अनुगत्य दूरम्, भोगाय पुनः आ ऊहतुः।10।

45- आञ्जन सूक्त

4896. ऋणात् ऋणमेव सम्नयन्,
कृत्याम् कृत्याकृतो गृहम्।
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीः, अपि शृण आञ्जन।1।
4897. यत् अस्मासु दुष्वप्न्यम्, यत् गोषु यत् च नो गृहे।
अनामगः तम् च दुर्हार्दः, प्रियः प्रति मुञ्चताम्।2।
4898. अपाम् ऊर्ज ओजसो वावृधानम्,
अग्नेः जातम् अधि जातवेदसः।
चतुर्वीरम् पर्वतीयम् यत् आञ्जनम्,
दिशः प्रदिशः करत् इत् शिवाः ते।3।
4899. चतुर्वीरम् बध्यते आञ्जनम्,
ते सर्वा दिशो अभयाः ते भवन्तु।
ध्रुवः तिष्ठासि सवितेव च आर्य इमा,
विशो अभि हरन्तु ते बलिम्।4।
4900. आ अक्ष्व एकम् मणिम् एकम् कृणुष्व,
स्नाहि एकेन आ पिब एकम् एषाम्।
चतुर्वीरम् नैर्ऋतेभ्यः चतुर्भ्यो,
ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पातु अस्मान्।5।
4901. अग्निः मा अग्निना, अवतु प्राणाय अपानाय,
आयुषे वर्चसे ओजसे तेजसे, स्वस्तये सुभूतये स्वाहा।6।
4902. इन्द्रो मा इन्द्रियेण, अवतु प्राणाय अपानाय,
आयुषे वर्चसे ओजसे तेजसे, स्वस्तये सुभूतये स्वाहा।7।
4903. सोमो मा सौम्येन, अवतु प्राणाय अपानाय,
आयुषे वर्चसे ओजसे तेजसे, स्वस्तये सुभूतये स्वाहा।8।
4904. भगो मा भगेन, अवतु प्राणाय अपानाय,
आयुषे वर्चसे ओजसे तेजसे, स्वस्तये सुभूतये स्वाहा।9।
4905. मरुतो मा गणैः, अवन्तु प्राणाय अपानाय,
आयुषे वर्चसे ओजसे तेजसे, स्वस्तये सुभूतये स्वाहा।10।

46- अस्तृतमणि सूक्त

4906. प्रजापतिः त्वा बध्नात्,
प्रथमम् अस्तृतम् वीर्याय कम्।
तत् ते बध्नामि आयुषे वर्चसे ओजसे,
च बलाय च अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।1।
4907. ऊर्ध्वः तिष्ठतु रक्षन् अप्रमादम् अस्तृत इमम्,
मा त्वा दभन् पणयो यातुधानाः।
इन्द्र इव दस्यून् अव धूनुष्व पृतन्यतः,
सर्वान् शत्रून् वि सहस्व अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।2।
4908. शतम् च न प्रहरन्तो, निघ्नन्तो न तस्तिरे।
तस्मिन् इन्द्रः परि अदत्त चक्षुः प्राणम्,
अथो बलम् अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।3।
4909. इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो,
यो देवानाम् अधिराजो बभूव।
पुनः त्वा देवाः प्र नयन्तु, सर्वे अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।4।
4910. अस्मिन् मणौ एकशतम् वीर्याणि,
सहस्रम् प्राणा अस्मिन् अस्तृते।
व्याघ्रः शत्रून् अभि तिष्ठ सर्वान् यः त्वा पृतन्यात्,
अधरः सो अस्तु अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।5।
4911. घृतात् उत्लुप्तो मधुमान् पयस्वान्,
सहस्रप्राणः शतयोनिः वयोधाः।
शम्भूः च मयोभूः च ऊर्जस्वान् च पयस्वान् च,
अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।6।
4912. यथा त्वम् उत्तरो असो, असपत्नः सपत्नहा।
सजातानाम् असत् वशी तथा त्वा,
सविता करत् अस्तृतः त्वा अभि रक्षतु।7।

47- रात्रि सूक्त

4913. आ रात्रि पार्थिवम् रजः, पितुः अप्रायि धामभिः।
दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठसे, आ त्वेषम् वर्तते तमः।1।
4914. न यस्याः पारम् ददृशे न योयुवत्,
विश्वम् अस्याम् नि विशते यत् एजति।
अरिष्टासः ते उर्वि तमस्वति,
रात्रि पारम् अशीमहि भद्रे पारम् अशीमहि।2।
4915. ये ते रात्रि नृवक्षसो, द्रष्टारो नवतिः नव।
अशीतिः सन्ति अष्टौ, तो ते सप्त सप्ततिः।3।
4916. षष्टि च षट् च रेवति, पञ्चाशत् पञ्च सुम्नयि।
चत्वारः चत्वारिंशत् च, त्रय त्रिंशत् च वाजिनि।4।
4917. द्वौ च ते विंशतिः च, ते रात्रि एकादस अवमाः।
तेभिः नो अद्य पायुभिः, नु पाहि दुहितः दिवः।5।
4918. रक्षा माकिः नो अघशंस,
ईशत मा नो दुःशंस ईशत।
मा नो अद्य गवाम् स्तेनो, मा अवीनाम् वृक ईशत।6।
4919. मा अश्वानाम् भद्रे तस्करो, मा नृणाम् यातुधान्यः।
परमेभिः पथिभि स्तेनो, धावतु तस्करः।
परेण दत्वती रज्जुः, परेण अघयुः अर्षतु।7।
4920. अध रात्रि तृष्टधूमम्, अशीर्षाणम् अहिम् कृणु।
हनू वृकस्य जम्भयाः, तेन तम् द्रुपदे जहि।8।
4921. त्वयि रात्रि वसामसि, स्वपिष्यामसि जागृहि।
गोभ्यो नः शर्म यच्छ, अश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः।9।

48- रात्रि सूक्त

4922. अथो यानि च यस्मा, ह यानि च अन्तः परिणहि।
तानि ते परि दद्मसि।1।
4923. रात्रि मातः उषसे, नः परि देहि।
उषा नो अह्ने परि ददातु, अहः तुभ्यम् विभावरि।2।
4924. यत् किम् च इदम् पतयति,

यत् किम् च इदम् सरीसृपम्।
यत् किम् च पर्वताय असत्वम्,
तस्मात् त्वम् रात्रि पाहि नः।3।
4925. सा पश्चात् पाहि सा पुरः,
सा उत्तरात् अधरात् उत।
गोपाय नो विभावरि, स्तोतारः त इह स्मसि।4।
4926. ये रात्रिम् अनुतिष्ठन्ति, ये च भूतेषु जाग्रति।
पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न,
आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति।5।
4927. वेद वै रात्रि ते नाम, घृताची नाम वा असि।
ताम् त्वाम् भरत्-वाजो वेद, सा नो वित्ते अधि जाग्रति।6।

49- रात्रि सूक्त

4928. इषिरा योषा युवतिः दमूना,
रात्री देवस्य सवितुः भगस्य।
अश्वक्षभा सुहवा सम्भृतश्रीः,
आ पप्रौ द्यावापृथिवी महित्वा।1।
4929. अति विश्वानि अरुहत् गम्भीरो,
वर्षिष्ठम् अरुहन्त श्रविष्ठाः।
उशती रात्री अनु सा भद्रा,
अभि तिष्टते मित्र इव स्वधाभि।2।
4930. वर्ये वन्दे सुभगे सुजात,
आ अजगन् रात्रि सुमना इह स्याम्।
अस्मान् त्रायस्व नर्याणि जाता,
अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या।3।
4931. सिंहस्य रात्री उशती पींषस्य,
व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे।
अश्वस्य ब्रध्नम् पुरुषस्य मायुम्,
पुरु रूपाणि कृणुषे बिभाती।4।
4932. शिवाम् रात्रिम् अनुसूर्यम् च हिमस्य,
माता सुहवा नो अस्तु।5।
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध,
येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु।5।
4933. स्तोमस्य नो विभावरि, रात्रि राजेव जोषसे।
असाम सर्व-वीरा भवाम सर्व-वेदसो,
व्युच्छन्तीः अनु उषसः।6।
4934. शम्या ह नाम दधिषे, मम दिप्सन्ति ये धना।
रात्रि इहि तान् असुतपा य स्तेनो,
न विद्यते यत् पुनः न विद्यते।7।
4935. भद्रा असि रात्रि चमसो न विष्टो,
विष्वङ् गोरूपम् युवतिः बिभर्षि।
चक्षुष्मती मे उशती वपूंसि,
प्रति त्वम् दिव्या न क्षाम् अमुक्थाः।8।
4936. यो अद्य स्तेन आयति, अघयुः मर्त्यो रिपुः।
रात्री तस्य प्रतीत्य, प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत्।9।
4937. प्र पादौ न यथा अयति, प्र हस्तौ न यथा अशिषत्।
यो मलिम्लुः उपायति, स सम्पिष्टो अप अयति।
अप अयति स्वापायति, शुष्के स्थाणौ अप अयति।

50- रात्रि सूक्त

4938. अध रात्रि तृष्ट-धूमम्, अशीर्षाणम् अहिम् कृणु।
अक्षौ वृकस्य निः जह्याः, तेन तम् द्रुपदे जहि।1।
4939. ये ते रात्रि अनड्वाहः, तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः।
तेभिः नः अद्य पारय, अति दुः गाणि विश्वहा।2।
4940. रात्रिम्-रात्रिम् अरिष्यन्तः, तरेम तन्वा वयम्।
गम्भीरम् अप्लवा इव, न तरेयुः अरातयः।3।
4941. यथा शाम्याकः प्रपतन्, अपवान् न अनुविद्यते।
एवा रात्रि प्र पातय, यो अस्मान् अभ्याघायति।4।
4942. अप स्तेनम् वासो, गो अजम् उत तस्करम्।
अथो यो अर्वतः शिरो, अभिधाय निनीषति।5।
4943. यत् अद्य रात्रि सुभगे, विभजन्ति अयो वसु।
यत् एतत् अस्मान् भोजय, यथा इत् अन्यान् उपायसि।6।
4944. उषसे नः परि देहि, सर्वान् रात्रि अनागसः।
उषा नो अह्ने आ भजात्, अहः तुभ्यम् विभावरि।7।

51- आत्मा सूक्त

4945. अयुतो अहम् अयुतो म आत्मा अयुतम् मे,
चक्षुः अयुतम् मे श्रोत्रम् अयुतो मे।
पाणो अयुतो मे अपानः व्यानो, अयुतो अहम् सर्वः।1।
4946. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोः बाहुभ्याम्,
पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रभे।2।

52- काम सूक्त

4947. कामः तत् अग्रे सम् अवर्तत,
मनसो रेतः प्रथमम् यत् आसीत्।
स काम कामेन बृहता सयोनी,
रायः पोषम् यजमानाय धेहि।1।
4948. त्वम् काम सहसा असि प्रतिष्ठितो,
विभुः विभावा सख आ सखीयते।
त्वम् उग्रः पृतनासु सासहिः, सह ओजो यजमानाय धेहि।2।
4949. दूरात् चकमानाय, प्रतिपानाय अक्षये।
आ अस्मै अशृण्वन् आशाः, कामेन अजनयन् स्वः।3।
4950. कामेन मा काम आ अगन्, हृदयात् हृदयम् परि।
यत् अमीषाम् अदो मनः, तत् आ एतु उप माम् इह।4।
4951. यत् काम कामयमाना, इदम् कृण्वसि ते हविः।
तत् नः सर्वम् सम् ऋध्यताम्,
अथ एतस्य हविषो वीहि स्वाहा।5।

53- काल सूक्त

4952. कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः,
सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तम् आ रोहन्ति कवयो विपस्चितः,
तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।1।
4953. सप्त चक्रान् वहति काल एष,
सप्त अस्य नाभीः अमृतम् नु अक्षः।
स इमा विश्वा भुवनानि अञ्जत्,
कालः स ईयते प्रथमो नु देवः।2।
4954. पूर्णः कुम्भोधि काल आहितः,
तम् वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ् कालम्,
तम् आहुः परमे व्योमन्।3।
4955. स एव सम् भुवनानि आ अभरत्,
स एव सम् भुवनानि परि ऐत्।
पिता सन् अभवत् पुत्र एषाम् तस्मात्,
वै न अन्यत् परम् अस्ति तेजः।4।
4956. कालो अमूम् दिवम् अजनयत्,
काल इमाः पृथिवीः उत।
काले ह भूतम् भव्यम् च, इषितम् ह वि तिष्ठते।5।
4957. कालो भूतिम् असृजत, काले तपति सूर्यः।
काले ह विश्वा भूतानि, काले चक्षुः वि पश्यति।6।
4958. काले मनः काले प्राणः, काले नाम समाहितम्।
कालेन सर्वा नन्दन्ति, आगतेन प्रजाः इमाः।7।
4959. काले तपः काले ज्येष्ठम्, काले ब्रह्म समाहितम्।
कालो ह सर्वस्य ईश्वरो, यः पिता आसीत् प्रजापतेः।8।
4960. तेन इषितम् तेन जातम्,
तत् ऊ तस्मिन् प्रतिष्ठितम्।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा, बिर्भति परमेष्ठिनम्।9।
4961. कालः प्र-जा असृजत, कालो अग्रे प्रजापतिम्।
स्वयम्भूः कश्यपः कालात्, तपः कालात् अजायत।10।

54- काल सूक्त

4962. कालात् आपः सम् अभवन्,
कालात् ब्रह्म तपो दिशः।
कालेन उत् एति सूर्यः, काले नि विशते पुनः।1।
4963. कालेन वातः पवते, कालेन पृथिवी मही।
द्यौः मही काल आहिता।2।
4964. कालो ह भूतम् भव्यम् च, पुत्रो अजनयत् पुरा।
कालात् ऋचः सम् अभवन्, यजु कालात् अजायत।3।
4965. कालो यज्ञम् सम् ऐरयत्, देवेभ्यो भागम् अक्षितम्।
काले गन्धर्वाप्सरसः, काले लोकाः प्रतिष्ठिताः।4।
4966. काले अयम् अङ्गिरा,
देवो अथर्वा च अधि तिष्ठतः।
इमम् च लोकम् परमम् च लोकम्,
पुण्यान् च लोकान् विधृतीः च पुण्याः।
सर्वान् लोकान् अभि-जित्य ब्रह्मणा,
कालः स ईयते परमो नु देवः।5।

55- रायस्पोष प्राप्ति सूक्त

4967. रात्रिम्-रात्रिम् अप्रयातम् भरन्तो,
अश्वायेव तिष्ठते घासम् अस्मै।
रायः पोषेण सम् इषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम।1।
4968. या ते वसोः वात इषुः,
सा त एषा तया नो मृड।
रायः पोषेण सम् इषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम।2।
4969.सायम्सायम् गृहपतिः नो अग्निः,
प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता।
वसोः-वसोः वसुदान एधि वयम्,
त्वा इन्धानाः तन्वम् पुषेम।3।
4970. प्रातः प्रातः गृहपतिः नो अग्निः,
सायम्सायम् सौमनस्य दाता।
वसोः-वसोः वसु-दान एधि,
इन्दानाः त्वा शतम्हिमा ऋधेम।4।
4971. अपश्चा दग्धान्नस्य भूयासम्।
अन्नादाय अन्नपतये, रुद्राय नमो अग्नये।
सभ्यः सभाम् मे पाहि, ये च सभ्याः सभासदः।5।
4972. त्वम् इन्द्र पुरुहूत, विश्वम् आयुः वि अश्नवत्।
अहरहः बलिम् इत् ते हरन्तो,
अश्वायेव तिष्ठते घासम् अग्ने।6।

56- दुः स्वप्ननाशन सूक्त

4973. यमस्य लोकात् अधि आ बभूविथ,
प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः।
एकाकिना सरथम् यासि विद्वान्,
स्वप्नम् मिमानो असुरस्य योनौ।1।
4974.बन्धः त्वा अग्ने विश्वचया अपश्यत्,
पुरा रात्र्याः जनितोः एके अह्नि।
ततः स्वप्न इदम् अधि आ बभूविथ,
भिषग्भ्यो रूपम् अपगूहमानः।2।
4975. बृहद्-गावा असुरेभ्यो अधि देवान्,
उप अवर्तत महिमानम् इच्छन्।
तस्मै स्वप्नाय दधुः आधिपत्यम्,
त्रयस्त्रिंशासः स्वः आनशानाः।3।
4976. न एताम् विदुः पितरो न उत देवा येषाम्,
जल्पिः चरति अन्तरा इदम्।

त्रिते स्वप्नम् अदधुः आप्तये,
नर आदित्यासो वरुणेन अनुशिष्टाः।4।
4977. यस्य क्रूरम् अभजन्त दुष्कृतो,
अस्वप्नेन सुकृत पुण्यम् आयुः।
स्वः मदसि परमेण बन्धुना,
तप्यमानस्य मनसो अधि जज्ञिषे।5।
4978. विद्म ते सर्वाः परि-जाः पुरस्तात्,
विद्म स्वप्न यो अधिपाः इह ते।
यशस्विनो नो यशसा इह पाहि,
आरात् द्विषेभिः अप याहि दूरम्।6।

57- दुःस्वप्ननाशन सूक्त

4979. यथ कलाम् यथा शफम्, यथा ऋणम् सम्नयन्ति।
एव दुस्वप्न्यम् सर्वम्, अप्रिये सम् नयामसि।1।
4980.सम् राजानो अगु सम् ऋणानि अगु,
सम् कुष्ठा अगु सम् कला अगुः।
सम् अस्मासु यत् दुष्वपन्यम्,
निः द्विषते दुष्वप्नयम् सुवाम।2।
4981. देवानाम् पत्नीनाम् गर्भ,
यमस्य कर यो भद्रः स्वप्न।
स मम यः पापः तत् द्विषते प्र हिण्मः।
मा तृष्टानाम् असि कृष्णशकुनेः मुखम्।3।
4982. तम् त्वा स्वप्न तथा सम् विद्म स त्वम्,
स्वप्न अश्विव कायम् अश्व इव नीनाहम्।
अनास्माकम् देवपीयुम् पियारुम् वप,
यत् अस्मासु दुष्वप्न्यम् यत् गोषु यत् च नो गृहे।4।
4983. अनास्माकः तत् देवपीयुः पियारुः,
निष्कमेव प्रति मुञ्चताम्।
नव अरत्नीन् अपमया अस्माकम् ततः परि।
दुष्वप्न्यम् सर्वम् द्विषते निः दयामसि।5।

58- यज्ञ सूक्त

4984. घृतस्य जूतिः समना सदेवा,
सम्वत्सरम् हविषा वर्धयन्ती।
श्रोत्रम् चक्षुः प्राणो अच्छिन्नो नो अस्तु,
अच्छिन्ना वयम् आयुषो वर्चसः।1।
4985. उप अस्मान् प्राणो ह्वयताम्,
उप वयम् प्राणम् हवामहे।
वर्चो जग्राह पृथिवी अन्तरिक्षम्,
वर्चः सोमो बृहस्पतिः विधत्ता।2।
4986. वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुः,
वर्चो गृहीत्वा पृथिवीम् अनु सम् चरेम।
यशसम् गावो गोपतिम् उप तिष्ठन्ति,
आयतीः यशो गहीत्वा पृथिवीम् अनु सम् चरेम।3।
4987.व्रजम् कृणुध्वम् स हि वो नृपाणो,
वर्म सीव्यध्वम् बहुला पृथूनि।
पुरः कृणुध्वम् आयसीः अधृष्टा,
मा व सुस्रोत् चमसो दृंहता तम्।4।
4988. यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिः मुखम्,
च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमम् यज्ञम् विततम् विश्वकर्मणा,
आ देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।5।
4989. ये देवानाम् ऋत्विजो ये च यज्ञिया,
येभ्यो हव्यम् क्रियते भागधेयम्।
इमम् यज्ञम् सह पत्नीभिः ऐत्य,
यावन्तः देवाः तविषा मादयन्ताम्।6।

59- यज्ञ सूक्त

4990. त्वम् अग्ने व्रतपा असि, देव आ मर्त्येषु।
त्वम् यज्ञेषु ईड्यः।1।
4991. यत् वो वयम् प्रमिनाम व्रतानि,
विदुषाम् देवा अवि दुष्टरासः।
अग्निः तत् विश्वत् आ पृणातु विद्वान्,
सोमस्य यो ब्राह्मणान् आविवेश।2।
4992. आ देवानाम् अपि पन्थाम् अगन्म,
यत् शक्नवाम तत् अनुप्रवोढुम्।
अग्निः विद्वान् स यजात् स इत् होता,
सो अध्वरान् स ऋतून् कल्पयाति।3।

60-अङ्ग सूक्त

4993. वाक् म आसन् नसोः प्राणः,
चक्षुः अक्षणोः श्रोत्रम् कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा, दन्ता बहु बाह्वोः बलम्।1।
4994. ऊर्वोः ओजो जङ्घयोः, जवः पादयोः।
प्रतिस्था अरिष्टानि मे, सर्वा आत्मा अनिभृष्टः।2।

61- पूर्ण आयु सूक्त

4995. तनूः तन्वा मे सहे, दतः सर्वम् आयु अशीय।
स्योनम् मे सीद पुरुः, पृणस्व पवमानः स्वर्गे।1।

62- सर्वप्रिय सूक्त

4996. प्रियम् मा कृणु देवेषु, प्रियम् राजसु मा कृणु।
प्रियम् सर्वस्य पश्यत, उत शूद्र उत आर्ये।1।

63- आयुवर्धन सूक्त

4997. उत् तिष्ठ ब्रह्मणः पते, देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणम् प्रजाम् पशून्, कीर्ति यजमानम् च वर्धय।1।

64- दीर्घायु सूक्त

4998. अग्ने समिधम्, आ अहार्षम् बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धाम् च मेधाम् च, जातवेदाः प्र यच्छतु।1।
4999. इध्मेन त्वा जातवेदः, समिधा वर्धयामसि।

तथा त्वम् अस्मान् वर्धय, प्रजया च धनेन च।2।
5000. यत् अग्ने यानि कानि,
चित् आ ते दारुणि दध्मसि।
सर्वम् तत् अस्तु मे शिवम्, तत् जुषस्व यविष्ठ्य।3।
5001. एताः ते अग्ने समिधः, त्वम् इद्धः समित् भव।
आयुः अस्मासु धेहि, अमृतत्वम् आचार्याय।4।

65- सूक्त

5002. हरिः सुपर्णो दिवम् आ अरुहो अर्चिषा,
ये त्वा दिप्सन्ति दिवम् उत्पतन्तम्।
अव तान् जहि हरसा जातवेदो अबिभ्यत्,
उग्रो अर्चिषा दिवम् आ रोह सूर्य।1

66- असुरक्षयणम् सूक्त

5003. अयोजाला असुरा मायिनो,
अयस्मयैः पाशैः अङ्किनो ये चरन्ति।
तान् ते रन्धयामि हरसा जातवेदः,
सहस्रऋष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः1

67- दीर्घायु सूक्त

5004. पश्येम शरदः शतम्।1।
5005. जीवेम शरदः शतम्।2।
5006. बुध्येम शरदः शतम्।3।
5007. रोहेम शरदः शतम्।4।
5008. पूषेम शरदः शतम्।5।
5009. भवेम शरदः शतम्।6।
5010.भूयेम शरदः शतम्।7।
5011. भूयसी शरदः शतात्।8।

68- वेदोक्तकर्म सूक्त

5012. अव्यसः च व्यचसः च, बिलम् वि स्यामि मायया।
ताभ्याम् उद्-धृत्य वेदम्, अथ कर्मणि कृण्महे।1।

69- आपः सूक्त

5013. जीवा स्थ जीव्यासम्, सर्वम् आयुः जीव्यासम्।1।
5014. उपजीवाः स्थ उप जीव्यासम्,
सर्वम् आयु जीव्यासम्।2।
5015. सम्-जीवा स्थ सम् जीव्यासम्,
सर्वम् आयुः जीव्यासम्।3।
5016. जीवला स्थ जीव्यासम्,
सर्वम् आयुः जीव्यासम्।4।

70- पूर्णायु सूक्त

5017. इन्द्र जीव सूर्य जीव,
देवा जीवा जीव्यासमहम्।
सर्वम् आयु जीव्यासम्।1।

71- वेदमाता सूक्त

5018. स्तुता मया वरदा वेद-माता,
प्र चोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणम् प्रजाम् पशुम्, कीर्तिम् द्रविणम् ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यम् दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।1।

72-परमात्मा सूक्त

5019. यस्मात् कोशात् उदभराम वेदम्,
तस्मिन् अन्तः अव दध्म एनम्।
कृतम् इष्टम् ब्रह्मणो वीर्येण,
तेन मा देवाः तपसा अवत इह।1।

इति एकोनविशम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

विंशम् काण्डम्

सूक्त-1

5020. इन्द्र त्वा वृषभम् वयम्, सुते सोमे हवामहे।
स पाहि मध्वो अन्धसः।1।
5021. मरुतो यस्य हि क्षये, पाथा दिवो विमहसः।
स सुगोपातमो जनः।2।
5022. उक्षान्नाय वशान्नाय, सोमपृष्ठाय वेधसे।
स्तोमैः विधेम अग्नये।3।

सूक्त-2

5023. मरुतः पोत्रात् सुष्टुभः,
स्वर्कात् ऋतुना सोमम् पिबतु।1।
5024. अग्निः आग्नीध्रात् सुष्टुभः,
स्वर्कात् ऋतुना सोमम् पिबतु।2।
5025. इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात् सुस्तुभः,
स्वर्कात् ऋतुना सोमम् पिबतु।3।
5026. देवो द्रविणोदाः पोत्रात् सुस्तुभः,
स्वर्कात् ऋतुना सोमम् पिबतु।4।

सूक्त-3

5027. आ याहि सुसुमा हि त, इन्द्र सोमम् पिबा इमम्।
आ इदम् बर्हिः सदो मम।1।
5028. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी, वहताम् इन्द्र केशिना।
उप ब्रह्माणि न शृणु।2।
5029. ब्रह्माणः त्वा वयम् युजा, सोमपाम् इन्द्र सोमिनः।
सुतवन्तो हवामहे।3।

सूक्त-4

5030. आ नो याहि सुतवतः, अस्माकम् सुस्तुतीः उप।
पिब सु शिमिन् अन्धसः।1।
5031. आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योः, अनु गात्रा वि धावतु।
गृभाय जिह्वया मधु।2।
5032. स्वादुः ते अस्तु सम्सुदे, मधुमान् तन्वे तव।
सोमः सम् अस्तु ते हृदे।3।

सूक्त-5

5033. अयमु त्वा विचर्षणे, जनीरिव अभि सम्वृतः।
प्र सोम इन्द्र सर्पतु।1।
5034. तुविग्रीवो वपोदरः, सुबाहुः अन्धसो मदे।
इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते।2।
5035. इन्द्र प्र इहि पुरः त्वम्, विश्वस्य ईशान ओजसा।
वृत्राणि वृत्रहन् जहि।3।
5036. दीर्घः ते अस्तु अङ्कुशो, येन वसु प्रयच्छसि।
यजमानाय सुन्वते।4।
5037. अयम् त इन्द्र सोमो, निपूतो अधि बर्हिषि।
आ इहि ईम् अस्य द्रवा पिब।5।
5038. शाचिगो शाचिपूजन, अयम् रणाय ते सुतः।
आखण्डल प्र हूयसे।6।
5039. यः ते शृङ्गवृषो नपात्, प्रणपात् कुण्डपाय्यः।
नि अस्मिन् दध्रे आ मनः।7।

सूक्त-6

5040. इन्द्र त्वा वृषभम् वयम्, सुते सोमे हवामहे।
स पाहि मध्वो अन्धसः।1।
5041. इन्द्र क्रतुविदम् सुतम्, सोमम् हर्य पुरुष्टुत।
पिब आ वृषस्व ततृपिम्।2।
5042. इन्द्र प्र णो धितवानम्, यज्ञम् विश्वेभिः देवेभिः।
तिर स्तवान विश्पते।3।
5043. इन्द्र सोमाः सुता इमे, तव प्र यन्ति सत्पते।
क्षयम् चन्द्रास इन्दवः।4।
5044. दधिष्व जठरे सुतम्, सोमम् इन्द्र वरेण्यम्।
तव द्युक्षास इन्दवः।5।
5045. गिर्वणः पाहि नः सुतम्, मधोः धाराभिः अज्यसे।
इन्द्र त्वादातम् इत् यशः।6।
5046. अभि द्युम्नानि वनिन, इन्द्रम् सचन्ते अक्षिता।
पीत्वी सोमस्य वावृधे।7।
5047. अर्वावतो न आ गहि, परावतः च वृत्रहन्।
इमा जुषस्व नो गिरः।8।
5048. यत् अन्तरा परावतम्, अर्वावतम् च हूयसे।
इन्द्र इह तत आ गहि।9।

सूक्त-7

5049. उत् घ इत् अभि श्रुतमघम्, वृषभम् नर्यापसम्।
अस्तारम् एषि सूर्य।1।
5050. नव यो नवतिम्, पुरो बिभेद बाहु-ओजसा।
अहिम् च वृत्रहा अवधीत्।2।
5051. स न इन्द्रः शिवः सखा, अश्ववत् गोमत् यवमत्।
उरुधारेव दोहते।3।
5052. इन्द्र क्रतुविदम् सुतम्, सोमम् हर्य पुरुष्टुत।
पिब आ वृषस्व ततृपिम्।4।

सूक्त-8

5053. एव पाहु प्रत्नथा मन्दतु,
त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्व उत गीर्भिः।
आविः सूर्यम् कृणुहि पीपिहि,
इषो जहि शत्रून् अभि गा इन्द्र तृन्धि।1।
5054.अर्वाङ् आ इहि सोमकामम् त्वा आहुः,
अयम् सुतः तस्य पिब मदाय।
उरुव्यचा जठरे आ वृषस्व, पितेव नः शृणुहि हूयमानः।2।

5055. आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा,
सेक्तेव कोशम् सिसिचे पिबध्यै।
सम् ऊ प्रिया आ अववृत्रन् मदाय,
प्रदक्षिणित् अभि सोमास इन्द्रम्।3।

सूक्त-9

5056. तम् वो दस्मम् ऋतिसहम्,
वसोः मन्दानम् अन्धसः।
अभि वत्सम् न स्वसरेषु धेनव, इन्द्रम् गीर्भिः नवामहे।1।
5057. द्युक्षम् सुदानुम् तविषीभिः,
आवृतम् गिरिम् न पुरुभोजसम्।
क्षुमन्तम् वाजम् शतिनम् सहस्रिणम्,
मक्षू गोमन्तम् ईमहे।2।
5058. तत् त्वा यामि सुवीर्यम्, तत् ब्रह्म पूर्वचित्तये।
येना यतिभ्यो भृगवे धने, हिते येन प्रस्कण्वम् आविथ।3।
5059. येना समुद्रम् असृजो महीः,
अपः तत् इन्द्र वृष्णि ते शवः।
सद्यः सो अस्य महिमा न सम्नशे,
यम् क्षोणीः अनुचक्रदे।4।

सूक्त-10

5060. उत् ऊ त्ये मधुमत्तमा, गिर स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितो, ऊतयो वाजयन्तो रथेव।1।
5061. कण्वा इव भृगवः सूर्या इव,
विश्वम् इत् धीतम् आनशुः।
इन्द्रम् स्तोमेभिः महयन्त आयवः, प्रियमेधासो अस्वरन्।2।

सूक्त-11

5062. इन्द्रः पूर्भित् आ अतिरत् दासम् अर्कैः,
विददवसु दयमानो वि शत्रून्।
ब्रह्मजूतः तन्वा वावृधानो,
भूरिदात्र आ अपृणत् रोदसी उभे।1।
5063. मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिम्,
इयर्मि वाचम् अमृताय भूषन्।
इन्द्र क्षितीनाम् असि मानुषीणाम्,
विशाम् दैवीनाम् उत पूर्वयावा।2।
5064. इन्द्रो वृत्रम् अवृणोत् शर्धनीतिः,
प्र मायिनाम् अभिनात् वर्पणीतिः।
अहन् व्यसम् उशधक् वनेषु,
आविः धेना अकृणोत् राम्याणाम्।3।
5065. इन्द्रः स्वर्षा जनयन् अहानि,
जिगाय उशिग्भिः अभिष्टिः।
प्र अरोचयत् मनवे केतुम् अह्नाम्,
अविन्दत् ज्योतिः बृहते रणाय।4।
5066. इन्द्रः तुजो बर्हणा आ विवेश,
नृवत् दधानो नर्या पुरूणि।
अचेतयत् धिय इमा जरित्रे प्र इमम्,
वर्णम् अतिरत् शुक्रम् आसाम्।5।
5067. महो महानि पनयन्ति,
अस्य इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि।
वृजनेन वृजिनान् सम् पिपेष,
मायाभिः दस्यून् अभिभूत्योजाः।6।
5068. युधा इन्द्र मह्ना वरिवः चकार,
देवेभ्यः सत्पतिः चर्षणिप्राः।
विवस्वतः सदने अस्य तानि,
विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति।7।
5069. सत्रासहम् वरेण्यम् सहोदाम्,
ससवासम् स्वः अपः च देवीः।
ससान यः पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
इन्द्रम् मदन्ति अनु धीरणासः।8।
5070. ससान अत्यान् उत सूर्यम् ससान,
इन्द्रः ससान पुरुभोजसम् गाम्।
हिरण्ययम् उत भोगम् ससान,
हत्वी दस्यून् प्र आर्यम् वर्णम् आवत्।9।
5071. इन्द्रः ओषधीः असनोत् अहानि,
वनस्पतीन् असनोत् अन्तरिक्षम्।
बिभेद वलम् नुनुदे विवाचो,
अथ अभवत् दमिता अभिक्रतूनाम्।10।
5072. शुनम् हुवेम मघवानम् इन्द्रम्,
अस्मिन् भरे नृतमम् वाजसातौ।
शृण्वन्तम् उग्रम् ऊतये समत्सु,
घ्नन्तम् वृत्राणि समजितम् धनानाम्।11।

सूक्त-12

5073. उत् उ ब्रह्माणि ऐरत श्रवस्या,
इन्द्रम् समर्ये महया वसिष्ठ।
आ यो विश्वानि शवसा ततान,
उपश्रोता म ईवतो वचांसि।1।
5074. अयामि घोष इन्द्र देवजामिः,
इरज्यन्त यत् शुरुधो विवाचि।
नहि स्वम् आयुः चिकिते जनेषु,
तानि इत् अंहासि अति पर्षि अस्मान्।2।
5075. युजे रथम् गो-एषणम् हरिभ्याम्,
उप ब्रह्माणि जुजुषाणम् अस्थुः।
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वा,
इन्द्रो वृत्राणि अप्रति जघन्वान्।3।
5076. आपः चित् पिप्यु स्तर्यो न,
गावो नक्षन् ऋतम् जरितारः त इन्द्र।

याहि वायुः न नियुतो नो अच्छ,
त्वम् हि धीभिः दये वि वाजान्।4।
5077. ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु,
शुष्मिणम् तुविराधसम् जरित्रे।
एको देवत्रा दयसे हि मर्तान्,
अस्मिन् शूर सवने मादयस्व।5।
5078. एव इत् इन्द्रम् वृषणम् वज्रबाहुम्,
वसिष्ठासो अभि अर्चन्ति अर्कैः।
स न स्तुतो वीरवत् धातु गोमत्,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः।6।
5079. ऋजीषी वज्री वृषभः तुराषाट्,
शुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा।
युक्त्वा हरिभ्याम् उप यासत् अर्वाङ्,
माध्यम् दिने सवने मत्सत् इन्द्रः।7।

सूक्त-13

5080. इन्द्रः च सोमम् पिबतम् बृहस्पते,
अस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू।
आ वाम् विशन्तु इन्दवः स्वाभुवो,
अस्मे रयिम् सर्ववीरम् नि यच्छतम्।1।
5081. आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो,
रघुपत्वानः प्र जिगात् बाहुभिः।
सीदत आ बर्हिः उरु वः सदः कृतम्,
मादयध्वम् मरुतो मध्वो अन्धसः।2।
5082. इमम् स्तोमम् अर्हते जातवेदसे,
रथमेव सम् महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिः अस्य सम्सदि,
अग्ने सख्ये मा रिषाम वयम् तव।3।
5083. आ एभिः अग्ने सरथम् याहि अर्वाङ्,
नानारथम् वा विभवो हि अश्वाः।
पत्नीवतः त्रिंशतम् त्रीन् च देवान्,
अनुस्वधम् आ वह मादयस्व।4।

सूक्त-14

5084. वयम् उ त्वाम् अपूर्व्य स्थूरम्,
न कत् चित् भरन्तो अवस्यवः।
वाजे चित्रम् हवामहे।1।
5085. उप त्वा कर्मन् ऊतये,
सः नो युवा उग्रः चक्राम यो धृषत्।
त्वाम् इत् हि अवितारम्, ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम्।2।
5086. यो न इदमिदम् पुरा प्र वस्य,
आनिनाय तम् उ व स्तुषे।
सखाय इन्द्र ऊतये।3।
5087. हर्यश्वम् सत्पतिम् चर्षणिसहम्,
स हि ष्मा यो अमन्दत।
आ तु नः स वयति गव्यम्,
अश्व्यम् स्तोतृभ्यो मघवा शतम्।4।

सूक्त-15

5088. प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये,
सत्यशुष्माय तवसे मतिम् भरे।
अपामेव प्रवणे यस्य दुर्धरम्,
राधो विश्वायु शवसे अपवृतम्।1।
5089. अध ते विश्वम् अनु ह असत् इष्टये,
आपो निम्ना इव सवना हविष्मतः।
यत् पर्वते न समाशीत हर्यत,
इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः।2।
5090. अस्मै भीमाय नमसा सम् अध्वर,
उषो न शुभ्र आ भर पनीयसे।
यस्य धाम श्रवसे नाम इन्द्रियम्,
ज्योतिः अकारि हरितः न अयसे।3।
5091. इमे त इन्द्र ते वयम् पुरुस्तुत,
ये त्वा आरभ्य चरामसि प्रभु-वसो।
नहि त्वत् अन्यो गिर्वणो गिरः सघत्,
क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तत् वचः।4।
5092. भूरि त इन्द्र वीर्यम् तव स्मसि,
अस्य स्तोतुः मघवन् कामम् पृण।
अनु ते द्यौः बृहती वीर्यम् मम,
इयम् च ते पृथिवी नेम ओजसे।5।
5093. त्वम् तम् इन्द्र पर्वतम् महाम्,
उरुम् वज्रेण वज्रिन् पर्वशः चकर्तिथ।
अव असृजः निवृताः सर्तवा अपः,
सत्रा विश्वम् दधिषे केवलम् सहः।6।

सूक्त -16

5094. उत् प्रुतो न वयो रक्षमाणा,
वावदतो अभ्रिमस्येव घोषाः।
गिरिभ्रजो न ऊर्मयो मदन्तो,
बृहस्पतिम् अभि अर्का अनावन्।1।
5095. सम् गोभिः आङ्गिरसो नक्षमाणो,
भगेव इत् अर्य मणम् निनाय।
जने मित्रो न दम्-पती अनक्ति,
बृहस्पते वाजय आशूनेव आजौ।2।
5096. साध्वर्या अतिथिनीः इषिरा,
स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या,
निः गा ऊपे यवतेव स्थिविभ्यः।3।
5097. आप्रुषायन् मधुना ऋतस्व योनिम्,

अवक्षिपन् अर्क उल्कामेव द्योः।
बृहस्पतिः उद्धरन् अश्मनो गा भूम्या,
उद्गेव वि त्वचम् बिभेद।4।
5098. अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षात्,
उद्गनः शीपालमिव वात आजत्।
बृहस्पतिः अनुमृश्य बलस्य,
अभ्रमेव वात आ चक्र आ गाः।5।
5099. यदा वलस्य पीयतो जसुम् भेत्,
बृहस्पतिः अग्नितपोभिः अर्कैः।
दद्-भिः न जिह्वा परिविष्टम् आदत्,
आविः निधीन् अकृणोत् उस्रियाणाम्।6।
5100. बृहस्पतिः अमत हि त्यत् आसाम्,
नाम स्वरीणाम् सदने गुहा यत्।
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भम्,
उत् उस्रियाः पर्वतस्य त्मना आजत्।7।
5101. अश्ना अपिनद्धम् मधु परि अपश्यत्,
मत्स्यम् न दीने उदनि क्षियन्तम्।
निः तत् जभार चमसम् न वृक्षात्,
बृहस्पतिः विरवेण विकृत्य।8।
5102. सो उषाम् अविन्दत् स स्वः सो अग्निम्,
सो अर्केण वि बबाधे तमांसि।
बृहस्पतिः गोवपुषो वलस्य,
निः मज्जानम् न पर्वणो जभार।9।
5103. हिमेव पर्णा मुषिता वनानि,
बृहस्पतिना अकृपयत् बलो गाः।
अननुकृत्यम् अपुनरिति चकार,
यात् सूर्यामासा मिथ उच्चरातः।10।
5104. अभि श्यावम् न कृशनेभिः,
अश्वम् नक्षत्रेभिः पितरो द्याम् अपिंशन्।
रात्र्याम् तमो अदधुः ज्योतिः अहन्,
बृहस्पतिः भिनत् अद्रिम् विदत् गाः।11।
5105. इदम् अकर्म नमो अभ्रियाय,
यः पूर्वीः अनु आनोनवीति।
बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः,
स वीरेभिः स नृभिः नो वयो धात्।12।

सूक्त-17

5106. अच्छ म इन्द्रम् मतयः स्वर्विदः,
सध्रीचीः विश्वा उशतीः अनूषत।
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिम्,
मर्यम् न शुन्ध्युम् मघवानम् ऊतये।1।
5107. न घा त्वद्रिक् अप वेति मे मनः,
त्वे इत् कामम् पुरुहूत शिश्रय।
राजेव दस्म नि षदो अधि बर्हिषि,
अस्मिन् सु सोमे अवपानम् अस्तु ते।2।
5108. विषुवृत् इन्द्रो अमतेः उत क्षुधः,
स इत् रायो मघवा वस्व ईशते।
तस्य इत् इमे प्रवणे सप्त सिन्धवो,
वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः।3।
5109. वयो न वृक्षम् सुपलाशम् आ असदन्,
सोमास इन्द्रम् मन्दिनः चमूषदः।
प्र एषाम् अनीकम् शवसा दविद्युतत्,
विदत् स्वः मनवे ज्योतिः आर्यम्।4।
5110. कृतम् न श्वघ्नी वि चिनोति देवने,
समवर्गम् यत् मघवा सूर्यम् जयत्।
न तत् ते अन्यो अनु वीर्य शकत्,
न पुराणो मघवन् न उत नूतनः।5।
5111. विशम्विशम् मघवा परि अशायत,
जनानाम् धेना अवचाकशत् वृषा।
यस्य अह शक्रः सवनेषु रण्यति,
स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः।6।
5112. आपो न सिन्धुम् अभि यत् समक्षरन्,
सोमास इन्द्रम् कुल्या इव ह्रदम्।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने,
यवम् न वृष्टिः दिव्येन दानुना।7।
5113. वृषा न क्रुद्धः पतयत् रजः,
सु आ यो अर्यपत्नीः अकृणोत् इमा अपः।
स सुन्वते मघवा जीरदानवे,
अविन्दत् ज्योतिः मनवे हविष्मते।8।
5114. उत् जायताम् परशुः ज्योतिषा,
सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराण-वत्।
वि रोजताम् अरुषो भानुना शुचिः,
स्वः ण शुक्रम् शुशुचीत सत्पतिः।9।
5115. गोभिः तरेम अमतिम् दुरेवाम्,
यवेन क्षुधम् पुरुहूत विश्वाम्।
वयम् राजभिः प्रथमा धनानि,
अस्माकेन वृजनेना जयेम।10।
5116. बृहस्पतिः नः परि पातु पश्चात्,
उत उत्तरस्मात् अधरात् अघयोः।
इन्द्रः पुरस्तात् उत मध्यतो,
नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु।11।
5117. बृहस्पते युवम् इन्द्रः च वस्वो,
दिव्यस्य ईशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तम् रयिम् स्तुवते कीरये,
चित् यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः।12।

सूक्त-18

5118. वयम् ऊ त्वा तदिदर्था, इन्द्र त्वायन्तः सखायः।
कण्वा उक्थेभिः जरन्ते।1।
5119. न घ ईम् अन्यत् आ पपन,
वज्रिन् अपसो नविष्टौ।
तव इत् ऊ स्तोमम् चिकेत।2।
5120. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्, न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादम् अतन्द्राः।3।
5121. वयम् इन्द्र त्वायवो, अभि प्र णोनुमो वृषन्।
विद्धी तु अस्य नो वसो।4।
5122. मा नो निदे च वक्तवे, अर्यो रन्धीः अराव्णे।
त्वे अपि क्रतुः मम।5।
5123. त्वम् वर्म असि सप्रथः, पुरोयोधः च वृत्रहन्।
त्वया प्रति ब्रुवे युजा।6।

सूक्त-19

5124. वार्त्रहत्याय शवसे, पृतनाषाह्याय च।
इन्द्र त्वा आ वर्तयामसि।1।
5125. अर्वाचीनम् सु ते मन, उत चक्षुः शतक्रतो।
इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः।2।
5126. नामानि ते शतक्रतो, विश्वाभिः गीर्भिः ईमहे।
इन्द्र अभिमातिसह्ये।3।
5127. पुरुस्तुतस्य धामभिः, शतेन महयामसि।
इन्द्रस्य चर्षणिधृतः।4।
5128. इन्द्रम् वृत्राय हन्तवे, पुरुहूतम् उप ब्रुवे।
भरेषु वाजसातये।5।
5129. वाजेषु सासहिः भव, त्वाम् ईमहे शतक्रतो।
इन्द्र वृत्राय हन्तवे।6।
5130. द्युम्नेषु पृतनाज्ये, पृत्सुतूर्षु श्रवसु च।
इन्द्र साक्ष्व अभिमातिषु।7।

सूक्त-20

5131. शुष्मिन्तमम् न ऊतये, द्युम्निनम् पाहि जागृविम्।
इन्द्र सोमम् शतक्रतो।1।
5132. इन्द्रियाणि शतक्रतो, या ते जनेषु पञ्चसु।
इन्द्र तानि ते आ वृणे।2।
5133. अगन् इन्द्र श्रवो बृहत्, द्युम्नम् दधिष्व दुष्टरम्।
उत् ते शुष्मम् तिरामसि।3।
5134. अर्वावतो न आ गहि, अथो शक्र परावतः।
उ लोको यः ते अद्रिव, इन्द्र इह तत आ गहि।।4।
5135. इन्द्रो अङ्ग महत् भयम्, अभि सत् अप चुच्यवत्।
स हि स्थिरो विचर्षणिः।5।
5136. इन्द्रः च मृडयाति नो, न नः पश्चात् अघम् नशत्।
भद्रम् भवाति नः पुरः।6।
5137. इन्द्र आशाभ्यः परि, सर्वाभ्यो अभयम् करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणिः।7।

सूक्त-21

5138. नि ऊ षु वाचम् प्र महे भरामहे,
गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः।
नु चित् हि रत्नम् ससतामिव अविदत्,
न दुष्टुतिः द्रविणोदेषु शस्यते।1।
5139. दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोः असि,
दुरो यवस्य वसुन इनः पतिः।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः,
सखा सखिभ्यः तम् इदम् गृणीमसि।2।
5140. शचीव इन्द्र पुरुकृत् द्युमत्तम,
तव इत् इदम् अभितः चेकिते वसु।
अतः संगृभ्य अभिभूते आ भर,
मा त्वायतः जरितुः कामम् ऊनयीः।3।
5141. एभिः द्युभिः सुमना एभिः इन्दुभिः,
निरुन्धानो अमतिम् गोभिः अश्विना।
इन्द्रेण दस्युम् दरयन्त इन्दुभिः,
युतद्वेषसः सम् इषा रभेमहि।4।
5142. सम् इन्द्र राया सम् इषा रभेमहि,
सम् वाजेभिः पुरुचन्द्रैः अभिद्युभिः।
सम् देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया,
गो-अग्रया अश्ववत्या रभेमहि।5।
5143. ते त्वा मदा अमदन् तानि वृष्ण्या,
ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते।
यत् कारवे दश वृत्राणि अप्रति,
बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः।6।
5144. युधा युधम् उप घ इत् एषि धृष्णुया,
पुरा पुरम् सम् इदम् हंसि ओजसा।
नम्या यत् इन्द्र सख्या परावति,
निबर्हयो नमुचिम् नाम मायिनम्।7।
5145. त्वम् करञ्जम् उत पर्णयम् वधीः,
तेजिष्ठया अतिथिग्वस्य वर्तनी।
त्वम् शता वङ्गृदस्य अभिनत् पुरो,
अननुदः परिसूता ऋजिश्वना।8।
5146. त्वम् एतान् जनराज्ञो द्विः दश,
अबन्धुना सुश्रवसा उपजग्मुषः।
षष्टिम् सहस्रा नवतिम् नव श्रुतो,
नि चक्रेण रथ्या दुष्पदा अवृणक्।9।
5147. त्वम् आविथ सुश्रवसम् तव ऊतिभिः,
तव त्रामभिः इन्द्र तूर्वयाणम्।
त्वम् अस्मै कुत्सम् अतिथिग्वम्,

आयुम् महे राज्ञे यूने अरन्धनायः।10।
5148. य उदृचि इन्द्र देवगोपाः,
सखायः ते शिवतमा असाम।
त्वाम् स्तोषाम त्वया सुवीरा,
द्राघीय आयुः प्रतरम् दधानाः।11।

सूक्त-22

5149. अभि त्वा वृषभा सुते, सुतम् सृजामि पीतये।
तृम्प वि अश्नुहि मदम्।1।
5150. मा त्वा मूरा अविष्यवो, मा उपहस्वान आ दभन्।
माकीम् ब्रह्मद्विषो वनः।2।
5151. इह त्वा गोपरीणसा, महे मन्दन्तु राधसे।
सरो गौरो यथा पिब।3।
5152. अभि प्र गोपतिम् गिरा, इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
सूनुम् सत्यस्य सत्पतिम्।4।
5153. आ हरयः ससृज्रिरे, अरुषीः अधि बर्हिषि।
यत्र अभि सम्नवामहे।5।
5154. इन्द्राय गाव आशिरम्, दुदुह्वे वज्रिणे मधु।
यत् सीम् उपह्वरे विदत्।6।

सूक्त-23

5155. आ तू न इन्द्र मद्र्यक्, हुवानः सोमपीपये।
हरिभ्याम् याहि अद्रिवः।1।
5156. सत्तो होता न ऋत्वियः, तिस्तिरे बर्हिः आनुषक्।
अयुज्रन् प्रातः अद्रयः।2।
5157. इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः, क्रियन्त आ बर्हिः सीद।
वीहि शूर पुरोलाशम्।3।
5158. रारन्धि सवनेषु ण एषु, स्तोमेषु वृत्रहन्।
उक्थेषु इन्द्र गिर्वणः।4।
5159. मतयः सोमपाम् उरुम्, रिहन्ति शवसः पतिम्।
इन्द्रम् वत्सम् न मातरः।5।
5160. स मन्दस्वा हि अन्धसो, राधसे तन्वा महे।
न स्तोतारम् निदे करः।6।
5161. वयम् इन्द्र त्वायवो, हविष्मन्तो जरामहे।
उत त्वम् अस्मयु वसो।7।
5162. मा आरे अस्मत् वि मुमुचो, हरिप्रिय अर्वाङ् याहि।
इन्द्र स्वधावो मत्स्व इह।8।
5163. अर्वाञ्चम् त्वा सुखे रथे, वहताम् इन्द्र केशिना।
घृतस्नू बर्हिः आसदे।9।

सूक्त-24

5164. उप नः सुतमा गहि, सोमम् इन्द्र गो-आशिरम्।
हरिभ्याम् यः ते अस्मयुः।1।
5165. तम् इन्द्र मदम् आ गहि,
बर्हिष्ठाम् ग्रावभिः सुतम्।
कुवित् नु अस्य तृप्णवः।2।
5166. इन्द्रम् इत्था गिरो मम, अच्छ अगुः इषिता इतः।
आवृते सोमपीतये।3।
5167. इन्द्रम् सोमस्य पीतये, स्तोमैः इह हवामहे।
उक्थेभिः कुवित् आगमत्।4।
5168. इन्द्र सोमाः सुता इमे, तान् दधिष्व शतक्रतो।
जठरे वाजिनीवसो।5।
5169. विद्म हि त्वा धनंजयम्, वाजेषु दधृषम् कवे।
अध ते सुम्नम् ईमहे।6।
5170. इमम् इन्द्र गो-आशिरम्, यवाशिरम् च नः पिब।
आगत्य वृषभिः सुतम्।7।
5171. तुभ्य इत् इन्द्र स्व ओक्ये, सोमम् चोदामि पीतये।
एष रारन्तु ते हृदि।8।
5172. त्वाम् सुतस्य पीतये, प्रत्नम् इन्द्र हवामहे।
कुशिकासो अवस्यवः।9।

सूक्त-25

5173. अश्ववति प्रथमो गोषु गच्छति,
सुप्रावीः इन्द्र मर्त्यः तव ऊतिभिः।
तम् इत् पृणक्षि वसुना भवीयसा,
सिन्धुम् आपो यथा अभितो विचेतसः।1।
5174. आपो न देवी उप यन्ति होत्रियम्,
अवः पश्यन्ति विततम् यथा रजः।
प्राचैः देवासः प्र णयन्ति देवयुम्,
ब्रह्मप्रियम् जोषयन्ते वरेव।2।
5175. अधि द्वयोः अदधा उक्थ्यम् वचो,
यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः।
असम्यत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति,
भद्रा शक्तिः यजमानाय सुन्वते।3।
5176. आत् अङ्गिराः प्रथमम् दधिरे वय,
इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया।
सर्वम् पणेः सम् अविन्दन्त भोजनम्,
अश्ववन्तम् गोमन्तम् आ पशुम् नरः4
5177. यज्ञैः अथर्वा प्रथमः पथः तते,
ततः सूर्यो व्रतपा वेन आ अजनि।
आ गाः आजत् उशना काव्यः सचा,
यमस्य जातम् अमृतम् यजामहे।5।
5178. बर्हिः वा यत् स्वपत्याय वृज्यते,
अर्को वा श्लोकम् आघोषते दिवि।
ग्रावा यत्र वदति कारुः उक्थ्यः,
तस्य इत् इन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति।6।
5179. प्र उग्राम् पीतिम् वृष्णे इयर्मि सत्याम्,
प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्।

इन्द्र धेनाभिः इह मादयस्व,
धीभिः विश्वाभिः शच्या गृणानः।7।

सूक्त-26

5180. योगेयोगे तवस्तरम्, वाजेवाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये।1।
5181. आ घा गमत् यदि श्रवत्, सहस्रिणीभिः ऊतिभिः।
वाजेभिः उप नो हवम्।2।
5182. अनु प्रत्नस्य ओकसो, हुवे तुविप्रतिम् नरम्।
यम् ते पूर्वम् पिता हुवे।3।
5183. युञ्जन्ति ब्रध्नम् अरुषम्, चरन्तम् परि तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि।4।
5184. युञ्जन्ति अस्य काम्या, हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू नृवाहसा।5।
5185. केतुम् कृण्वन् अकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
सम् उषद्-भिः अजायथाः।6।

सूक्त-27

5186. यत् इन्द्र अहम् यथा, त्वम् ईशीय वस्व एक इत्।
स्तोता मे गोषखा स्यात्।1।
5187. शिक्षेयम् अस्मै दित्सेयम्, शचीपते मनीषिणे।
यत् अहम् गोपतिः स्याम्।2।
5188. धेनु ते इन्द्र सूनृता, यजमानाय सुन्वते।
गाम् अश्वम् पिप्युषी दुहे।3।
5189. न ते वर्ता अस्ति राधस, इन्द्र देवो न मर्त्यः।
यत् दित्यति स्तुतो मघम्।4।
5190. यज्ञ इन्द्रम् अवर्धयत्, यत् भूमिम् वि अवर्तयत्।
चक्राण ओपशम् दिवि।5।
5191. वावृधानस्य ते वयम्, विश्वा धनानि जिग्युषः।
ऊतिम् इन्द्र आ वृणीमहे।6।

सूक्त-28

5192. वि अन्तरिक्षम् अतिरत्, मदे सोमस्य रोचना।
इन्द्रो यत् अभिनत् वलम्।1।
5193. उत् गा आजत् अङ्गिरोभ्य,
आविः कृण्वन् गुहा सतीः।
अर्वाञ्चम् नुनुदे वलम्।2।
5194. इन्द्रेण रोचना दिवो, दृह्णानि दृंहितानि च।
स्थिराणि न परानुदे।3।
5195. अपाम् ऊर्मिः मदनेव, स्तोम इन्द्र अजिरयते।
वि ते मदा अराजिषुः।4।

सूक्त-29

5196. त्वम् हि स्तोमवर्धन, इन्द्र असि उक्थवर्धनः।
स्तोतृणाम् उत भद्रकृत्।1।
5197. इन्द्रम् इत् केशिना, हरी सोमपेयाय वक्षतः।
उप यज्ञम् सुराधसम्।2।
5198. अपाम् फेनेन नमुचेः, शिर इन्द्र उत् अवर्तयः।
विश्वा यत् अजय स्पृधः।3।
5199. मायाभिः उत्सिसृप्स, इन्द्र द्याम् आरुरुक्षतः।
अव दस्यून् अधूनुथाः।4।
5200. असुन्वाम् इन्द्र सम्सदम्, विषूचीम् वि अनाशयः।
सोमपा उत्तरो भवन्।5।

सूक्त-30

5201. प्र ते महे विदथे शंसिषम् हरी,
प्र ते वन्व वनुषो हर्यतम् मदम्।
घृतम् न यो हरिभिः चारु सेचत,
आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसम् गिरः।1।
5202. हरिम् हि योनिम् अभि ये समस्वरन्,
हिन्वन्तो हरी दिव्यम् यथा सदः।
आ यम् पृणन्ति हरिभिः न,
धेनव इन्द्राय शूषम् हरिवन्तम् अर्चत।2।
5203. सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो,
हरिः निकामो हरिः आ गभस्त्योः।
द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक,
इन्द्रे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे।3।
5204. दिवि न केतुः अधि धायि हर्यतो,
विव्यचत् वज्रो हरितो न रंह्या।
तुदत् अहिम् हरिशिप्रो य आयसः,
सहस्रशोका अभवत् हरिम्भरः।4।
5205. त्वम्-त्वम् अहर्यथा उपस्तुतः,
पूर्वेभिः इन्द्र हरिकेश यज्वभिः।
त्वम् हर्यमि तव विश्वम् उक्थ्यम्,
असामि राधो हरिजात हर्यतम्।5।

सूक्त-31

5206 ता वज्रिणम् मन्दिनम् स्तोम्यम्,
मदे इन्द्रम् रथे वहतो हर्यता हरी।
पुरूणि अस्मै सवनानि हर्यते,
इन्द्राय सोमा हरयो दधन्वरे।1।
5207. अरम् कामाय हरयो दधन्विरे,
स्थिराय हिन्वन् हरयो रही तुरा।
अर्वद्-भिः यो हरिभिः जोषम् ईयते,
सो अस्य कामम् हरिवन्तम् आनशे।2।
5208. हरिश्मशारुः हरिकेश आयसः,
तुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत।
अर्वद्-भिः यो हरिभिः वाजिनीवसुः,
अति विश्वा दुरिता पारिषत् हरी।3।
5209. स्रुवेव यस्य हरिणी विपततुः,

शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः।
प्र यत् कृते चमसे मर्मृजत् हरी,
पीत्वा मदस्य हर्यतस्य अन्धसः।4।
5210.उत स्म सद्‌म हर्यतस्य पस्त्योः,
अत्यो न वाजम् हरिवान् अचिक्रदत्।
मही चित् हि धिषणा अहर्यत् ओजस,
बृहत् वयो दधिषे हर्यतः चित् आ।5।

सूक्त -32

5211. आ रोदसी हर्यमाण महित्वा,
नव्यम्नव्यम् हर्यसि मन्म नु प्रियम्।
प्र पस्त्याम् असुर हर्यतम् गोः आविः,
कृधि हरये सूर्याय हरये सूर्याय।1।
5212. आ त्वा हर्यन्तम् प्रयुजो जनानाम्,
रथे वहन्तु हरिशिप्रम् इन्द्र।
पिब यथा प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन्,
यज्ञम् सधमादे दशोणिम्।2।
5213. अपाः पूर्वषाम् हरिवः सुतानाम्,
अथो इदम् सवनम् केवलम् ते।
ममद्धि सोमम् मधुमन्तम्,
इन्द्र सत्रा वृषन् जठर आ वृषस्व।3।

सूक्त-33

5214. अप्सु धूतस्य हरिवः पिब इह,
नृभिः सुतस्य जठरम् पृणस्व।
मिमिक्षु यम् अद्रय इन्द्र तुभ्यम्,
तेभिः वर्धस्व मदम् उक्थवाहः।1।
5215. प्र उग्राम् पीतिम् वृष्णे इयर्मि सत्याम्,
प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्।
इन्द्र धेनाभिः इह मादयस्व,
धीभिः विश्वाभिः शच्या गृणानः।2।
5216. ऊती शचीवः तव वीर्येण,
वयो दधाना उशिज ऋतज्ञाः।
प्रजावत् इन्द्र मनुषो दुरोणे,
तस्थुः गृणन्तः सधमाद्यासः।3।

सूक्त-34

5217. यो जात एव प्रथमो मनस्वान्,
देवो देवान् ऋतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेताम्,
नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।1।
5218. यः पृथिवीम् व्यथमानाम् अदृंहत्,
यः पर्वतान् प्रकुपितान् अरभ्णात्।
यो अन्तरिक्षम् विममे वरीयो,
यो द्याम् अस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः।2।
5219. यो हत्वा अहिम् अरिणात् सप्त सिन्धून्,
यो गा उदाजत् अपधा वलस्य।
यो अश्मनो अन्तः अग्निम् जजान,
सम्वृक् समत्सु स जनास इन्द्रः।3।
5220. येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि,
यो दासम् वर्णम् अधरम् गुहा कः।
श्वघ्नीव यो जिगीवान् लक्षम् आदत्,
अर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः।4।
5221. यम् स्मा पृच्छन्ति कुह स इति घोरम्,
उत ईम् आहुः न एषः अस्ति इति एनम्।
सो अर्यः पुष्टीः विज इव आ मिनाति,
श्रत् अस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।5।
5222. यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य,
यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो यो अविता सुशिप्रः,
सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः।6।
5223. यस्य अश्वासः प्रदिशि यस्य गावो,
यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यम् य उषसम् जजान,
यो अपाम् नेता स जनास इन्द्रः।7।
5224. यम् क्रन्दसी संयती विह्वयेते,
परे अवर उभया अमित्राः।
समानम् चित् रथम् आतस्थिवांसा,
नाना हवेते स जनास इन्द्रः।8।
5225. यस्मात् न ऋते विजयन्ते जनासो,
यम् युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानम् बभूव,
यो अच्युत्च्युत् स जनास इन्द्रः।9।
5226. यः शश्वतो महि एनो दधानान्,
अमन्यमानान् शर्वा जघान।
यः शर्धते न अनुददाति शृध्याम्,
यो दस्योः हन्ता स जनास इन्द्रः।10।
5227. यः शम्बरम् पर्वतेषु क्षियन्तम्,
चत्वारिंश्याम् शरदि अनु-अविन्दत्।
ओजायमानम् यो अहिम् जघान,
दानुम् शयानम् स जनास इन्द्रः।11।
5228.यः शम्बरम् परि अतरत् कसीभिः,
यो अचारु कास्ना अपिबत् सुतस्य।
अन्तः गिरौ यजमानम् बहुम् जनम्,
यस्मिन् ना मूर्छत् स जनास इन्द्रः।12।
5229. यः सप्तरश्मिः वृषभः तुर्विष्मान्,
अव-असृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणम् अस्फुरत् वज्रबाहुः,

द्याम् आ-रोहन्तम् स जनास इन्द्रः।13।
5230. द्यावा चित् अस्मै पृथिवी नमेते,
शुष्मात् चित् अस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहु,
यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः।14।
5231. यः सुन्वन्तम् अवति यः पचन्तम्,
यः शंसन्तम् यः शशमानम् ऊती।
यस्य ब्रह्म वर्धनम् यस्य सोमो,
यस्य इदम् राधः स जनास इन्द्रः।15।
5232. जातो व्यख्यत् पित्रोः उपस्थे,
भुवो न वेद जनितु परस्य।
स्तविष्यमाणो नो यो अस्मत्,
व्रता देवानाम् स जनास इन्द्रः।16।
5233. यः सोम-कामो हर्यः वः सूरिः,
यस्मात् रेजन्ते भुवनानि विश्वा।
यो जघान शम्बरम् यः च शुष्णम्,
य एकवीरः स जनास इन्द्रः।17।
5234. यः सुन्वते पचते दुध्रः आ चित्,
वाजम् दर्दर्षि स किल असि सत्यः।
वयम् ते इन्द्र विश्वह प्रियासः,
सुवीरासो विदथम् आ वदेम।18।

सूक्त-35

5235. अस्मा इत् उ प्र तवसे तुराय,
प्रयो न हर्मि स्तोमम् माहिनाय।
ऋचीषमाय अध्रिगवे ओहम्, इन्द्राय ब्रह्माणि राततमा।1।
5236. अस्मा इत् उ प्रयिव प्र यंसि,
भरामि आङ्गषम् बाधे सुवृक्ति।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा,
प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त।2।
5237. अस्मा इत् उ त्यम् उपमम्,
स्वः षाम् भरामि आङ्गषम् आस्येन।
मंहिष्ठम् अच्छोक्तिभिः मतीनाम्,
सुवृक्तिभिः सूरिम् वावृधध्यै।3।
5238. अस्मा इत् उ स्तोमम् सम् हिनोमि,
रथम् न तष्टेव तत्सिनाय।
गिरः च गिर्वाहसे सुवृक्ति,
इन्द्राय विश्वमेन्वम् मेधिराय।4।
5239. अस्मा इत् उ सप्तिमिव श्रवस्या,
इन्द्राय अर्कम् जुह्वा सम् अञ्जे।
वीरम् दानोकसम् वन्दध्यै, पुराम् गूर्तश्रवसम् दर्माणम्।5।
5240. अस्मा इत् उ त्वष्टा तक्षत्,
वज्रम् स्वपस्तमम् स्वर्यम् रणाय।
वृत्रस्य चित् विदत् येन मर्म,
तुजन् ईशानः तुजता कियेधाः।6।
5241. अस्य इत् उ मातुः सवनेषु सद्योः,
महः पितुम् पपिवान् चारु अन्ना।
मुषायत् विष्णुः पचतम् सहीयान्,
विध्यत् वराहम् तिरो अद्रिम् अस्ता।7।
5242.अस्मा इत् उ ग्नाः चित् देवपत्नीः,
इन्द्राय अर्कम् अहिहत्य ऊवुः।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी,
न अस्य ते महिमानम् परि ष्टः।8।
5243. अस्य इत् एव प्र रिरिचे महित्वम्,
दिवः पृथिव्याः परि अन्तरिक्षात्।
स्वराट् इन्द्रो दमे आ विश्वगूर्तः,
स्वरिः अमत्रो ववक्षे रणाय।9।
5244. अस्य इत् एव शवसा शुषन्तम्,
वि वृश्चत् वज्रेण वृत्रम् इन्द्रः।
गा न व्राणा अवनीः अमुश्चत्,
अभि श्रवो दावने सचेताः।10।
5245. अस्य इत् उ त्वेषसा रन्त सिन्धवः,
परि यत् वज्रेण सीम् अयच्छत्।
ईशानकृत् दाशुषे दशस्यन्, तुर्वीतये गाधम् तुर्वणिः कः।11।
5246. अस्मा इत् उ प्र भर तूतुजानो,
वृत्राय वज्रम् ईशानः कियेधाः।
गोः न पर्व वि रद तिरश्चा,
इष्यन् अर्णांसि अपाम् चरध्यै।12।
5247. अस्य इत् उ प्र ब्रूहि पूर्व्याणि,
तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः।
युधे यत् इष्णान आयुधानि,
ऋघायमाणो निरिणाति शत्रून्।13।
5248. अस्य इत् उ भिया गिरयः च दृह्ला,
द्यावा च भूमा जनुषः तुजेते।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिम्,
सद्यो भुवत् वीर्याय नोधाः।14।
5249. अस्मा इत् उ त्यत् अनु दायि,
एषाम् एको यत् वव्ने भूरेः ईशानः।
प्र एतशम् सूर्ये पस्पृधानम्,
सौवश्व्ये सुष्विम् आवत् इन्द्रः।15।
5250. एवा ते हारियोजना सुवृक्ति,
इन्द्र ब्रह्माणि गोत-मासो अक्रन्।
आ एषु विश्वपेशसम् धियम् धाः प्रातः,
मक्षु धियावसुः जगम्यात्।16।

सूक्त-36

5251. य एक इत् हव्यः चर्षणीनाम् इन्द्रम्,
तम् गीर्भिः अभि अर्चे आभिः।
यः पत्यते वृषभो वष्ण्यवान्,
सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्।1।
5252. तम् उ नः पूर्वे पितरो नवग्वाः,
सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः।
नक्षद्-दाभम् ततुरिम् पर्वतेष्ठाम्,
अद्रोघवाचम् अतिभिः शविष्ठम्।2।
5253. तम् ईमहे इन्द्रम् अस्य रायः,
पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः।
यो अस्कृधोयुः अजरः स्वर्वान्,
तम् आ भर हरिवो मादयध्यै।3।
5254. तत् नो वि वोचो यदि ते पुरा,
चित् जरितार आनशुः सुम्नम् इन्द्र।
कः ते भागः किम् वयो दुध्र,
खिद्वः पुरुहूत पुरुवसो असुरघ्नः।4।
5255. तम् पृच्छन्ती वज्रहस्तम् रथेष्ठाम्,
इन्द्रम् वेपी वक्वरी यस्य नू गीः।
तुविग्राभम् तुविकूर्मिम् रभोदाम्,
गातुम् इषे नक्षते तुम्रम् अच्छ।5।
5256. अया ह त्यम् मायया वावृधानम्,
मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन।
अच्युता चित् वीलिता स्वोजो,
रुजो वि दृह्ला धृषता विरप्शिन्।6।
5257. तम् वो धिया नव्यस्या शविष्ठम्,
प्रत्नम् प्रत्नवत् परितंसयध्यै।
स नो वक्षत् अनिमानः सुवह्मा,
इन्द्रो विश्वानि अति दुर्गहानि।7।
5258. आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि,
दिव्यानि दीपयो अन्तरिक्षा।
तपा वृषन् विश्वतः शोचिषा,
तान् ब्रह्म-द्विषे शोचय क्षाम् अपः च।8।
5259. भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा,
पार्थिवस्य जगतः त्वेषसंदृक्।
धिष्व वज्रम् दक्षिण इन्द्र हस्ते,
विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः।9।
5260. आ सम्यतम् इन्द्र णः स्वस्तिम्,
शत्रुतूर्याय बृहतीम् अमृध्राम्।
यया दासानि आर्याणि वृत्रा करो,
वज्रिन् सुतुका नाहुषाणि।10।
5261. स नो नियुद्-भिः पुरुहूत वेधो,
विश्ववासभिः आ गहि प्रयज्यो।
न या अदेवो वरते न देव,
आभिर्याहि तूयमा मद्र्यद्रिक्।11।

सूक्त-37

5262. यः तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम,
एकः कृष्टीः च्यवयति प्र विश्वाः।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य,
प्रयन्ता असि सुष्वितराय वेदः।1।
5263. त्वम् ह त्यत् इन्द्र कुत्सम्,
आवः शुश्रूषमाणः तन्वा समर्ये।
दासम् यत् शुष्णम् कुयवम् नि अस्मै,
अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन्।2।
5264. त्वम् धृष्णो धृषता वीतहव्यम्,
प्र आवो विश्वाभिः ऊतिभिः सुदासम्।
प्र पौरुकुत्सिम् त्रसदस्युम् आवः,
क्षेत्र-साता वृत्रहत्येषु पूरुम्।3।
5265. त्वम् नृभिः नृमणो देववीतौ,
भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि।
त्वम् नि दस्युम् चुमुरिम् धुनिम्,
च अस्वापयो दभीतये सुहन्तु।4।
5266. तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि,
नव यत् पुरो नवतिम् च सद्यः।
निवेशने शततमा अविवेषीः अहन्,
च वृत्रम् नमुचिम् उत अहन्।5।
5267. सना ता त इन्द्र भोजनानि,
रातहव्याय दाशुषे सुदासे।
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि,
व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम्।6।
5268. मा ते अस्याम् सहसावन्,
परिष्टौ अघाय भूम हरिवः परादै।
त्रायस्व नो अवृकेभिः वरूथैः, तव प्रियासः सूरिषु स्याम।7।
5269. प्रियास इत् ते मघवन् अभिष्टौ,
नरो मदेम शरणे सखायः।
नि तुर्वशम् नि याद्वम् शिशीहि,
अतिथिग्वाय शंस्यम् करिष्यन्।8।
5270. सद्यः चित् नु ते मघवन् अभिष्टौ,
नरः शंसन्ति उक्थशास उक्था।
ये ते हवेभिः वि पणीन् अदाशन्,
अस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै।9।
5271. एते स्तोमा नराम् नृतम,
तुभ्यम् अस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि।
तेषाम् इन्द्र वृत्रहत्ये शिवो,
भूः सखा च शूरोविता च नृणाम्।10।
5272. नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती,

ब्रह्मजूतः तन्वा वावृधस्व।
उप नो वाजान् मिमीहि उप स्तीन्,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः।11।

सूक्त-38

5273. आ याहि सुषुमा हि त, इन्द्र सोमम् पिबा इमम्।
आ इदम् बर्हिः सदो मम।1।
5274. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी, वहताम् इन्द्र केशिना।
उप ब्रह्माणि नः शृणु।2।
5275. ब्रह्माणः त्वा वयम् युजा, सोमपाम् इन्द्र सोमिनः।
सुतावन्तो हवामहे।3।
5276. इन्द्रम् इत् गाथिनो बृहत्, इन्द्रम् अर्केभिः अर्किणः।
इन्द्रम् वाणीः अनूषत।4।
5277. इन्द्र इत् हर्योः सचा, सम्मिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः।5।
5278. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस, आ सूर्य रोहयत् दिवि।
वि गोभिः अद्रिम् ऐरयत्।6।

सूक्त-39

5279. इन्द्रम् वो विश्वतः, परि हवामहे जनेभ्यः।
अस्माकम् अस्तु केवलः।1।
5280. वि अन्तरिक्षम् अतिरत्, मदे सोमस्य रोचना।
इन्द्रो यत् अभिनत् वलम्।2।
5281. उत् गा आजत् अङ्गिरोभ्य,
आविः कृण्वन् गुहा सतीः।
अर्वाञ्चम् नुनुदे वलम्।3।
5282. इन्द्रेण रोचना दिवो, दृल्हानि दृंहितानि च।
स्थिराणि न पराणुदे।4।
5283. अपाम् ऊर्मिः मदनिव स्तोम इन्द्र अजिरयते।
वि ते मदा अराजिषुः।5।

सूक्त-40

5284. इन्द्रेण सम् हि दृक्षसे, संजग्मानो अबिभ्युषा।
मन्दू समानवर्चसा।1।
5285. अनवद्यैः अभिद्युभिः, मखः सहस्वत् अर्चति।
गणैः इन्द्रस्य काम्यैः।2।
5286. आत् अह स्वधाम् अनु, पुनः गर्भत्वम् ऐरिरे।
दधाना नाम यज्ञियम्।3।

सूक्त-41

5287. इन्द्रो दधीचो अस्थभिः, वृत्राणि अप्रतिस्कुतः।
जघान नवतीः नव।1।
5288. इच्छन् अश्वस्य यत् शिरः, पर्वतेषु अपश्रितम्।
तत् विदत् शर्यणावति।2।
5289. अत्र अङ गोः अमन्वत, नाम त्वष्टुः अपीच्यम्।
इत्था चन्द्रमसो गृहे।3।

सूक्त-42

5290. वाचम् अष्टापदीम् अहम्, नवस्रक्तिम् ऋतस्पृशम्।
इन्द्रात् परि तन्वम् ममे।1।
5291. अनु त्वा रोदसी उभे, क्रक्षमाणम् अकृपेताम्।
इन्द्र यत् दस्युहा अभवः।2।
5292. उत्तिष्ठन् ओजसा, सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः।
सोमम् इन्द्र चमू सुतम्।3।

सूक्त-43

5293. भिन्धि विश्वा अप द्विषः, परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर।1।
5294. यत् वीलौ इन्द्र यत् स्थिरे, यत् पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर।2।
5295. यस्य ते विश्वमानुषो, भूरेः दत्तस्य वेदति।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर।3।

सूक्त-44

5296. प्र सम्राजम् चर्षणीनाम्,
इन्द्रम् स्तोता नव्यम् गीर्भिः।
नरम् नृषाहम् मंहिष्ठम्।1।
5297. यस्मिन् उक्थानि रण्यन्ति, विश्वानि च श्रवस्या।
अपाम् अवो नः समुद्रे।2।
5298. तम् सु ष्टुत्या विवासे, ज्येष्ठराजम् भरे कृत्नुम्।
महो वाजिनम् सनिभ्यः।3।

सूक्त-45

5299. अयम् उ ते सम् अतसि, कपोत इव गर्भधिम्।
वचः तत् चित् न ओहसे।1।
5300. स्तोत्रम् राधानाम् पते, गिर्वाहो वीर यस्य ते।
विभूतिः अस्तु सूनृता।2।
5301. ऊर्ध्वः तिष्ठ न ऊतये, अस्मिन् वाजे शतक्रतो।
अन्येषु ब्रवावहै।3।

सूक्त-46

5302. प्रणेतारम् वस्यो अच्छ, कर्तारम् ज्योतिः समत्सु।
सासह्वांसम् युधा अमित्रान्।1।
5303. स नः पप्रिः पारयाति, स्वस्ति नावा पुरुहूतः।
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः।2।
5304. स त्वम् न इन्द्र वाजेभिः, दशस्य च गातुया च।
अच्छ च नः सुम्नम् नेषि।3।

सूक्त-47

5305. तम् इन्द्रम् वादयामसि, महे वृत्राय हन्तवे।
स वृषा वृषभो भुषत्।1।
5306. इन्द्रः स दामने कृत, ओजिष्ठः स मदे हितः।
द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः।2।
5307. गिरा वज्रो न सम्भृतः, स-बलो अनपच्युतः।

ववक्षे ऋष्वो अस्तृतः।3।
5308. इन्द्रम् इत् गाथिनो बृहत्, इन्द्रम् अर्केभिः अर्किणः।
इन्द्रम् वाणीः अनूषत।4।
5309. इन्द्र इत् हर्योः सचा, सम्मिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः।5।
5310. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस, आ सूर्यम् रोहयत् दिवि।
वि गोभिः अद्रिम् ऐरयत्।6।
5311. आ याहि सुषुमा हि, त इन्द्र सोमम् पिवा इमम्।
आ इदम् बर्हिः सदो मम।7।
5312. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी, वहताम् इन्द्र केशिना।
उप ब्रह्माणि नः शृणु।8।
5313. ब्रह्माणः त्वा वयम् युजा, सोमपाम् इन्द्र सोमिनः।
सुतावन्तो हवामहे।9।
5314. युञ्जन्ति ब्रध्नम् अरुषम्, चरन्तम् परि तस्थुष।
रोचन्ते रोचना दिवि।10।
5315. युञ्जन्ति अस्य काम्या, हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू नृवाहसा।11।
5316. केतुम् कृण्वन् अकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
सम् उषद्-भिः अजायथाः।12।
5317. उत् उ त्यम् जातवेदसम्, देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।13।
5318. अप त्ये तायवो यथा, नक्षत्रा यन्ति अक्तुभिः।
सूराय विश्वचक्षसे।14।
5319. अदृश्रन् अस्य केतवो, वि रश्मयो जनान् अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा।115।
5320. तरणिः विश्वदर्शतो, ज्योतिष्कृत् असि सूर्य।
विश्वम् आ भासि रोचन।16।
5321. प्रत्यङ् देवानाम् विशः, प्रत्यङ् उत् एषि मानुषीः।
प्रत्यङ् विश्वम् स्वः दृशे।17।
5322. येना पावक चक्षसा, भुरण्यन्तम् जनान् अनु।
त्वम् वरुण पश्यसि।18।
5323. वि द्याम् एषि रजः पृथु, अहः मिमानो अक्तुभिः।
पश्यन् जन्मानि सूर्य।19।
5324. सप्त त्वा हरितो, रथे वहन्ति देव सूर्य।
शोचिष्केशम् विचक्षणम्।20।
5325. अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः, सूरो रथस्य नप्त्यः।
ताभिः याति स्वयुक्तिभिः।21।

सूक्त-48

5326. अभि त्वा वर्चसा गिरः, सिञ्चन्तीः आचरण्यवः।
अभि वत्सम् न धेनवः।1।
5327. ता अर्षन्ति शुभ्रियः, पृञ्चन्तीः वर्चसा प्रियः।
जातम् जात्रीः यथा हृदा।2।
5328. वज्रा पवसाध्यः कीर्तिः, म्रियमाणम् आवहन्।
मह्यम् आयुः घृतम् पयः।3।
5329. आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्,
असदत् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः।4।
5330. अन्तः चरति रोचना, अस्य प्राणात् अपानतः।
वि अख्यत् महिषः स्वः।5।
5331. त्रिंशत् धामा वि राजति, वाक् पतङ्गो अशिश्रियत्।
प्रति वस्तोः अहः द्युभिः।6।

सूक्त-49

5332. य शक्रा वाचम आरुन, अन्तरिक्षम् सिषासथः।
सम् देवा अमदन् वृषा।1।
5333. शक्रो वाचम धृष्टाया, उरुवाचो अधृष्णुहि।
मंहिष्ठ आ मदः दिवि।2।
5334. शक्रो वाचम धृष्णुहि, धाम धर्मन् वि रजति।
विमदन् बर्हिः आसरन्।3।
5335. तम् वो दस्मम् ऋतीसहम्,
वसोः मन्दानम् अन्धसः।
अभि वत्सम् न स्वसरेषु, धेनव इन्द्रम् गीर्भिः नवामहे।4।
5336. द्युक्षम् सुदानुम् तविषीभिः,
आवृतम् गिरिम् न पुरुभोजसम्।
क्षुमन्तम् वाजम् शतिनम्,
सहस्रिणम् मक्षू गोमन्तम् ईमहे।5।
5337. तत् त्वा यामि सुवीर्यम्, तत् ब्रह्म पूर्वचित्तये।
येना यतिभ्यो भृगवे धने, हिते येन प्रस्कण्वम् आविथ।6।
5338. येन समुद्रम् असृजो महीः,
अपः तत् इन्द्र वृष्णि ते शवः।
सद्यः सो अस्य महिमा न,
सम्नशे यम् क्षोणीः अनुचक्रदे।7।

सूक्त-50

5339. कत् नव्यो अतसीनाम्, तुरो गृणीत मर्त्यः।
नही नु अस्य महिमानम्,
इन्द्रियम् स्वः गृणन्त आनशुः।1।
5340. कत् उ स्तुवन्त ऋतयन्त,
देवता ऋषि को विप्र ओहते।
कदा हवम् मघवन् इन्द्र सुन्वतः,
कत् उ स्तुवत आ गमः।2।

सूक्त-51

5341. अभि प्र वः सुराधसम्, इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा, पुरूवसु सहस्रेणिव शिक्षति।1।
5342. शतानीकेव प्र जिगाति,
धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे।

गिरेरिव प्र रसा अस्य, पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः।2।
5343. प्र सु श्रुतम् सुराधसम्, अर्च शक्रम् अभिष्टये।
यः सुन्वते स्तुवते काम्यम्, वसु सहस्रेणिव मंहते।3।
5344. शतानीका हेतयो अस्य,
दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः।
गिरिः न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते,
यत् ईम् सुता अमन्दिषुः।4।

सूक्त-52

5345. वयम् घ त्वा सुतवन्त, आपो न वृक्तबर्हिषः।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्, परि स्तोतार आसते।1।
5346. स्वरन्ति त्वा सुते नरो, वसो निरेके उक्थिनः।
कदा सुतम् तृषाण ओक आ गम,
इन्द्र स्वब्दी-इव वंसगः।2।
5347. कण्वेभिः धृष्णो आ धृषत्, वाजम् दर्षि सहस्रिणम्।
पिशङ्गरूपम् मघवन् विचर्षणे, मक्षु गोमन्तम् ईमहे।3।

सूक्त-53

5348. क ईम् वेद सुते सचा, पिबन्तम् कत् वयो दधे।
अयम् यः पुरो विभिनत्ति,
ओजसा मन्दानः शिप्री अन्धसः।1।
5349. दाना मृगो न वारणः, पुरुत्रा चरथम् दधे।
नकिः त्वा नि यमत् आ सुते,
गमो महान् चरसि ओजसा।2।
5350. य उग्रः सन् अनिस्तृतः, स्थिरो रणाय संस्कृतः।
यदि स्तोतुः मघवा शृणवत्,
हवम् न इन्द्रो योषति आ गमत्।3।

सूक्त-54

5351. विश्वाः पृतना अभिभूतरम् नरम् सजूः,
ततक्षुः इन्द्रम् जजनुः च राजसे।
क्रत्वा वरिष्ठम् वर आमुरिम्,
उत उग्रम् ओजिष्ठम् तवसम् तरस्विनम्।1।
5352. सम् ईम् रेभासो अस्वरन्, इन्द्रम् सोमस्य पीतये।
स्वर्पतिम् यत् ईम् वृधे धृतव्रतो,
हि ओजसा सम् ऊतिभिः।2।
5353. नेमिम् नमन्ति चक्षसा, मेषम् विप्रा अभिस्वरा।
सुदीतयो वो अद्रुहो अपि, कर्णे तरस्विनः सम् ऋक्व-भि।3।

सूक्त-55

5354. तम् इन्द्रम् जोहवीमि मघवानम् उग्रम्,
सत्रा दधानम् अप्रतिस्कुतम् शवांसि।
मंहिष्ठो गीर्भिः आ च यज्ञियो ववर्तत्,
राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री।1।
5355. या इन्द्र भुज आ अभरः, स्वर्वान् असुरेभ्यः।
स्तोतारम् इत् मघवन् अस्य,
वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः।2।
5356. यम् इन्द्र दधिषे त्वम् अश्वम्,
गाम् भागम् अव्ययम्।
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति,
तस्मिन् तम् धेहि मा पणौ।3।

सूक्त-56

5357. इन्द्रो मदाय वावृधे, शवसे वृत्रहा नृभिः।
तम् इत् महत्सु आजिषु, उत ईम् अर्भे हवामहे,
स वाजेषु प्र नो अविषत्।1।
5358. असि हि वीर सेन्यो, असि भूरि परादिदः।
असि दभ्रस्य चित् वृधो यजमानाय,
शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु।2।
5359. यत् उदीरते आजयो, धृष्णवे धीयते धना।
युक्ष्वा मदच्युता हरी कम् हनः कम्,
वसौ दधो अस्मान् इन्द्र वसौ दधः।3।
5360. मदेमदे हि नो ददिः, यूथा गवाम् ऋजुक्रतुः।
सम् गृभाय पुरू शतो उभयाहस्त्या,
वसु शिशीहि राय आ भर।4।
5361. मादयस्व सुते सचा, शवसे शूर राधसे।
विद्मा हि त्वा पुरूवसुम् प कामान्,
ससृज्महे अथ नो अविता भव।5।
5362. एते त इन्द्र जन्तवो, विश्वम् पुष्यन्ति वार्यम्।
अन्तः हि ख्यो जनानाम् अर्यो वेदो,
अदाशुषाम् तेषाम् नो वेद आ भर।6।

सूक्त-57

5363. सुरूपकृत्नुम् ऊतये, सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि।1।
5364. उप नः सवना आ गहि, सोमस्य सोपाः पिब।
गोदा इत् रेवतो मदः।2।
5365. अथ ते अन्तमानाम्, विद्याम् सुमतीनाम्।
मा नो अति ख्य आ गहि।3।
5366. शुष्मिन्तम् न ऊतये, द्युम्निनम् पाहि जागृविम्।
इन्द्र सोमम् शतक्रतो।4।
5367. इन्द्रियाणि शतक्रतो, या ते जनेषु पञ्चसु।
इन्द्र तानि त आ वृणे।5।
5368. अगन् इन्द्र श्रवो बृहत, द्युम्नम् दधिष्व दुस्तरम्।
उत् ते शुष्मम् तिरामसि।6।
5369. अर्वावतो न आ गहि, अथो शक्र परावतः।
उ लोको यः ते अद्रिव, इन्द्र इह तत आ गहि।7।
5370. इन्द्रो अङ्ग महत् भयम्, अभि सत् अप चुच्यवत्।
स हि स्थिरो विचर्षणिः।8।
5371. इन्द्रः च मृलयाति नो, न नः पश्चात् अघम् नशत्।

भद्रम् भवाति नः पुरः।9।
5372. इन्द्र आशाभ्यः परि, सर्वाभ्यो अभयम् करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणिः।10।
5373. क ईम् वेद सुते सचा, पिबन्तम् कत् वयो दधे।
अयम् यः पुरो विभिनत्ति,
ओजसा मन्दानः शिप्री अन्धसः।11।
5374. दाना मृगो न वारणः, पुरूत्रा चरथम् दधे।
नकिः त्वा नि यमत् आ सुते,
गमो महान् चरसि ओजसा।12।
5375. य उग्रः सन् अनिसतृतः, स्थिरो रणाय संस्कृतः।
यदि स्तोतुः मघवा शृणवत्,
हवम् न इन्द्रो योषति आ गमत्।13।
5376. वयम् घ त्वा सुतवन्त, आपो न वृक्तबर्हिषः।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्, परि स्तोतार आसते।14।
5377. स्वरन्ति त्वा सुते नरो, वसो निरेके उक्थिनः।
कदा सुतम् तृषाण ओक, आ गम इन्द्र स्वब्दीवंसगः।15।
5378. कण्वेभिः धृष्णो आ धृषत्, वाजम् दर्षि सहस्रिणम्।
पिशङ्गरूपम् मघवन् विचर्षणे, मक्षु गोमन्तम् ईमहे।16।

सूक्त-58

5379. श्रायन्त इव सूर्यम् विश्वा, इत् इन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जाते जनमाने ओजसा, प्रति भागम् न दीधिम।1।
5380. अनर्शरातिम् वसुदाम्,
उप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः।
सो अस्य कामम् विधतो न रोषति,
मनो दानाय चोदयन्।2।
5381. बट् महान् असि सूर्य बट्, आदित्य महान् असि।
महः ते सतो महिमा पनस्यते, अद्धा देव महान् असि।3।
5382. बट् सूर्य श्रवसा महान् असि,
सत्रा देव महान् असि।
मह्ना देवानाम् असुर्यः पुरोहितो,
विभु ज्योतिः अदाभ्यम्।4।

सूक्त-59

5383. उत् उ त्ये मधुमत्तमा, गिर स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो, वाजयन्तो रथा इव।1।
5384. कण्वा इव भृगवः सूर्या इव,
विश्वम् इत् धीतम् आनशुः।
इन्द्रम् स्तोमेभिः महयन्त आयवः, प्रियमेधासो अस्वरन्।2।
5385. उत् इत् नु अस्य रिच्यते, अशो धनम् न जिग्युषः।
य इन्द्रो हरिवान् न दभन्ति,
तम् रिपो दक्षम् दधाति सोमिनि।3।
5386. मन्त्रम् अखर्वम् सुधितम्,
सुपेशसम् दधात यज्ञियेषु आ।
पूर्वीः चन प्रसितय तरन्ति, तम् य इन्द्रे कर्मणा भुवत्।4।

सूक्त-60

5387. एवा हि असि वी-युः, एव शूर उत स्थिरः।
एवा ते राध्यम् मनः।1।
5388. एवा रातिः तुवीमघ, विश्वेभिः धायि धातृभिः।
अधा चित् इन्द्र मे सचा।2।
5389. मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुः, भुवो वाजानाम् पते।
मत्स्वा सुतस्य गोमतः।3।
5390. एवा हि अस्य सूनृता, विरप्शी गोमती मही।
पक्वा शाखा न दाशुषे।4।
5391. एवा हि ते विभूतय, ऊतय इन्द्र मावते।
सद्यः चित् सन्ति दाशुषे।5।
5392. एवा हि अस्य काम्या, स्तोम उक्थम् च शंस्या।
इन्द्राय सोमपीतये।6।

सूक्त-61

5393. तम् ते मदम् गृणीमसि, वृषणम् पृत्सु सासहिम्।
उ लोककृत्नुम्, अद्रिवो हरिश्रियम् ।1।
5394. येन ज्योतींषि आयवे, मनवे च विवेदिथ।
मन्दानो अस्य, बर्हिषो वि राजसि।2।
5395. तत् अद्य चित् उक्थिनो, अनु स्तुवन्ति पूर्वथा।
वृषपत्नीः अपो, जया दिवेदिवे।3।
5396. तम् उ अभि प्र गायत, पुरुहूतम् पुरुस्तुतम्।
इन्द्रम् गीर्भिः, तविषम् आ विवासत।4।
5397. यस्य द्विबर्हसो, बृहत् सहो दाधार रोदसी।
गिरीन् अज्रान् अपः, स्वः वृषत्वना।5।
5398. स राजसि पुरुस्तुतः, एको वृत्राणि जिघ्नसे।
इन्द्र जैत्रा, श्रवस्या च यन्तवे।6।

सूक्त-62

5399. वयम् उ त्वाम् अपूर्व्य स्थूरम्,
न कत् चित् भरन्तो अवस्यवः।
वाजे चित्रम् हवामहे।1।
5400. उप त्वा कर्मन् ऊतये स नो युवा,
उग्रः चक्राम यो धृषत्।
त्वाम् इत् हि अवितारम् ववृमहे, सखाय इन्द्र सानसिम्।2।
5401. यो न इदम्-इदम् पुरा प्र वस्य,
आनिनाय तम् उ व स्तुषे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये।3।
5402. हर्यश्वम् सत्पतिम् चर्षणीसहम्,
स हि ष्मा यो अमन्दत।
आ तु नः स वयति गव्यम्,
अश्व्यम् स्तोतृभ्यो मघवा शतम्।4।
5403. इन्द्राय साम गायत, विप्राय बृहते बृहत्।

धर्मकृते विपष्चिते पनस्यवे।5।
5404. त्वम् इन्द्र अभिभूः असि, त्वम् सूर्यम् अरोचयः।
विश्वकर्मा विश्वदेवो महान् असि।6।
5405. वि-भ्राजन् ज्योतिषा, स्वः अगच्छो रोचनम् दिवः।
देवाः त इन्द्र सख्याय येमिरे।7।
5406. तम् उ अभि प्र गायत, पुरुहूतम् पुरुस्तुतम्।
इन्द्रम् गीर्भिः तविषम् आ विवासत।8।
5407. यस्य द्विबर्हसो बृहत्, सहो दाधार रोदसी।
गिरीन् अज्रान् अपः स्वः वृषत्वना।9।
5408. स राजसि पुरुस्तुत, एको वृत्राणि जिघ्नसे।
इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे।10।

सूक्त-63

5409. इमा नु कम् भुवना सीसधाम,
इन्द्रः च विश्वे च देवाः।
यज्ञम् च नः तन्वम् च प्रजाम् च,
आदित्यैः इन्द्रः सह चीक्लृपाति।1।
5410. आदित्यैः इन्द्रः सगणो मरुद्-भिः,
अस्माकम् भूतु अविता तनूनाम्।
हत्वाय देवा असुरान् यत् आयन्,
देवा देवत्वम् अभिरक्षमाणाः।2।
5411. प्रत्यञ्चम् अर्कम् अनयन् शचीभिः,
आत् इत् स्वधाम् इषिराम् परि अपश्यन्।
अया वाजम् देवहितम्, सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः।3।
5412. य एक इत् विदयते, वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिस्कुत, इन्द्रो अङ्ग।4।
5413. कदा मर्तम् अराधसम्, पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवत्, गिर इन्द्रो अङ्ग।5।
5414. यः चित् हि त्वा बहुभ्य, आ सुतवान् आविवासति।
उग्रम् तत् पत्यते, शव इन्द्रो अङ्ग।6।
5415. य इन्द्र सोमपातमो, मदः शविष्ठ चेतति।
येना हंसि नि, अत्रिणम् तम् ईमहे।7।
5416. येना दशग्वम् अध्रिगुम्, वेपयन्तम् स्वर्णरम्।
येना समुद्रम्, आविथा तम् ईमहे।8।
5417. येन सिन्धुम् महीः, अपो रथानिव प्रचोदयः।
पन्थाम् ऋतस्य, यातवे तम् ईमहे।9।

सूक्त-64

5418. आ इन्द्र नो गधि, प्रियः सत्राजित् अगोह्यः।
गिरिः न विश्वतः, पृथुः पतिः दिवः।1।
5419. अभि हि सत्य सोमपा, उभे बभूथ रोदसी।
इन्द्र असि सुन्वतो, वृधः पतिः दिवः।2।
5420. त्वम् हि शश्वतीनाम्, इन्द्र दर्ता पुराम् असि।
हन्ता दस्योः मनोः, वृधः पतिः दिवः।3।
5421. आ इत् मध्वो मदिन्तरम्,
सिञ्च वा अध्वर्यो अन्धसः।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः।4।
5422. इन्द्र स्थातः हरीणाम्, नकिः ते पूर्व्यस्तुतिम्।
उत् आनंश शवसा न भन्दना।5।
5423. तम् वो वाजानाम्, पतिम् अहूमहि श्रवस्यवः।
अप्रायुभिः यज्ञेभिः वावृधेन्यम्।6।

सूक्त-65

5424. एतो नु इन्द्रम् स्तवाम, सखाय स्तोम्यम् नरम्।
कृष्टीः यो विश्वा, अभि अस्ति एक इत्।1।
5425. अगोरुधाय गविषे, द्युक्षाय दस्म्यम् वचः।
घृतात् स्वादीयो, मधुनः च वोचतः।2।
5426. यस्य अमितानि वीर्या, न राधः पर्येतवे।
ज्योतिः न विश्वम्, अभि अस्ति दक्षिणा।3।

सूक्त-66

5427. स्तुहि इन्द्रम् व्यश्ववत्, अनूर्मिम् वाजिनम् यमम्।
अर्यो गयम् महमानम् वि दाशुषे।1।
5428. एव नूनम् उप स्तुहि, वैयश्व दशमम् नवम्।
सुविद्वांसम् चर्कृत्वम् चरणीनाम्।2।
5429. वेत्थ हि निर्ऋतीनाम्, वज्रहस्त परिवृजम्।
अहः-अहः शुन्ध्युः परिपदामिव।3।

सूक्त-67

5430. वनोति हि सुन्वन् क्षयम्,
5431.परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजति,
अव द्विषो देवानाम् अव द्विषः सुन्वान,
इत् सिषासति सहस्रा वाजि अवृतः।
सुन्वानाय इन्द्रो ददाति आभुवम्,
रयिम् ददाति आभुवम्।1।
5431. मो षु वो अस्मत् अभि तानि,
पौस्या सना भूवन् द्युम्नानि,
मा उत जारिषुः अस्मत् पुरा उत जारिषुः।
यत् वः चित्रम् युगेयुगे, नव्यम् घोषात् अमर्त्यम्।
अस्मासु तत् मरुतो यत् च दुस्तरम्,
दिधृत यत् च दुस्तरम्।2।
5432. अग्निम् होतारम् मन्ये दास्वन्तम् वसुम् सूनुम्,
सहसो जातवेदसम्, विप्रम् न जातवेदसम्।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो, देवो देवाच्या कृपा घृतस्य विभ्राष्टिम्,
अनु वष्टि शोचिषा आजुह्वानस्य सर्पिषः।3।
5433. यज्ञैः सम्मिश्लाः पृषतीभिः ऋष्टिभिः,
यामन् शुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत।
आसद्या बर्हिः भरतस्य सूनवः पोत्रात्,
आ सोमम् पिबता दिवो नरः।4।

5434. आ वक्षि देवान् इह विप्र यक्षि,
च उशन् होतः नि षदा योनिषु त्रिषु।
प्रति वीहि प्रस्थितम् सोम्यम् मधु पिब,
आग्नीध्रात् तव भागस्य तृप्णुहि।5।
5435. एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः,
सह ओजः प्रदिवि बाह्वोः हितः।
तुभ्यम् सुतो मघवन् तुभ्यम् आभृतः,
त्वम् अस्य ब्राह्मणात् आ तृपत् पिब।6।
5436. यम् उ पूर्वम् अहुवे तम् इदम् हुवे,
स इत् उ हव्यो ददिः यो नाम पत्यते।
अध्वर्युभिः प्रस्थितम् सोम्यम् मधु पोत्रात्,
सोमम् द्रविणोदः पिब ऋतुभिः।7।

सूक्त-68

5437. सुरूपकृत्नुम् ऊतये, सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि।1।
5438. उप नः सवना आ गहि, सोमस्य सोमपाः पिब।
गो-दा उत् रेवतो मदः।2।
5439. अथ ते अन्तमानाम्, विद्याम सुमतीनाम्।
मा नो अति ख्य आ गहि।3।
5440. परा इहि विग्रम् अस्तृतम्,
इन्द्रम् पृच्छा विपश्चितम्।
यः ते सखिभ्य आ वरम्।4।
5441. उत ब्रुवन्तु नो निदो, निः अन्यतः चित् आरत।
दधाना इन्द्र इत् दुवः।5।
5442. उत नः सुभगान् अरिः, वोचेयुः दस्म कृष्टयः।
स्याम इत् इन्द्रस्य शर्मणि।6।
5443. आ ईम् आशुम् आशवे भर, यज्ञश्रियम् नृमादनम्।
पतयत् मन्दयत्सखम्।7।
5444. अस्य पीत्वा शतक्रतो, घनो वृत्राणाम् अभवः।
प्र आवो वाजेषु वाजिनम्।8।
5445. तम् त्वा वाजेषु वाजिनम्, वाजयामः शतक्रतो।
धनानाम् इन्द्र सातये।9।
5446. यो रायो अवनिः महान्, सुपारः सुन्वतः सखा।
तस्मा इन्द्राय गायत।10।
5447. आ तु आ इत नि षीदते, इन्द्रम् अभि प्र गायत।
सखाय सतोमवाहसः।11।
5448. पुरुतमम् पुरूणाम्, ईशानाम् वार्याणाम्।
इन्द्रम् सोमे सचा सुते।12।

सूक्त-69

5449. स घा नो योग आ भुवत्, स राये स पुरम्ध्याम्।
गमत् वाजेभिः आ स नः।1।
5450. यस्य सम्स्थे न वृण्वते, हरी समत्सु शत्रवः।
तस्मा इन्द्राय गायत।2।
5451. सुत-पाव्ने सुता इमे, शुचयो यन्ति वीतये।
सोमासो दध्याशिरः।3।
5452. त्वम् सुतस्य पीतये, सद्यो वृद्धो अजायथाः।
इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो।4।
5453. आ त्वा विशन्तु आशवः, सोमास इन्द्र गिर्वणः।
शम् ते सन्तु प्रचेतसे।5।
5454. त्वाम् स्तोमा अवीवृधन्, त्वाम् उक्था शतक्रतो।
त्वाम् वर्धन्तु नो गिरः।6।
5455. अक्षितोतिः सनेत् इमम्, वाजम् इन्द्रः सहस्रिणम्।
यस्मिन् विश्वानि पौंस्या।7।
5456. मा नो मर्ता अभि द्रुहन्, तनूनाम् इन्द्र गिर्वणः।
ईशानो यवया वधम्।8।
5457. युञ्जन्ति ब्रध्नम् अरुषम्, चरन्तम् परि तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि।9।
5458. युञ्जन्ति अस्य काम्या, हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू नृवाहसा।10।
5459. केतुम् कृण्वन् अकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
सम् उषद्-भिः अजायथा।11।
5460. आत् अह स्वधाम् अनु पुनः, गर्भत्वम् आ-ईरिरे।
दधाना नाम यज्ञियम्।12।

सूक्त-70

5461. वीलु चित् आरुजत्नु-भिः,
गुहा चित् इन्द्र वह्नि-भिः।
अविन्द उस्रिया अनु।1।
5462. देवयन्तो यथा मतिम्, अच्छा विदद् वसुम् गिरः।
महाम् अनूषत श्रुतम्।2।
5463. इन्द्रेण सम् हि दृक्षसे, संजग्मानो अविभ्युषा।
मन्दू समानवर्चसा।3।
5464. अनवद्यैः अभिद्युभिः, मखः सहस्वत् अर्चति।
गणैः इन्द्रस्य काम्यैः।4।
5465. अतः परिज्मन् आ गहि, दिवो वा रोचनात् अधि।
सम् अस्मिन् ऋञ्जते गिरः।5।
5466. इतो वा सातिम् ईमहे, दिवो वा पार्थिवात् अधि।
इन्द्रम् महो वा रजसः।6।
5467. इन्द्रम् इत् गाथिनो बृहत्, इन्द्रम् अर्केभिः अर्किणः।
इन्द्रम् वाणीः अनूषत।7।
5468. इन्द्र इत् हर्योः सचा, सम्मिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः।8।
5469. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस, आ सूर्यम् रोहयत् दिवि।
वि गोभिः अद्रिम् ऐरयत्।9।
5470. इन्द्र वाजेषु नो अव, सहस्रप्रधनेषु च।

उग्र उग्राभिः ऊतिभिः।10।
5471. इन्द्र वयम् महाधन, इन्द्रम् अर्भे हवामहे।
युजम् वृत्रेषु वज्रिणम्।11।
5472. स नो वृषन् अमुम्, चरुम् सत्रादावन् अप वृधि।
अस्मभ्यम् अप्रतिस्कुतः।12।
5473. तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
न विन्धे अस्य सुस्तुतिम्।13।
5474. वृषा यूथेव वंसगः, कृष्टीः इयर्ति ओजसा।
ईशानो अप्रतिस्कुतः।14।
5475. य एकः चर्षणीनाम्, वसूनाम् इरज्यति।
इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम्।15।
5476. इन्द्रम् वो विश्वतः, परि हवामहे जनेभ्यः।
अस्माकम् अस्तु केवलः।16।
5477. आ इन्द्र सानसिम् रयिम्, सजित्वानम् सदासहम्।
वर्षिष्ठम् ऊतये भर।17।
5478. नि येन मुष्टिहत्यया, नि वृत्रा रुण्धामहै।
त्वोतासो नि अर्वता।18।
5479. इन्द्र त्वोतास आ वयम्, वज्रम् घना ददीमहि।
जयेम सम् युधि स्पृधः।19।
5480. वयम् शूरेभिः अस्तृभिः, इन्द्र त्वया युजा वयम्।
सासह्याम पृतन्यतः।20।

सूक्त-71

5481. महान् इन्द्रः परः च नु, महित्वम् अस्तु वज्रिणे।
द्यौर्न प्रथिना शवः।1।
5482. समोहे वा ये आशत, नरः तोकस्य सनितौ।
विप्रासो वा धियायवः।2।
5483. यः कुक्षिः सोमपातमः, समुद्र इव पिन्वते।
उर्वीरापो न काकुदः।3।
5484. एवा हि अस्य सूनृता, विरप्शी गोमती मही।
पक्वा शाखा न दाशुषे।4।
5485. एवा हि ते विभूतय, ऊतय इन्द्र मावते।
सद्यः चित् सन्ति दाशुषे।5।
5486. एवा हि अस्य काम्या, स्तोम उक्थम् च शंस्या।
इन्द्राय सोमपीतये।6।
5487. इन्द्र आ इहि मत्सि अन्धसो,
विश्वेभिः सोमपर्वभिः।
महान् अभिष्टिः ओजसा।7।
5488. आ ईम् एनम् सृजता सुते,
मन्दिम् इन्द्राय मन्दिने।
चक्रिम् विश्वानि चक्रये।8।
5489. मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि,
5490.स्तोमेभिः विश्वचर्षणे।
सचा एषु सवनेषु आ।9।
5490. असृग्रम् इन्द्र ते गिरः, प्रति त्वाम् उत् अहासत।
अजोषा वृषभम् पतिम्।10।
5491. सम् चोदय चित्रम् अर्वाक्, राध इन्द्र वरेण्यम्।
असत् इत् ते विभु प्रभु।11।
5492. अस्मान् सु तत्र चोदय, इन्द्र राये रभस्वतः।
तुविद्युम्न यशस्वतः।12।
5493. सम् गोमत् इन्द्र वाजवत्, अस्मे पृथु श्रवो बृहत्।
विश्वायुः धेहि अक्षितम्।13।
5494. अस्मे धेहि श्रवो बृहत्, द्युम्नम् सहस्रसातमम्।
इन्द्र ता रथिनीरिषः।14।
5495. वसोः इन्द्रम् वसुपतिम्, गीर्भिः गृणन्त ऋग्मियम्।
होम गन्तारम् ऊतये।15।
5496. सुतेसुते नि-ओकसे, बृहत् बृहत आ इत अरिः।
इन्द्राय शूषम् अर्चति।16।

सूक्त-72

5497. विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानम्,
एकम् वृषमण्यवः पृथक स्वः सनिष्यवः पृथक्।
तम् त्वा नावम् न पर्षणिम्, शूषस्य धुरि धीमहि।
इन्द्रम् न यज्ञैः चितयन्त आयवः,
स्तोमेभिः इन्द्रम् आयवः।1।
5498. वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य,
साता गव्यस्य निः सृजः सक्षन्त इन्द्र निः-सृजः।
यत् गव्यन्ता द्वा जना, स्वः यन्ता समूहसि।
आविः करिक्रत् वृषणम् सचाभुवम्,
वज्रम् इन्द्र सचाभुवम्।2।
5499. उतो नो अस्या उषसो जुषेत हि अर्कस्य,
बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः।
यत् इन्द्र हन्तवे मृधो, वृषा वज्रिन् चिकेतसि।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो, मन्म श्रुधि नवीयसः।3।

सूक्त-73

5500. तुभ्य इत् इमा सवना शूर विश्वा,
तुभ्यम् ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि।
त्वम् नृभिः हव्यो विश्वधा असि।1।
5501. नु चित् नु ते मन्यमानस्य दस्म,
उत् अश्नुवन्ति महिमानम् उग्र।
न वीर्यम् इन्द्र ते न राधः।2।
5502. प्र वो महे महिवृधे भरध्वम्,
प्रचेतसे प्र सुमतिम् कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः।3।
5503 यदा वज्रम् हिरण्यम् इत् अथा रथम्,
हरी यम् अस्य बहतो वि सूरिभिः।

आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत,
इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसः पतिः।4।
5504. सो चित् नु वृष्टिः यूथ्या स्वा सचान्,
इन्द्रः श्मश्रूणि हरिता अभि प्रुष्णुते।
अव वेति सुक्षयम् सुते मधु,
उत् इत् धूनोति वातो यथा वनम्।5।
5505. यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः,
पुरु सहस्रा अशिवा जघान।
तत्-तत् इत् अस्य पौंस्यम् गृणीमसि,
पितेव यः तविषीम् वावृधे शवः।6।

सूक्त-74

5506. यत् चित् हि सत्य सोमपा, अनाशस्ता इव स्मसि।
आ तु न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुविमघ।1।
5507. शिप्रिन् वाजानाम् पते, शचीवः तव दंसना।
आ तु न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुविमघ।2।
5508. नि स्वापया मिथुदृसा, सस्ताम् अबुध्यमाने।
आ तु न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुविमघ।3।
5509. ससन्तु त्या अरातयो, बोधन्तु शूर रातयः।
आ तु न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुविमघ।4।
5510. सम् इन्द्र गर्दभम् मृण, नुवन्तम् पापया अमुया।
आ तु न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुविमघ।5।
5511. पताति कुण्डृणाच्या, दूरम् वातो वनात् अधि।
आ तु न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुविमघ।6।
5512.सर्वम् परिक्रोशम् जहि, जम्भय कृकदाश्वम्।
आ तू न इन्द्र शंसय गोषु,
अश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ।7।

सूक्त-75

5513. वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य,
साता गव्यस्य निः सृजः सक्षन्त इन्द्र निः-सृज।
यत् गव्यन्ता द्वा जना, स्वः यन्ता समूहसि।
आविः करिक्रत् वृषणम् सचाभुवम्,
वज्रम् इन्द्र सचाभुवम्।1।
5514. विदुः ते अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो,
यत् इन्द्र शारदीः अवातिरः सासहानो अवातिरः।
शासः तम् इन्द्र मर्त्यम्, अयज्युम् शवसः पते।
महीम् अमुष्णाः पृथिवीम्,
इमा अपो मन्दसान इमा अपः।2।
5515. आत् इत् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् मदेषु,
वृषन् उशिजो यत् आविथ सखीयतो यत् आविथ।
चकर्थ कारम् एभ्यः, पृतनासु प्रवन्तवे।
ते अन्याम्-अन्याम् नद्यम् सनिष्णत,
श्रवस्यन्तः सनिष्णत।3।

सूक्त-76

5516. वने न वा यो नि अधायि चाकन्,
शुचिः वाम् स्तोमो भुरणौ अजीगः।
यस्य इत् इन्द्रः पुरुदिनेषु होता,
नृणाम् नर्यो नृतमः क्षपावान्।1।
5517. प्र ते अस्या उषसः प्र अपरस्या,
नृतौ स्याम नृतमस्य नृणम्।
अनु त्रिशोकः शतम् आ अवहत्,
नृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान्।2।
5518. कः ते मद इन्द्र रन्त्यो भूत्,
दुरो गिरो अभि उग्रो वि धाव।
कत् वाहो अर्वाक् उप मा मनीषा,
आ त्वा शक्वाम् उपमम् राधो अन्नैः।3।
5519. कत् उ द्युम्नम् इन्द्र त्वावतो,
नृन् कया धिया करसे कत् न आगन्।
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या,
अन्ने समस्य यत् असन् मनीषाः।4।
5520. प्र ईरय सूरो अर्थम् न पारम्,
ये अस्य कामम् जनिधा इव ग्मन्।
गिरः च ये ते तुविजात पूर्वीः,
नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्ति अन्नैः।5।
5521. मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी,
द्यौः मज्मना पृथिवी काव्येन।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः,
स्वाद्मन् भवन्तु पीतये मधूनि।6।
5522. आ मध्वो अस्मा असिचन् अमत्रम्,
इन्द्राय पूर्णम् स हि सत्यराधाः।
स वावृधे वरिमन् आ पृथिव्या,
अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैः च।7।
5523. वि आनट् इन्द्रः पृतना स्वोजा,
आ अस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः।
आ स्म रथम् न पृतनासु,
तिष्ठ यम् भद्रया सुमत्या चोदयासे।8।

सूक्त-77

5524. आ सत्यो यातु मघवान् ऋजीषी,
द्रवन्तु अस्य हरय उप नः।

तस्मा इत् अन्धः सुषुमा सुदक्षम्,
इह अभिपित्वम् करते गृणानः।1।
5525. अव स्य शूर अध्वनो न अन्ते,
अस्मिन् नो अद्य सवने मन्दध्यै।
शंसाति उक्थम् उशनेव, वेधाः चिकितुषे असुर्याय मन्म।
5526. कविः न निण्यम् विदथानि साधन्,
वृषा यत् सेकम् विपिपानो अर्चात्।
दिव इत्था जीजनत् सप्त कारून्,
अह्ना चित् चक्रुः वयुना गृणन्तः।3।
5527. स्वः यत् वेदि सुदृशीकम् अर्कैः महि,
ज्योती रुरुचुः यत् ह वस्तोः।
अन्दा तमांसि दुधिता विचक्षे,
नृभ्यः चकार नृतमो अभिष्टौ।4।
5528. ववक्ष इन्द्रो अमितम् ऋजीषी,
उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा।
अतः चित् अस्य महिमा वि रेचि,
अभि यो विश्वा भुवना बभूव।5।
5529. विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वान्,
अपो रिरेच सखिभिः निकामैः।
अश्मानम् चित् ये बिभिदुः वचोभिः,
व्रजम् गोमन्तम् उशिजो वि वव्रुः।6।
5530. अपो वृत्रम् वव्रिवांसम् परा अहन्,
प्र आवत् ते वज्रम् पृथिवी सचेताः।
प्र अर्णांसि समुद्रियाणि ऐनोः,
पतिः भवन् शवसा शूर धृष्णो।7।
5531. अपो यत् अद्रिम् पुरुहूत दर्दः,
आविः भुवत् सरमा पूर्व्यम् ते।
स नो नेता वाजम् आ दर्षि भूरिम्,
गोत्रा रुजन् अङ्गिरोभिः गृणानः।8।

सूक्त-78

5532. तत् वो गाय सुते, सचा पुरुहूताय सत्वने।
शम् यत् गवे न शाकिने।1।
5533. न घ वसुः नि यमते, दानम् वाजस्य गोमतः।
यत् सीम् उप श्रवत् गिरः।2।
5534. कुवित्सस्य प्र हि ब्रजम्, गोमन्तम् दस्युहा गमत्।
शचीभिः अप नो वरत्।3।

सूक्त-79

5535. इन्द्र क्रतुम् न आ भर, पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्ष णो अस्मिन् पुरुहूत,
यामनि जीवा ज्योति अशीमहि।1।
5536. मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो,
मा अशिवासो अव क्रमुः।
त्वया वयम् प्रवतः शश्वतीः, अपः अति शूर तरामसि।2।

सूक्त-80

5537. इन्द्र ज्येष्ठम् न आ भरम्, ओजिष्ठम् पपुरि श्रवः।
येन इमे चित्र वज्रहस्त रोदसी आ उभे सुशिप्र प्राः।1।
5538. त्वाम् उग्रम् अवसे चर्षणीसहम्, राजन् देवेषु हूमहे।
विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना,
वसो अमित्रान् सुसहान् कृधि।2।

सूक्त-81

5539. यत् द्याव इन्द्र ते शतम्, भूमीः उत स्युः।
न त्वा वज्रिन् सहस्रम् सूर्या,
अनु न जातम् अष्ट रोदसी।1।
5540. आ पप्राथ महिना वृष्ण्या,
वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा।
अस्मान् अव मघवन् गोमति,
व्रजे वज्रिन् चित्राभिः ऊतिभिः।2।

सूक्त-82

5541. यत् इन्द्र यावतः त्वम्, एतावत् अहम् ईशीय।
स्तोतारम् इत् दिधिषेय रदावसो, न पापत्वाय रासीय।1।
5542. शिक्षेयम् इत् महयते दिवेदिवे राय कुहचित्विदे।
नहि त्वत् अन्यत् मघवन् न
आप्यम् वस्यो अस्ति पिता चन।2।

सूक्त-83

5543. इन्द्र त्रिधातु शरणम्, त्रिवरूथम् स्वस्तिमत्।
छर्दिः यच्छ मघवद्भ्यः च,
मह्यम् च यावया दिद्युम् एभ्यः।1।
5544. ये गव्यता मनसा शत्रुम् आदभुः,
अभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया।
अध स्मा नो मघवन् इन्द्र गिर्वणः, तनूपा अन्तमो भव।2।

सूक्त-84

5545. इन्द्र आ याहि चित्रभानो, सुता इमे त्वायवः।
अण्वीभिः तना पूतासः।1।
5546. इन्द्र आ याहि धिया, इषितो विप्रजूतः सुतावतः।
उप ब्रह्माणि वाघतः।2।
5547. इन्द्र आ याहि तूतुजान, उप ब्रह्माणि हरिवः।
सुते दधिष्व नः चनः।3।

सूक्त-85

5548. मा चित् अन्यत् वि शंसत, सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रम् इत् स्तोत वृषणम् सचा,
सुते मुहुः उक्था च शंसत।1।
5549. अवक्रक्षिणम् वृषभम् यथा,
अजुरम् गाम् न चर्षणीसहम्।
विद्वेषणम् सम्वनमा,

उभयम्करम् मंहिष्ठम् उभया विनम्।2।
5550. यत् चित् हि त्वा जना, इमे नाना हवन्ते ऊतये।
अस्माकम् ब्रह्म इदम इन्द्र,
भूतु ते अहा विश्वा च वर्धनम्।3।
5551. वि तर्तर्यन्ते मघवन्,
विपश्चितो अर्यो विपो जनानाम्।
उप क्रमस्व पुरुरूपम् आ भर, वाजम् नेदिष्ठम् ऊतये।4।

सूक्त-86

5552. ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि,
हरी सखाया सधमादे आशू।
स्थिरम् रथम् सुखम् इन्द्र अधितिष्ठन्,
प्रजानन् विद्वान् उप याहि सोमम्।1।

सूक्त-87

5553. अध्वर्यवो अरुणम् दुग्धम् अंशुम्,
जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम्।
गौरात् वेदीयान् अवपानम् इन्द्रो,
विश्वाहा इत् याति सुतसोमम् इच्छन्।1।
5554. यत् दधिषे प्रदिवि चारि अन्नम्,
दिवेदिवे पीतिम् इत् अस्य वक्षि।
उत हृदा उत मनसा जुषाण,
उशन् इन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान्।2।
5555. जज्ञानः सोमम् सहसे पपाथ,
प्र ते माता महिमानम् उवाच।
आ इन्द्र पप्राथ उरु अन्तरिक्षम्,
युधा देवेभ्यः वरिवः चकर्थ।3।
5556. यत् योधया महतो मन्यमानान्,
साक्षाम तान् बाहुभिः शाशदानान्।
यत् वा नृभिः वृत इन्द्र अभियुध्याः,
तम् त्वया आजिम् सौश्रवसम् जयेम।4।
5557. प्र इन्द्रस्य वोचम् प्रथमा कृतानि,
प्र नूतना मघवा या चकार।
यदा इत् अदेवीः असहिष्ट माया,
अथ अभवत् केवलः सोमो अस्य।5।
5558. तव इदम् विश्वम् अभितः पशव्यम्,
यत् पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य।
गवाम् असि गोपतिः एकः इन्द्र,
भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः।6।
5559. बृहस्पते युवम् इन्द्रः च वस्वो,
दिव्यस्य ईशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तम् रयिम् स्तुवते कीरये चित् यूयम्,
पात स्वस्तिभिः सदा नः।7।

सूक्त-88

5560. यः तस्तम्भ सहसा वि ज्मो,
अन्तान् बृहस्पतिः त्रिसधस्थो रवेण।
तम् प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः,
पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम्।1।
5561. धुनेतयः सुप्रकेतम् मदन्तो,
बृहस्पते अभि ये नः ततस्रे।
पृषन्तम् सृप्रम् अदब्धम् ऊर्वम्,
बृहस्पते रक्षतात् अस्य योनिम्।2।
5562. बृहस्पते या परमा परावत्,
अत आ त ऋतस्पृशो नि षेदुः।
तुभ्यम् खाता अवता अद्रिदुग्धा,
मध्व श्चोतन्ति अभितो विरप्शम्।3।
5563. बृहसपतिः प्रथमम् जायमानो,
महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।
सप्तास्यः तुविजातो रवेण,
वि सप्तरश्मि अधमत् तमांसि।4।
5564. स सुस्तुभा स ऋक्वता गणेन,
वलम् रुरोज फलगम् रवेण।
बृहस्पतिः उस्रिया हव्यसूदः,
कनिक्रदत् वावशतीः उत आजत्।5।
5565. एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे,
यज्ञैः विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीर-वन्तो,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम्।6।

सूक्त-89

5566. अस्तेव सु प्रतरम् लायम् अस्यन्,
भूषनिव प्र भरा स्तोमम् अस्मै।
वाचा विप्राः तरत वाचम् अर्यो,
नि रामय जरितः सोम इन्द्रम्।1।
5567. दोहेन गाम् उप शिक्ष सखायम्,
प्र बोधय जरितः जारम् इन्द्रम्।
कोशम् न पूर्णम् वसुना निऋष्टम्,
आ च्यवय मघदेयाय शूरम्।2।
5568. किम् अङ्ग त्वा मघवन् भोजम् आहुः,
शिशीहि मा शिशयम् त्वा शृणोमि।
अप्नस्वती मम धीः अस्तु शक्र,
वसुविदम् भगम् इन्द्र आ भर नः।3।
5569. त्वाम् जना ममसत्येषु इन्द्र,
सम्तस्थानाः वि हयन्ते समिके।
अत्र युजम् कृणुते यो हविष्मान्,
न असुन्वत सख्यम् वष्टि शूरः।4।
5570. धनम् न स्पन्द्रम् बहुलम् यो अस्मै,

तीव्रान् सोमान् आसुनोति प्रयस्वान्।
तस्मै शत्रून् सुतुकान् प्राः अह्नो,
नि स्वष्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम्।5।
5571. यस्मिन् वयम् दधिम शंसम् इन्द्रे,
यः शिश्राय मघवा कामम् अस्मे।
आरात् चित् सन् भयताम् अस्य,
शत्रु नि अस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम्।6।
5572. आरात् शत्रुम् अप बाधस्व दूरम्,
उग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन।
अस्मे धेहि यवमत् गोमत् इन्द्र,
कृधि धियम् जरित्रे वाजरत्नाम्।7।
5573. प्र यम् अन्तः वृष-सवासो अग्मन्,
तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम्।
न अह दामानम् मघवा नि यंसत्,
नि सुन्वते वहति भूरि वामम्।8।
5574. उत प्रहाम् अतिदीवा जयति,
कृतमेव श्वघ्नी वि चिनोति काले।
यो देवकामो न धनम् रुणद्धि,
सम् इत् तम् रायः सृजति स्वधाभिः।9।
5575. गोभिः तरेम अमतिम् दुः एवाम्,
यवेन वा क्षुधम् पुरुहूत विश्वे।
वयम् राजसु प्रथमा धनानि,
अरिष्टासो वृजनीभिः जयेम।10।
5576. बृहस्पतिः नः परि पातु पश्चात्,
उत उत्तरस्मात् अधरात् अघयोः।
इन्द्रः पुरस्तात् उत मध्यतो नः,
सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु।11।

सूक्त-90

5577. यो अद्रिभित् प्रथमजा ऋतवा,
बृहस्पतिः आङ्गिरसो हविष्मान्।
द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत् पिता न,
आ रोदसी वृषभो रोरवीति।1।
5578. जनाय चित् य ईवते उ लोकम्,
5579.बृहस्पतिः देवहूतौ चकार।
घ्नन् वृत्राणि वि पुरो दर्दरीति जयन्,
शत्रून् अमित्रान् पृत्सु सहन्।2।
5579. बृहस्पतिः सम् अजयत् वसूनि,
महो व्रजान् गोमतो देव एषः।
अपः सिसासन् स्वः अप्रतीतो,
बृहस्पतिः हन्ति अमित्रम् अर्कैः।3।

सूक्त-91

5580. इमाम् धियम् सप्तशीर्ष्णीम् पिता,
न ऋतप्रजाताम् बृहतीम् अविन्दत्।
तुरीयम् स्वित् जनयत् विश्वजन्यो,
अयास्य उक्थम् इन्द्राय शंसन्।1।
5581. ऋतम् शंसन्त ऋजु दीध्याना,
दिवः पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रम् पदम् अङ्गिरसो दधाना,
यज्ञस्य धाम प्रथमम् मनन्त।2।
5582. हंसैरिव सखिभिः वावदद्-भिः,
अश्मन्मयानि नहना व्यस्यन्।
बृहस्पतिः अभिकनिक्रदत्,
गा उत प्र अस्तौत् उत् च विद्वान् अगायत्।3।
5583. अवो द्वाभ्याम् पर एकया,
गा गुहा तिष्ठन्तीः अनृतस्य सेतौ।
बृहस्पतिः तमसि ज्योतिः इच्छन्,
उत् उस्रा आ अकः वि हि तिस्र आवः।4।
5584. विभिद्य पुरम् शयथा ईम् अपाचीम्,
निः त्रीणि साकम् उदधेः अकृन्तत्।
बृहस्पतिः उषसम् सूर्यम् गाम्,
अर्कम् विवेद स्तनयन् इव द्यौः।5।
5585. इन्द्रो वलम् रक्षितारम् दुघानाम्,
करेणिव वि चकर्ता रवेण।
स्वेदाञ्जिभिः आशिरम् इच्छमानो,
अरोदयत् पणिम् आ गा अमुष्णात्।6।
5586. स ईम् सत्येभिः सखिभिः शुचद्-भिः,
गोधायसम् वि धनसै अदर्दः।
ब्रह्मणः पतिः वृषभिः वराहैः,
धर्मस्वेदेभिः द्रविणम् वि आनट्।7।
5587. ते सत्येन मनसा गोपतिम्,
गा इयानास इषणयन्त धीभिः।
बृहस्पतिः मिथो-अवद्यपेभिः,
उत् उस्रिया असृजत स्वयुक्भिः।8।
5588. तम् वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः,
सिंहमिव नानदतम् सधस्थे।
बृहस्पतिम् वृषणम् शूरसातौ,
भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम्।9।
5589. यदा वाजम् असनत् विश्वरूपम्,
आ द्याम् अरुक्षत् उत्तराणि सद्म।
बृहस्पतिम् वृषणम् वर्धयन्तो,
नाना सन्तो बिभ्रतो ज्योतिः आसा।10।
5590. सत्याम् आशिषम् कृणुत वयोधै,
कीरिम् चित् हि अवथ स्वेभिः एवः।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वाः,
तत् रोदसी शृणुतम् विश्वमिन्वे।11।

5591. इन्द्रो महना महतो अर्णवस्य,
वि मूर्धानम् अभिनत् अर्बुदस्य।
अहन् अहिम् अरिणात् सप्त सिन्धून्,
देवैः द्यावापृथिवी प्र अवतम् नः।12।

सूक्त-92

5592. अभि प्र गोपतिम् गिरा, इन्द्रम् अर्च यथा विदे।
सूनुम् सत्यस्य सत्पतिम्।1।
5593. आ हरयः ससृज्रिरे, अरुषीः अधि बर्हिषि।
यत्रा अभि सम्नवामहे।2।
5594. इन्द्राय गाव आशिरम्, दुदुहे वज्रिणे मधु।
यत् सीम् उपह्वरे विदत्।3।
5595. उत् यत् ब्रध्नस्य विष्टपम्,
गृहम् इन्द्रः च गन्वहि।
मध्वः पीत्वा सचेवहि, त्रिः सप्त सख्युः पदे।4।
5596. अर्चत प्र अर्चत, प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरम्, न धृष्णु अर्चत।5।
5597. अव स्वराति गर्गरो, गोधा परि सनिष्वणत्।
पिङ्गा परि चनिष्कदत्, इन्द्राय ब्रह्म उत्यतम्।6।
5598. आ यत् पतन्ति, एन्यः सुदुघा अनपस्फुरः।
अपस्फुरम् गृभायत, सोमम् इन्द्राय पातवे।7।
5599. अपात् इन्द्रो अपात् अग्निः, विश्वे देवा अमत्सत।
वरुण इत् इह क्षयत् तम् आपो,
अभि अनूषत वत्सम् संशिश्वरीरिव।8।
5600. सु-देवो असि वरुण, यस्य ते सप्त सिन्धवः।
अनुक्षरन्ति काकुदम्, सूर्म्यम् सुषिरामिव।9।
5601. यो व्यतीन् अफण्यत्, सुयुक्तान् उप दाशुषे।
तक्को नेता तत् इत् वपु, उपमा यो अमुच्यत।10।
5602. अति इत् उ शक्र ओहते, इन्द्रो विश्वा अति द्विषः।
भिनत् कनीन ओदनम्, पच्यमानम् परो गिरा।11।
5603. अर्भको न कुमारको, अधि तिष्ठत् नवम् रथम्।
स पक्षत् महिषम् मृगम्, पित्रे मात्रे विभुक्रतुम्।12।
5604. आ तू सुशिप्र दम्पते, रथम् तिष्ठ हिरण्ययम्।
अध द्युक्षम् सचेवहि सहस्रपादम्,
अरुषम् स्वस्तिगाम् अनेहसम्।13।
5605. तम् घ ईम् इत्या नमस्विन, उप स्वराजम् आसते।
अर्थम् चित् अस्य सुधितम्,
यत् एतवे आवर्तयन्ति दावने।14।
5606. अनु प्रत्नस्य ओकसः, प्रियमेधास एषाम्।
पूर्वाम् अनु प्रयतिम्, वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत।15।
5607. यो राजा चर्षणीनाम्, याता रथेभिः अध्रिगुः।
विश्वासाम् तरुता पृतनानाम्, ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे।16।
5608. इन्द्रम् तम् शुम्भ पुरुहन्मन्,
अवसे यस्य द्विता विधर्तरि।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि, दर्शतो महो दिवे न सूर्यः।17।
5609. नकिः तम् कर्मणा नशत्, यः चकार सदावृधम्।
इन्द्रम् न यज्ञैः विश्वगूर्तम्,
ऋभ्वसम् अधृष्टम् धृष्ण्वोजसम्।18।
5610. अषाल्हम् उग्रम् पृतनासु,
ससहिम् यस्मिन् मही उरुज्रयः।
सम् धेनवो जायमाने अनोनवुः, द्याव क्षामो अनोनवुः।19।
5611. यत् द्याव इन्द्र ते शतम्, शतम् भूमीः उत स्युः।
न त्वा वज्रिन् सहस्रम् सूर्या,
अनु न जातम् अष्ट रोदसी।20।
5612. आ पप्राथ महिना वृष्ण्या,
वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा।
अस्मान् अव मघवन् गोमति,
व्रजे वज्रिन् चित्राभिः उतिभिः।21।

सूक्त-93

5613. उत् त्वा मन्दन्तु स्तोमाः, कृणुष्व राधो अद्रिवः।
अव ब्रह्मद्विषो जहि।1।
5614. पदा पणीन् अराधसो, नि बाधस्व महान् असि।
नहित्वा कः चन प्रति।2।
5615. त्वम् ईशिषे सुतानाम्, इन्द्र त्वम् असुतानाम्।
त्वम् राजा जनानाम्।3।
5616. ईङ्खयन्तीः अपस्युव, इन्द्रम् जातम् उप आसते।
भेजानासः सुवीर्यम्।4।
5617. त्वम् इन्द्र बलात् अधि, सहसो जात ओजसः।
त्वम् वृषन् वृषा इत् असि।5।
5618. त्वम् इन्द्र असि वृत्रहा, वि अन्तरिक्षम् अतिरः।
उत् द्याम् अस्तभ्नाः ओजसा।6।
5619. त्वम् इन्द्र सजोषसम्, अर्कम् बिभर्षि बाह्वोः।
वज्रम् शिशान ओजसा।7।
5620. त्वम् इन्द्र अभिभूः असि, विश्वा जातानि ओजसा।
स विश्वा भुव आभवः।8।

सूक्त-94

5621. आ यातु इन्द्रः स्वपतिः मदाय,
यो धर्मणा तूतुजानः तुविष्मान्।
प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांसि, अपारेण महता वृष्ण्येन।1।
5622. सु-स्थामा रथः सुयमा हरी,
ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गभस्तौ।
शीभम् राजन् सुपथा आ याहि,
अर्वाङ् वर्धाम ते पपुषो वृष्ण्यानि।2।
5623. आ इन्द्रवाहो नृपतिम् वज्रबाहुम्,
उग्रम् उग्रासः तविषास एनम्।

प्रत्वक्षसम् वृषभम् सत्यशुष्मम्,
आ ईम् अस्मा सधमादो वहन्तु।3।
5624. एव पतिम् द्रोणसाचम् सचेतसम्,
ऊर्जः स्कम्भम् धरुणे आ वृषयसे।
ओजः कृष्व सम् गृभाय त्वे अपि,
असो यथा केनिपानाम् इनो वृधे।4।
5625. गमन् अस्मे वसूनि आ हि शंसिषम्,
स्वाशिषम् भरम् आ याहि सोमिनः।
त्वम् ईशिषे स अस्मिन् आ सत्सि,
बर्हिषि अनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा।5
5626. पृथक् प्र आयन् प्रथमा देवहुतयो,
अकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकुः यज्ञियाम् नावम् आरुहम्,
ईर्मा एव ते नि अविशन्त केपयः।6।
5627. एव एव अपाक् अपरे सन्तु दूढ्यो,
अश्वा येषाम् दुर्युज आयुयुज्रे।
इत्था ये प्राक् उपरे सन्ति दावने,
पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना।7।
5628. गिरीन् अज्रान् रेजमानान् अधारयत्,
द्यौः क्रन्दत् अन्तरिक्षाणि कोपयत्।
सम् ईचीने धिषणे वि स्कभायति,
वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति।8।
5629. इमम् बिभर्षि सुकृतम् ते अङ्कुशम्,
येन आरुजासि मघवन् शफारुजः।
अस्मिन् सु ते सवने अस्तु ओक्यम्,
सुत इष्टौ मघवन् बोधि आभगः।9।
5630. गोभिः तरेम अमतिम् दुरेवाम्,
यवेन क्षुधम् पुरुहूत विश्वाम्।
वयम् राजभिः प्रथमा धनानि,
अस्माकेन वृजनेन जयेम।10।
5631. बृहस्पतिः नः परि पातु पश्चात्,
उत उत्तरस्मात् अधरात् अघयोः।
इन्द्रः पुरस्तात् उत मध्यतो,
नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु।11।

सूक्त-95

5632. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरम् तुविशुष्मः तृपत्,
सोमम् अपिबत् विष्णुना सुतम् यथा अवशत्।
स ईम् ममाद महि कर्म कर्तवे महाम् उरुम्,
सैनम् सश्चद देवो देवम् सत्यम् इन्द्रम् सत्य इन्दुः।1।
5633. प्रो सु अस्मै पुरोरथम्, इन्द्राय शूषम् अर्चत।
अभीके चित् उ लोककृत् संगे समत्सु,
वृत्रहा अस्माकम् बोधि चोदिता नभन्ताम्,
अन्यकेषाम् ज्याका अधि धन्वसु।2।
5634. त्वम् सिन्धून् अव असृजो, अधराचो अहन् अहिम्।
अशत्रु इन्द्र जज्ञिषे विश्वम् पुष्यसि,
वार्यम् तम् त्वा परि स्वजामहे।3।
5635. वि षु विश्वा अरातयो, अर्यो नशन्त नो धियः।
अस्ता असि शत्रवे वधम् यो न इन्द्र जिघांसति,
या ते रातिः ददिः वसु नभन्ताम्,
अन्यकेषाम् ज्याका अधि धन्वसु।4।

सूक्त-96

5636. तीव्रस्य अभिवयसो अस्य,
पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च।
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये,
नि रीरमन् तुभ्यम् इमे सुतासः।1।
5637. तुभ्यम् सुताः तुभ्यम् उ सोत्वासः,
त्वाम् गिरः श्वात्र्याः आ ह्वयन्ति।
इन्द्र इदम् अद्य सवनम् जुषाणो,
विश्वस्य विद्वान् इह पाहि सोमम्।2।
5638. य उशता मनसा सोमम् अस्मै,
सर्वहृदा देवकामः सुनोति।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति,
प्रशस्तम् इत् चारुम् अस्मै कृणोति।3।
5639. अनुस्पष्टो भवति एषो अस्य,
यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम्।
निः अरत्नौ मघवा तम् दधाति,
ब्रह्मद्विषो हन्ति अननुदिष्टः।4।
5640. अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो,
हवामहे त्वा उपगन्तवा उ।
आभूषन्तः ते सु-मतौ नवायाम्,
वयम् इन्द्र त्वा शुनम् हुवेम।5।
5641. मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय,
कम् अज्ञातयक्ष्मात् उत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिः जग्राह यदि एतत् एनम् तस्या,
इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तम् एनम्।6।
5642. यदि क्षितायुः यदि वा परेतो,
यदि मृत्योः अन्तिकम् नीत एव।
तम् आ हरामि निर्ऋतेः उपस्थात्,
अस्पार्शम् एनम् शतशारदाय।7।
5643. सहस्राक्षेण शतवीर्येण,
शतायुषा हविषा आ अहार्षम् एनम्।
इन्द्रो यथा एनम् शरदो नयाति अति,
विश्वस्य दुरितस्य पारम्।8।
5644. शतम् जीव शरदो वर्धमानः,

शतम् हेमन्तान् शतम् उ वसन्तान्।
शतम् त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः,
शतायुषा हविषा आ अहार्षम् एनम्।9।
5645. आ अहार्षम् अविदम्, त्वा पुनः आ अगाः पुनर्णवः।
सर्वाङ्ग सर्वम् ते चक्षुः, सर्वम् आयुः च ते अविदम्।10।
5646. ब्रह्मणा अग्निः सम्विदानो, रक्षोहा बाधताम् इतः।
अमीवा यः ते गर्भम्, दुर्णामा योनिम् आशये।11।
5647. यः ते गर्भम् अमीवा, दुर्णामा योनिम् आ-शये।
अग्निः तम् ब्रह्मणा सह, निः क्रव्यादम् अनीनशत्।12।
5648. यः ते हन्ति पतयन्तम्, निसत्स्नुम् यः सरीसृपम्।
जातम् यः ते जिघांसति, तम् इतो नाशयामसि।13।
5649. यः त उरू वि हरति अन्तरा दम् पती शये।
योनिम् यो अन्तः आरेल्हि, तम् इतो नाशयामसि।14।
5650. यः त्वा भ्राता पतिः, भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते।
प्रजाम् यः ते जिघांसति, तम् इतो नाशयामसि।15।
5651. यः त्वा स्वप्नेन तमसा, मोहयित्वा निपद्यते।
प्रजाम् यः ते जिघांसति, तम् इतो नाशयामसि।16।
5652. अक्षीभ्याम् ते नासिकाभ्याम्,
कर्णाभ्याम् छुबुकात् अधि।
यक्ष्मम् शीर्षण्यम् मस्तिष्कात्, जिह्वाया वि वृहामि ते।17।
5653. ग्रीवाभ्यः ते उष्णिहाभ्यः, कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मम् दोषण्यम् अंसाभ्याम्, बाहुभ्याम् वि वृहामि ते।18।
5654. हृदयात् ते परि क्लोम्नो, हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्।
यक्ष्मम् मतस्नाभ्याम् प्लीहनो, यक्नः ते वि वृहामसि।19।
5655. आन्त्रेभ्यः ते गुदाभ्यो, वनिष्ठोः उदरात् अधि।
यक्ष्मम् कुक्षिभ्याम् प्लाशेः, नाभ्या वि वृहामि ते।20।
5656. उरुभ्याम् ते अष्ठीवद्भ्याम्,
पार्ष्णिभ्याम् प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मम् भसद्यम् श्रोणिभ्याम्,
भासदम् भंससो वि वृहामि ते।21।
5657. अस्थिभ्यः ते मज्जभ्यः, स्नाव-भ्यो धमनिभ्यः।
यक्ष्मम् पाणिभ्याम् अङ्गलिभ्यो,
नखेभ्यो वि वृहामि ते।22।
5658. अङ्गे अङ्गे लोम्निलोम्नि, यः ते पर्वणिपर्वणि।
यक्ष्मम् त्वचस्यम् ते वयम् कश्यपस्य,
विबर्हेण विष्वञ्चम् वि वृहामसि।23।
5659. अप इहि मनसः पते, अप क्राम परः चर।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व, बहुधा जीवतो मनः।24।

सूक्त-97

5660. वयम् एनम् इदा ह्यो, अपीपेम इह वज्रिणम्।
तस्मा उ अद्य समना सुतम्, भरा नूनम् भूषत श्रुते।1।
5661. वृकः चित् अस्य वारण,
उरामथिः आ वयुनेषु भूषति।
स इमम् नः स्तोमम् जुजुषाण,
आ गहि इन्द्र प्र चित्रया धिया।2।
5662. कत् उ नु अस्य अकृतम्, इन्द्रस्य अस्ति पौंस्यम्।
कोनो नु कम् श्रोमतेन, न शुश्रवे जनुषः परि वृत्रहा।3।

सूक्त-98

5663. त्वाम् इत् हि हवामहे, साता वाजस्य कारवः।
त्वाम् वृत्रेषु इन्द्र सत्पतिम्, नरः त्वाम् काष्ठासु अर्वतः।1।
5664. स त्वम् नः चित्र वज्रहस्त,
धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः।
गाम् अश्वम् रथ्यम् इन्द्र,
सम् किर सत्रा वाजम् न जिग्युषे।2।

सूक्त-99

5665. अभि त्वा पूर्वपीतये, इन्द्र स्तोमेभिः आयवः।
समिचीनास ऋभवः सम् अस्वरन्, रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्।1।
5666. अस्य इत् इन्द्रो वावृधे वृष्ण्यम्,
शवो मदे सुतस्य विष्णवि।
अद्या तम् अस्य महिमानम्,
आयवो अनु स्तुवन्ति पूर्वथा।2।

सूक्त-100

5667. अधा हि इन्द्र गिर्वणः,
उप त्वा कामान् महः ससृज्महे,
उदा-इव यन्त उद-भिः।1।
5668. वाः न त्वा यव्याभिः, वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि।
वावृध्वांसम् चित् अद्रिवो दिवेदिवे।2।
5669. युञ्जन्ति हरी इषिरस्य, गाथया उरौ रथ उरुयुगे।
इन्द्रवाहा वचोयुजा।3।

सूक्त-101

5670. अग्निम् दूतम् वृणीमहे, होतारम् विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।1।
5671. अग्निम्-अग्निम् हवीमभिः,
सदा हवन्त विश्वपतिम्।
हव्यवाहम् पुरुप्रियम्।2।
5672. अग्ने देवान् इह, आ वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे।
असि होता न ईड्यः।3।

सूक्त-102

5673. ईलेन्यो नमस्यः, तिरः तमांसि दर्शतः।
सम् अग्निः इध्यते वृषा।1।
5674. वृषो अग्निः सम् इध्यते, अश्वो न देववाहनः।
तम् हविष्मन्त ईलते।2।
5675. वृषणम् त्वा वयम्, वृषन् वृषणः सम् इधीमहि।
अग्ने दीद्यतम् बृहत्।3।

सूक्त-103
5676. अग्निम् ईलिष्व अवसे, गाथाभिः शीरशोचिषम्।
अग्निम् राये पुरुमील्ह श्रुतम्,
नरो अग्निम् सुदीतये छर्दिः।1।
5677. अग्न आ याहि अग्निभिः, होतारम् त्वा वृणीमहे।
आ त्वाम् अनक्तु प्रयता हविष्मती,
यजिष्ठम् बर्हिः आसदे।2।
5678. अच्छा हि त्वा सहसः सूनो,
अङ्गिरः स्रुचः चरन्ति अध्वरे।
ऊर्जो नपातम् घृतकेशम् ईमहे, अग्निम् यज्ञेषु पूर्व्यम्।3।

सूक्त-104
5679. इमा उ त्वा पुरूवसो, गिरो वर्धन्तु या मम।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो, अभि स्तोमैः अनुषत।1।
5680. अयम् सहस्रम् ऋषिभिः, सहष्कृतः समुद्र इव पप्रथे।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे, शवो यज्ञेषु विप्राज्ये।2।
5681. आ नो विश्वासु हव्य, इन्द्रः समत्सु भूषतु।
उप ब्रह्माणि सवनानि, वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः।3।
5682. त्वम् दाता प्रथमो राधसाम् असि, सत्य ईशानकृत्।
तुवि-द्युम्नस्य युज्या वृणीमहे, पुत्रस्य शवसो महः।4।

सूक्त-105
5683. त्वम् इन्द्र प्र-तूर्तिषु अभि, विश्वा असि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूः असि, त्वम् तूर्य तरुष्यतः।1।
5684. अनु ते शुष्मम् तुरयन्तम्,
ईयतुः क्षोणी शिशुम् न मातरा।
विश्वाः ते स्पृधः श्नथयन्त,
मन्यवे वृत्रम् यत् इन्द्र तूर्वसि।2।
5685. इत ऊती वो अजरम्, प्रहेतारम् अप्रहितम्।
आशुम् जेतारम् हेतारम् रथितमम्, अतूर्तम् तुग्र्यवृधम्।3।
5686. यो राजा चर्षणीनाम्, याता रथेभिः अध्रिगुः।
विश्वासाम् तरुता पृतनानाम्, ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे।4।
5687. इन्द्रम् तम् शुम्भ पुरुहन्मन्,
अवसे अस्य द्विता विधर्तरि।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि, दर्शतो महो दिवे न सूर्यः।5।

सूक्त-106
5688. तव त्यत् इन्द्रियम् बृहत्, तव शुष्मम् उत क्रतुम्।
वज्रम् शिशाति धिषणा वरेण्यम्।1।
5689. तव द्यौः इन्द्र पौंस्यम्, पृथिवी वर्धति श्रवः।
त्वाम् आपः पर्वतासः च हिन्विरे।2।
5690. त्वाम् विष्णुर्बहन् क्षयो, मित्रो गृणाति वरुणः।
त्वाम् शर्धो मदति अनु मारुतम्।3।

सूक्त-107
5691. सम् अस्य मन्यवे, विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः।
समुद्रायेव सिन्धवः।1।
5692. ओजः तत् अस्य तित्विषे, उभे यत् समवर्तयत्।
इन्द्रः चर्मेव रोदसी।2।
5693. वि चित् वृत्रस्य दोधतो, वज्रेण शतपर्वणा।
शिरो बिभेद वृष्णिना।3।
5694. तत् इत् आस भुवनेषु ज्येष्ठम्,
यतो जज्ञ उग्रः त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रून्,
अनु यत् एनम् मदन्ति विश्व ऊमाः।4।
5695. वावृधानः शवसा भूर्योजाः,
शत्रुः दासाय भियसम् दधाति।
अव्यनत् च व्यनत् च सस्नि,
सम् ते नवन्त प्रभृता मदेषु।5।
5696. त्वे क्रतुम् अपि पृञ्चन्ति भूरि,
द्विः यत् एते त्रिः भवन्ति ऊमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा,
सम् अदः सु मधु मधु ना अभि योधीः।6।
5697. यदि चित् नु त्वा धना जयन्तम्,
रणेरणे अनुमदन्ति विप्राः।
ओजीयः शुष्मिन् स्थिरम् आ तनुष्व,
मा त्वा दभन् दुरेवासः कशोकाः।7।
5698. त्वया वयम् शाशद्महे रणेषु,
प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि।
चोदयामि त आयुधा वचोभीः,
सम् ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि।8।
5699. नि तत् दधिषे अवरे परे च,
यस्मिन् आविध अवसा दुरोणे।
आ स्थापयत मातरम् जिगत्नुम्,
अत इन्वत कर्वराणि भूरि।9।
5700. स्तुष्व वर्ष्मन् पुरुवर्त्मानम्,
सम् ऋभ्वाणम् इन-तमम् आप्तम् आप्त्यानाम्।
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः,
प्र सक्षति प्रतिमानम् पृथिव्याः।10।
5701. इमा ब्रह्म बृहद्-दिवः कृण्वत्,
इन्द्राय शूषम् अग्रियः स्वर्षाः।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजा,
तुरः चित् विश्वम् अर्णवत् तपस्वान्।11।
5702. एव महान् बृहद्-दिवः अथर्वा,
अवोचत् स्वाम् तन्वम् इन्द्रम् एव।
स्वसारौ मातरिभ्वरी अरिप्रे हिन्वन्ति,
च एने शवसा वर्धयन्ति च।12।
5703. चित्रम् देवानाम् केतुः अनीकम्,
ज्योतिष्मान् प्रदिशः सूर्य उद्यन्।

दिवाकर अति द्युम्नैः तमांसि,
विश्वा अतारीत् दुरितानि शुक्रः।13।
5704. चित्रम् देवानाम् उत् अगात् अनीकम्,
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः।
आ अप्रात् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्,
सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषः च।14।
5705. सूर्यो देवीम् उषसम् रोचमानाम्,
मर्यो न योषाम् अभि एति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि,
वि-तन्वते प्रति भद्राय भद्रम्।15।

सूक्त-108

5706. त्वम् न इन्द्र आ भर ओजो,
नृम्णम् शतक्रतो विचर्षणे।
आ वीरम् पृतनासहम्।1।
5707. त्वम् हि नः पिता वसो,
त्वम् माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नम् ईमहे।2।
5708. त्वाम् शुष्मिन् पुरुहूत,
वाजयन्तम् उप ब्रुवे शतक्रतो।
स नो रास्व सुवीर्यम्।3।

सूक्त-109

5709. स्वादोः इत्था विषूवतो, मध्वः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीः वृष्णा मदन्ति,
शोभसे वस्वीः अनु स्व-राज्यम्।1।
5710. ता अस्य पृशनायुवः, सोमम् श्रीणन्ति पृश्नयः।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रम् हिन्वन्ति,
सायकम् वस्वीः अनु स्वराज्यम्।2।
5711. ता अस्य नमसा, सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतानि अस्य सश्चिरे पुरूणि,
पूर्वचित्तये वस्वीः अनु स्वराज्यम्।3।

सूक्त-110

5712. इन्द्राय मद्वने सुतम्, परि स्तोभन्तु नो गिरः।
अर्कम् अर्चन्तु कारवः।1।
5713. यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो, रणन्ति सप्त सम्सदः।
इन्द्रम् सुते हवामहे।2।
5714. त्रिकद्रुकेषु चेतनम्, देवासो यज्ञम् अत्नत।
तम् इत् वर्धन्तु नो गिरः।3।

सूक्त-111

5715. यत् सोमम् इन्द्र विष्णवि, यत् वा घ त्रित आप्त्ये।
यत् वा मरुत्सु मन्दसे सम् इन्दुभिः।1।
5716. यत् वा शक्र परावति, समुद्रे अधि मन्दसे।
अस्माकम् इत् सुते रणा सम् इन्दुभिः।2।
5717. यत् वा असि सुनवतो, वृधो यजमानस्य सत्पते।
उक्थे वा यस्य रण्यसि सम् इन्दुभिः।3।

सूक्त-112

5718. यत् अद्य कत् च वृत्रहन्, उदगा अभि सूर्य।
सर्वम् तत् इन्द्र ते वशे।1।
5719. यत् वा प्रवृद्ध सत्पते, न मरा इति मन्यसे।
उतो तत् सत्यम् इत् तव।2।
5720. ये सोमासः परावति, ये अर्वावति सुन्विरे।
सर्वान् तान् इन्द्र गच्छसि।3।

सूक्त-113

5721. उभयम् शृण्वत् च न, इन्द्रो अर्वाक् इदम् वचः।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये, धिया शविष्ठ आ गमत्।1।
5722. तम् हि स्वराजम् वृषभम्,
तम् ओजसे धिषणे निष्टतक्षतुः।
उत उपमानाम् प्रथमो नि षीदसि,
सोमकामम् हि ते मनः।2।

सूक्त-114

5723. अभ्रातृव्यो अना त्वम् अनापिः,
इन्द्र जनुषा सनात् असि।
युधा इत् आपित्वम् इच्छसे।1।
5724. नकी रेवन्तम् सख्याय,
विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः।
यदा कृणोषि नदनुम् सम् ऊहसि, आत् इत् पितेव हूयसे।2।

सूक्त-115

5725. अहम् इत् हि पितुः, परि मेधाम् ऋतस्य जग्रभ।
अहम् सूर्य इव अजनि।1।
5726. अहम् प्रत्नेन मन्मना, गिरः शुम्भामि कण्ववत्।
येन इन्द्रः शुष्माम् इत् दधे।2।
5727. ये त्वाम् इन्द्र न तुष्टुविः, ऋषयो ये च तुष्टुवुः।
मम इत् वर्धस्व सुस्तुतः।3।

सूक्त-116

5728. मा भूम निष्ट्या इव, इन्द्र त्वत् अरणा इव।
वनानि न प्रजहितानि, अद्रिवो दुरोषासो अमन्महि।1।
5729. अमन्महि इत् अनाशवो, अनुग्रासः च वृत्रहन्।
सकृत् सु ते महता शूर राधसा, अनु स्तोमम् मुदीमहि।2।

सूक्त-117

5730. पिबा सोमम् इन्द्र मन्दतु,
त्वा यम् ते सुषाव हर्यश्व अद्रिः।
सोतुः बाहुभ्याम् सुयतो न अर्वा।1।
5731. यः ते मदो युज्यः चारुः अस्ति,
येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि।
स त्वाम् इन्द्र प्रभूवसो ममत्तु।2।

5732. बोधा सु मे मघवन् वाचम् आ इमाम्,
याम् ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व।3।

सूक्त-118

5733. शग्ध्यू षु शचीपत, इन्द्र विश्वाभि ऊतिभिः।
भगम् न हि त्वा यशसम्, वसुविदम् अनु शूर चरामसि।1।
5734. पौरः अश्वस्य पुरुकृत्,
गवाम् असि उत्सः देव हिरण्ययः।
नकिः हि दानम् परिमर्धिषत्,
त्वे यत्यत् यामि तत् आ भर।2।
5735. इन्द्रम् इत् देवतातये, इन्द्रम् प्रयति अध्वरे।
इन्द्रम् समीके वनिनो हवामहे, इन्द्रम् धनस्य सातये।3।
5736. इन्द्रो महना रोदसी पप्रथत्,
शव इन्द्रः सूर्यम् अरोचयत्।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरि, इन्द्रे सुवानास इन्दवः।4।

सूक्त-119

5737. अस्तावि मन्म पूर्व्यम्, ब्रह्म इन्द्राय वोचत।
पूर्वीः ऋतस्य बृहतीः अनूषत, स्तोतुः मेधा असृक्षत।1।
5738. तुरण्यवो मधुमन्तम् घृतश्चुतम्,
विप्रासो अर्कम् आनृचुः।
अस्मै रयिः पप्रथे वृष्ण्यम्, शवो अस्मे सुवानास इन्दवः।2।

सूक्त-120

5739. यत् इन्द्र प्राक् अपाक्,
उदक् न्यक् वा हूयसे नृभिः।
सिमा पुरु नृसूतो असि, आनवे असि प्रशर्ध तुर्वशे।1।
5740. यत् वा रुमे रुशमे श्यावके,
कृपे इन्द्र मादयसे सचा।
कण्वासः त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहस,
इन्द्र आ यच्छन्ति आ गहि।2।

सूक्त-121

5741. अभि त्वा शूर नोनुमो, अदुग्धा इव धेनवः।
ईशानम् अस्य जगतः स्वर्दृशम्, ईशानम् इन्द्र तस्थुषः।1।
5742. न त्वावान् अन्यो दिव्यो,
न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।
अश्वयन्तो मघवन् इन्द्र वाजिनो, गव्यन्तः त्वा हवामहे।2।

सूक्त-122

5743. रेवतीः नः सधमाद, इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः।
क्षुमन्तो याभिः मदेम।1।
5744. आ घ त्वावान् त्मना,
आप्त स्तोतृभ्यो धृष्णो इयानः।
ऋणोः अक्षम् न चक्र्योः।2।
5745. आ यत् दुवः शतक्रतो, आ कामम् जरितृणाम्।
ऋणो अक्षम् न शचीभिः।3।

सूक्त-123

5746. तत् सूर्यस्य देवत्वम् तत् महित्वम्,
मध्या कर्तोः विततम् सम् जभार।
यदा इत् अयुक्त हरितः सधस्थात्,
आत् रात्री वासः तनुते सिमस्मै।1।
5747. तत् मित्रस्य वरुणस्य अभिचक्षे,
सूर्यो रूपम् कृणुते द्योः उपस्थे।
अनन्तम् अन्यत् रूशत् अस्य पाजः,
कृष्णम् अन्यत् हरितः सम् भरन्ति।2।

सूक्त-124

5748. कया नः चित्रः आ भुवत्, ऊती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।1।
5749. कः त्वा सत्यो मदानाम्, मंहिष्टो मत्सत् अन्धसः।
दृल्हा चित् आरुजे वसु।2।
5750. अभि षु णः सखीनाम्, अविता जरितृणाम्।
शतम् भवासि ऊतिभिः।3।
5751. इमा नु कम् भुवना सीषधाम,
इन्द्रः च विश्वे च देवाः।
यज्ञम् च नः तन्वम् च प्रजाम् च,
आदित्यै इन्द्रः सह चीक्लपाति।4।
5752. आदित्यैः इन्द्रः सगणो मरुद्-भि,
अस्माकम् भूतु अविता तनूनाम्।
हत्वाय देवा असुरान् यत् आयन्,
देवा देवत्वम् अभिरक्षमाणाः।5।
5753. प्रत्यञ्चम् अर्कम् अनयन् शचीभिः,
आत् इत् स्वधाम् इषिराम् परि अपश्यन्।
अया वाजाम् देवहितम्, सनेम मदेम शतहिमाः सु-वीराः।6।

सूक्त-125

5754. अप इन्द्र प्राचो मघवन् अमित्रान्,
अप अपाचो अभिभूते नुदस्व।
अप उदीचो अप शूर अधराच,
उरौ यथा तव शर्मन् मदेम।1।
5755. कुवित् अङ्ग यवमन्तो यवम् चित्,
यथा दान्ति अनुपूर्वम् वियूय।
इहेह एषाम् कृणुहि भोजनानि,
ये बर्हिषो नमोवृक्तिम् न जग्मुः।2।
5756. नहि स्थूरि ऋतुथा यातम् अस्ति,
न उत श्रवो विविदे सम्गमेषु।
गव्यन्त इन्द्रम् सख्याय विप्रा,
अश्वयन्तो वृषणम् वजायन्तः।3।
5757. युवम् सुरामम् अश्विना, नमुचौ आसुरे सचा।

विपिपाना शुभः पती, इन्द्रम् कर्मसु आवतम्।4।
5758. पुत्रमिव पितरौ अश्विना उभा,
इन्द्र आवथुः काव्यैः दंसनाभिः।
यत् सुरामम् वि अपिबः शचीभिः,
सरस्वती त्वा मघवन् अभिष्णक्।5।
5759. इन्द्रः सुत्रामा स्ववान् अवोभिः,
सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधताम् द्वेषो अभयम् नः कृणोतु,
सुवीर्यस्य पतयः स्याम।6।
5760. स सुत्रामा स्ववान् इन्द्रो अस्मत्,
आरात् चित् द्वेषः सनुतः युयोतु।
तस्य वयम् सुमतौ यज्ञियस्या,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम।7।

सूक्त-126

5761. वि हि सोतोः असृक्षत, न इन्द्रम् देवम् अमंसत।
यत्र अमदत् वृषाकपिः अर्यः पुष्टेषु,
मत्सखा विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।1।
5762. परा हीन्द्र धावसि, वृषाकपेः अति व्यथिः।
नो अह प्र विन्दसि अन्यत्र,
सोमपीतये विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।2।
5763. किम् अयम् त्वाम् वृषाकपि, चकार हरितो मृगः।
यस्मा इरस्यसि इत्,, उ नु अर्यो वा पुष्टिमत्,
वसु विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।3।
5764. यम् इमम् त्वम् वृषाकपिम्,
प्रियम् इन्द्र अभिरक्षसि।
श्वा नु अस्य जम्भिषत् अपि कर्णे,
वराहयुः विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।
5765. प्रिया तष्टानि मे कपिः, व्यक्ता वि अदूदुषत्।
शिरो नु अस्य राविषम् न सुगम्,
दुष्कृते भुवम् विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।5।
5766. न मत् स्त्री सुभसत्तरा, न सुयाशुतरा भुवत्।
न मत् प्रतिच्यवीयसी न सक्थि,
उत्यमीयसी विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।6।
5767. उवे अम्ब सुलाभिके, यथा इव अङ्ग भविष्यति।
भसत् मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव,
हृष्यति विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।7।
5768. किम् सुबाहो स्वङ्गुरे, पृथुस्तो पृथुजाघने।
किम् शूरपत्नि नः त्वम् अभि अमीषि,
वृषाकपिम् विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।8।
5769. अवीरामिव माम् अयम्, शरारुः अभि मन्यते।
उत अहम् अस्मि वीरिणी इन्द्रपत्नी,
मरुत्सखा विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।9।
5770. सम्होत्रम् स्म पुरा नारी, समनम् वा अव गच्छति।
वेधा ऋतस्य वीरिणी इन्द्रपत्नी,
महीते विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।10।
5771. इन्द्राणीम् आसु नारिषु, सुभगाम् अहम् अश्रवम्।
नहि अस्या अपरम् चन जरसा,
मरते पतिः विश्व-स्मात् इन्द्र उत्तरः।11।
5772. न अहम् इन्द्राणि रारण, सख्युः वृषाकपेः ऋते।
यस्य इदम् अप्यम् हविः प्रियम्,
देवेषु गच्छति विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।11।
5773. न अहम् इन्द्राणि रारण, सख्यु वृषाकपेः ऋते।
यस्य इदम् अप्यम् हविः प्रियम्,
देवेषु गच्छति विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।12।
5774. वृषाकपायि रेवति, सुपुत्रे आत् उ सुस्नुषे।
घसत् त इन्द्र उक्षणः,
प्रियम् काचित्करम्, हविः विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।13।
5775. उक्षणो हि मे पञ्चदश, साकम् पचन्ति विंशतिम्।
उत अहम् अद्मि पीव, इत् उभा कुक्षी,
पृणन्ति मे विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।14।
5776. वृषभो न तिग्मशृङ्गो, अन्तः यूथेषु रोरुवत्।
मन्थः ते इन्द्र शम् हृदे, यम् ते सुनोति,
भावयुः विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।15।
5777. न स ईशे यस्य रम्बते, अन्तरा सक्थ्या कपृत्।
स इत् ईशे यस्य रोमशम् निसेदुषो,
विजृम्भते विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।16।
5778. अयम् इन्द्र वृषाकपिः, परस्वन्तम् हतम् विदत्।
असिम् सूनाम् नवम् चरुम् आत् एधस्य,
अनः आचितम् विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।18।
5779. अयम् एमि विचाकशत्, विचिन्वन् दासम् आर्यम्।
पिबाभि पाकसुत्वनो अभि धीरम्,
अचाकशम् विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।19।
5780. धन्व च यत् कृन्तत्रम् च,
कति स्वित् ता वि योजना।
नेदीयसो वृषाकपे अस्तम् आ इहि गृहान्,
उप विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।20।
5781. पुनः आ इहि वृषाकपे, सुविता कल्पयावहै।
य एष स्वप्ननंशनोः अस्तम् एषि पथा,
पुनः विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।21।
5782. यत् उदञ्चो वृषाकपे, गृहम् इन्द्र अजगन्तन।
क्व स्य पुल्वघो मृगः कम् अगन्,
जनयोपनो विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।22।
5783. पर्शुः ह नाम मानवी, साकम् ससूव विंशतिम्।
भद्रम् भल त्यस्या अभूत यस्या उदरम्,
आमयत् विश्वस्मात् इन्द्र उत्तरः।23।

सूक्त-127

5784. इदम् जना उप श्रुत, नराशंस स्तविष्यते।
षष्टिम् सहस्रा नवतिम् च, कौरम आ रुशमेषु दद्महे।1।
5785. उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो, वधूमन्तो द्विर्दश।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते, दिव ईषमाणा उपस्पृशः।2।
5786. एष इषाय मा महे, शतम् निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यः वताम्, सहस्रा दश गोनाम्।3।
5787. वच्यस्व रेभ वच्यस्व, वृक्षे न पक्वे शकुनः।
नष्टे जिह्वा चर्चरीति, क्षुरो न भुरिजोः इव।4।
5788. प्र रेभासो मनीषा, वृषा गाव इव ईरते।
अमोत पुत्रका एषाम्, अमोत गा इव आसते।5।
5789. प्र रेभ धीम् भरस्व, गोविन्दम् वसु विदम्।
देवत्रा इमाम् वाचम् श्रीणीह, इषु न अवी अस्तारम्।6।
5790. राज्ञो विश्वजनीनस्य, यो देवो मर्त्यान् अति।
वैश्वानरस्य सुष्टुतिम्, आ सुनोत आ परिक्षितः।7।
5791. परिच्छन्नः क्षेमम् अकरोत्, तम आसनम आचरन्।
कुलायन् कृण्वन् कौरव्यः, पतिः वदति जायया।8।
5792. कतरत् त आ हराणि, दधि मन्थाम् परि श्रुतम्।
जायाः पतिम् वि पृच्छति, राष्ट्रे राज्ञः परिक्षित।9।
5793. अभीवस्वः प्र जिहीते, यवः पक्वः पथो बिलम्।
जनः स भद्रम् एधति, राष्ट्रे राज्ञः परिक्षतः।10।
5794. इन्द्रः कारुम् अबूबुधत्, उत्तिष्ठ वि चरा जनम्।
मम इत् उग्रस्य चर्कृधि, सर्व इत् ते पृणादरिः।11।
5795. इह गावः प्रजाय अध्वम्, इह अश्वा इह पूरुषाः।
इहो सहस्रदक्षिणो, अपि पूषा नि षीदति।12।
5796. न इमा इन्द्र गावो रिषन्,
मो आसाम् गोप रीरिषत्।
मा आसाम् अमित्रयुः जन, इन्द्र मा स्तेन ईशत।13।
5797. उप नो न रमसि सूक्तेन,
वचसा वयम् भद्रेण वचसा वयम्।
वनात् अधिध्वनो गिरो।14।

सूक्त-128

5798. यः सभेयो विदथ्यः, सुत्वा यज्वा अथ पूरुषः।
सूर्यम् च अमू रिशादसः, तत् देवाः प्राक् अकल्पयन्।1।
5799. यो जाम्या अप्रथयः, तत् यत् सखायम् दुधूर्षति।
ज्येष्ठो यत् अप्रचेताः, तत् आहुः अधराक् इति।2।
5800. यद् भद्रस्य पुरुषस्य, पुत्रो भवति दाधृषिः।
तत् विप्रो अब्रवीत् उ, तत् गन्धर्वः काम्यम् वचः।3।
5801. यः च पणि रधुजिष्ठ्यो, यः च देवान् अदाशुरिः।
धीराणाम् शश्वताम् अहम्, तत् अपाक् इति शुश्रुम।4।
5802. ये च देवा अयजन्त, अथो ये च परादर्दिः।
सूर्यो दिवम् इव गत्वाय, मघवा नो वि रप्शते।5।
5803. यो अनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो, अमणिवो अहिरण्यः।
अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रः, तोता कल्पेषु संमिता।6।
5804. य आक्ताक्षः सुभ्यक्तः, सुमणिः सुहिरण्यवः।
सुब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रः, तोता कल्पेषु संसिता।7।
5805. अप्रपाणा च वेशन्ता, रेवान् अप्रतिदिश्ययः।
अयभ्या कन्या कल्याणी, तोता कल्पेषु संमिता।8।
5806. सुप्रपाणा वेशन्ता, रेवान् सुप्रतिदिश्ययः।
सुयभ्या कन्या कल्याणी, तोता कल्पेषु संमिता।9।
5807. परिवृक्ता च महिषी, स्वस्त्या च युधिगमः।
अनाशुरः च आयामी, तोता कल्पेषु संमिता।10।
5808. वावाता च महिषी, स्वस्त्या च युधिगमः।
श्वाशुरः च आयामी, तोता कल्पेषु संमिता।11।
5809. यत् इन्द्र अदो दाशराज्ञे, मानुषम् वि गाहथाः।
विरूपः सर्वस्मा आसीत्, सह यक्षाय कल्पते।12।
5810. त्वम् वृषा अक्षुम् मघवन्, नम्रम् मर्य आकरो रविः।
त्वम् रौहिणम् व्यास्यो, वि वृत्रस्य अभिनत् शिरः।13।
5811. य पर्वतान् वि अदधात्, यो अपो वि गाहथाः।
इन्द्रो यो वृत्रहा महम् तस्मात्, इन्द्र नमो-अस्तु ते।14।
5812. पृष्ठम् धावन्तम् हर्यो, औच्चैः श्रवसम् अब्रुवन्।
स्वस्ति अश्व जैत्राय इन्द्रम्, आ वह सुस्रजम्।15।
5813. ये त्वा श्वेता अजैश्रवसो, हार्यो युञ्जन्ति दक्षिणम्।
पूर्वा नमस्य देवानाम्, बिभ्रत् इन्द्र महीयते।16।

सूक्त-129

5814. एता अश्वा आ प्लवन्ते।1।
5815. प्रतीपम् प्राति सुत्वनम्।2।
5816. तासाम् एका हरिक्निका।3।
5817. हरिक्निके किम् इच्छसि।4।
5818. साधुम् पुत्रम् हिरण्ययम्।5।
5819. क्व आहतम् परास्यः।6।
5820. यत्र अमूः तिस्रः शिंशपाः।7।
5821. परि त्रयः।8।
5822. पृदाकवः।9।
5823. शृङ्गम् धमन्त आसते।10।
5824. अयत् महा ते अर्वाहः।11।
5825. स इच्छकम् सघाघते।12।
5826. सघाघते गोमीद्या गोगतीः इति।13।
5827. पुमान् कुस्ते निमिच्छसि।14।
5828. पल्व बद्ध वयो इति।15।
5829. बद्ध वो अघा इति।16।
5830. अजागार केविका।17।
5831. अश्वस्य वारो गोशपद्यके।18।
5832. श्येनीपती सा।19।

5833. अनामया उपजिह्विका।20।

सूक्तम्-130

5834. को अर्य बहुलिमा इषूनि।1।
5835. को असिद्याः पयः।2।
5836. को अर्जुन्याः पयः।3।
5837. कः कार्ष्ण्याः पयः।4।
5838. एतम् पृच्छ कुहम् पृच्छ।5।
5839. कुहाकम् पक्वक पृच्छ।6।
5840. यवानो यतिस्वभिः कुभिः।7।
5841. अकुप्यन्तः कुपायकुः।8।
5842. आमणको मणत्सकः।9।
5843. देव त्वप्रतिसूर्य।10।
5844. एनश्चिपङ्क्तिका हविः।11।
5845.प्रदुद्रुदो मघाप्रति।12।
5846. शृङ्ग उत्पन्न।13।
5847. मा त्वा अभि सखा नो विदन्।14।
5848. वशायाः पुत्रमा यन्ति।15।
5849. इरावेदुमयम् दत।16।
5850. अथो इयन् इयन् इति।17।
5851. अथो इयन् इति।18।
5852. अथो श्वा अस्थिरो भवन्।19।
5853. उयम् यकांशलोकका।20।

सूक्तम्-131

5854. आमिनोन् इति भद्यते।1।
5855. तस्य अनु निभञ्जनम्।2।
5856. वरुणो याति वस्वभिः।3।
5857. शतम् वा भारती शवः।4।
5858. शतम् अश्वा हिरण्ययाः।
शतम् रथ्या हिरण्ययाः।
शतम् कुथा हिरण्ययाः।
शतम् निष्का हिरण्ययाः।5।
5859. अहल कुश वर्त्तक।6।
5860. शफेन इव ओहते।7।
5861. आय वनेनती जनी।8।
5862. वनिष्ठा नाव गृह्यन्ति।9।
5863. इदम् मह्यम् मदूः इति।10।
5864. ते वृक्षाः सह तिष्ठति।11।
5865. पाक बलिः।12।
5866. शक बलिः।13।
5867. अश्वत्थ खदिरो धवः।14।
5868. अरदुपरम।15।
5869. शयो हत इव।16।
5870. व्याप पूरुषः।17।
5871. अदूहमित्याम् पूषकम्।18।
5872. अत्यर्धर्च परस्वतः।19।
5873. दौव हस्तिनो दृती।20।

सूक्तम्-132

5874. आत् अलाबुकम् एककम्।1।
5875. अलाबुकम् निखातकम्।2।
5876. कर्करिको निखातकः।3।
5877. तत् वात उन्मथायति।4।
5878. कुलायम् कृणवात् इति।5।
5879. उग्रम् वनिषत् अनाततम्।6।
5880. न वनिषत् अनाततम्।7।
5881. क एषाम् कर्करी लिखत्।8।
5882. क एषाम् दुन्दुभिम् हनत्।9।
5883. यदि इयम् हनत् कथम् हनत्।10।
5884. देवी हनत् कुहनत्।11।
5885. पर्यागारम् पुनः पुनः।12।
5886. त्रीणि उष्ट्रस्य नामानि।13।
5887. हिरण्य इति एके अब्रवीत्।14।
5888. द्वौ वा ये शिशवः।15।
5889. नीलशिखण्डवाहनः।16।

सूक्तम्-133

5890. विततौ किरणौ द्वौ तौ, आ पिनष्टि पूरुषः।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे।1।
5891. मातुः ते किरणौ द्वौ, निवृत्तः पुरुषान् ऋते।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे।2।
5892. निगृह्य कर्णकौ द्वौ, निरायच्छसि मध्यमे।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे।3।
5893. उत्तानायै शयानायै, तिष्ठन्ती वाव गूहसि।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे।4।
5894. श्लक्ष्णायाम् श्लक्ष्णिकायाम्,
श्लक्ष्णिम् एव अव गूहसि।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे।5।
5895. अवश्लक्ष्णम् इव, भ्रंशन्दर्लोममति ह्रदे।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे।6।

सूक्त-134

5896. इह इत्थ प्राक् अपाक्,
उदक् अधराक् अरालागुदभर्त्सथ।1।
5897. इह इत्थ प्राक् अपाक्,
उदक् अधराक् वत्साः पुरुषन्त आसते।2।
5898. इह इत्थ प्राक् अपाक्,
उदक् अधराक् स्थालीपाको वि लीयते।3।

5899. इह इत्थ प्राक् अपाक्,
उदक् अधराक् स वै पृथु लीयते।4।
5900. इह इत्थ प्राक् अपाक्,
उदक् अधराक् आष्टे लाहणि लीशाथी।5।
5901. इह इत्थ प्राक् अपाक्,
उदक् अधराक् अक्ष्लिली पुच्छिलीयते।6।

सूक्त-135

5902. भुक् अभिगतः शल् इति,
अपक्रान्तः फल् इति अभिष्ठितः।
दुन्दुभिम् आहननाभ्याम्, जरितः आ उथामो दैव।1।
5903. कोशबिले रजनि ग्रन्थेः, धानम् उपानहि पादम्।
उत्तमाम् जनिमाम् जन्या,
अनुत्तमाम् जनीन् वर्त्मन् यात्।2।
5904. अलाबूनि पृषातकानि, अश्वत्थपलाशम्।
पिपीलिका वटश्वसो विद्युत् स्वापर्णशफो,
गोशफो जरितः आ उथामो दैव।3।
5905. वि इमे देवा अक्रंसत, अध्वर्यो क्षिप्रम् प्रचर।
सुसत्यम् इत् गवाम्, असि असि प्रखुदसि।4।
5906. पत्नी यत् दृश्यते पत्नी यक्ष्यमाणा,
जरितः आ उथामो दैव।
होता विष्टीमेन, जरितः आ उथामो दैव।5।
5907. आदित्या ह जरितः,
अङ्गिरोभ्यो दक्षिणाम् अनयन्।
ताम् ह जरितः प्रति आयन्,
ताम् उ ह जरितः प्रति आयन्।6।
5908. ताम् ह जरितः नः प्रति अगृम्णन्,
ताम् उ ह जरितः नः प्रति अगृभ्णः।
अहानेतरसम् न वि चेतनानि,
यज्ञानेतरसम् न पुरोगवामः।7।
5909. उत श्वेत आशुपत्वा, उतो पद्याभिः यविष्ठः।
उत ईम् आशु मानम् पिपर्ति।8।
5910. आदित्या रुद्रा वसवः त्वे अनु त इदम्,
राधः प्रति गृभ्णीहि अङ्गिरः।
इदम् राधो विभु प्रभु, इदम् राधो बृहत् पृथु।9।
5911. देवा ददतु आसुरम्, तत् वो अस्तु सुचेतनम्।
युष्मान् अस्तु दिवेदिवे, प्रति एव गृभायत।10।
5912. त्वम् इन्द्र शर्म रिणा, हव्यम् पारावतेभ्यः।
विप्राय स्तुवते वसुवनि, दुरश्रवसे वह।11।
5913. त्वम् इन्द्र कपोताय, छिन्नपक्षाय वञ्चते।
श्यामाकम् पक्वम् पीलु च, वाः अस्मा अकृणोः बहुः।12।
5914. अंरगरो वावदीति, त्रेधा वद्धो वरत्रया।
इरामह प्रशंसति, अनिराम् अप सेधति।13।

सूक्तम्-136

5915. यत् अस्या अंहुभेद्याः, कुधु स्थूलम् उपातसत्।
मुष्कौ इत् अस्या एजतो, गोशफे शकुलौ इव।1।
5916. यदा स्थूलेन पससा अणौ, मुष्का उप अवधीत्।
विष्वञ्चा वस्या वर्धतः, सिकतासु एव गर्दभौ।2।
5917. यत् अल्पिकासु अल्पिका, कर्कधूके अवषद्यते।
वासन्तिकम् इव तेजनम्, यन्ति अवाताय वित्पति।3।
5918. यत् देवासो ललामगुम्, प्र विष्टीमिनम् आविषुः।
सकुला देदिश्यते नारी, सत्यस्य अक्षिभुवो यथा।4।
5919. महान् अग्नि अतृप्नत्,
वि मोक्रदत् अस्थाना आसरन्।
शक्तिकानना स्वचमशकम्, सक्तु पद्यम्।5।
5920. महान् अग्नि उलूखलम्, अतिक्रामन्ति अब्रवीत्।
यथा तव वनस्पते, निरघ्नन्ति तथा एव इति।6।
5921. महान् अग्नी उप ब्रूते, भ्रष्टो अथ अपि अभूभुवः।
यथा एव ते वनस्पते, पिप्पति तथा एव इति।7।
5922. महान् अग्नी उप ब्रूते, भ्रष्टो अथ अपि अभूभुवः।
यथा वयो विदाहय़, स्वर्गे नम् अवदहय़ते।8।
5923. महान् अग्नी उप ब्रूते, स्वसा आवेशितम् पसः।
इत्थम् फलस्य वृक्षस्य, शूर्पे भजेमहि।9।
5924. महान् अग्नी कृकवाकम्, शम्यया परि धावति।
अयम् न विद्म़ यो मृगः, शीर्ष्णा हरति धाणिकाम्।10।
5925. महान् अग्नी महान् अग्नम्,
धावन्तम् अनु धावति।
इणाः तत् अस्य गा रक्ष, यभ माम् अद्धि ओदनम्।11।
5926. सुदेवः त्वा महान् अग्नीः,
बबाधते महतः साधु खोदनम्।
कुसम् पीवरो नवत्।12।
5927. वशा दग्धाम् इम अङ्गुरिम्, प्रसृजत उग्रतम् परे।
महान् वै भद्रो यभ, माम् अद्धि ओदनम्।13।
5928. विदेवः त्वा महान् अग्नीः,
विबाधते महतः साधु खोदनम्।
कुमारिका पिङ्गलिका, कार्द भस्मा कु धावति।14।
5929. महान् वै भद्रो बिल्वो, महान् भद्र उदुम्बरः।
महान् अभिक्त बाधते, महतः साधु खोदनम्।15।
5930. यः कुमारी पिङ्गलिका, वसन्तम् पीवरी लभेत्।
तैलकुण्डम् इम अङ्गुष्ठम्, रोदन्तम् शुद्धम् उद्धरेत्।16।

सूक्त-137

5931. यद्ध प्राचीः अजगन्त, उरो मण्डूरधाणिकीः।
हता इन्द्रस्य शत्रवः, सर्वे बुद्बुदयाशवः।1।
5932. कपृत् नरः कपृथम् दधातन,
चोदयत खुदत वाजसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्मा च्यावय ऊतये,
इन्द्रम् सबाध इह सोमपीतये।2।
5933. दधिक्राव्णो अकारिषम्, जिष्णोः अश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्, प्र ण आयूंषि तारिषत्।3।
5934. सुतासो मधुमत्तमाः, सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरन्, देवान् गच्छन्तु वो मदाः।4।
5935. इन्दुः इन्द्राय पवते, इति देवासो अब्रुवन्।
वाचः पतिः मखस्यते, विश्वस्य ईशान ओजसा।5।
5936. सहस्रधारः पवते, समुद्रो वाचमीङ्खयः।
सोमः पतीम् रयीणाम्, सखेन्द्रस्य दिवेदिवे।6।
5937. अव द्रप्सो अंशुमतीम् अतिष्ठत्,
इयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
आवत् तम् इन्द्रः शच्या धमन्तम्,
अप स्नेहितीः नृमणा अधत्त।7।
5938. द्रप्सम् अपश्यम् विषुणे चरन्तम्,
उपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः।
नभो न कृष्णम् अवतस्थिवांसम्,
इष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ।8।
5939. अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थे,
अधारयत् तन्वम् तित्विषाणः।
विशो अदेवीः अभि आ चरन्तीः,
बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे।9।
5940. त्वम् ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो,
शत्रुभ्यो अभवः शत्रुः इन्द्र।
गूल्हे द्यावापृथिवी अनु अविन्दो,
विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणम् धाः।10।
5941. त्वम् ह त्यत् अप्रतिमानम्,
ओजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्य।
त्वम् शुष्णस्य अव अतिरो वधत्रैः,
त्वम् गा इन्द्र शच्या इत् अविन्दः।11।
5942. तम् इन्द्रम् वाजयामसि, महे वृत्राय हन्तवे।
स वृषा वृषभो भुवत्।12।
5943. इन्द्रः स दामने कृत, ओजिष्ठः स मदे हितः।
द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः।13।
5944. गिरा वज्रो न संभृतः, सबलो अनपच्युतः।
ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः।14।

सूक्त-138

5945. महान् इन्द्रो य ओजसा, पर्जन्यो वृष्टिमां इव।
स्तोमैः वत्सस्य वावृधे।1।
5946. प्रजाम् ऋतस्य पिप्रतः, प्र यत् भरन्त बह्नयः।
विप्रा ऋतस्य वाहसा।2।
5947. कण्वा इन्द्रम् यत् अक्रत, स्तोमैः यज्ञस्य साधनम्।
जामि ब्रुवत आयुधम्।3।

सूक्त-139

5948. आ नूनम् अश्विना युवम्, वत्सस्य गन्तम् अवसे।
प्र अस्मै यच्छतम् अवृकम् पृथु,
छर्दिः युयुतम् या अरातयः।1।
5949. यत् अन्तरिक्षे यत् दिवि, यत् पञ्च मानुषान् अनु।
नृम्णम् तत् धत्तम् अश्विना।2।
5950. ये वाम् दंसासि अश्विना, विप्रासः परिमामृशुः।
एव इत् काण्वस्य बोधतम्।3।
5951. अयम् वाम् घर्मो अश्विना, स्तोमेन परि षिच्यते।
अयम् सोमो मधुमान् वाजिनीवसू, येन वृत्रम् चिकेतथः।4।
5952. यत् अप्सु यत् वनस्पतौ,
यत् ओषधीषु पुरुदंससा कृतम्।
तेन मा अविष्टम् अश्विना।5।

सूक्त-140

5953. यत् नासत्या भुरण्यथो, यत् वा देव भिषज्यथः।
अयम् वाम् वत्सो मतिभिः न विन्धते,
हविष्मन्तम् हि गच्छथः।1।
5954. आ नूनम् अश्विनोः, ऋषि स्तोमम् चिकेत वामया।
आ सोमम् मधुमत्तमम्, धर्मम् सिञ्चात् अथर्वणि।2।
5955. आ नूनम् रघुवर्तनिम्, रथम् तिष्ठाथो अश्विना।
आ वा स्तोमा इमे मम, नभो न चुच्यवीरत।3।
5956. यत् अद्य वाम् नासत्या, उक्थैः आचुच्यु वीमहि।
यत् वा वाणीभिः अश्विना, एव इत् काण्वस्य बोधतम्।4।
5957. यत् वाम् कक्षीवान् उत यत् व्यश्व,
ऋषिः यत् वाम् दीर्घतमा जुहाव।
पृथी यत् वाम् वैन्यः सादनेषु,
एव इत् अतो अश्विना चे येथाम्।5।

सूक्त-141

5958. यातम् छर्दिष्पा उत नः परस्पा,
भूतम् जगत्या उत नः तनूपा।
वर्तिः तोकाय तनयाय यातम्।1।
5959. यत् इन्द्रेण सरथम् यातो अश्विना,
यत् वा वायुना भवथः समोकसा।
यत् आदित्येभिः ऋभुभिः सजोषसा,
यत् वा विष्णोः विक्रमणेषु तिष्ठथः।2।
5960. यत् अद्य अश्विनौ, अहम् हुवेय वाजसातये।
यत् पृत्सु तुर्वणे सहः, तत् श्रेष्ठम् अश्विनो अवः।3।
5961. आ नूनम् यातम् अश्विना,
इमा हव्यानि वाम् हिता।
इमे सोमासो अधि तुर्वशे, यदौ इमे कण्वेषु वामथ।4।
5962. यत् नासत्या पराके, अर्वाके अस्ति भेषजम्।

तेन नूनम् विमदाय प्रचेतसा, छर्दिः वत्साय यच्छतम्।5।

सूक्त-142

5963. अभुत्सि प्र देव्या, साकम् वाचा अहम् अश्व़नोः।
वि आवः देवि आ मतिम्, वि रातिम् मर्त्येभ्यः।1।
5964. प्र बोधय उषो अश्व़िना, प्र देवि सूनृते महि।
प्र यज्ञहोतः आनुषक्, प्र मदाय श्रवो बृहत्।2।
5965. यत् उषो यासि भानुना, सम् सूर्येण रोचसे।
आ ह अयम् अश्व़िनो रथो, वर्तिः याति नृपाय्यम्।3।
5966. यत् आपीतासो अंशवो, गावो न दुह्व़ ऊधभिः।
यत् वा वाणीः अनूषत, प्र देवयन्तो अश्व़िना।4।
5967. प्र द्युम्नाय प्र शवसे, प्र नृषह्य़ाय शर्मणे।
प्र दक्षाय प्रचेतसा।5।
5968. यत् नूनम् धीभिः अश्व़िना, पितुः योना निषिदथः।
यत् वा सुम्नेभिः उक्थ्या।6।

सूक्तम्-143

5969. तम् वाम् रथम् वयम् अद्य हुवेम,
पृथुज्ऱयम् अश्व़िना संगतिम् गोः।
यः सूर्याम् वहति वन्धुरयुः गिर्वाहसम्, पुरुतमम् वसुयुम्।1।
5970. युवम् श्रियम् अश्व़िना देवता,
ताम् दिवो नपाता वनथः शचीभिः।
युवोः वपुः अभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति,
यत् ककुहासो रथे वाम्।2।
5971. को वाम् अद्य करते रातहव्य,
ऊतये वा सुतपेयाय वा अर्कै।
ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय,
नमो येमानो अश्व़िना आ ववर्तत्।3।
5972. हिरण्ययेन पुरुभू रथेन इमम्,
यज्ञम् नासत्या उप यातम्।
पिबाथ इत् मधुनः सोम्यस्य,
दधथो रत्ऩम् विधते जनाय।4।
5973. आ नो यातम् दिवो अच्छा,
पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन।
मा वाम् अन्ये नि यमन् देवयन्तः,
सम् यत् ददे नाभिः पूर्व्या वाम्।5।
5974. नू नो रयिम् पुरुवीरम् बृहन्तम्,
दस्रा मिमाथाम् उभयेषु अस्मे।
नरो यत् वाम् अश्व़िना स्तोमम्,
आवन् सधस्तुतिम् आजमील्हासो अग्मन्।6।
5975. इहिह यत् वाम् समना पपृक्षे,
सा इयम् अस्मे सुमतिः वाजरत्ऩा।
उरुष्यतम् जरितारम् युवम्,
ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्।7।
5976. मधुमतीः ओषधीः द्याव आपो,
मधुमत् नो भवतु अन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिः मधुमान् नो अस्तु,
अरिष्यन्तो अनु एनम् चरेम।8।
5977. पनाय्यम् तत् अश्व़िना कृतम्,
वाम् वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः।
सहस्रम् शंसा उत ये गविष्टौ,
सर्वाम् इत् तान् उप याता पिबध्यै।9।

इति विशम् काण्डम् समाप्तम्

अथर्ववेद सम्पूर्ण

ॐ

चतुर्वेद सरल पाठ सम्पादक एवम् भाष्यकार, वृहद् संस्कृत धात्वादि कोश, वैदिक शब्दकोश, सरल संस्कृत व्याकरण, वैदिक इतिहास प्रणेता

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. सम्पर्क - 9839105629

1. **ऋग्वेद भाष्य :-** ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ को भी प्रस्तुत किया गया है। प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

2. **सामवेद भाष्य :-** ऋग्वेद भाष्य की तरह सामवेद का सम्पूर्ण संस्करण।
(बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

3. **अथर्ववेद भाष्य :-** ऋग्वेद भाष्य की तरह अथर्ववेद का सार-संक्षेप संस्करण।
(बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

4. **यजुर्वेद भाष्य :-** ऋग्वेद भाष्य की तरह यजुर्वेद का सम्पूर्ण संस्करण।
(बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

5. **वेदायन भाष्य** :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का सरल पाठ के साथ ही सरस गेय पद्यानुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ, पदार्थ भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल पाठ से साधारण जन भी शुद्ध पाठ कर सकते हैं।
(बृहद आकार) **रु. 500.00**

6. **वेदायन प्रवचन** :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, भावार्थ, पदार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ - व्याख्या सहित सरल प्रमाणिक अनुवाद। मूल मंत्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है सभी के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

7. **वेदायन (सरलपाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित)** :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरलपाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। **रु. 100.00**

8. **वेदायन (सरलपाठ, काव्यानुवाद)** :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरलपाठ, काव्यानुवाद। वेदपाठ तथा उपासना के लिए । **रु. 100.00**

9. **वेद सूक्तायन** :- चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेद सूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरलपाठ (छन्दपाठ), मन्त्रार्थ विशेष भावार्थ- व्याख्या, व्याकरण सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रमाणिक अनुवाद । **रु. 100.00**

10. **यजुर्वेद एकादशी :-** यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, तथा भावार्थ दिया गया है सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द

अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारो वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद्आकार) **रु. 2500.00**

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद् आकार) **रु. 900.00**

13. सामवेद सरल पाठ :- सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 500.00**

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (वृहद् आकार) **रु. 700.00**

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 700.00**

16. संस्कृत धात्वादि कोश :- पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। इसमें उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दे दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है। जन सामान्य के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

17. वैदिक शब्द कोश :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज व्याकरण -सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश (बृहदआकार) **रु. 900.00**

18. वैदिक शब्द कोश (लघु संस्करण):- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज व्याकरण -सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। (बृहदआकार) **रु. 200.00**

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना व बोलना सीख सकते हैं। तीन दशकों के शोध व प्रशिक्षण अनुभव के बाद प्रस्तुत सबके लिए उपयोगी चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली। **रु. 95.00**

20. वैदिक इतिहास :- ब्रहमा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास। सूर्यवंश की सवा सौ पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित, मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है। **रु. 200.00**

21. ओम् साधना :- ओम् साधना, वैदिक आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना एवम् योग चिकित्सा। **रु. 100.00**

22. चिन्तन प्रवाह :- वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन। **रु. 500.00**

23. वैदिक विज्ञान :- वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 50.00**

24. युगबोध :- प्रबन्ध काव्य। **रु. 300.00**

25. चेतना :- काव्य संकलन। **रु. 100.00**

25. नवांकुर :- काव्य संकलन। **रु. 20.00**

पालीवाल प्रकाशन

मोबाइल - 9839105629, 8687849004

website : www.vedayan.simplesite.com

email : paliwalprakashanvedicsahitya@gmail.com